इच्छाशक्ति ओझा इन्द्रजाल (सचित्र)



देहाती पुस्तक भण्डार . दिल्ली-6

RE-EDITED &

UPLOADING

BY SIVAM

1008(960+48) पृष्ठ वाला, प्राचीन, बड़ा

इच्छाशक्ति ओझा इन्द्रजाल

(सचित्र)

यह सभी जानते हैं कि संसार में एक पत्ता भी भगवान की इच्छा के बिना नहीं हिलता परन्तु मनुष्य को चेष्टा करनी चाहिए। कर्म मनुष्य का धर्म है और फल देने वाला ईश्वर है। अतः ईश्वर को सर्वव्यापी जानकर इसकी क्रियाएं करें। कोई कार्य ऐसा न करें, जिससे दूसरों का अनिष्ट हो। पहले दूसरों का भला करें, फिर अपना भला करें, तभी ईश्वर आपका भला करेगा।

कोई भी प्रयोग सिद्धि करने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य कर लें। किसी भी प्रकार की हानि के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे।

—प्रकाशक

मूल्य: 201/-

क्रियेटिव पब्लिकेशन
4422, नई सड़क, दिल्ली-110 006
फोन/फैक्स : 23261030, 23985175, M. 9899470459
visit us at www.creativepublication.com, E-mail : hans@pdf.vsnl.net.in

सिद्ध यन्त्र १५ का

उत्तम ब्राह्मण

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मध्यम ब्राह्मण

६	१	८
७	५	३
२	९	४

उत्तम क्षत्री

४	३	८
९	५	१
२	७	६

मध्यम क्षत्री

२	७	६
९	५	१
४	३	८

उत्तम वैश्य

२	९	४
७	५	३
६	१	८

मध्यम वैश्य

४	९	२
३	५	७
८	१	६

मध्यम शूद्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तम शूद्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

ये लक्ष्मीवर्धक पन्द्रह का यन्त्र है। इसको सिद्ध कर लेने से ऋण एवं दरिद्रता का अवश्य ही नाश होकर लक्ष्मी वृद्धि हो, धन-धान्य एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हो।

यह यन्त्र खाकी, वादी आबी, आतिशी चार प्रकार का होता है, यह राशि के अनुरूप प्रयोग किया जाता है।

खाकी

८	१	६
३	५	७
४	९	२
वृष	कर्क	तुला

वादी

६	७	२
१	५	९
८	३	४
मिथुन	मीन	कुंभ

आबी

२	७	६
९	५	१
४	३	८
कन्या	मकर	वृ०

आतिशी

४	९	२
३	५	७
८	१	६
मेष	सिंह	धन

इन्हें भोजपत्र पर लिखकर कीकर के वृक्ष में बांध देवे तो इन्द्र के समान भी जो प्रबल शत्रु होवे तो भी उसको ज्वर और देहशूल उत्पन्न होगा। हल्दी को जल में घिसकर १०८ यन्त्र पत्थर पर लिखकर दुश्मन की चोखट में गाड़ देवे तो भाई बेटे आदि नातेदारों से कलह होवे। ओंगे के रस से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे तो तिजारी चौथिया सब प्रकार के ज्वर जाते रहते हैं। भांगरे के रस से इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर बाहु और हृदय में धारण करे तो शास्त्रार्थ में जीते।

पन्द्रह के यन्त्र का मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाह॥

विधि—पन्द्रह के यन्त्र की गोली आटे में बनाकर सवा लाख मछलियों को डाले और इस मन्त्र को पढ़ता रहे। सन्तान के अर्थ इस यंत्र को शताबर के पत्तों पर लिखे, भाग्यवृद्धि के लिये बड़ के पत्तों पर, देश अर्थ के लिये कमल पत्र पर, काम अर्थ के लिये कांसी के पत्र पर भोजन के लिये केले के पत्ते पर इस यंत्र को लिखे।

यन्त्र लिखने की कलम

सर्व काम की सिद्धि के लिए चमेली की कलम, आकर्षण के लिये जामुन की कलम, स्तम्भन के लिये बड़ की कलम, वशीकरण के लिये कुश की कलम से लिखे तथा शुभ काम के लिये सोने रूपे की कलम से केशर, चन्दन, अगर, कपूर और कस्तूरी से लिखे।

रविवार की प्रयोग विधि

रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशाने भस्मना लिखेत्।
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्॥
विक्षिप्तो जायतो मर्त्यो ह्यष्टोत्तरशतं जपेत्।

रविवार के दिन आक के दूध में मरघट की भस्म मिलाकर इस यन्त्र को लिखे और नीचे वैरी का नाम लिखकर चिता की अग्नि में डाल देवे और उस पूर्वोक्त मंत्र को १०८ बार जपे तो वह मनुष्य विक्षिप्त हो जायेगा।

सोमवार की प्रयोग विधि

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वा च केशरम्।
श्वेतगुंजासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः॥
पंचदर्शी विलोमं तु संध्याकाले विशेषतः।
यंत्रेण लिख्यते सम्यग्बाह्वोः कंठे च धारयेत्॥
राजानं वशमाप्नोति अन्यलोकेषु का कथा॥

सोमवार के दिन सफेद दूब, केशर, सफेद चिरमिट और कपिला गाय का दूध इन सबको लेकर संध्या समय इस पन्द्रह के यन्त्र को विलोम रीति से लिखे और लिखकर भुजा और कंठ में बांध देवे तो राजा भी वशीभूत हो जाता है और मनुष्यों का तो कहना ही क्या है।

मंगलवार की प्रयोग विधि

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं च पक्षकम्।
यंत्रेण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत्॥
तस्य द्वारे खनेद्भूमौ भवेदुच्चाटनं ध्रुवम्॥

मंगलवार के दिन कौवे के पंख की कलम से उसी के रुधिर से मुर्दे के वस्त्र पर नाम लिखकर दरवाजे की भूमि में गाड़ देवे तो निश्चय उस मनुष्य का उच्चाटन होगा।

बुधवार की प्रयोग विधि

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशर रोचनम्।
यंत्रं लिखित्वा तेनैव तस्य वर्ति समाचरेत्॥
सर्षपतैलेन प्रज्वाल्य मंत्रमष्टोत्तरं जपेत्।
नृकपाले कज्जलं कृत्वाञ्जयेन्मोहयेज्जगत्॥

बुधवार के दिन नागकेशर और गोरोचन से यन्त्र लिखकर बत्ती बना लेवे और सरसों के तेल में उसे जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पारे और पूर्वोक्त मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर काजल लगावे तो वशीकरण हो जायेगा।

गुरुवार की प्रयोग विधि

गुरुवार हरिद्रादि रोचनं घृतमिश्रितम्।
यंत्रराजं समालिख्य यस्य नाम समध्यकम्॥
आसने निखनेच्चैव सर्वस्याकर्षणं भवेत्।

गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन, घी ये मिलाकर मंत्र लिखे, बीच में नाम लिख देवे और आसन के नीचे दबा ले तो सबका आकर्षण होगा।

शुक्रवार की प्रयोग विधि

भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्ठमधूनि च।
यंत्रराजं तु संलिख्य भूर्जपत्रे सुशोभनम्॥
दृष्ट्वा तं स्त्रिय आयांति प्राणैरपि धनैरपि॥

शुक्रवार के दिन कपूर, वच, कूठ और मधु मिलाकर इस यंत्र राज को लिखे तो इसे देखकर धन और प्राण दोनों लेकर स्त्री चली आती है।

शनिवार की प्रयोग विधि

शनिवारे चिताकाष्ठं पञ्चदशी विलोमकम्।
लिखेद्देषां च नामानि श्मशाने निखनेदपि॥
कुक्कुटस्यातिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः।

शनिवार को चिता के काठ की कलम से मुर्गे के रुधिर से उलटा यंत्र लिखकर मरघट में गाड़े, उस पर जिसका नाम लिखा हो वह अवश्य मर जायेगा।

यंत्र लिखने की विधि

चन्द्रो नेत्रे तथा वह्निर्वेदबाणरसास्तथा।
मुनिनागग्रहाश्चैव पञ्चदशी प्रकीर्तिता॥

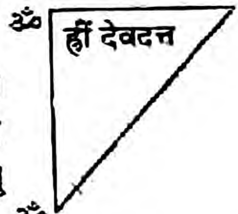
एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ और नौ ये अंक पन्द्रह के यंत्र बनाने में काम आते हैं।

शान्तिक पौष्टिक यन्त्र

	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	
उ ह्रीं	अ	आं	इं	ईं	उं	ऋ	ॠ	ह्रीं उ
उ ह्रीं	जं	झं	ञं	टं	ठं	ऊं	ॠं	ह्रीं उ
उ ह्रीं	छं	भं	मं	यं	रं	डं	लृं	ह्रीं उ
उ ह्रीं	चं	बं	सं	हं	लं	ढं	ॡं	ह्रीं उ
उ ह्रीं	ङ	फं	षं	शं	वं	णं	ए	ह्रीं उ
उ ह्रीं	घं	पं	नं	धं	दं	तं	ऐं	ह्रीं उ
उ ह्रीं	गं	खं	कं	अः	अं	थं	ओं	ह्रीं उ
उ	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	उ

सुन्दर तिथि और शुभ दिन में इस यन्त्र को गोरोचन, केशर, कपूर और कस्तूरी से चमेली की लकड़ी की कील से कांसी की थाली पर लिखे, फिर अत्यन्त भक्ति पूर्वक कमल के फूल, मालती, केतकी, मलिका, बकुल इनके पुष्पों से पूजन करे, ऋतु के फल चढ़ावे, कपूर, तांबूल, धूप, दीप और सफेद वस्त्र से पूजन करे परन्तु सुगन्ध रहित और लाल रंग की कोई वस्तु न चढ़ावे। इसी तरह नैवेद्यादिक से तीन दिन तक पूजन करता रहे, दुर्गापाठ करता रहे, घी और खीर का ब्राह्मणों को यथेष्ट भोजन तीन दिन तक करावे और स्वयं तीन दिन तक पृथ्वी पर सोवे फिर चौथे दिन इस, यन्त्र को निकालकर पत्र में मढ़वाकर भुजा में धारण करे। इस यन्त्र के धारण करने से ऊपरी बाधा दूर हो जाती है तथा विशेष करके अलक्ष्मी, कलह और मन्दभाग्यता ये सब जाते रहते हैं तथा अन्य जो बाधा पहुंचाना चाहते हैं उनका सब कर्त्तव्य व्यर्थ हो जाता है। इस यन्त्र का नाम शांति पौष्टिक है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

शत्रुनाशक यन्त्र



इस यन्त्र को कौवे के पंख से भोजपत्र पर विष और हरताल से लिखे फिर इस यन्त्र को श्मशान में गाड़ दे। अकस्मात् शत्रु की मृत्यु हो जायेगी।



सास ससुर वशीकरण मन्त्र

इस यन्त्र को गेहूं की रोटी पर लिख काली कुतिया को खिलावे तो सास वश में होय और कुत्ते को खिलावे तो स्वसुर वश में हो जायेगा।

उच्चाटन यन्त्र



इस यन्त्र को काले कुत्ते के रुधिर से भोजपत्र पर लिखे और विधिवत् पूजन करके कुत्ते के गले में बांध देवे। ज्यों-ज्यों वह कुत्ता दौड़ेगा, त्यों-त्यों वह मनुष्य भी भाग जायेगा।

व्याधि से बचाने का यन्त्र

यदि वन के बीच से कोई सिंह, व्याघ्र, रीछ, भेड़िया आदि मांसाहारी पशु आ जाय। तब इस मन्त्र को बायें हाथ की हथेली पर थूक से लिख लेवें और अनामिका अँगुली में से थोड़ा-सा रुधिर निकालकर उसके चारों ओर लगा देवे तो वह दुष्ट जन्तु तत्काल भाग जायेगा।

ही

दूरदेश का मारण यन्त्र

इस यन्त्र को मनुष्य के कपाल पर श्मशान में कौए के पंख से लिखे। फिर इसकी भस्म करके रुधिर और विष से लिखे यन्त्र को शराब सम्पुट में रखकर राख भर देवे और अग्नि के ऊपर रख देवे तो दुश्मन चाहे जिस देश को क्यों न गया हो उसको कालाज्वर चढ़ेगा।



मानिनी आकर्षण का यन्त्र



इस यन्त्र को दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के रुधिर से बायें हाथ की हथेली पर लिख लें और फूल, पान, धूप, दीप से पूजन करें तो वह स्त्री प्रहर भर में आ जायेगी।

ऊं	मं		व
दं	त	कौ	मं
तं	र	लं	प
	गु	र	गो

विघ्ननाशक यन्त्र

इस यन्त्र को मालकांगनी के रस से कागज़ पर लिखकर गले में बांधे तो कोई भय नहीं होगा।

नरनारी विद्वेषण यन्त्र

ॐ अजिते स्वाहा

दे द	व र्भ	द गा	त्त भ	दे व	व दु	द र्भ भ	त गा व

ॐ अपराजिते स्वाहा

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन और कुंकुम से दोनों किनारों पर जाप और मौन धारण से लिखकर, नदी के किनारे की मिट्टी ले आवे उस मिट्टी से गणपति की मूर्ति बनाकर इस यंत्र को उस पर डाल देवे और फिर उस गणपति की मूर्ति को गौं के दूध से स्नान करावे, अनेक तरह के फल-फूल, धूप-दीप और मोदकों से पूजन करके स्तुति करें। इस तरह पूजन करके शराब संपुट में रखकर संपुट के ऊपर अघोर-अघोर दो बार लिख देवे और पृथ्वी में गाड़ देवे तो स्त्री पुरुषों में परम शत्रुता होगी।

शत्रु वशीकरण यन्त्र

ग्लग्लि
साध्यनाम
ग्लग्लि

इस यन्त्र को चौदस की रात्रि के समय श्मशान में जाकर मनुष्य के कपाल पर लिखे और धतूरे के रस से मरघट के कोयला को घिसकर स्याही बनाय और नग्न होकर लिखे। फिर शराब संपुट में इस यन्त्र को रखकर बलि मांसादि उपहार रखे और अपने रुधिर से पूजन करे और उसी जगह गाड़कर प्रतिदिन रात के समय उस पर अग्नि जलावे ऐसा करने से तीसरे दिन ज्वर आकर बढ़ता चला जाता है।

उच्चाटन यन्त्र

इस यन्त्र को चतुर्दशी की रात के समय लाल वस्त्र और लाल फूलों की माला धारण करके चंदन लगाकर अनामिका

ॐ गं गणपति प्रहित
हुं गँ देवदत्तः
हुं गं धँ स्वांगहा

अंगुली के रुधिर से लिखे और लाल रंग के ही पुष्पों से पूजन करके ब्राह्मणों को भोजन करावे दक्षिणा देवे। फिर इस यन्त्र के टुकड़े करके उच्छिष्ट भात में मिलाकर श्मशान में जाकर कौवों को खिला देवे तो उसका उच्चाटन होगा।

अथ राज वशीकरण यन्त्र

कांसी के पात्र को राख से मांजकर चमेली की लकड़ी की कलम बनाकर गोरोचन और चन्दन से जिसको वश करना चाहे उसका नाम लिखे और उसके चारों ओर एक गोलाकार कुंडली खींच दे, उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर वकार लिख दे और एक गोल



रेखा खींच देवे उसमें अकारादि सोलह स्वर लिखे और मल्लिका, चमेली तथा श्वेत कमल के पुष्पों से पूजन करे, सुगंधित द्रव्य सामने रखे और एक श्वेत वस्त्र उढ़ा दें। इस यन्त्र का नाम महामोहन है, इसका विधिपूर्वक पूजन करके सुवर्ण अथवा चांदी के ताबीज में मढ़कर शिर, भुजा अथवा गले में बांधे, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष वह सम्पूर्ण दास की तरह वश में हो जाते हैं।

राजा के कोप शांत करने का यन्त्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन, केशर चन्दन में अनामिका का रुधिर मिलाकर लिखे और अनेक प्रकार के पुष्प मिष्ठान्न और मांस से विधिवत् पूजन करे, यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मण भोजन करावे, योगिनियों को नमस्कार करके राजदरबार में जाय और मुट्ठी में इस यन्त्रराज को ले जाय तो तत्काल राजा का क्रोध शांत हो जायेगा और राजा उसके वश हो जायेगा।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

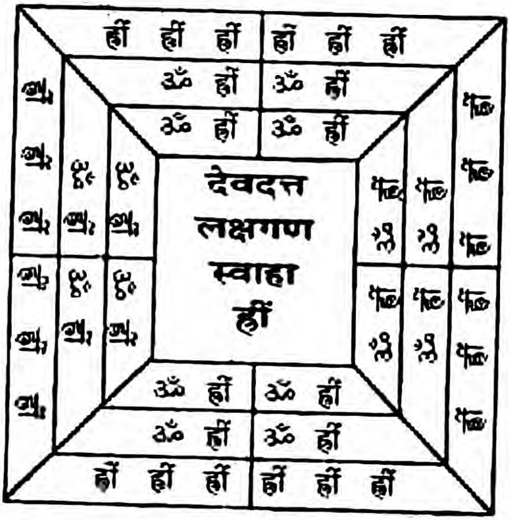
भवबन्ध विनाशन यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन और चन्दन से लिखे और लोहे के ताबीज में रखकर शिर पर रखे, धीरे-धीरे संसार से वैराग्य उपजेगा। पुत्र, मित्र धन, स्त्री से मोह बन्धन छूट जायेगा और योगी होकर इच्छापूर्वक विचरने लगेगा।

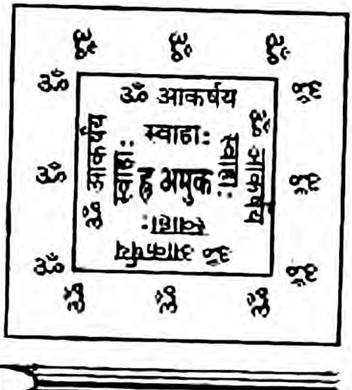


सेना भगाने का यंत्र

नीचे लिखे यंत्र को शंखाहुली, सूरजमुखी, गुलदौन के रस में नगाड़े के ऊपर लिखे और डंके की चोट देवे तो सेना भाग जायेगी।



वाणिज्यार्थ वशीकरण यंत्र



इस यन्त्र को अपने रुधिर में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर लिखे और सुगन्धित द्रव्यों से पूजन करके एकान्त में रख देवे "ॐ आकर्षय स्वाहा" इस मंत्र को जपे तत्काल वश में हो जायेगा।

जगत वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को कपूर, कस्तूरी, चंदन, गोरोचन चमेली की कलम बनाकर भोजपत्र पर लिखे, इसकी तीन दिन तक विधिवत् पूजा करके ताबीज में मढ़वाकर बांह में बांध लेवे जिसके पास जाय वही वश में जो जायेगा।

ॐ वं जें ह्रीं डं
डं ह्रीं ॐ ड
वं डं जगत् वं डं ह्रीं

वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् पूजन करे और ताबीज में मढायकर भुजा में बाधें; जो देखे सोई वश हो जायेगा।

ॐ	
नं टं	नं पं
तं तं तं तं तं	दं दं दं दं दं
श्रं श्रं श्रं श्रं श्रं	डं डं डं डं डं
पं पं पं पं पं	यं यं यं यं यं
टं टं	नं नं
ह्रीं	

दिव्य स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को गोरोचन कुंकुम से भोजपत्र पर लिखे और शराब संपुट में रखकर भक्तिपूर्वक पूजन करे दूसरे दिन निकालकर शिखा में बांध लेवे और मौन होकर फल की चिन्ता करे। उसको इस यंत्र राज की कृपा से कुछ भय नहीं होगा।



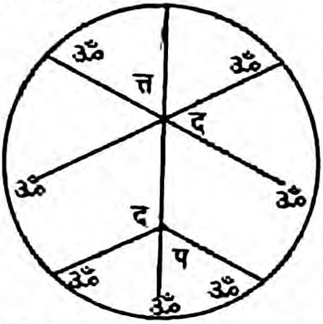
पलीता का यंत्र

इस यंत्र को कागज पर लिखकर सुंघावे तो प्रेत बकरने लगेगा और बात करेगा, जो पूछे उसका जवाब देगा।

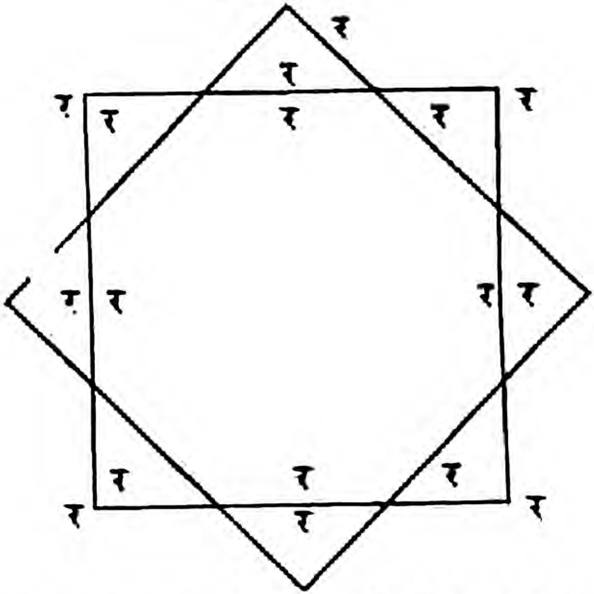
अ	मू	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

मुख स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को अपने घर की दीवार पर खड़िया से लिखे और बीच में शत्रु का नाम लिख देवे। सफेद फूल फल से पूजन करके सफेद वस्त्र उढ़ावे, ब्राह्मण भोजन करावे तो बाद में शत्रुओं के मुख का स्तम्भन होगा।



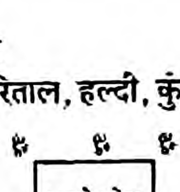
ज्वर रक्षा यंत्र



इस यंत्र को श्मशान में बैठकर खोपडे पर धतूरे के रस से लिखे और कृष्णपक्ष की अष्टमी तथा चतुर्दशी को पूजन करके वहीं गाड़ देवे और पूजन करे तो तत्काल ज्वर जाता रहता है, यह यंत्र बालकों के लिये अवश्य करें।

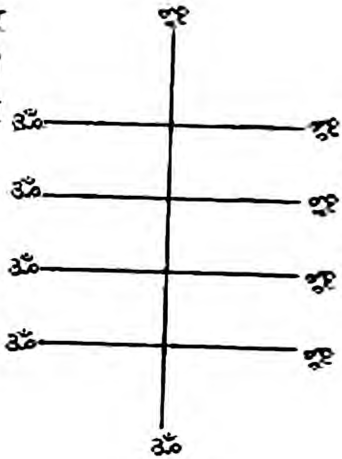
यात्रा स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को शिलासंपुट पर गोरोचन, हरिताल, हल्दी, कुंकुम से लिखे और पीछे फूलों से तथा धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करे और इस यंत्र को समतल भूमि में रख कर मिट्टी से दबादे तो यात्रा बन्द हो जायेगी।



डाकिनी बकुराने का यंत्र

इस यंत्र को कागज में लिखकर लोहवान की धूप दे और ओखली में रखकर कूटे तो डाकिनी का माथा फूटे और बकुरे लगे।



श्री सीताराम हनुमन्तवीर सहाय।

सर्वोपरि यंत्र।

राम	राम	राम
राम	सीताराम	राम
राम	राम	राम

इस यंत्र को तांबे के पत्र में चंदन के साथ अनार की कलम से नित्य प्रति भरके विधिवत् पूजा करे तो सर्व कार्य हों।

प्रेत दूर करने का यंत्र

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रों	क्लीं
स्य	य	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

इस यंत्र को गले में बाधे तो प्रेत दूर हो जायेगा।

जुए में जीतने का यंत्र

मे	खैं	र	त्तं	द	ये	रु	पा
कं	जि	न	नं	द	नी	च	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्र	म	य	वीं	दा	छ
नः	व	नी	द	नं	न	जि	क
पा	रु	य	द	त्त	र	खै	मे

इस यंत्र को अर्डी के पत्ते पर कौवे के पंख से काजल की स्याही बनाकर रात के समय पवित्र होकर लिखे, यह चौसठ कोठे का यंत्र है इसमें इस बत्तीस अक्षर के मंत्र को अनुलोम और प्रतिलोम रीत से लिखे॥

"मेखैरत्तं दयेरुपाकजिननंदनीचनः।
छदावीं ये मंत्र ते षहेष्टि बामोक्षिण पात्रम्"॥

आकर्षण यंत्र

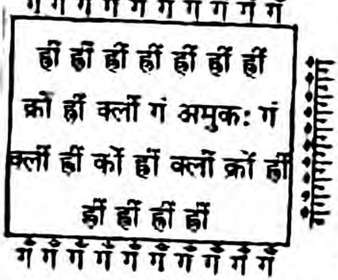
इस यंत्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप से पूजन करके घी में रख देवे नित्यप्रति पूजन करके त्रिपुरा की प्रार्थना इस मंत्र से करे।



**"आकर्षय महादेवी देवदत्तं मम प्रियम्।
ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम्॥"**

पति वशीकरण यंत्र

एक लम्बा चौड़ा ऐसा भोजपत्र लावे जिसमें छेद न हो फिर



अनामिका अंगुली का रुधिर, हाथी का मद, जावक और गोरोचन। ये चारों चीजें मिलाकर चमेली की लकड़ी की कलम से इस यंत्र को लिखे। फिर एक सुन्दर शुद्ध खेत से काली मिट्टी लाकर उसकी गणपति की मूर्ति बनावे और उस मूर्ति के उदर में इस यंत्र को रख देवे। धूप, दीप, फूल माला आदि से पूजन करके इस मंत्र का उच्चारण करें—

"देव देव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत।
देवदत्तं महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो॥"

इस मंत्र का उच्चारण करके हाथभर गहरा एक गड्ढा खोद कर उसमें उस मूर्ति को रख देवे। ऊपर से मिट्टी दाब देवे तो वह मनुष्य गणेशजी की कृपा से जब तक जीवेगा, वशीभूत रहेगा।

अग्नि निवारण यंत्र

हे भवनि! यह यंत्र वह है कि जहां स्थिर होता है अग्नि का भय नहीं रहता है। जिसके हाथ में यह यंत्र होता है उसको स्वप्न में भी अग्नि का भय नहीं होता है।



विधि—एक लंबे चौड़े भोजपत्र पर चंदन, गोरोचन, कपूर इनसे इस यंत्र को लिखे फिर इसको त्रिलोह के ताबीज में मढ़वाकर भुजा या गले में बांधे अथवा घट के बीच में दूध में डाल देवे और नित्य प्रति इसका पूजन करता रहे और एक ब्राह्मण को भोजन करा देवे। इससे अग्नि का भय कभी नहीं रहता हैं।

कालानल स्वामी वशीकरण यंत्र

यह यंत्र इस तरह लिखा जाता है कि एक तीन रेखाओं से आवृत चतुष्कोण में उतनी ही लिखे जितने उस साध्य के नाम के ह्मींह्रींह्नींह्लींह्लीं अक्षर होते हैं। और नाम के हर एक अक्षर को ह्रां के गर्भ में रख देवे। अन्त में एक इकार लिख देवे। यह यंत्र गोरोचन से भोजपत्र पर लिखा जाता है। इस यंत्र को लिखकर एक चांदी की प्रतिमा के हृदय में रख कर उस मूर्ति का

पूजन करे। और चौदस की रात को चूल्हे के रायें में पृथ्वी खोदकर इसको गाड़ देवें तथा बकरे का रुधिर, भात और पूजा करके इनका बलिदान करे। इस मंत्र को पढ़ता जाय।

मंत्र—ॐ महाकालाय स्वाहा।

इस मंत्र से १०८ आहुति देवे तो कैसा ही हठी, क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वशीभूत हो जायगा। इस यंत्र का नाम कालानल है।

आकर्षण यंत्र

इस यंत्र को गोरोचन, केशर, चन्दन से भोजपत्र पर लिखे और फिर धूप, दीप, फूल माला, नैवेद्य आदि से विधिवत् पूजा करके ऊपर से पीला सूत लपेट देवे, मनुष्य के शरीर के उबटने की मूर्ति बनाकर उसके हृदय में इस यंत्र को रख देवे

सः सः सः सः सः ३०
सः सः क्रों ह्रीं क्रों
साध्य नाम
ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों
ह्रीं क्रों ह्रीं दर

और उबटन ही से ढक कर तीन दिन तक सायंकाल के समय खैर की अग्नि से गरम करे। गरम करते समय इस मंत्र का उच्चारण करता रहे।

तापन मंत्र

ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय मणिभद्र स्वाहा।

इस रीति से करने पर देशांतर में गया हुआ मनुष्य वह चाहे जितनी दूरी पर क्यों न हो तत्काल खिंचा हुआ चला आता है।

यात्रा स्तम्भन यंत्र

यदि कोई प्यारा हितैषी परदेश को जाता हो और उसे रोकना चाहे तो इस यंत्र को करे।

विधि—इस यंत्र को काठ के तख्ते पर खड़िया से लिखे जिसके नाम का यंत्र सिद्ध करना चाहें उसका ना जकार के बीच में लिख देवे। इस तरह विधिपूर्वक इस यंत्र को लिखकर घर के बीच में इस तख्ते को औंधा टांग देवे और फूल, माला, नैवेद्य आदि से पूजन करता रहे तो निश्चय अपना प्यारा यात्रा में जाने से रुक जायेगा।



शत्रुओं के स्तम्भन का यंत्र



इस यंत्र को स्वच्छ, लम्बे-चौड़े छिद्ररहित एक भोजपत्र में लिखकर विधिवत् पूजन करे और नीचे लिखे हुए मंत्र का जप करे।

मंत्र

ॐह्ल्यीं लं लं लं लं अमुकस्य मुखं स्तंभय स्तंभय ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा॥

इस मंत्र को सायंकाल के समय तीन दिन तक १०८ प्रति दिन जपे और विधिवत् पूजन करता रहे। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु की गति, मति, बुद्धि बिल्कुल नष्ट हो जाती है और वह शत्रु ऐसा हो जाता है जैसा मूढ़ और गूंगा और ऐसा मालूम होता है कि उस पर कोई ग्रह लग गया है। जहाँ पर अमुक शब्द का प्रयोग है वहाँ पर साध्य का नाम को बोलना चाहिये।

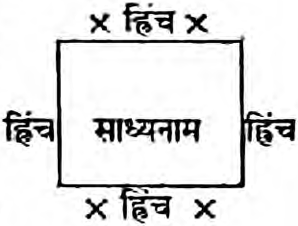
मित्रदर्शन यंत्र

लाल चंदन और अपना रुधिर इन दोनों से भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखकर गंध, पुष्प से पूजन करे, धूप, दीप नैवेद्य,



अक्षत, माला चढ़ावे फिर इस यंत्र को घृत में डाल देवे तो मित्र तीन दिन के भीतर आकर मिले, यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय है इसे किसी को न देवे न किसी से इसका भेद कहे।

बाल रक्षा का यंत्र



इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर विधिवत पूजे और त्रिलोह में इसको मढ़वा कर गले में बांध देवे तो शारीरिक और मानसिक सम्पूर्ण रोग दूर हो जाते हैं ईर्ष्या, कोप, दोष दूर हो जाते हैं, दांत निर्विघ्न निकल आते हैं तथा बालक को दूध का दोष कभी नहीं होने पाता है।

नजर पर २० का यन्त्र

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

इस यन्त्र को भोजपत्र पर रक्त चंदन से लिखकर धूप देकर तांबे के ताबीज में मढ़वा कर उस बालक के गले में बांध देवे जिसको नज़र लग गई हो। तो नजर तत्काल दूर हो जायेगी।

एकान्तर ज्वर नाशन यन्त्र



हल्दी के रस की स्याही बनाकर पान पर बबूल के कांटे से इस यन्त्र को लिखें। लिखकर पूजन करे फिर इस पान को रोगी को खिला दें। एकांतरा ज्वर जाता रहेगा।

भूत व्याधा निर्वाण यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को एक नवीन खपड़े पर खड़िया से लिखे और फल, फूल उपहार से पूजन करके धूल से ढक देवे और अग्नि के ऊपर उसको रखकर खैर के कोयला से फूके तो वह भूत रोता हुआ और कांपता हुआ तत्काल भाग जाता है और बालक को तत्क्षण छोड़ जाता है।

ह्रां	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रौं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रौं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

बर्तन फोड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को भैंस के सींग के ऊपर लिखकर आवे में गाड़े बर्तन फूटने लगेंगे।

१	८	२	७
६	३	१५	१४
१०	२	८	१
६	५	१३	१६

राजा में सम्मान होवे का यन्त्र

इस यन्त्र को कपूर और कस्तूरी से लिखकर पास रखे तो राजा आदर करे।

४२	५०	२	७
०	२०	२७	४६
४१	४४	८	१
४	५	४५	४८

आधाशीशी दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिख माथे पर बांधे तो आधाशीशी जाय।

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

वस्तु आने का यन्त्र

इस यन्त्र को बकरे के हाड़ की कलम से कनेर की छाया में बैठ लिखे तो गई वस्तु आवे।

हूं.	हूं.	हूं.	हूं.
इं.	इं.	इं.	इं.
जैं.	जैं.	जैं.	जैं.
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

कालिका देवी के प्रसन्न होने का यन्त्र

इस यन्त्र को कनेर के नीचे लिखे तो कालिका देवी प्रसन्न होगी।

हं.	सं.	पं.	फं.
धं.	पं.	पं.	जं.
नं.	पं.	मं.	०
चं.	०	मं.	दं.

प्रसिद्धयर्थ यन्त्र

यन्त्र प्रसिद्ध होने के लिये यथोक्त है इसे रीति से सवा लाख लिखें।

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

चक्रवर्ती वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को चाक फेरने की लकड़ी से लिखे तो चक्रवर्ती वश में होगा।

जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.

नजर न लगने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर गले में बांधे तो नजर नहीं लगेगी।

७	१८	१०	३५
१	३५	७	८
३५	५०	१८	७
११	७	३७	१०

कान न दुखने का यन्त्र

यह यन्त्र अनार के रस से लिखकर कान में बांधे तो कान दुखना बन्द होगा।

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
४	६	३४	२१

विद्या और बुद्धि का यन्त्र

इस यन्त्र को प्रतिदिन लिखे तो विद्या और बुद्धि आवेगी।

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

सिंह भाग जावे का यन्त्र

यह यन्त्र सहदेई के रस से लिखकर बांधे तो सिंह भाग जाय।

२३	३४	२	८
७	३	२०	३१
३३	२८	९	५
४	६	२०	३३

शीत ज्वर नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में लिखकर गले में बांधे तो शीत ज्वर दूर होगा।

३	४	७	१४
९	६	१०	६
१४	४	३	७
७	३	१४	४

क्लेश होने का यन्त्र

इस यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर शत्रु के दरवाजे पर गाड़ दे तो क्लेश होय, उखाड़े तो दूर होगा।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र नगारे पर लिखे शत्रु के नाम का नगारा बजे तो वश्य कृत्य होय भ्रम जाय।

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

अकाल मृत्यु न होने का यन्त्र

इस यन्त्र को चंदन की कलम से लिखकर शिर में रखे अकाल मृत्यु न हो।

—	=	≡	॥
॥	=	॥	।
≡	≡		।
।॥	—	≡	=

भूत देवी यक्ष के प्रसन्न होने का यन्त्र

इस यन्त्र को सिरस के पेड़ के नीचे बैठकर लिखे तो भूत देवी यक्ष प्रसन्न होंगे।

तं.	तं.	तं.	तं.
पं.	पं.	पं.	पं.
दं.	दं.	दं.	दं.
लं.	लं.	लं.	लं.

अम्बिका देवी के प्रसन्न होने का यन्त्र

इस यन्त्र को आम के पेड़ के नीचे सवा लाख लिखे। अम्बिका देवी प्रसन्न होगी।

॥।	=	॥॥	॥॥
॥।	≡	॥॥	॥
≡	=	१	-
॥।	=		=

देशाटन करने का यन्त्र

इस यन्त्र को मशान के कोयले से शत्रु के वस्त्र पर लिखे तो देशाटन करे।

तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.

शत्रु उच्चाटन यन्त्र

इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर लोहे की कलम से लिखे तो शत्रु का उच्चाटन होय।

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

हनूमान के प्रसन्न होने का यन्त्र

यन्त्र सिंदूर से सवा लाख लिखे तो हनूमान देव प्रसन्न होंगे।

नं.	छं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	छं.	जं.	०
छं.	नं.	जं.	हं.

प्रयोग सिद्ध यन्त्र

इस यन्त्र से प्रयोग सिद्ध होय।

११	१०८	२	८
७	३	१७	१६
११	१४	९	१
४	६	१५	१८

अलिंगधा यक्षिणी के प्रसन्न होने का यन्त्र

इस यन्त्र को आले के रस से सवा लखा लिखे तो अलिंगधा यक्षिणी प्रसन्न होगी।

लं.	पं.	दं.	लं.
लं.	तं.	पं.	दं.
मं.	पं.	दं.	लं.
पं.	दं.	मं.	नं.

सुख से बालक होने का यन्त्र

प्रसूति समय इस यन्त्र को लिखकर स्त्री को दिखावे तो सुख से बालक होय।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

मनचाहा कार्य होने का यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के नीचे बैठकर सीसे की कलम से लिखे तो मनचाहा कार्य होय।

व	प	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

बोध होने का यन्त्र

इस यन्त्र को श्रवण नक्षत्र में शुक्ल पक्ष में थाली में लिखे, थाली में खीर खावे तो बोध होय।

९३	९१	२	८
७	३	९८	९६
९०	७४	९	१
४	६	९५	९९

नजर न लगने का यन्त्र

इस यन्त्र को तांबे के पात्र में लिख बालक के गले में बांधे तो नजर न लगे, निरोग रहे।

७२	८१	३३	४२
९८	८०	९	११
१५	३७	४०	१०
४५	७७	९	१

देईपेई नाशक यन्त्र

मन्त्र त्रिखूंटी ठीकरी में लिख बालक के गले में बांधे तो देईपेई का भय नहीं होय।

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	१९	८३

शत्रुबल नष्ट होने का यन्त्र

इस यन्त्र को धतूरे के रस से लिख गले में बांधे तो शत्रु का बल नष्ट हो जाय।

७९	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	९	१
४	६	८१	८४

प्रीतिनाशक दूसरा यन्त्र

इस यन्त्र को कंटाई के पत्र पर लिखकर सुखा ले फिर जिस जगह सोवे तब उसके ऊपर डाल देवे मित्रता टूट जाय।

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

एकान्तरा रामबाण यन्त्र

इस यन्त्र को ठीकरी पर लिखकर भुजा में बांधे तो एकांतरा जाता रहेगा।

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

छाया भस्म करने का यन्त्र

इस यन्त्र का पलीता बनाकर जलावे तो छाया भस्म हो जाय।

२४	१९	२०	१	२८	३९	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	८	६	४६
४५	३६	३४	२५	५६	१६	५
४	५५	४४	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४२	३२	२३	२१
२०	१२	२	४९	४०	३१	२२

नित्य ज्वर का यन्त्र

इस यन्त्र को ठीकरी पर लिखकर उस मनुष्य के हाथ से कुए में गिरवावे जिसको ज्वर आता होय तो उसका नित्य का ज्वर जाता रहेगा।

८२	८९	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८७

बलाय दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को चार भोज पत्र के टुकड़ों पर जुदे-२ धार लिखकर चारों कोनों में गाड़ देवे।

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
	१७	६८	६
३९	०	४	१५

मसान दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे तो मसान दूर होगा।

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

बुरे स्वप्न का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर सोते समय सिरहाने रख लेवें तो बुरा स्वप्न दीखना बन्द हो जावेगा।

हं.	सं.	खं.	फं.
षं.	दं.	धं.	जं.
नं.	पं.	मं.	दं.
चं.	यं.	जं.	दं.

सर्पविषनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज में लिख कर धोकर प्यावे तो सर्प का विष तत्काल उतर जाय, चढ़ने नहीं पावेगा।

||||	=	|=|	=
|||||	|	||||	=
≡	२	+	≡
||||	=	|	≡|

प्रीति उत्पन्न करने का यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर फुलेल में जलावे तो प्रीति उत्पन्न हो जायेगी।

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०

तिजारी का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर भुजा में बांधे तो तिजारी दूर होगी।

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

पानी बन्द करने का यन्त्र

इस यन्त्र को कागज में लिखकर जाय तो पानी बन्द होगा।

११	१८	२	८
७	३	३४६	३०५
३४८	३४३	९	१
४	६	३४४	३४७

कष्ट छूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को कांसे की थाली में लिखकर कष्टित स्त्री को इस जल को पिला देवे तो कष्ट छूटे।

२८	३५	३	७
७	३	३२	३१
३४	२९	९	१
४	६	६०	३२

चिकलबाई दूर करने का यन्त्र

इस यंत्र को रक्त चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधे तो चिकलबाई मिट जायेगी।

२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९

वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को प्याज के रस से रोटी पर लिख कर स्त्री, पुरुष को देखे तो पुरुष वश में होगा।

७	२१	२	७
६	३	१९	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

प्रीतिनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर कड़वे तेल में जलावे तो प्रीति नाश होगी।

२१	२२	२३
२०	२४	२९
२५	१६	२१

जूए में जीतने का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप दे और बांह में बांधकर जुआ खेले तो कभी हार नहीं होगी।

१	२५।	२३।	२३।
३१॥।	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८	२४॥	१९॥
२६	९॥।	५॥।	४॥।

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को कपूर और कस्तूरी से लिखकर पास रखे तो राजा आदर करें।

२३	३०	२	८
७	३	२७	२६
२८	२४	२	१
४	६	२५	२८

नाथ चलबे का यन्त्र

इस यन्त्र को सरसों के पत्ते में लिखकर चबावे तो नाथ चलेगा।

२५	३२	१	८
७	३	२९	२८
३४	२६	९	१
४	६	१७	३०

अघाशीशी का यंत्र

इस यन्त्र को रविदिन थूहर के नीचे लिखकर गाड़े। ठलंघे तो अधूरा जाय।

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३५	३०	९	१
४	६	३१	३४

प्रयोग यन्त्र

इस यन्त्र को प्रयोग सिद्धि जो कार्य करे उसमें उसका नाम लिखे प्रमाण सवा लक्ष।

३६	४३	२	७
६	३	४०	३९
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

शत्रु मारण यन्त्र

यन्त्र हाथी के नख से कागज पर शत्रु के नाम से लिख मशान में गाड़े तो शत्रु की मृत्यु होय।

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

राजसभा में मान होने का यन्त्र

यह यन्त्र भोजपत्र पर लिखै, पूजन करके राखे तो राजसभा में मान होगा।

४४	५१	२	७
६	३	४०	४७
५०	४५	८	१
४७	४	४६	४९

हाट उजड़ होने का यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के हाट में लिखे तो अश्लेषा नक्षत्र में हाट उजड़ होगी।

८३	८६	२	७
६	७६	७९	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

कलह होने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठीकरी पर लिखे किसी के घर में ऊपर डाले तो कलह होगी।

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

विरोध होने का यन्त्र

इस यन्त्र को तँबोली की कूँडी पानी से लिखकर शत्रु के घर में गाड़े तो विरोध क्लेश होगा।

५८	६५	२	७
३	६	६२	६१
६४	६९	८	१
४	५	६०	६३

सर्प, भूत, प्रेत भयनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज में लिखकर घर में रखें तो सर्प, भूत, प्रेत का भय न हो।

८०	८७	२	७
६	३	८४	८३
८६	८१	८	१
४	५	८२	८५

सुख होने का यन्त्र

इस यन्त्र को कागज में लिखकर घर में राखे तो अति सुख होगा।

५९	६६	३	७
६	३	६३	६२
६५	६०	८	१
४	५	६१	६४

गया मनुष्य घर आने का यन्त्र

इस यन्त्र को अपनी बीच की अँगुली से लिखे जल का कोड़ा मारे तो गया मनुष्य घर आवे।

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

जुआ जीतने का यन्त्र

इस यन्त्र को स्वाति नक्षत्र में लिखे दिवाली की रात्रि में हाथ में बाधे तो जुआ जीते, हारे नहीं।

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को पीक से लिख स्त्री को चबवावे तो वश में हो पुष्यार्क में लिखिये सही।

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४२

आधाशीशी का यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार को लिखकर माथे में बांधने से आधाशीशी चली जाती है।

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

राजसभा में मान होने का यन्त्र

इस यन्त्र को कपूर, कस्तूरी से लिखकर बांधने से राजसभा में सम्मान प्राप्त होगा।

५३	५०	२	७
६	३	४७	४८
४९	४४	८	१
४	५	४५	४७

शत्रुमुख सूजने का यन्त्र

इस यन्त्र को गधे के मूत्र से शत्रु के नाम को लिखकर ऊपर से जूता मारे तो शत्रु का मुख सूजे।

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

सर्वसभा में मान होने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखे सोना रूपा ताम्र के यंत्र में मढ़ाकर गले में बांधे तो सर्वसभा में मान प्राप्त हो।

५६	६२	२	७
६	३	६०	५९
६२	५७	८	१
४	५	५८	६१

सर्वकार्य सिद्धि प्रयोग यन्त्र (१)

इस यन्त्र को सिद्धिश्वान नख से लिखने से सर्वकार्य सिद्धि हो।

५५	६२	२	८
६	३	५९	५८
६१	५६	८	१
४	५	६५	५०

शूल चलाने का यन्त्र

इस यन्त्र को जंभीरी पर लिखे जिसके नाम को चित्रा नक्षत्र में सुई गड़ावे तो शरीर में शूल चले।

६६	७३	२	७
६	३	७१	७०
७३	६५	८	१
४	५	६९	७२

भट्टी फूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को बोलकर छोड़ा पर लिखे और भट्टी में डाले तो भट्टी फूट जावे।

५७	६४	२	७
६	३	६१	६०
६३	५८	८	१
४	५	५९	६२

धावरा जाने का यन्त्र (१)

इस यन्त्र को कागज पर लिख,कंठ में बांधे तो धावरा रोग जाय।

१०	१७	२	८
७	३	१४	१३
१३	१	९	१
४	६	११	५

स्वप्न में ऊंट दीखने का यन्त्र (१)

इस यन्त्र को ऊँट के हाड़ पर लिखे, आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के घर गाड़े तो स्वप्न में ऊँट ही ऊँट दीखै।

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	९	१
४	६	१३	१६

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (२

इस यन्त्र को बांस की कलम से सवा लाख लिखे तो सर्वकार्य सिद्ध होगा।

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	९	९	१
४	६	१०	१३

स्वप्न में भूत ही भूत दीख पड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को केवड़े के रस से लि.सिरहाने धरे तो स्वप्न में भूत ही भूत दीखे।

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

स्वप्न में वानर दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को बानर के हाड़ पर लिखकर शत्रु के घर गाडै तो स्वप्न में बानर-ही-बानर दीखै।

१२	१९	२	८
६	३	१३	१४
१८	१३	९	१
४	६	१४	१७

आंचल न पकने का यन्त्र

इस यन्त्र को इमली के रस से लिखकर स्त्री के गले में बांधे तो आंचल पके नहीं।

१९	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	९	१
४	६	११	१४

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (३)

इस यन्त्र को बाँस की कलम से सवा लक्ष लिखे तो सर्वकार्य सिद्ध होय।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१९	१४	९	१
४	६	१५	१८

सब जानवर आने का यन्त्र

इस यन्त्र को काष्ठ के पाटे पर लिखकर आसन में रखे तो सर्व जानवर आवें।

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६३	६६

धनञ्जय वायु का यन्त्र

इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर लिखकर कण्ठ में बांधे तो धनंजय वायु जाय।

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४८	८	१
४	५	५०	४३

वशीकरण यन्त्र (३)

इस यन्त्र को गोभी के पत्ते पर लिखे तो सर्वजन वश में होयें।

४९	५६	२	७
६	३	५२	५३
५५	५०	८	१
४३	४	५०	४४

दिन में रात देखने का यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते में लिखकर पिछबाड़े गाड़े तो दिन में रात दीखे।

५२	५९	२	७
६	३	५६	५३
५८	६३	८	१
४	५	५५	५७

व्यवहार होने का यन्त्र (१)

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाड़े तो अति व्यवहार होय।

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५२	५५

शत्रुमुख सूजने का यन्त्र

इस यन्त्र को पनारे में शत्रु के नाम को लिखकर जूता मारे तो शत्रु का मुख सूज जाय।

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५९

शरीर फटने का यन्त्र

इस यन्त्र को धोबी की शिला पर जिसके नाम को लिखे तो उसका शरीर फट जाय।

६०	७१	२	७
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६९

पीड़ा दूर होने का यन्त्र

इस यन्त्र को दाँतुन की कूँची से पत्थर पर लिखे उस पर बैठकर स्नान करावे तो पीड़ा दूर होय।

६५	७२	२	७
६	३	६९	६८
७१	६६	८	१
४	५	७८	६७

गर्भ अधूरा जाने का यन्त्र

इस यन्त्र को पेठे के रस से लिखकर स्त्री के गले में बांधे तो गर्भ अधूरा जाय।

२१	२८	२	८
७	३	२५	२४
२७	२३	९	१
४	६	२३	२६

सर्प न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को मालकांगनी के रस से लिखकर, घर में राखे तो सर्प नहीं आवे।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

शूल होने का यन्त्र

इस यन्त्र को थूहर के दूध से लिखे जिसके घर में गाड़े उसके शूल होय।

३४	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

पुरुष वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को रोटी पर लिख कर काले कुत्ते को खिलावे तो स्त्री के वश में पुरुष होय।

३३	४०	२	८
७	३	३६	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

भयनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को घर के सन्मुख गाड़े तो भय नहीं होय।

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

चूहों से कपड़ों की रक्षा का यन्त्र

इस यन्त्र को काँच के रस से लिखकर घर में राखे तो मूसे कपड़े न काटें।

६४	६१	२	८
७	३	३८	६८
७०	६५	९	१
४	६	६६	६९

सर्प न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को काँच के रस से लिखकर घर में गाड़े तो सर्प आवे नहीं।

३४	३९	२	८
७	३	३५	३४
३८	३३	९	१
४	६	३९	३१

भूत प्रेत भयनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री के कण्ठ में बांधे तो भूत प्रेत का भय नहीं होय।

५५	६२	२	८
७	३	५९	५८
६२	५६	९	१
४	६	५७	६०

कुत्ता भूँकने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुत्ते के कान के ऊपर लिखे तो कुता भूँकता फिरे।

६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७०	९	१
४	७०	११	७३

चाक पर से वासन न उतरने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के चाक पर खैर के कोयले से लिखे तो वासन उतरे नहीं।

७०	७७	२	७
६	३	७४	७३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

शत्रु के शरीर सूजने का यन्त्र

इस यन्त्र को छुरी से छेदें तो शत्रु का शरीर सूजे।

६७	७०	२	७
६	३	७६	७३
७६	६२	८	१
४	७	११	७२

डाकिनी आने का यन्त्र

• इस यन्त्र को जरख के चमड़े पर खैर के कोयले से लिखे तो सब गांव की डाकिनी आवें खवावें।

७०	७६	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

ढोल फूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को तालाव की मिट्टी से लिखकर चमड़ा पर बाजती ढोल को दिखावे तो ढोल फूटे।

६९	७६	३	७
६	३	७	७२
७५	७०	८	१
४	५	६९	७

गया मनुष्य आने का यन्त्र

इस यन्त्र को रास्ते को रेत से लिखे ऊपर कोड़ा मारे तो गया मनुष्य घर आवे।

७२	७६	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

व्यवहार घना होने का यन्त्र (2)

इस यन्त्र को दिवाली के दिन हाट में संमुख लिखे, व्यवहार घना होय।

७४	८१	२	७
६	३	७९	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

व्यवहार घना होने का यन्त्र (3)

इस यन्त्र को लाल कपड़े पर लिखे तो व्यवहार में वृद्धि हो जावे।

७४	८१	२	७
६	३	७९	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

धावरा रोग नाशक यन्त्र (2)

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ में बांधे तो धावरा रोग जाय।

१४	२१	८	२८
७	३	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४	६	९	९

स्वप्न में ऊंट ही ऊंट देखने का यन्त्र (2)

इस यन्त्र को ऊँट के हाड पर आर्द्रा नक्षत्र में लिखे शत्रु के घर गाड़े तो स्वप्न में ऊंट ही ऊंट दीखें।

१८	२५	२	८
७	३	२	१
२४	१९	१९	१०
४	६	२१	१३

शत्रु के भ्रमने का यन्त्र

इस यन्त्र को शिकरे के पर पे लिख शत्रु के घर गाड़े तो शत्रु भरमता फिरे टिके नहीं।

१५	२६	२	८
७	३	१९	१८
२१	१६	९	१
४	६	१७	२०

गया पशु आने का यन्त्र

इस यन्त्र को शेह के शूल की कलम से खूँटे पर लिखे, खूँटा गाड़े तो गया पशु आवे।

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

कमान का गोसा न चढ़ाने का यन्त्र

यह यन्त्र कागली के पंख पर सिकर के बाल की कलम से लिखे तो कमान का गोसा नहीं चढ़े।

१६	२६	२	८
७	३	२०	२०
३२	१७	९	१
४	६	१८	२१

रोग न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को चमड़े में लिखे मेघा नक्षत्र में मनिहार की भाठिया में डारे तो चूड़ी करे रोग आवे नहीं।

८२	८९	२	७
६	३	५६	५५
५८	६३	८	१
४	५	८४	५७

शत्रु की छाती फटने का यन्त्र

यह यन्त्र बकरे के रुधिर से लिखे, थांबी की शिला के नीचे गाड़े तो शत्रु की छाती फट जाय।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	१	९	१
४	६	२२	२५

गधा मारने का यन्त्र

यह यन्त्र गधे के हाड पर लिखे, किसी की जगह में गाड़े तो स्वप्न में गधा मारता है।

१७	१४	२	८
७	३	२७	२०
२३	१८	९	१
४	६	१९	२२

बुद्धि नष्ट होने कर यन्त्र

इस यन्त्र को उल्लू के पंख पर लिखकर किसी के शिर पर डाले तो उल्लू जैसा हो जाय बुद्धि नष्ट होय।

८२	९०	२	७
६	३	८८	६६
९१	९७	८	१
४	५	८६	६९

नाज सड़ने का यन्त्र

यह यन्त्र सूए के पंख पर लिखकर नाज में गाड़े तो नाज सड़ उठे, बास बुरी आवे।

८४	९०	२	७
६	३	८८	८६
८९	८४	८	१
४	५	८५	८८

कांसे पीतल को ताव न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर ठठेरे की भाठी में गाड़े तो कांसे पीतल में ताव न आवे।

७	८	२	८
१	३	५	४
७	३	५	४
७	६	३	६

नाड़ा टूटने का यन्त्र (१)

इस यन्त्र को गिलहरी की पूंछ के बाल से लिखकर रास्ते में डारे, जो उलंघे उसका नाड़ा टूटे।

५	१२	२	८
७	३	९	७
११	६	९	१
४	६	७	११

नाड़ा टूटने का यन्त्र (२)

इस यन्त्र को श्वेत कपड़े में लिखे, तालाब तथा कुँआँ तथा बावड़ी के घाट के ऊपर गाड़े जो उलंघे उसका नाड़ा टूटे।

४	११	२	८
१०	३	८	७
७	५	९	१
४	६	६	९

भूत ही भूत दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को गिलोय के रस से भोजपत्र पर लिखे सिरहाने रखकर सोवे तो स्वप्न में भूत ही भूत दीखे।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१२

देवता प्रसन्न करने का यन्त्र

इस यन्त्र को आक की लकड़ी से लिखे, माथे पर रखे तो देवता प्रसन्न होय।

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

स्त्री दुग्धनाशक यन्त्र

यह यन्त्र स्त्री के दूध से लिखकर बायें कोने में गाड़े तो स्त्री का दूध जाय।

६९	७६	२	८
७	३	७२	७३
७५	७०	९	१
४	६	७१	७४

सर्वकार्य सिद्धि होवे का यन्त्र (४)

यह यन्त्र सिंदूर, कुंकुम कस्तूरी से लिखे तांबे के पात्र में पूजन करे तो सर्व कार्य सिद्धि होय।

६७	७३	२	८
७	३	७१	६९
७२	६८	९	१
४	६	६८	७२

शत्रु विनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को लोहे की कलम से नदी के किनारे बैठकर लिखे तो शत्रु का क्षय होय।

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	९	१
४	६	६९	७२

वशीकरण यन्त्र (२)

इस यन्त्र को कांसे की कटोरी में लिखे, तेल भरी दिखलावे व माथे लगावे सो वश में होय।

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	३
४	०	६२	६५

वशीकरण यन्त्र (३)

इस यन्त्र को स्त्री के बायें पगकी पगतली में लिखे तो वह अपने वश में होय।

५८	५५	२	८
७	३	६२	५१
५४	५९	९	१
४	६	५०	६३

वशीकरण यन्त्र (४)

इस यन्त्र को कुंकुम, सिंदूर से लोटे के नीचे लिखे पानी पीवे सो वश में हो।

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६१

वशीकरण यन्त्र (५)

यह यन्त्र केले के रस से श्रवण नक्षत्र में लिखे पानी में गाड़े पानी पीवे सो वश होय।

६३	६९	२	८
७	२	६६	६५
६८	६३	९	१
४	६	६४	६७

नाथ चलाने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोडल के पत्र पर लिखे जो ठलंघे ताकी नाथ चले।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
८१	७६	९	१
४	६	७७	९०

अश्वमारण यन्त्र

इस यन्त्र को घोड़े के हाड पर लिखे, घोड़े के थान में गाडे तो घोडा मर जाय।

८६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७९	९	१
४	६	७०	७३

कूख बंद होने का यन्त्र

इस यन्त्र को जिसका बुहारी पर नाम लिख मशान में गाड़े तो कूख बन्द होय।

६३	७१	२	८
७	३	६७	६६
८२	७७	९	१
४	६	६५	८१

मस्त होने का यन्त्र

इस यन्त्र को थूहर के दूध से स्वाती नक्षत्र में लिखे मर्द कमर में रखे तो विषय के समय मस्त होय।

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
४	६	७३	७६

अथाइक मनुष्यों के लड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के आंवें के कोयले से शिला पर अथाई में लिखे तो अथाई पै बैठे सर्व लड़े।

७०	७३	२	८
७	३	७४	७३
७६	७२	९	१
४	६	७०	७४

विघ्ननाशक यन्त्र

इस यन्त्र को जापे में स्त्री के समीप राखे तो कोई विघ्न नहीं होय।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	६	५८	६१

मोहिनी यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री के दूध से लिखकर गले में बाँधे तो सब मोहित हों।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

भूत न लगने का यन्त्र

इस यन्त्र को दूधी के रस से लिखकर बालक के कंठ में बांधे तो भूत लगे नहीं।

८६	९६	२	८
७	३	९५	१२
४२	३७	९	१
४	६	११	९४

आम के फल घने आने का यन्त्र

इस यन्त्र को आम के रस से लिख आम के पेड़ में बांधे तो फल घने आवें।

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८९	९	१
४	६	९०	९१

मनचीता कार्य होने का यन्त्र

यह यन्त्र काकरे के रस से लिख वन में गाड़े तो मनचीता कार्य होय।

९२	५९	२	८
७	३	६६	१५
९८	८३	९	१
४	६	९४	९७

बुद्धि होने का यन्त्र

इस यन्त्र को मालकांगनी के रस से जिह्वा पर चांदनी चतुर्दशी के दिन लिखे तो बिना पढ़े बुद्धि होय।

८४	११	२	८
७	३	८८	८७
९०	८५	२	१
४	६	८५	७०

कामना न जगाने का यन्त्र

इस यन्त्र को पास राखे तो कामना जागे नहीं पुष्य नक्षत्र में लिखे।

७५	८८	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०

ना मर्द करने वाला यन्त्र

इस यन्त्र को रेशम के वस्त्र पर जिसके नाम को लिख कसूम बीच गाड़े तो पुरुष नामर्द होय।

२३	८०	२	८
७	७	७७	७३
७९	७४	९	१
४	६	७१	७४

फुलवाड़ी में बहुत फूल आने का यन्त्र

इस यन्त्र को लाख के पानी से तुरके पत्ते पर लिखे माली की बाड़ी में गाड़े तो बहुत फूल आवे।

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	७९	८३

बिछुवा छुड़ाने का यन्त्र

यह यन्त्र केसूले के रस से लिख स्त्री को सुँघावे तो बिछुवे छूटे।

७४	८९	२	८
७	३	७९	७७
८०	७५	९	७
४	६	७६	७५

बहुत भोजन करने का यन्त्र

इस यन्त्र को करकेंटे के लहू से सेह के शूल से लिखकर चूल्हा पीछे गाड़े सो रोटी पोवे तो सब खा जाय।

७८	७५	२	८
७	३	८२	१८
८४	८९	९	१
४	६	८	१०

मसान जगाने का यन्त्र

इस यन्त्र को मशान की ठीकरी पर लिखे तो मसान जागे।

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	९	१
४	६	८२	८२

मनचेता कार्य होने का यन्त्र

यह यन्त्र पीपल के नीचे बैठ सीसे की कलम से लिखे तो मन चेता कार्य होय।

१	५	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

कांच न निकलने का यन्त्र

इस यन्त्र को बालक के गले में बांधे तो काँच न निकले।

७६	८२	२	८
७	१	७०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

आमफल घने आने का यन्त्र

इस यन्त्र को आम के रस से लिख आम के पेड़ में बाँधे तो फल घने आवें।

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८६	९	१
४	६	९०	९१

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र लज्जालू के रस से लिखे, माथे पर राखे तो सर्वजन वश में होयँ।

९२	९८	२	८
७	३	९५	९५
९७	९३	९	१
४	६	९४	९६

बाल भयनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को घी के रस से लिख बालक के गले में बांधे तो बालक डरै नहीं।

८९	९६	२	८
७	३	९४	८२
९७	९१	९	१
४	६	९०	९४

विषय सूची

पुस्तक के बारे में............

प्राचीन यन्त्र मन्त्र तन्त्र विद्या को ढोंग समझकर आजकल की युवा पीढ़ी उन पर विश्वास नहीं करती। जीवात्मा, भूत-प्रेत, भैरों वशीकरण, आसेव सभी कुछ विश्वास पर निर्भर हैं। इस भौतिकवादी युग में ब्रह्ममुहूर्त में उठना इस युवा वर्ग ने बन्द कर दिया है। प्रात: की पावन बेला में उठने वाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष कभी भी किसी भी कार्य में असफल नहीं हो सकते।

पुस्तक देखें पुस्तक का नाम पढ़ें और फिर अपने विचार प्रकट कर हमें अविगत करें।

पं० जगन्नाथ शास्त्री

असली प्राचीन सच्ची आकर्षण शक्तियां

जिस कार्य से मनुष्य बुद्धि को नितान्त आश्चर्य हो वही चमत्कार, कौतुक, जादू , टोना, करामात, करिश्मा कहलाता है। इस छोटी-सी पुस्तक में हम यह दिखलाने का प्रयत्न करेंगे कि जादू या करामात से लोग क्यों आश्चर्यान्वित रह जाते हैं। भारत वर्ष के लिये जादू या टोने का काम नया नहीं है। एक समय था जब कि यह अद्भुत आश्चर्य कारिणि विद्या खूब अच्छी तरह फैली हुई थी। बंगाल और कामरू का जादू अब तक प्रसिद्ध है। यह दूसरी बात है कि लोग इसको अब भद्दे अर्थों में लेने लगे हैं।

आप ने बारम्बार यह बात सुनी होगी 'तुम्हारी बातों में जादू भरा है। तुम्हारे नेत्रों ने जादू कर दिया' यहां जादू शब्द का अर्थ अपूर्व वशीकरण से है। यही अपूर्व जादू आज सारे सभ्य देशों में फैला हुआ हैं जिस का दूसरा नाम हिप्नोटिज्म, मेस्मरेजिम इत्यादि हैं।

आज सभ्यता का समय है। सभ्य देश मेस्मरेजिम आदि अपूर्व विद्याओं की उत्पति पर बड़े गर्व से विजय दुंदभी बजाया करते हैं परन्तु यदि तनिक भी ध्यान से देखा जाय तो इन तमाम विद्याओं का केन्द्र भारत वर्ष ही है जिसे सभ्य देश अभी तक नीम वहशी मुल्क के नाम से पुकारते हैं।

हम ने एक समाचार पत्र में देखा था कि अमरीका के एक विद्वान डॉक्टर ने एक मृतक शरीर में पुनर्जीवन संचार कर दिया। ईसा मसीह का मृतक को जीवित कर देना प्रसिद्ध है। भगवान रामचन्द्र के चरण स्पर्श से शिला का नारी बन जाना लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। गुरु गोरखनाथ को पुनर्जीवन सन्चार की सहस्रों कहानियां लोगों को याद हैं। फकीर की खाक की चुटकी ही रोग विनाशिनी औषधि बन जाती है। आप ने देखा होगा कि सहस्रों रोगी केवल हाथ फेरने या फूँक मारने से ही ठीक हो जाते हैं। यह बातें आप को आश्चर्य जनक अवश्य ज्ञात होती हैं अधिक मनुष्य इन बातों की सत्यता पर विश्वास नहीं करते परन्तु यदि तनिक भी ध्यान से विचार किया जाये, अपने शास्त्रों का

मंथन किया जाये तो बातें बहुत ही साधारण दृष्टिगोचर होने लगेंगी।

सभ्य देशों की इन मेस्मेरेजिम, हिप्नोटिज्म, बिल पावर आदि अनेक आश्वकारिणी विद्याओं का मूल निकास आप के सुप्रसिद्ध योग शास्त्र से है। योग ही इन तमाम चमत्कारों का निकेतन है। योग की ही यह तमाम शाखायें हैं।

आप ने अपने जान आलम अन्जमन आरा की कहानी में एक शरीर से दूसरे शरीर में प्राण प्रवेश की विस्मय कारक घटना सुनी होगी। सरस्वती मासिक पत्र में भी एक बार एक ज्योतिषी की आत्म कथा शीर्षक लेख निकला था जिस में अनेक अद्‌भुत बातों के अतिरिक्त एक शरीर से दूसरे शरीर में प्राण प्रवेश की बात थी।

आप ने अपने यहां के पुराणों की आश्चर्य जनक ऐतिहासिक घटनायें पढ़ी होंगी। नारद की नवीन की सृष्टि की बात असत्य और बुद्धि विरुद्ध नहीं है। सरस्वती मासिक पत्र में किसी अंगरेज द्वारा योगियों की कथा छपी थी जिस में योग की महिमा यहां तक बयान की गई थी कि लेखक ने अपने

नेत्रों से योगियों को हवा में लटकते हुए देखा है। भारत वर्ष के मामूली फकीरों की बात ले लीजिये। अपनी तनिक तनिक सी बात से वह लोगों को कितना विस्मयान्वित कर देते हैं जिस को देखकर अवाक रहजाना पड़ता है।

जो बातें आज बुद्धि विरुद्ध और चमत्कार मालूम होती है सम्भव है कि भविष्य में वह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगें। इस बात का साक्षात प्राण रेलें, तार और हवाई जहाज आदि हैं। परन्तु हमारे भारत वासियों में एक और बुरा रोग है। वह यह जानते अवश्य हैं कि समस्त विद्याओं का मूल निकास वेद हैं तथा भारत वर्ष से ही सारी विद्याओं का प्रकाश संसार में फैला है। परन्तु स्वयं प्रयत्न और परिश्रम करना कुछ नहीं चाहते। दूसरों के आविष्कारों को चट अपने बाप दादों की सम्पत्ति बता देते हैं अविलम्ब उन का हवाला अपने पवित्र वेदों से दे उठते हैं। मैं यह नहीं कहता कि वेद विद्याओं का भण्डार नहीं है परन्तु भारतवासियों की अकर्मण्यता वास्तव में नितान्त शोचनीय है। यही कारण है कि भारतवासी आज मेस्मरेजिम और हिप्नोटिज्म आदि को आश्चर्य

और विस्मय की दृष्टि से देखते हैं। यद्यपि यह कहा अवश्य जाता है कि इन तमाम विद्याओं की निकास भारतीय योग है।

परन्तु कितने लोग हैं जो योग के साधनों से लाभ उठाते हैं जो योग विद्या में पारंगत होकर अन्य अन्वेषणों की पूर्ण क्षमता रखते हैं।

हिमालय की ऊंची २ चोटियों पर कन्दरा आदि में अब भी बड़े-बड़े विचित्र योगी मिलते हैं जिन की समता आज भी इस विद्या में संसार में नहीं हो सकती ऐसा होते हुए भी भारत में योग विकास के कमी के कारण क्या हैं यह प्रश्न स्वत: उत्पन्न होता है। विस्तार भय से इस विषय में बहुत थोड़ा ही लिखना पर्याप्त समझते हैं।

योग का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य-जीवन मुक्ति है। जीवन मुक्ति के योगाभ्यास की आवश्यकता है योगाभ्यास के लिए सांसारिक सम्बन्ध परित्याग कर देने की प्रथा है। यद्यपि योग सर्वरंग पूर्ण विद्या है तथापि मेस्मरेजिम आदि छोटी-२ विद्याओं का जो योग की शाखा ही है भारत वर्ष में विकास नहीं हुआ। कारण इस का यह है कि हमारे भारत वर्ष में

निवृति मार्ग ग्रहण किया है योग शास्त्र के अधिक टीका कारों ने निकृति मार्ग ही प्रदर्शन किया है। यही कारण है योगाभ्यासियों को नवीन आविष्कारों से कोई सम्बन्ध नहीं रहा वह निर्जन खोह और कन्दराओं में पड़े हुए योग का अपूर्व आनन्द लूट रहे हैं। यदि योग का प्रकृति मार्ग दिखलाया जाता जैसा कि हाल ही में लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक ने गीता रहस्य में दिखलाया तथा प्रमाणित किया तो बहुत सम्भव था कि मेस्मेरेजिम, हिप्नोटिज्म आदि जैसे छोटे-छोटे आविष्कारों का मुकुट उन लोगों के सिर होता जो आज केवल झाड़ फूंक से रोगों के नाश करने की क्षमता रखते हैं।

योग विद्या

पवित्र वेदों के साथ षट दर्शन भी प्रसिद्ध हैं जिन में से महात्मा पातन्जली रचित योग शास्त्र बड़े ही महत्व का है। यह योग शास्त्र है तो छोटा सा ग्रन्थ परन्तु इसमें योग के मूल तत्व कूट-२ कर भरे हैं। इसके अतिरिक्त हट योग प्रदीपिका, गोरक्ष पद्धिति आदि कई योग सम्बन्धी ग्रन्थ हैं जिन में योग के अन्यान्य विषय अच्छी प्रकार समझाये गये हैं परन्तु

फिर भी कोई यह बात चाहे कि इन पुस्तकों की सहायता से कोई मनुष्य योगीश्वर बन जाय यह बात सर्वथा असम्भव है। इन पुस्तकों में अधिकतर योगाभ्यास के सूक्ष्म तत्व ही बतलाये गये हैं।

इन पुस्तकों के वास्तविक अर्थ और मर्म जानने वाले योगाभ्यासी महात्मा ही हैं जो संसार त्यागी होकर पहाड़ों की कन्दरा में निवास करते हैं। सांसारिक पुरुषों में योग मर्म ज्ञाता बिरला ही मनुष्य मिलेगा। योगाभ्यासी महात्मा के शहरों में बहुत कम दर्शन होते हैं। फिर इस अनुपम विद्या का सीखना भी सरल नहीं है। योग दर्शन में शिष्य के, जो लक्षण लिखे हैं उन लक्षणों के अनुकूल जब तक अच्छा शिष्य प्राप्त नहीं होता योग विद्या किसी को महात्मा लोग बतलाते भी नहीं हैं। यह मैं पहिले कह चुका हूं कि अब तक भारत वर्ष में बिकृति मार्ग प्रतिपादित होता रहा है फिर भला बिना संसार त्यागी बने हुए महात्मा लोग इस विद्या की कब शिक्षा देख सकते हैं। यदि निवृति मार्ग के साथ प्रकृति मार्म का भी प्रति पादन किया गया होता जैसा कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता में किया है तो आज भारत वर्ष में असंख्य मनुष्य

योगाभ्यासी दृष्टिगोचर होते। योग दर्शन आदि की सरल और विस्तृत टीकायें भी नहीं हैं। यही कारण है कि इस विद्या की प्राप्ति गुरु की सहायता के बिना हो नहीं सकती। संसार में सर्वत्र सर्वेश्वर सर्वाधार सर्व शक्ति सम्पन्न सर्व व्यापक परमात्मा ही है। ईश्वर का एक छोटा सा अंश है। जीव की प्रबल इच्छा परमात्मा में मिलने की होती है। जीव चौरासी लक्ष योनियों के बन्धन में पड़ा है। इसी बन्धन को तोड़ने, इसी बन्धन से मुक्त होने को जीव का परमात्मा में मिलना कहा है। इसी मेल का नाम योग है। अतएव जीवन मोक्ष का नाम ही योग है। जीव का योग प्राप्ति के लिए समस्त चित वृतियों के निरोध की आवश्यकता होती है। पूर्ण निरोध होना ही जीवन बन्धनों का टूटना है। यही योग है जीव को योग प्राप्ति तक उन समस्त विद्धियों की कक्षाओं में होकर जाना पड़ता है जिनको आज चमत्कार या जादू के नाम से पुकारते हैं अतएव जीव को यह सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं।

अब यदि योगाभ्यास का करने वाला किसी बीच की कक्षा से ही अपना अभ्यास बन्द कर दे तो उसे वहीं तक की। सिद्धि प्राप्त होगी यही कारण है

भारत वर्ष में अनेक प्रकार की सिद्धियां रखने वाले फकीर मिलते हैं। और जब योगाभ्यास पूरा हो जाता है तो सारा झन्झट ही मिट जाता है योग के ही द्वारा महात्माओं की अवस्थायें सहस्रों वर्ष तक पहुंचती हैं।

योग के निमित्त—मन के चान्चल्य को रोकने के लिये योग शास्त्र में उन्तीस निमित्त वर्णन किये हैं जिन में (१) छै चक्र (२) अधार (३) दोलक्ष्य (४) पांच आकाश सम्मिलित हैं। इतने भाग शरीर में हैं जिनको जान लेने से योग सिद्धि में सुगमता होती है। (१) मूलाधार (२) स्वाधिष्ठान (३) मणिपुर (४) अनाहत (५) विशुद्ध (६) आज्ञा। आधार सोलह हैं (१) पादांगुष्ठ (२) मूलाधार (३) + (४) गुह्याधार (५) उड्डीमान बन्ध (६) नाभि मण्डलाधार (७) हृदयाधार (८) कराठाधार (९) क्षुद्र घन्टिकाधार कंण्ठमूल (१०) जिब्हा मूलाधार (११) जिब्हा अधोभागाधार (१२) अर्द्धदन्तमूलाधार (१३) नासिकाग्राधार (१४) नासिकामूलाधार (१५) भ्रूमध्याधार (१६) नेत्राधार।

अथवा (१) मूलाधार (२) स्वाधिष्ठान (३) मणिपुर (४) अनाहत (५) विशुद्ध (६) आज्ञाचक्र (७) बिन्दु (८) अर्द्धेन्दु (९) रोधिनी (१०) नाद (११) नादात्त (१२) शक्ति (१३) व्यापिका (१४) समनी (१५) रोधिनी (१६) ध्रु मण्डल यह भी सोलह आधार कहे हैं।

लक्ष दो हैं (१) बाह्यलक्ष्य (२) अन्यान्तरीय लक्ष्य। आकाश ५ हैं (१) श्वेतवर्ण ज्योति रूप मटाकाश (२) रक्त वर्ण ज्योति रूप प्रकाश (३) धूर्म वर्ण ज्योतिरूप मटाकाश (४) नील वर्ण ज्योति स्वरूप सूर्याकाश अब शरीर के सम्बन्ध में कहते हैं इस में मुख १, नेत्र २, कर्ण दो, गुह्य १, लिंग १, नौ द्वार हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश यह पांच तत्व हैं जिनके आधि देवता ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर तथा सदाशिव हैं।

चक्र निरूपण—(१) मूलाधार चक्र—गुदाद्वार में पीत वर्ण का अधोमुख कमल मूलाधार चक्र कहलाता है शरीर का यही आधार है।

(२) स्वाधिष्ठान चक्र—लिंग मूल में रक्त वर्ण अर्द्ध मुख षटदल छै वरणों वाला कमल है।

(३) मणिपुरचक्र—नाभि मूल में नीलवर्ण ऊर्द्ध मुख दश दल कमल दस वर्णोंवाला कमल है।

(४) अनाहतचक्र—हृदय में द्वादश दल कमल ऊर्द्ध मुख है।

(५) विशुद्ध चक्र—कन्ठस्थान में रूप वर्ण ऊर्द्ध मुख षोड्स दल कमल सोलह वर्णों वाला है।

(६) आज्ञाचक्र—भ्रमध्य में श्वेत वर्ण ऊर्द्ध मुख द्विदल कमल है।

नाडी—लिंग मूल में ऊपर नाभि के कुछ नीचे कन्द के सदृश पक्षी के अण्डे का आकार का समस्त नाड़ियों का उत्पत्ति स्थान है। यहां से समस्त नाड़ियां चल कर सारे शरीर में फैली हैं। यह कुल नाड़ियां बहत्तर हजार हैं जिनमें से मुख्य बहत्तर ही हैं और केवल वायु प्रवाहिनी दश ही हैं।

(१) दूड़ा नासिक के बाम भाग (२) पिंडाला नासिका के दक्षिण भाग में तथा (३) सुषुम्णा दोनों के मध्य भाग में है। यह तीनों नाड़ियां मूलाधार चक्र की कर्णिका त्रिकोण से उत्पन्न हुई हैं। मूलाधार चक्र पांच नाड़ियां और निकली हैं (४) गांधारी बाम नेत्र में (५) हस्ति जिव्हा दक्षिण नेत्र में (६)

पूषा दक्षिण कर्ण में (७) यशस्विनी बाम कर्ण में (८) अलम्बुषा मुख में है। लिंग देश में (९) कुहू और उस के मूल स्थान में (१०) शंखिनी दो नाड़ियां और हैं। इस प्रकार दश नाड़ियां हैं।

वायु—प्राण, अपान, समान, उदान, ब्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय दश वायु शरीर में है।

(१) प्राण—हृदय में रहता, श्वास के साथ बाहर आता जाता तथा आन्द को परिपक्व बनाता है।

(२) अपान—मूलाधार में रहता तथां मल मूत्र के बाहर निकालने का काम करता है।

(३) समान—नाभि में रहता है तथा शरीर को शुष्क तथा यथास्थान रखने का काम करता है।

(४) उदान वायु—कन्ठ में रहता तथा शरीर की वृद्धि करता है।

(५) व्यान—सर्व शरीर में रहता तथा समस्त अंग धर्म करता है। यही पांच वायु मुख्य हैं।

(६) नाग—डकार निकालने का काम नाग वायु करता है।

(७) कूर्म—नेत्रों के पलक खोलने का काम करता है।

(८) **कृकल**—छींक करने का काम करता है।

(९) **देवदत्त**—जृंभा करता है।

(१०) **धनन्जय**—सारे शरीर में, प्राणान्त पश्चात् चार घड़ी तक मृतक शरीर में रहता है।

वायु स्थान—(१) प्राण मुख, नासिका, हृदय नाभि में कुण्डलिनी के चारों ओर, पादांगुष्ठ में प्राण वायु रहता है,

(२) अपान-गुह्य, लिंग, उरु, जानु, उदर, पेडू कटि नाभि, में अपान वायु रहता है।

(३) व्यान-कण, नेत्र कंठ, नाक, मुख, कपोल, मणिबन्ध में ब्यान वायु रहता है।

(४) उदान-सर्व सन्धि तथा हाथ पैर में उदान वायु रहता है।

(५) समान-सर्वांग में रहता है।

आसन—रजोगुण का धर्म मन और धर्म की चंचलता है। उसी चन्चलता के नाश करने के लिये आसन पर्यास है। आसन से मन के विक्षेप दूर होते हैं अतएव आसनों का सहारा लेना योगियों को परमावश्यक है।

आसनों की संख्या योन संख्या की भांति ८४ लाख ही है परन्तु उन में से प्रसिद्ध केवल चौरासी ही हैं।

इन चौरासी आसनों में भी दो आसन सबसे प्रसिद्ध और अच्छे हैं [१] सिद्धासन (१) पद्मासन।

सिद्धासन—गुदा और लिंग के मध्य में योनि स्थान से बायें पांव की एड़ी मिला कर रखे और सीधे पांव को लिंग के ऊपर रखे। तत्पश्चात् हृदय के समीप भाग में चिबुक को स्थिर करे और अपनी अचल दृष्टि से भृकुटि के मध्य भाग को देखता रहे इसी आसन को बज्रासन, मुक्तासन, तथा गुप्तासन भी कहते हैं। यह आसन बहत्तर नाड़ियों के मल का शोधक है। यदि मिता हारी होकर दस वर्ष तक इस आसन का अभ्यास करता हुआ आत्माओं का ध्यान करे तो अन्य योगाभ्यास के बिना ही पूर्ण सिद्ध बन सकता है न इस सिद्धासन करते रहने की अवस्था में अन्य आसनों के अभ्यास की आवश्यकता है।

इसी सिद्धासन से उन्मनी कला तथा मूल बन्ध, उड्डीयान बन्ध तथा जालन्धर बन्ध स्वयं ही उत्पन्न हो जाते हैं। अतएव योगाभ्यास के इच्छुओं को चाहिये कि इस सर्वोत्तम सिद्धासन का उपयोग कर लाभ उठावें।

पद्मासन—बाम जंघा पर सीधे दाहिने चरण को और सीधे जंघापर सीधे बाम चरण को स्थापित

करो फिर सीधे हाथ की पृष्ठ भाग की ओर से बाम जंघा पर स्थित दक्षिण चरण के अंगुष्ठ को दृढ़ता से ग्रहण करो तथा हृदय से चार अंगुल के अन्तर पर चिबुक को रख कर नासिका के अग्र भाग को देखो बस यही पद्मासन है। यह पद्मासन समस्त शारीरिक व्याधियों का नाशक है। यदि इस पद्मासन को करता हुआ मनुष्य चित्त में अपने इष्ट देव का ध्यान करे तथा अपान वायु को ऊपर को चढ़ावे तथा प्राण वायु को नीचे करे तो मनुष्य को शक्ति के प्रभाव से आत्म ज्ञान मिलता है। क्योंकि अपान और प्राण के मिलने से मनुष्य को कुन्डलनी का बोध होता है अर्थात् एक प्रकार का प्रकाश सा दृष्टिगोचर होता है फिर सुषुम्ना मार्ग से प्राण ब्रह्म रन्ध्र में जा पहुंचता है जिस से चित्त में स्थिरता आ जाती है और उससे आत्म ज्ञान प्राप्त होता है।

उपर्युक्त सिद्धासन तथा पद्मासान परमोत्तम और श्रेष्ठ हैं। इनके अतिरिक्त और भी कुछ मुख्य आसन हैं जिनका वर्णन करना हम आवश्यक समझते हैं।

सिंहासन—अंड कोष के नीचे सीवनी नाड़ी के बाम पार्श्व में दक्षिण गुलफ को तथा दक्षिण

पार्श्व में बाम गुल्फ को जमावे तथा दोनों जानुओं पर हथेली की ओर से हाथों को स्थापित कर नासिक के अग्र भाग को देखे। बस यही सिंहासन है।

इस आसन को योगीजन बहुधा किया करते हैं क्योंकि इसके अभ्यास से योगी तीनों बंधों को प्राप्त कर एक प्रकार का अद्‌भुत प्रकाश सा पाता है।

भद्रासन—अंडकोष के नीचे सीवनी नाड़ी के बाम और गुल्फ को और दाहिनी ओर गुल्फ को स्थापित करके दोनों पदों को भुजाओं से दृढ़ बांधकर छाती दोनों हाथों के तलों को इस प्रकार रखे कि उंगलियां मिली रहें। बस यही भद्रासन है।

चूंकि इस आसन का अभ्यास महात्मा गोरक्षनाथ ने किया था इसी कारण इस आसन को गोरक्षासन भी कहते हैं।

स्वास्तिक आसन—जानु और जंघा के बीच में चरण तल स्थापित कर बैठना।

गो मुखासन—कटि के बाम भाग में दहिना रखना तथा दक्षिण भाग में बाम टखना जमा कर बैठना।

वीरासन—सीधे चरण को बाम जंघा पर और बाम चरण को सीधे जंघा पर जमाकर रखना।

कूर्मासन—दाहिने टखने से गुदा के बाम भाग को और बाम टखने से दक्षिण भाग को दबा कर बैठना।

कुक्कुटासन—दोनों जंघाओं के ऊपर खड़े चरणों को स्थापित कर तथा जानू और जंघाओं के बीच में दोनों हाथों को लगाकर भूमि पर स्थापन करे और आकाश में स्थित रहे।

धनुरासन—दोनों पादों के अंगूठों को हाथ से पकड़ कर कानों तक खींचे।

शवासन—भूमि पर पीठ लगाकर निद्रा के समान सीधा शयन करना शवासन है।

भमूरासन, मत्स्येन्द्रासन, पर्श्चिमतानासन, उत्तानकूसिन आदि अनेक आसन हैं। स्थानाभाव से उनका वर्णन अभीष्ट नहीं हैं। आसनों से शरीर को समस्त व्याधियों का नाश होता है शरीर में फुरती आती है चित्त स्थिर होता तथा मन को डावांडोल होने से रोकता है।

यम नियम—योगाभ्यास के अभिलाषियों को चाहिए कि शुद्ध रहें मन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न होने दें। तथा अहिन्सा, सत्य, चोरी का

त्याग, ब्रह्मचर्य, क्षमा, धैर्य, दया, नम्रता, मिता हार एवं शुचिता इन दस यमों तथा तप, सन्तोष, आस्तिकता, दान, ईश्वर पूजन, सिद्धान्त वाक्य श्रवण, बुद्धि, तप, एवं हवन इन दस नियमों का अवश्य पालन करें।

मिता हार—योगाभ्यास के अभिलाषियों को मधुर भोजन आधा पेट खाना चाहिए तथा चतुर्थान्श जल के लिए तथा चतुर्थान्श प्राण वायु सन्चालन के लिये छोड़ दे। बस वही योगियों का मिता हार है।

पथ्य—गेहूं, चावल, जौ आदि अन्य, दुग्ध, खांड, घी, नमक मिश्री, फल, पांच शाक, बथुआ, मूली आदि। सदैव पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना चाहिए न कि सत्तू भूने चने आदि का।

अपथ्य—करेला आदि कडबे शाक, खट्टे, पदार्थ मिर्च, गुड़ तेल, मांस, दही, मठा, हींग, लहसन, शलगम, गाजर, मदिरा, उड़द आदि मादिक द्रव्यों से बचना उत्तम है।

योगाभ्यास के समय, स्त्री संग, अग्नि, सेवा तथा गमन आदि वर्जित है।

अवस्था विशेष—योगाभ्यासी के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वह तरुण ही हो। बाल हो

अथवा वृद्ध सब ही अवस्थाओं के मनुष्य योगाभ्यास पूर्ण रीत्यानुसार कर सकते हैं। यह भी कह देना परमावश्यक है कि यदि कोई रोग से पीड़ित या दुर्बल मनुष्य हो और वह योगाभ्यास करना चाहे वह भी भली प्रकार आसन कुंभक आदि योगाभ्यास कर सकता है।

प्राणायाम या कुंभक—योगाभ्यास की चार विधियां हैं (१) आसन (२) कुंभक (३) मुद्रा (४) नाद।

आसनों से शरीर की व्याधियों का नाश होता है। इस का थोड़ा सा वर्णन हम पहले कर आये हैं। अब हम योग के मुख्य विभाग कुंभक अर्थात् प्राणायाम का वर्णन करते हैं।

हम पहिले कह चुके हैं कि चित्त-चान्चल्य-निरोध का नाम योग है। अतएव योग सिद्धि प्राप्ति के लिए वह समस्त साधन करने पड़ते हैं जिनसे चित्त की चन्चलता रुके। आसनों से चित्त की निश्चलता में सहायता बड़ी मिलती है। प्राणायाम से भी यही लाभ होता है क्यों कि प्राण वायु के सन्चालन से मन में चान्चल्यु उत्पन्न होता है। प्राणवायु के

निश्चल रहने से मन भी निश्चल रहेगा जिस से योग की सिद्धि प्राप्त होगी। तथा वह स्थिर रूप से अत्यन्त दीर्घ काल तक जीवित रहेगा।

सुषुन्ना नाड़ी में प्राण सन्चालन को उन्मुखी भाषा कहते हैं। इस सन्चालन को रोकने वाला केवल मल है। जब तक नाड़ी मल से व्याप्त है प्राप्त वायु का संचालन नहीं हो सकता है अतएव सब से पहिले मल शोधन की आवश्यकता होती है नाड़ियों के मल शोधन का प्राणायाम यह है कि यदि योगी इड़ा नाड़ी से प्राण वायुकर पान कर यथा साध्य धारण कर फिर पिंगला नाड़ी से छोड़ दे या पिंगला नाड़ी से पान कर यथा साध्य साधन कर इड़ा नाड़ी से प्राण वायु का रेचन कर दे या छोड़ दे। इस प्रकार तीन मास के अभ्यास में नाड़ी मल का संशोधन हो जाएगा।

इस साधन से आत्मा में बड़ी प्रवलता आती है चित्त की समस्त ग्लानियां तथा बिकार नष्ट होते हैं।

काल—प्राणायाम करने के लिये सूर्योदय, मध्यान्द, सूर्यास्त तथा अर्द्ध रात्रि चार समय अत्यन्त श्रेष्ठ हैं और प्रत्येक समय कम-से-कम असली प्राणायाम करें।

प्रकार—योगियों ने प्राणायाम तीन प्रकार के कहे हैं (१) कनिष्ट (२) मध्यम (३) उत्तम।

कनिष्ट—जिस प्राणायाम के करने से पसीना आ जाय अर्थात् जो १२ मात्रा का प्राणायाम हो या जिस प्राणायाम में ४२ विपल लगें उसको कनिष्ट प्राणायाम कहते हैं।

मध्यम—जिस प्राणायाम के करने में कम्पन हो जाय अर्थात् जो २४ मात्रा का प्राणायाम हो या जिस प्राणायाम में ८४ विपल लगे उसको मध्यम प्राणायाम कहते हैं।

उत्तम—जिस प्राणायाम के करने से प्राण वायु ब्रम्ह्म रन्ध्र में पहुंच जाय अर्थात् जो ३१ मात्रा का प्राणायाम हो या जिसके करने में १२५ विपल लगें उसे उत्तम प्राणायाम कहते हैं।

विधि—प्राणायाम करने की विधि वही है जो मल शोधन के लिये कही है। प्राणवायु के चढ़ाने से अपान वायु में एक प्रकार का धक्का सा लगता है। प्राणायाम को उस समय तक बराबर करता रहे जब तक कि प्राण वायु ब्रह्म रंध्र में न पहुंच जाय। यदि प्राण ब्रह्म रंध्र में २५ पल तक ठहर जाय तो प्रत्याहार

होता है, यदि पांच घड़ी ठहर जाय तो धारण और यदि ६० घड़ी ठहर जाय तो ध्यान और १२ दिन ठहर जाय तो समाधि होती है। प्राणायाम करने में शीघ्रता न करे। शनैः-शनैः प्राण वायु का पान तथा रेचन करता रहे। सदैव प्राणायाम को युक्ति युक्त करें। इससे शरीर निरोग रहता है अन्यथा विविध प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

योग-कर्म

योग कर्म छे हैं

(१) धोती—१५ हाथ लांबा, ४ अंगुल चौड़ा वरीक वस्त्र गर्म जल में धोवे। तत्पश्चात् उसको मुख के मार्ग शनैः २ निगले अर्थात् पहिले दिन एक गज तथा दूसरे दिन दो गज इत्यादि। इस प्रकार आमाशय की शुद्धि कर बाहर निकाले। इस प्रकार शोधन से कास, श्वास, प्लीहा, कुष्ट तथा कफ रोग नष्ट होते हैं।

(२) बस्ती—नाभि पर्यन्त नदी जल में बैठ कर एक अंगुल छिद्र सूराख का छै अंगुल बास की नली को चार अंगुल गुदा में प्रविष्ट कर जल चढ़ाय कर निकाले। इस प्रकार शोधन करे। इस कर्म से

बात, पित्त, कफ के समस्त रोग, गुल्म, प्लीहा, जलोदर आदि समस्त रोग नष्ट होते हैं।

(३) नेति—परिमित विस्तार का चिकना डोरा लेकर नाक के सूराख से होकर मुंह में निकाले इस से मुख रोग, कपाल रोग तथा नेत्र रोग नष्ट होते हैं।

(४) त्राटक—एकाग्र चित्त होकर निश्चल दृष्टि से सूक्ष्म पदार्थ उस समय तक अवलोकन करे जब तक कि अश्रुपात न हों। इस से नेत्र रोग तन्द्रा आदि नष्ट हो जाते हैं।

(५) नोलि—कंधे नवा कर पेट को दक्षिण से बाम और बाम से दक्षिण ओर शीघ्रता से हिलाना न्योलि कर्म कहलाता है। इससे मन्दाग्नि का नाश तथा अन्न का पाचन होता है।

(६) कपाल भाँति—लुहार की धोंकनी के समान शीघ्रता पूर्वक प्राणायाम द्वारा रेचन करना। इससे कफ के समम्त रोग दूर होते हैं।

इन कर्मों के करने पश्चात् प्राणायाम में अधिक परिश्रम नहीं होता और शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है अतएव योग के पंडितों ने षट कर्मों पश्चात् ही प्राणायाम करना उचित कहा है।

दिनचर्या—प्रात:काल उठ कर आवश्यकीय बातों से निवृत होकर रमणीक स्थान में कोमल आसन पर बैठ कर ईश्वर और गुरु को मन में नमस्कार करे। तथा अपनी लक्ष सिद्धि के लिये संकल्प करे तत्पश्चात आसनों का अभ्यास कर कर्मांग की पूर्ति करे। फिर प्राणायाम से पूर्व आचमन कर पहिले दिन दस प्राणायाम करे। फिर प्रतिदिन दो चार प्राणायामों को बढ़ाता हुआ अस्सी प्रणायामों तक कर डाले।

प्राणायाम से प्राण बन्धन कर मुद्राओं का अभ्यास करे तथा नाद का स्मरण करे। तत्पश्चात अभ्यास से उठ कर गर्म जल से स्नान करे। मध्यान्ह में भी यही अभ्यास करके पथ्य भोजन कर थोड़ा-सा विश्राम करे। इसी प्रकार सन्ध्या और रात्रि को अभ्यास करे।

प्राणायाम-भेद

प्राणायाम के आठ भेद हैं।

(१) सूर्य भेदन—आसन से बैठकर पिंगला नाड़ी द्वारा बाहर का पवन खींचकर सम्भवतय: उसका निरोध करना और इडा नाड़ी द्वारा शनै: रेचन करना। इससे अस्सी प्रकार के बात दोष नष्ट होते हैं।

(२) उज्जार्यी—मुख संयमन कर पिंगला और इड़ा नाड़ी द्वारा पवन को खींचे फिर उसको पूर्ण निरोध कर इड़ा द्वारा रेचन करे। इससे कफ के दोषों का नाश होता है।

(३) सीतकारी—मुख से आकर्षण कर निरोध पूर्वक नासिका के दोनों पुटों से रेचन करना। इससे स्वरूप-वृद्धि होती है देह बल बढ़ता है।

(४) शीतली—ओष्टों से बाहर जिव्हा निकाल कर शनैः पवन का आकर्षण, पूर्ण रोधन पश्चात नासिका के छिद्रों द्वारा धीरे-धीरे रेचन करना। इसके द्वारा गुल्म प्लीहा आदि रोग ज्वर पित्तक्षुधा तृषा आदि नष्ट होते हैं।

(५) भस्त्रिका—पद्मासन बांधकर मुख का संयमन करे और नासिका के एक छिद्र से वेग से रेचन और पूरक प्राणायाम करे।

(६) भ्रामरी—भ्रमर के समान शब्द सहित कुम्भक प्राणायाम करके भ्रमरी के शब्द सहित उसका रेचन करे।

(७) मर्छा—पूरक प्राणायाम के अन्त में जालंधर बन्ध पश्चात् धीरे २ प्राण वायु का रेचन करे। यह प्राणायाम उत्तम सुख देने वाला है।

(८) **प्लाविनी**—पवन के सारे शरीर को भर कर इतना हल्का करना कि बिना आश्रय के जल में तैरना।

प्राणायाम के अन्य भेद

(१) **रेचक**—सम्पूर्ण प्राण को नासिका छिद्रों से बाहर निकाल कर इस प्रकार प्राण वायु से शरीर शून्य कर रोधन करना रेचक प्राणायाम कहलाता है।

(२) **पूरक**—बाहर की वायु को नासिका के छिद्रों से आकर्षण कर उसी नासिका के छिन्द्रों द्वारा नाडियों को भर देना पूरक कहलाता है।

(३) **कुम्भक**—वायु के शरीर में निरोध या धारण करना कुम्भक प्राणायाम कहलाता है।

अब यदि प्राणायाम के अन्य भेदों को कहा जाय तो पुस्तिका बढ़ जायगी। यहां केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि रेचक, पूरक और कुम्भक प्राणायाम के भी कई-कई भेद हो सकते हैं। इन अभ्यासों के करने वाले योगियों की त्रिलोक में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। इससे राज योग पद भी प्राप्त हो सकता है। कुंभक प्राणायाम से शक्ति रख कुण्डली का बोध होता है और कुण्डली के बोध

से सुषुम्ना नाड़ी कफ आदि बन्धन से मुक्त हो जाती है अर्थात् मोक्ष प्राप्त होता है।

मुद्रा—यह बतलाया गया है कि प्राण वायु का रोधन कर प्राणायाम द्वारा उसको सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश करने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करने से, सुषुम्ना नाड़ी में प्राण प्रवेश से ईश्वरीय कुण्डली कमल की तरह खिल जाती है। उससे चित्त को कोई क्लेश अवलम्ब तथा अनुराग इत्यादि नहीं रहता, न मृत्यु का भय रहता है। योगी के अन्तर्चक्षु खुल जाते हैं और उसको विश्व में होने वाली बातें स्पष्ट दिखलाई पड़ती है।

इसी कुण्डली की जागृति के लिए मुद्राओं के अभ्यास की आवश्यकता है।

योग शास्त्र बेत्ताओं ने मुद्रा के दस भेद कहे हैं- (१) महा मुद्रा (२) महा बंध (३) महाबेध (४) खेचरी (५) उड्डयान (६) मूल बंध (७) जालंधर बंध (८) बिपरीत करणी (९) बज्रोली (१०) शक्ति चालन।

इन दशों मुद्राओं के अभ्यास से मनुष्य को आठ प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो सकती है या यों कहो कि

सिद्धि जो मुद्राओं के अभ्यास से प्राप्त होती हैं वह आठ प्रकार की होती हैं:-

(१) **अणिमा**—संकल्प मात्र से देह का सूक्ष्म करना।

(२) **महिमा**—शरीर को महान स्थूल बनाना।

(३) **गरिमा**—लघु पदार्थ को भारी बनाना।

(४) **लघिमा**—भारी पदार्थ को रुई की तरह हल्का करना।

(५) **प्राप्ति**—समस्त पदार्थों से सामीप्य प्राप्त करना।

(६) **प्राकाम्य**—पृथ्वी में घुसना तथा बाहर निकलना।

(७) **ईशता**—उत्पत्ति, प्रलय तथा पालन का सामर्थ्य।

(८) **वशिता**—पन्च महा भूत को अपने वश में करना।

(१) **महा मुद्रा**—बांये पांव की एड़ी से लिगं और गुदा के मध्य भाग को दबाये और सीधे पांव को इस प्रकार फैलावे कि एड़ी भूमि को स्पर्श करती रहे तथा उगलियां ऊपर को उठी रहें। और

सीधे पांव के अंगूठे को दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से जोर से पकड़े तथा पूरक द्वारा वायु भर कर कुंभक करके उसका रोधन करे तत्पश्चात् उसका शनैः रेचन करें यही महामुद्रा है पहले इस को बामांग से प्रारम्भ करे। तत्पश्चात् इसको दक्षिणागं ले भी करे। जब खूब अभ्यास हो जाय तब इस मुद्रा को छोड़े।

इस महामुद्रा के अभ्यास से पञ्चममहाक्लेष नष्ट होते हैं। तथा उसको किसी पथ्यापथ्य का विचार नहीं रहता। विष आदि अनेक हानि कारक पदार्थ साधारण पदार्थों की भांति पच जाते हैं।

(२) महाबंध—बांये पांव की एड़ी से लिंग और गुदा के मध्य का भाग दबा कर बैठे तथा बांये जंघा पर सीधे पांव को रखें फिर चिबुक को हृदय पर धारण करके पूरक प्राणायाम द्वारा वायु आकर्षण करें। तत्पश्चात् कुंभक प्राणायाम द्वारा उस का पूर्ण रोधन करके धीरे-२ रेचन करे। प्रथम बामांग का पूर्ण अभ्यास होने पर दक्षिणांग का अभ्यास भी खूब करे। जब दोनों ओर के अभ्यास बराबर हो जायं तब इस महाबन्ध मुद्रा को छोड़ दे।

इस महाबन्ध मुद्रा द्वारा इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना तीनों नाड़ियों का संगम होता है और मन की पहुंच बहुत दूर तक पहुंचती है। इस महा मुद्रा के करने से समस्त रोग और क्लेश नष्ट होते हैं।

(३) महाबेध—महा बेध मुद्रा करने की अवस्था में दोनों हाथों पर तलों के सहारे स्थापित करे और इस प्रकार हाथों के सहारे शरीर को उठावे कि महा बेध मुद्रा न खुलने पावे। फिर नासिका के पुटों से वायु ग्रहण कर चिबुक को सीने के पास रख कर कुम्भक प्राणायाम कर चुतड़ों को ताड़ित करे तो प्राण वायु इड़ा और पिंगला दोनों नाड़ियों को छोड़ कर सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश कर जाता है। इस महाबेध मुद्रा के अभ्यास से आठों सिद्धियां प्राप्त होती है तथा इससे वृद्धत्व, कम्पन तथा श्वेतत्व नष्ट होते हैं।

(४) खेचरी—जिव्हा को उलटा फिराकर कण्ठ छिद्रा में प्रवेश करना तथा भ्रकुटी मध्य में निश्चल दृष्टि से देखना खेचरी मुद्रा कहलाता है।

इस मुद्रा के अभ्यास अणिमा आदि समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं यदि सुन्दर स्त्री आलिंगन भी करे तो भी मन चलायमान नहीं होता।

(५) **उड्डीयान**—नाभि के ऊपर और नीचे के भाग को तान कर पीठ से लगावे ताकि प्राण वायु बंध कर सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट हो जाय।

(६) **मूल बंध**—ऐड़ियों से लिंग और गुदा के मध्य को पीड़ित कर के गुदा का संकोचन कर अपान वायु को ऊपर की ओर आकर्षण करे वही मूलबंध कहलाता है। गुदा को ऐड़ी से दबाकर अपान वायु को बल के द्वारा आकर्षित करना जिससे प्राण वायु सुषुम्ना में प्रविष्ट हो जाय।

(७) **जालन्धर बन्ध**—कण्ठ विल को नीचा करके चिबुक को छाती से ४ अंगुल के अन्तर पर स्थापित करने का नाम जालंधर बंध है।

(८) **बिपरीत करणी**-तालू नीचे करना और नाभि ऊंची करना विपरीत करणी मुद्रा है। इसका स्वरूप यह कि पद्मासन दृढ़ कर योगी को चाहिये कि दोनों हाथों और शिर के सहारे उलटा खड़ा हो जाय अर्थात् पद्मासन को अन्तरिक्ष में उठावे। कभी पद्मासन खोले और पांव को सीधे करे और कभी पद्मासन बांध ले। इस प्रकार कुण्डली को खोल देता है।

(९) **बज्रोली**—लिंग संकोचन कर क्षत होने वाले वीर्य को ऊपर को आकर्षित करने से बज्रोली मुद्रा की सिद्धि प्राप्त होती है।

प्रथम तो खलित होते हुए वीर्य को ही आकर्षित करे और यदि खलित हो जाय तो स्त्री के रज सहित खलित वीर्य को आकर्षित करे।

(१०) **शक्ति चालन**—दोनों हाथों की अंगुली बांध कर बाहु मध्य भाग हृदय में दृढ़ स्थापित कर पद्मासन बांधे तथा जालंधर बंध करके ज्योतिस्वरूप का ध्यान करे फिर अधो द्वार रोक कर कुम्भक प्राणायाम करे। इस प्रकार अभ्यास करते रहने से कुण्डली का प्रबोध होता है परन्तु अभ्यास बहुत दिनों तक करना होता है।

केवल यही दस मुद्रा हैं जिन का ऊपर वर्णन किया गया है। योगी जनों के बज्रोली मुद्रा के दो भेद और किये हैं (१) सहजोली (२) अमरोली।

समाधि—प्राणायाम की अधिक मात्रा होने से, जीव के सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होने से, समाधि होती है। समाधि से ही मोक्ष और परमात्मा का दर्शन मिलता है। जीव शोक हर्ष से छूट जाता है।

उसमें कोई बिकार, इच्छा आदि नहीं रहती। उसी समाधि का हम थोड़ा सा यहां वर्णन करते हैं। प्रथम सिद्धासन बांधे फिर दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों कानों के छिद्र, तर्जनियों से नेत्र, मध्यामाओं से नासिका छिद्र तथा अनामिका और कनिष्ठकाओं से मुख को रोके तथा आर्धक मुख द्वार से पूरक प्राणायाम कर प्राणवायु को हृदय कमल में धारण करके ऊपर को चढ़ाना तथा उस को सहस्त्र दल कमल में धारण करना समाधि का स्वरूप है। इस समाधि का अभ्यास करते हुए योगी को समाधि की अवधि को सम्भवतय: बढ़ानी चाहिए। इसी अभ्यास से योगी अपान वायु सम्मिलित प्राण वायुमय हो कर सर्व दृष्टा और त्रिकालज्ञ हो जाता है।

अभ्यास करते-करते जब कानों में घंटा आदि नक्कारे की ध्वनि आने लगे तब योंग सिद्धि की पूर्ति समझनी चाहिए।

त्रिकालज्ञ—योग के द्वारा ही मनुष्य को त्रिकालज्ञता प्रास हो सकती है। समाधि की अंतिम श्रेणी में अनेक नाद होते हैं। उसके आन्तरिक चक्षु खुल जाते हैं और ज्ञान की मात्रा बढ़ जाती है। और

उसको हर समय का हाल मालूम होने लगता है। संसार में होने वाली घटनायें उस को इस प्रकार दृष्टिगोचर होने लगती हैं मानों वह उसके समक्ष ही घट रही हों। किसी बात का ध्यान और प्रश्न करते ही उचित उत्तर उनके ध्यान में आ जाता है। भूत, भविष्यत तथा वर्तमान के समस्त ज्ञात होने लगते हैं।

परन्तु समाधि में पूरक रेचक प्राणायाम बहुत ही धीरे-२ करना चाहिए अन्यथा अनेक प्रकार के रोगों के होने का भय है। यहां पर धीरे-धीरे की व्याख्या कर देना भी परमावश्यक है। नासिका छिद्र पर यदि रूई का एक फोया रख लिया जाये तो रेचन या पूरक विधि से वह फोया रहने न पावे। इसी को युक्ति-युक्त विधि भी कहते हैं। इस युक्ति युक्त विधि का ध्यान रखना परमावश्यक है। जिस प्रकार सिंह धीरे-२ अपने पालनकर्ता के बश में आ जाते हैं उसी प्रकार जीव भी बहुत धीरे-२ वशीभूत होता है परन्तु जिस प्रकार सिंह तनिक भी असावधानी होने से अपने पोषक का सर्वनाश कर देता है उसी प्रकार जीव भी अयुक्तियुक्त अभ्यासी को अनिष्ट कर और

पागल बना देता है वह हत्बुद्धि हो जाता है। उसका मस्तिष्क फिर जाता है और पागलों की भांति सबको दुखदाई होता है।

इस प्रकार के पागल बहुत से दुनियां में देखे जाते हैं जो इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। यद्यपि वह हत्बुद्धि और पागल होते हैं परन्तु फिर भी उनको अनेक प्रकार की विचित्र सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। उनके भाषण में शक्ति होती है उनके मुख से निकली हुई अनेक बातें सत्य बैठती हैं परन्तु उनकी अनेक प्रकार के रोग सताये रहते हैं जिनके कारण उनकी आत्मा अशान्त रहती है।

पाठकों को भी ऐसे पागलों से अधिक काम पड़ा होगा। यह बात असत्य नहीं है अयुक्ति-युक्त योग से कई अभ्यासियों को पागल और रोगी हो जाते हुए स्वयं हमने देखा है अतएव इस विषय से खूब सावधान रहने की आवश्यकता है।

सिद्ध लक्षण—योगाभ्यासी को सिद्धि के लक्षण अवश्य ध्यान में रखने की आवश्यकता है क्यों कि जिस हेतु से वह अपनी समस्त आयु व्यतीत करता है जब तक उसकी पूर्ति के लक्षण न मालूम हों

योगाभ्यासी के हृदय की आशा कमल नहीं खिलता। शरीर में कृशता, मुख पर प्रसन्नता नेत्रों में निर्मलता व आलोक नाद का विकास नीरोगता, धातु विजय जठराग्नि प्रदीपन, शुद्ध नाड़ियां होना बस यही योग सिद्धि के जीते जागते लक्षण हैं।

प्रत्याहार—चक्षु, जिव्हा, नासिका, कर्ण त्वचा पन्चेन्द्रियों का विषय त्यागना प्रत्याहार कहलाता है। चक्षु का विषय रूप देखना जिव्हा का विषय रस स्वादन नासिक का गंध, कर्ण का शब्द सुनना तथा त्वचा का विषय स्पर्श करना है आसन प्राणायाम करके इन विषयों को त्यागन प्रत्याहार है। अर्थात् मन को विषय सम्बन्ध हटाना प्रत्याहार कर्म है।

अब प्रत्याहार की विधि लिखते हैं। खेचरी मुद्रा करके प्राणायाम वायु को ब्रह्मस्थान तक पहुंचावे तथा शिर में सहस्त्र दल कमल से बिशुद्ध चक्र गिरती हुई प्राण वायु को ऊपर चढ़ाय कर नासिक के अर्द्ध विवर में स्थापित करे। उस अर्द्ध विवर में जिव्हा प्रवेश करना मुख को ऊपर कर सहस्त्रदल कमल में प्राण वायु प्रास कुंडलिनी का ध्यान तथा कुंडलिनी का सहस्त्र दल कंमल में प्रवेश करना।

इससे शरीर निर्मल, सुन्दर और समस्त रोगों से रहित रहता है। और वह बहुत काल तक जीवित रहता है। इसके अतिरिक्त और भी बिधियां हैं जिनका वर्णन करना यहां परमावश्यक है।

अपान वायु को ऊपर उठाकर धीरे-धीरे बाह्य वायु का पूरक प्राणायाम करने से योगी सदैव सुन्दर युवक और तरुण बना रहता है।

जिव्हा की सहायता से तालु के छिद्रों द्वारा पूरक प्राणायाम करने से छै महीने में ही समस्त रोगों का नाश होता है।

कण्ठ के ऊपर चन्द्रकलामृत को रोक कर नासिका के ऊर्द्ध विवर से पूरक करें तथा समस्त द्वारों को रोक कर प्राणायाम वायु का पूरक करके ऊर्द्ध मुख होकर भूमि में उत्तान लेट जाय तथा पैरों को भी ऊपर उठादे। इस प्रकार विधि के अभ्यास से मृत्यु की कदापि आशंका नहीं रहती। योगी को अपनी इच्छानुसार देह त्याग की शक्ति हो जाती है।

जो जिव्हाग्र से रंधू अचेतन कर अपने इष्ट देव के ध्यान का अभ्यास करता है उसको स्वाभाविक कविता का सामर्थ्य प्राप्त होता है। उसकी स्मरण

शक्ति अति तीब्र और प्रबल हो जाती है। और जिव्हाग्र से राजदूत के छिद्र अचेतन कर रोकने से समस्त नाड़ियों के मुख रूक जाते हैं।

जिव्हा को लम्बिका के साथ चुम्बन का यथा सम्भव खूब अभ्यास करे। ऐसा अभ्यास करने से योगी को खट्टा, मिट्ठा, चटपटा, नमक, घृत, दुग्ध आदि समस्त रस स्वयं जीव्हा में मालूम होने लगते हैं। योगी की देह कान्चनमयी और परम सुन्दर हो जाती है। उसमें इतनी शक्ति आ जाती है कि स्मरण मात्र से ही समस्त इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है।

प्रत्याहार के दो तीन वर्ष के अभ्यास में वीर्य ऊपर चढ़ जाता है जिससे सारा शरीर सौंदर्यमय दृष्टिगोचर होता है तथा योगी को समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।

धारणा—आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार का अभ्यास करने पश्चात् धारणा का अभ्यास करना उचित है। मन तथा प्राण वायु को स्थिर कर चन्च तत्वों को वशीभूत करना धारण कहलाता है। धारणा का तत्व से सम्बन्ध रखने के कारण उसके पांच भेद कहे जाते हैं।

(१) पृथ्वी धारणी—(लः) पृथ्वी तत्व का हृदय में ध्यान करके प्राण वायु को निश्चल बनाना। इस धारण से जल पवनादि सबके स्तम्भन की सामर्थ्य होती है।

(२) वारुणी धारणा—(वं) जल तत्व का अपने अधिष्ठाता के साथ ध्यान करके भावना करना तथा प्राण को लीन करना इस धारण से प्रत्येक वस्तु को जल समान करने की शक्ति प्राप्त होती है।

(३) आग्नेय धारणा—(रं) आग्नेय तत्व का रुद्र के साथ ध्यान करते हुए अपने प्राण को लीन करके मन और प्राण को निश्चल बनाना। इस धारणा के अभ्यास से उसमें बिना अग्नि में अग्नि उत्पन्न करने तथा अन्य वस्तुओं को अग्नि रूप में परिवर्तन करने की सामर्थ्य होती है। उसके शरीर को भी अग्नि नहीं जला सकती क्योंकि इस अभ्यास से अग्नि पर जय होती हैं।

(४) वायवी धारण—(यं) वायु तत्व सहित अपने इष्ट देव का भ्रूमध्य में ध्यान कर प्राण को निश्चल बनाकर भावना करना। इस धारणा से आकाश में गति प्राप्त होती है। तथा वस्तु मात्र को घुमाने की शक्ति आ जाती है।

(५) नमो धारणा—(हं) नम तत्व के साथ ब्रह्म रन्ध्र में अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए अपने प्राण को निश्चल बनाना। इस धारणा के अभ्यास से मोक्ष द्वार खुल जाता है तथा सर्व शोषण सामर्थ्य प्राप्त होता हैं। इन धारणाओं का अभ्यास कर योगी को अद्‌भुत शक्तियां और सिद्धियां प्राप्त करनी चाहिए।

ध्यान—ईश्वर का ध्यान सगुण और निर्गुण दोनों तरह से हो सकता है।

किसी पवित्र और शुद्ध एकान्त स्थान में आसन बांधकर एकाग्र चित्त होकर नासाग्र देखकर अपने इष्ट देव का कुंडलनी सहित ध्यान करना ध्यान कहलाता है।

ध्यान नौ स्थानों का किया जाता है। (१) मूलाधार चक्र (२) स्वाधिष्ठान (३) मणिपुर (४) विशुद्ध (५) अनाहत (६) घंटिका मूल (७) लम्बिका का स्थान (८) आज्ञा चक्र (९) शून्य स्थान।

ईश्वर दर्शन—प्राण वायु का पांच घड़ी दिन दिन तक व्यापार रोकना धारणा ६० घड़ी तक रोकना ध्यान तथा बारह दिनरात्रि तक प्राण वायु को रोकना समाधि कहलाता है। समाधि में ही जीव और परमात्मा

एक हो जाते हैं। मनुष्य समस्त बन्धनों से छूट जाता है। इसी का नाम मोक्ष या मुक्ति है। भूख, प्यास, ऊष्ण, सुख, दु:ख आदि द्वन्द्वों से कोई पीड़ा या उद्विग्नता नहीं होती न शरीर पर बाह्य बातों का कोई प्रभाव पड़ता है। जादू, मृत्यु का भी कोई असर नहीं है। शरीर त्याग उसकी इच्छा पर होता है साक्षात ज्योति: स्वरूप का प्रकाश दृष्टि गोचर होता है।

योग शास्त्र का विषय इतना गहन तथा गम्भीर है कि यदि इस पर सहस्त्र बड़े-बड़े पृष्ठों के ग्रन्थ लिखे जाय तब भी पूर्णतया समझ में न आवे। जिनको सविस्तार योग शास्त्र देखने तथा-मनन करने की इच्छा हो वह गोरक्ष पद्धति, योग दर्शन हट योग प्रदीपिका आदि योग के ग्रंथ देखें।

मेस्मेरेजिम तथा हिप्नोटिज्म

मेस्मरेजिम तथा हिप्नोटिज्म भी योग शास्त्र का एक अंग है। यद्यपि इसकी उत्पत्ति योरुप से हुई है परन्तु इस शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से भारत में रहा है।

इतिहास—अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप निवासी नक्षत्र आदि के उस सम्बन्ध से जो

उनका प्रकृति तथा मानस एवं प्रत्येक जीवधारी के साथ है निरन्तर अनभिज्ञ थे। वह यह न जानते थे कि जीव धारियों के शारीरिक रंग पट्टों पर आकाश मण्डल का कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं यद्यपि इस बात को हमारे भारतवासी अत्यन्त प्राचीन काल में भी जानते थे। सन् १७-३१ ईसवी में आस्ट्रिया देश में एक मनुष्य एन्थोवी मेस्मर नामक उत्पन्न हुआ। इसी मनुष्य ने अपनी विद्या तथा विद्वता से यह बात सिद्ध की कि नभोमण्डल के तारे नक्षत्र आदि की जीव धारियों के शारीरिक रंग पट्टों तथा मन आदि से घनिष्ट सम्बन्ध है तथा प्रकृति में आकर्षण शक्ति विद्यमान है सर्वत्र एक प्रकार का आलोक छाया हुआ है जिसका नाम औडायल है। और उसकी उत्पत्ति के लिये शरीर बैटरी है और इसी शरीर रूपी बैटरी से यह आलोक हर समय निकल कर फैलता तथा अपना प्रभाव दिखलाता है। इस शारीरिक बैटरी को उचित रीति से काम में आने-औडायल को पैदा करने की विधि आगे लिखी जायगी। इस मानसिक विद्या की उत्पत्ति पर तमाम यूरोप विस्मयान्वित तथा चकित हो उठा। मेस्मर साहब ने

अपनी मानसिक करामातों तथा सिद्धियों से यूरोप को बड़े-२ लाभ पहुंचाये जिनका वर्णन मेस्मर की जीवनी में अच्छे प्रकार से किया गया है। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तथा उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मेस्मर साहिब के नवीन और अनुपम अविष्कार का समस्त यूरोप में डंका बज उठा। इंग्लैन्ड देश में ला फौन्टीन साहिब ने इस मैस्मरेजिम की कुछ सिद्धियों दिखलाई। लोग जादू समझ कर एक बार तो भय-भीत हो उठे। परन्तु अन्ततः मेस्मरेजिम के नियम और तत्व समझाने पर लोगों को थोड़ा बहुत सन्तोष हुआ। यह तत्व कुछ डाक्टर ब्रेड की समझ में अच्छी प्रकार आये। उनको इस विद्या में परदर्शता प्राप्त करने की इच्छा हुई। अतएव उन्होंने इस में पूर्ण अभ्यास किया। और थोड़े ही समय में आश्चर्यकारक उन्नति कर डाली। जिस प्रकार मेस्मर साहब के नाम के साथ इस विद्या का नाम मेस्मरेजिम पड़ा उसी प्रकार ब्रेड नाम के पीछे ब्रेडिज्म भी इसी विद्या को कहते हैं और चूंकि इस में अधिकतर कार्य नेत्रों से लिया जाता है इस लिये इस विद्या को हिप्नोटिज्म के नाम से भी पुकारते हैं। मेस्मरेजिम

के अविष्कार का कारण केवल यह था कि मेस्मर साहिब बिना किसी औषधि आदि के चिकित्सा करने की विधि के बहुत दिनों से अनुसंधान में थे। परमात्मा किसी का परिश्रम व्यर्थ नहीं जाने देता। इस योग विद्या के अंग में उसको मन-मानी सफलता प्राप्त हुई। उसने फ्रान्स, अस्ट्रिया आदि अनेक देशों में घूम कर केवल हाथ फेर कर या फूंक मार कर बड़े-बड़े भयानक रोगों को नष्ट प्रायः कर दिया जिसके कारण आज भी मेस्मर साहिब का नाम जीवित है और ईश्वरेच्छा से वह सदैव अमर और मेस्मरेजिम के इतिहास में सुवर्णक्षरों से लिखा रहेगा।

आकर्षण शक्ति—ईश्वर ने प्रकृति के समस्त पदार्थों में एक ऐसी शक्ति उत्पन्न की है जो एक दूसरे को आकर्षण करती रहती है परन्तु यह बात दूसरी है कि किसी पदार्थ में शक्ति कम है और किसी में अधिक। जिस पदार्थ में शक्ति अधिक है वह कम शक्ति वाले पदार्थ को अपनी ओर खींचता है। चुम्बक शक्ति के कारण चुम्बक में लोहे की सुई चिपक जाती है। कबूतरों के परों को बार-२ शिर के बालों में लगाने से आकर्षण शक्ति बढ़

जाती है। नभोमण्डल के समस्त नक्षत्र और तारे आकर्षण शक्ति की सहायता से ही स्थित हैं। ईंट या गेंद चाहे जितना ऊंचे फैंके जावें अन्तत: पृथ्वी की अधिक आकर्षण शक्ति उनको अपनी ओर खींच लेती है। वह पृथ्वी पर ही गिर पड़ते हैं। बिल्ली के नेत्रों की ज्योति के मारे हमारे नेत्र चुंध्या जाते हैं। इसी आकर्षण शक्ति की महिमा है जो आज मेस्मरेजिम या हिप्नोटिज्म का इतना बोल-बाला है। मेस्मरेजिम में मनुष्य को इसी आकर्षणशक्ति के उत्पादन तथा बुद्धि की चेष्टा करनी पड़ती है।

आयोडायल या आलोक—यह आलोक सर्वत्र फैला हुआ है। प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ, तथा जीवधारियों में यह विद्यमान है। मनुष्य के शरीर में इस आलोक का अधिक भाग पाया गया है। यह आलोक चलता फिरता तथा ईश्वरीय नियमों के आधीन हैं। नभोमण्डल के समस्त तारों नक्षत्रों का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। अतएव यह आलोक न्यूनाधिक परिमाण में सब जगह विद्यमान है।

मेस्मरेजिम से लाभ—इस विद्या से आज तक जितने लाभ हुए हैं उनका वर्णन करना अनावश्यक

है। बहुधा देखा गया है कि केवल हाथ फेर कर या फूंक मार कर अनेक रोगियों को आराम हुआ है। क्लोरोफार्म का काम भी मेस्मरेजिम से लिया जाता है। मनुष्य के हृदय की छुपी हुई बातों के प्रकाश में इस विद्या से विशेष सहायता मिली है। भविष्य में होने वाली बातों का इसके द्वारा खूब पता चला है। प्राचीन समय की बातों उद्धघाटन में मेस्मरोजिम ने पूरा साथ दिया है घर बैठे हुए अन्य स्थान में होने वाली बातें प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगती हैं। अन्य स्थान पर रहने वाले मनुष्य से बातें करना दूसरों के मन की बाते बतलाना, मनुष्य को बेबस कर देना, बन्द किताबें पत्रादि पढ़ लेना, आन्तरिक रोगों को देखना समझना तथा उनकी चिकित्सा आदि ऐसी बातें हैं जिनको सहस्त्रों मनुष्यों ने अपनी आंखों से स्वयं देख होगा क्यों कि आज भारतवर्ष में भी इस विद्या के जानकार मौजूद हैं और जो अपनी कार्य कुशलता के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त और भी अगणित लाभ हैं जिनका यदि सविस्तार वर्णन किया जाय तो एक अच्छी खासी पुस्तक तैयार हो जाय परन्तु हमको यहां सूक्ष्मता का व्यवहार करना

है। एक बात अवश्य है कि जो लोग इस विद्या में पारदर्शता प्राप्त कर लेते हैं उनको मेस्मरेजिम से अनुचित लाभ न उठाना चाहिए क्योंकि प्राय: देखा गया है कि अभ्यास पूर्ण होते ही लोग अपने अनुचित और पैशाचिक विचारों को पुर्ति के लिये अनेक दूषित और निन्दनीय कार्य कर बैठते हैं जो सर्वथा अनुचित है। मेस्मरेजिम में दो मनुष्यों की आवश्यकता होती है। एक आमिल और दूसरे मामूल की।

आमिल—मेस्मरेजिम का अभ्यास करने वाला आमिल कहलाता है।

मामूल—जिस पर मेस्मरेजिम का अभ्यास किया जाय वह मामूल कहलाता है। मामूल एक व अधिक संख्या में हो सकते हैं। अब हम यह बात बतलाना आवश्यकीय समझते हैं कि कौन मनुष्य आमिल हो सकता और कौन मामूल तथा किन मनुष्यों को मेस्मरेजिम का अभ्यास न करना चाहिये।

आमिल के गुण—यों तो कहने के लिए प्रत्येक मनुष्य मेस्मरेजिम का अभ्यास कर सकता है परन्तु उसका आरोग्य होना परमआवश्यक है। यदि आमिल उदार चरित, सन्तोषी, सत्यवादी, धर्म परायण,

ईमानदार, शुद्ध चरित्र, पवित्रहृदय, शान्त, ईश्वरवादी, तथा प्रेमासक्त, हो तो उस मेस्मरेजिम में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो सकती है। यदि आमिल वैज्ञानिक तथा सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता हो तो उसको इस विद्या अभ्यास में पूर्ण सहायता मिल सकती हैं। अमिल को चाहिये कि वह सदैव शुद्ध, पवित्र रहे, व्यायाम करे तथा हल्का भोजन करे और सम्भव कम सोवे। सदैव प्रसन्न रहे तथा ऐसी बातों तथा झगड़ों से बचता रहे जिनके कारण मन को क्लेश और सन्ताप उठाना पड़े। ऐसे मनुष्यों की संगत से बचे जिनके पास बैठने से दूषित कार्यों में प्रवृति हो। क्योंकि ऐसी बातों के बुरे प्रभाव से हृदय कलंकित दूषित तथा चन्चल रहता है कि जिसके कारण इस विद्या की प्राप्ति में अत्यन्त बाधायें उत्पन्न होती हैं। मांस-भक्षण तथा हिंसा आदि से भी घृणा करनी चाहिये। हम यह नहीं कहते कि जिस मनुष्य में उपर्युक्त गुण न हों वह मेस्मरेजिम में परांगता प्राप्त ही नहीं कर सकता वरन् इसका तात्पर्य यह है कि शुद्ध और धर्मशील आमिल मेस्मरेजिम में शीघ्र ही दक्षता प्राप्त करता है तथा उसकी प्रकृति अच्छे

कामों की ओर रहने के कारण संसार को लाभ ही लाभ होता है। बुरी प्रकृति के मनुष्यों से संसार को हानि ही हानि होती है।

मामूल के गुण—समस्त शरीरों में आकर्षण शक्ति है परन्तु किसी में कम और किसी में अधिक अतएव ऐसे शरीर वाला मनुष्य मामूल बन सकता है जिसमें आकर्षण शक्ति कम हो। जो आमिल की अपेक्षा कम अवस्था वाला हो। जो खूब सुन्दर प्रेममय, सुशील, विश्वासी, तथा धर्मशील हो। नम्र तथा शुद्ध चरित्र हो, जिस का हृदय कोमल हो वह मामूल बनने के लिये बहुत ही उपयुक्त है यदि मामूल के लिये स्त्री या लड़का हो तो और भी अच्छा।

कम उम्र के बच्चों तथा स्त्रियों पर मेस्मरेजिम का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि उनका हृदय अत्यन्त कोमल होने के कारण आकर्षण शक्ति का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। सौन्दर्य भी इसमें मुख्य विषय है या कम से कम मामूल की सूरत शकल ऐसी हो जो नेत्रों को भली मालूम होने वाली हो ऐसा होने से मेस्मरेजिम के अभ्यास में खूब चित्त लगता है और शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती

है। इसी कारण मेस्मरेजिम शास्त्रवेत्ताओं ने पत्नि को मामूल बनने के लिये परम उपयोगी और अत्यन्त उपयुक्त बतलाया है। पत्नि के बराबर अपने पति की आज्ञापालक भी कोई नहीं होता और पत्नि पर प्रेम और सौन्दर्य के कारण थोड़े से ही परिश्रम में आकर्षण शक्ति कूद कर अपना प्रभाव दिखलाती है।

अभ्यास स्थान—मेस्मरेजिम के अभ्यास के लिये किसी शुद्ध, और पवित्र स्थान को काम में लावें। यदि सुगन्धि भी हो तो बहुत अच्छा। स्थान पर अन्धकार न हो। रात्रि के समय भी रोशनी का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिये। स्थान एकान्त हो, शोर वगैरा न होता हो। रमणीक, मनोहर तथा सुन्दर स्थान में आमिल और मामूल दोनों का मन अभ्यास में अच्छे प्रकार लगता है। मेस्मरेजिम का प्रभाव तीन तरह डाला जाता है। (१) दृष्टि से (२) हाथ के द्वारा (३) किसी चमकदार चीज से।

अब हम वर्णन करना चाहते हैं कि आकर्षण शक्ति के बढ़ाने की रीति क्या है परन्तु इससे भी पहिले आमिल को चाहिए कि वह अपने मन के चान्चल्य को नाश करने का प्रयत्न करे। यद्यपि इस विषय को

पूर्ण व्याख्या और बहस योगाभ्यास में हो चुकी है और योगाभ्यास में बतलाये हुए नियमों से उत्तम नियम मनकी स्थिरता का नहीं परन्तु फिर भी हम इसके विषय में थोड़ा सा लिखना आवश्यक समझते हैं।

मन की स्थिरता—यह भी योगाभ्यास के नियमों में से एक है। इसकी रीति यह है कि किसी शुद्ध पवित्र निर्जन तथा नीरव स्थान पर पालथी मार बैठे और अपनी नासाग्र को दृष्टि जमा कर देखे तथा बाह्य वायु को दहिने नथने द्वारा खींच कर यथा सम्भव उसको रोके तथा धीरे-धीरे उसका रेचन करे। साथ ही हृदय में ईश्वर का ध्यान कर मन को चारों ओर के विचार से हटावे। इस प्रकार के प्राणायाम के अभ्यास से बुरे विचारों का हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा मन में स्थिरता, शक्ति तथा बल उत्पन्न हो जाता है।

आकर्षण शक्ति बढ़ाना

मेस्मेरिजिम के अभ्यास की चाबी केवल आकर्षण शक्ति है। आकर्षण शक्ति की वृद्धि से ही आमिल करामात दिखा सकता है और यही कारण है कि मेस्मेरिजिम सीखने वाले की स्थिरता के पश्चात्

आकार्षण शक्ति के बढ़ाने का पूर्ण अभ्यास करना चाहिए। जिस मनुष्य की आकर्षण शक्ति जितनी बढ़ी हुई होगी वह उतना ही होशियार सुदक्ष तथा प्रभावशाली मनुष्य हो सकेगा।

(१) **दृष्टि**—नेत्रों की दृष्टि द्वारा मामूल पर प्रभाव डाल कर उसे वशीभूत किया जाता है अतएव पहिले दृष्टि की आकर्षण शक्ति बढ़ाने की तरकीव लिखते हैं। पहिले एक सफेद कागज पर एक पैसे या अधन्ने के बराबर काली स्याही का चिन्ह बनाओ। स्याही खूब तेज और एक सी हो तथा उसको एकान्त और नीरव कमरे में उत्तरी दीवार पर इस प्रकार टांग दो कि वह नेत्रों की सीध से ऊँचा नीचा न हो ताकि उसके देखने में गरदन को न उठाना पड़े और न झुकाना पड़े अभ्यास के लिये प्रातःकाल से उत्तम समय और कोई नहीं है। अब पालथी मार कर एक दृष्टि से उस चिन्ह को टकटकी लगा कर देखना आरम्भ करे। और जब तक आखें देखते-२ थक न जांय, नेत्रों से जल न निकल पड़े तब तक बराबर देखता रहे। इस ने नेत्रों को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। हां नेत्रों पर जोर पड़ने से पानी अवश्य

निकल पड़ता है परन्तु इससे कोई हानि नहीं होती वरन् इससे सरासर लाभ ही लाभ है। नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है परन्तु दृष्टि जमाते समय इस बात का खास ध्यान रखो कि श्वास वेग गति से चलने न पावे और पलक बार-बार न मिचने पावें।

इस कार्य के अभ्यास में स्थिरता, शान्ति तथा सन्तोष की अधिक आवश्यकता है। पहिले ही दिन दो तीन मिनट की टकटकी से ही जल निकल आवेगा परन्तु साहस न छोड़ना चाहिये चित्त को एकाग्र रखो प्रतिदिन इसका अभ्यास करना चाहिये। धीरे-धीरे आपकी महारत यहाँ तक बढ़ जाएगी कि आप एक एक घंटे दो दो घंटे तक देखने का अभ्यास कर सकते हैं। जब तक ऐसा अभ्यास न हो तब तक कदापि न छोड़ें।

जब काले चिन्ह पर आप की दृष्टि अच्छे प्रकार जम जायगी और ज्यों-ज्यों आप की दृष्टि पड़ने का समय बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों आप को वह काला चिन्ह पहिले कई रंगों में परिवर्तित होता हुआ दिखलाई पड़ेगा फिर धीरे-धीरे वह काला चिन्ह सर्वथा आलोक में बदल जायगा। यहां तक कि उस

आलोक के तेज से नेत्रों में चकाचौंध उत्पन्न होने लगेगी। यह आलोक इतना तीव्र होता है कि उसके सन्मुख सूर्यालोक भी कोई चीज नहीं है। जब यहां तक नौबत पहुंच जाय तो समझ लो कि नेत्रों में आकर्षण शक्ति पूर्ण रूप से उत्पन्न हो गई और वह मेस्मरेजिम करने के योग्य हो गया।

यह परमावश्यक है कि अभ्यास करने से पूर्व कुछ हल्का भोजन फल आदि अवश्य खा लेना चाहिये और अभ्यास के पश्चात् दुग्ध आदि पौष्टिक पदार्थ का अवश्य सेवन करना चाहिए। जहां तक सम्भव हो गर्म चीजों से जिनसे रुधिर में गड़ बड़ी होने की सम्भावना हो सदैव बचे रहना चाहिये।

प्राय: ऐसा होता है कि इस अभ्यास के समय आंखों में झपकी आने लगती है। उस समय अभ्यास बंद कर देना चाहिये। तथा फिर स्वस्थ और ताजा होकर अभ्यास करना चाहिये।

नेत्रों में आकर्षण शक्ति बढ़ाने की दूसरी विधि यह भी है कि, एकान्त कमरे में एक दर्पण पर दृष्टि जमाने का अभ्यास किया जाय। इस में भी उन्हीं समस्त बातों का ध्यान रखना चाहिये जिनका ऊपर

वर्णन हुआ है बहुत से लोग अन्य चमकदार चीज से भी नेत्रों की आकर्षण शक्ति के बढ़ाने का अभ्यास किया करते हैं।

(२) हाथों की आकर्षण शक्ति—मेस्मेरेजिम की बहुत सी क्रियाओं में हाथ फेर कर मामूल को वश में किया जाता है। इस हाथ फेरने को मेस्मेरेजिम में पास करना कहते हैं।

हम पास के सम्बन्ध में आगे चलकर विस्तृत रूप से लिखेंगे। यहां पर केवल हाथों में आकर्षण शक्ति के उत्पन्न करने की विधि कहते हैं।

एक सुन्दर निर्जन नीरव स्थान में शुद्ध पवित्र होकर इसका अभ्यास इस प्रकार बढ़ाओ कि एक तिपाई पर एक बड़ी सी किताब खोल कर रखो और आप भी उसके पास बैठ जाओ। अब आप अपने हाथों को इस प्रकार रखो कि उंगलियां न तो एक दूसरे को छू सकें और न किताब के पृष्ठों को ही स्पर्श कर सकें परन्तु हो बहुत ही पास तथा उंगलियां नीचे की ओर कुछ-कुछ झुकी हुई हों तत्पश्चात् हाथों को किताब से सिर तक धीरे-२ ले जाये और फिर वापिस किताब तक ले आवे। अधिक

से अधिक एक मिनट में तीन चार पास होना चाहिये। इसमें भी तनिक परिश्रम तथा स्थिरता की आवश्यकता है। पहिले दिन शीघ्र ही हाथ दुख जायंगे परन्तु नित्य का अभ्यास किसी तरह का कष्ट नहीं होने देता। थोड़े ही दिनों के अभ्यास में हाथों की उंगलियों को कुछ गरमी सी मालूम होने लगेगी और जब उंगलियां पास करते समय मुंह तक आवेंगी तो भी चेहरे को कुछ गरमी का सा आभास होने लगेगा। और जब ऐसा ज्ञात होने लगे तब समझ लो कि हाथों में भी आकर्षण शक्ति उत्पन्न हो गई।

पास—मेस्मरेजिम में हाथ फेर कर अर्थात् पासों द्वारा भी मामूल को अचैतन्य किया जाता है। यह पास कई प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के वह पास हैं जो शरीर के किसी विशेष भाग पर किये जाते हैं। यह छोटे पास होते हैं। शरीर के किसी भाग से लेकर उसके अन्य तक हाथ फेरना सीध छोटा पास है। और ठीक उसके विपरीत हाथ फेरना उल्टा छोटा पास है। पेट से लेकर पांव तक हाथ फेरना बांह से लेकर हाथ की उंगलियों तक पास करना सीधा पास है और उसके ठीक विपरीत पास करना उल्टा है।

दूसरी प्रकार के पास दीर्घ पास कहलाते हैं। इस में शिर से पांव तक हाथ फेरना सीधे पास कहलाते हैं और ठीक विपरीत हाथ फेरना उलटे पास कहलाते हैं।

तीसरी प्रकार के पास आकर्षण पास हैं जो सन्मुख बैठे हुए मनुष्य को आह्वान करने के लिये हाथों को प्रयोग करना पड़ता है। मानों किसी के हाथ चलाकर बुलाते हैं और ठीक उसके विपरीत हाथ से मानों ढका होना विपरीत पास कहलाते हैं। यह पास अधिकतर सभा आदि में बैठे हुए मनुष्यों पर अपनी करामात दिखाने के लिये प्रयोग किय जाते हैं। जिस मनुष्य की ओर तीव्र दृष्टि से देखकर हाथ द्वारा आवाहन करोगे वह तुम्हारी ओर खिंच आवेगा।

सीधे पास मेस्मरेजिम का प्रभाव डाल कर अचैतन्य अर्थात् आकर्षित करने के लिये प्रयोग किये जाते हैं और उलटे पास प्रभाव के उतारने के लिये।

मामूल का चुनाव—मामूल के गुण हम पहले लिख चुके हैं यदि ऐसे गुण वाले कई मामूल मिल सकें तो फिर यह देखना चाहिये कि कौन मनुष्य मामूल बनने के उपयुक्त है क्योंकि आमिल के लिये

यह आवश्यक बात है कि वह एक ही मामूल पर अपना अभ्यास करे।

मामूल के चुनाव के लिये सबसे बड़ी बात यह देखने की है कि किस में आकर्षण शक्ति शीघ्रतर गृहण करने की क्षमता है यदि बात उस का अनुसन्धान हो गया तो फिर उपयुक्त मामूल मिल गया और अभ्यास भी पूर्ण हो गया ही समझो।

किस हृदय में आकर्षण शक्ति शीघ्रतर गृहण करने की क्षमता है इस बात के जानने की विधि नीचे दी जाती है।

एक निर्जन और रमणीक स्थान में पांच छै लड़के या लड़कियां इस प्रकार बिठलाओ कि एक दूसरे से उनका शरीर छूने न पावे। एक लड़के का अंगूठा दूसरा लड़का पकड़े रहे और एक घेरा बन जाय उस घेरे में आमिल स्वयं भी सम्मिलित हो जाय बीच में एक शीशे के ग्लास में पानी भर कर रख दे और सब लड़कों वा लड़कियों से कह दे कि वह एकाग्र चित्त होकर उस ग्लास के पानी की ओर टकटकी लगाकर देखते रहें और आमिल स्वयं अपने हृदय में मामूल के चुनाव का ध्यान करके अपने

मामूलों की ओर देखता रहे। पन्द्रह बीस मिनट में ही आकर्षण शक्ति का विकास होगा। लड़कों के मष्तिष्क शिथिल होने आरम्भ हो जायेंगे और किसी न किसी लड़के के ने शीघ्र बन्द होने लगेंगे। जिस लड़के को सबसे पहले नींद आवे बस वही मामूल बनने के सर्वथा उपयुक्त है। अंगूठा छोड़कर और फौरन पानी का ग्लास उठा देना चाहिये तथा तुरन्त ही उल्टे पासों का प्रयोग करना चाहिये जिससे आकर्षण शक्ति का प्रभाव उतर जाय।

मेस्मेरिजम का अभ्यास— आमिल, मामूल तथा स्थान के सम्बन्ध में पहिले पर्याप्त रूप से लिखा जा चुका है। अब हम केवल अभ्यास के सम्बन्ध में लिखेंगे। मामूल को आकर्षण शक्ति द्वारा अचैतन्य करने की बहुत सी विधियां है जिन में से कुछ का हम यहां वर्णन करेंगे परन्तु मामूल को अचैतन्य करने की सर्व व्यापक विधि जो आज कल प्रचलित है उसका वर्णन हम सबसे पहिले करते हैं।

एक सुन्दर एकान्त सुगन्धित कमरे में आमिल उत्तर की ओर मुंह करके बैठे और मामूल को भी अपने सामने मुंह करके बिठा ले। दोनों पालती

मार, सांसारिक तमाम चिन्ताओं से रहित होकर बैठें। मन में यह धारण हो कि मेरा आकर्षक प्रभाव मामूल को अचैतन्य कर देगा और मामूल को भी धारण हो कि मेरे ऊपर आकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ने वाला है। इसके पश्चात् आमिल मामूल के दोनों हाथों को अपने हाथों से इस प्रकार पकड़े कि अपने दोनों अंगूठे मामूल के हाथ की हथेलियों पर हों और उंगलियां मामूल के हाथ की पीठ पर। साथ ही आमिल अपने नेत्रों की दृष्टि मामूल के नेत्रों पर टकटकी लगाकर जमावे। आमिल के शरीर की आकर्षण शक्ति विद्युत प्रभा के लगाव की तरह मामूल के शरीर में प्रवेश करना आरम्भ हो जायगी और ज्यों-ज्यों देर होती जायगी उस शक्ति का प्रभाव मामूल के नेत्रों पर पड़ता हुआ दिखलाई पड़ेगा। अर्थात् मामूल के नेत्र आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर आमिल के नेत्रों की शक्ति का सामना करने की ताकत रख सकेंगे। मामूल के नेत्र झपने लगेंगे और धीरे-२ मामूल की आंखें मिच जाएंगी और मामूल के अचैतन्य हो जायगा। उसी समय धीरे से मामूल को लिटा देना चाहिये।

पाठकों को यह समझ लेना चाहिये कि जितनी देर इस विधि के वर्णन करने में लगी है उतनी ही देर में मामूल अचैतन्य हो जायेगा।

यह बात एक प्रांरम्भिक अभ्यासी के लिये सर्वथा असम्भव है। मामूल को अचैतन्य करने की पूर्ण शक्ति की क्षमता प्राप्त होने तक कई दिन लग जाते हैं अतएव अभ्यासी को चाहिये कि यदि दो एक दिन कार्य में सफलता न हो तो साहस न छोड़ना चाहिये। दूसरे दिन फिर उस कार्य को नियत समय पर करना चाहिये। कई दिन के बराबर अभ्यास से मामूल अवश्य ही अचैतन्य हो जायगा। अतएव अभ्यास के समय घबराना न चाहिये और न हताश होकर सारा परिश्रम नष्ट ही कर देना चाहिये तुम्हारे अभ्यास के समय मामूल को घबराहट हो तो तुरंत ही अभ्यास बन्द कर देना चाहिये अतएव मामूल को भी पूर्ण स्थिर और सन्तुष्ट होना चाहिये।

एक बात और भी ध्यान करने योग्य है। जब आमिल मामूल के नेत्रों से नेत्र मिलाता है उस समय अभ्यास करते ही करते आमिल की दृष्टि में मामूल अत्यन्त स्वरूपवान मामूल होता है। अतएव आमिल

के लिये यह परम आवश्यक है कि वह अच्छा जितेन्द्रिय हो अन्यथा सारा काम चौपट हो जायेगा और लाभ के अतिरिक्त हानि होने की अत्यन्त सम्भावना है। यही कारण है कि मेस्मरेजिम के अभ्यास करने के लिये छोटे लड़कों को ही चुनना अच्छा समझा गया है।

दूसरी विधि—आमिल उत्तर को मुख करके बैठे और मामूल को अपने हाथ मे दबाता रहे तथा उसके नेत्रों की ओर टकटकी लगाकर देखता रहे तो थोड़ी ही देर में मामूल के ऊपर अचैतन्यता छा जायेगी।

तीसरी विधि—उपर्युक्त रीति से आमिल स्वयं बैठ कर मामूल को अपने सामने बिठलावे तथा उसके दोनों हाथों में चुम्बक पत्थर दे दे या अन्य कोई चमकदार चीज दे दे। फिर उससे कह दे कि वह उसको ध्यान के साथ देखता रहे तथा मामूल के मस्तिष्क पर आमिल अपने नेत्रों की तीव्र दृष्टि का प्रभाव डाले तो मामूल अवश्य ही थोड़ी देर में अचैतन्य हो जायेगा।

चौथी विधि—आमिल अपने हाथ में दो चुम्बक की गोलियां ले ले और दो गोलियां मामूल के दोनों

में दे दे। तथा आमिल को चाहिये कि वह ध्यान देकर मामूल के नेत्रों की ओर देखता रहे तो थोड़ी देर में मामूल अचैतन्य हो जायेगा।

पांचवी विधि— क्रिस्टल को तनिक दृष्टि से ऊंचा करके रख दो और मामूल को उसे ध्यान से देखने के लिये कहो तथा स्वयं उसकी ओर ध्यान देकर देखो तो मामूल शीघ्र ही अचैतन्यता लाभ करने लगेगा।

मामूल से प्रश्नोत्तर

मामूल को अचैतन्य करने की कई रीतियां लिखी गई हैं और भी बहुत सी लिखी जा सकती हैं परन्तु विस्तार भय से यहां लिखने में असमर्थ हैं। यह याद रहे कि अभ्यास के कमरे में अधिक मनुष्यों की भीड़ न हो और न वह ऐसा काम करे जिससे शोरगुल आदि हो या आमिल के अभ्यास में किसी प्रकार का विघ्न हो। किसी प्रकार भी ध्यान बटाने वाली बात न होनी चाहिये आमिल को अपने अभ्यास के समय घड़ी आदि जो जरा भी जोर से टन-टन करती हो कदापि न रखना चाहिये क्योंकि उससे बार-बार चित्त में अनैक्यता उत्पन्न होने लगती है।

अस्तु, जब मामूल अचैतन्य हो जावे तो उसको धीरे से एक तकिये के सहारे लिटा देना चाहिये ताकि उसको किसी प्रकार का कष्ट न हो मामूल के अचैतन्य हो जाने में दो व्यवस्थायें होती हैं। किसी मामूल की आंखें बिलकुल बन्द हो जाती हैं और किसी के नेत्र अध खुले रहते हैं परन्तु इस अचैतन्यता का यह अभिप्राय कदापि न समझना चाहिये कि मामूल अपनी आन्तरिक अवस्था से भी अनभिज्ञ है। आप उससे जिस प्रकार के प्रश्न करेंगे मामूल उसका ठीक और तुला हुआ सच्चा उत्तर देगा। यदि दो एक दिन वह उत्तर न दे तो घबरा न जाना चाहिये। सन्तोष से फिर काम करना चाहिये गामूल अवश्य उत्तर देगा। प्रत्येक प्रश्न ऐसा हो कि वह मामूल की समझ में आ सके तथा हर एक प्रश्न के बाद इतना ठहरना चाहिये उसको आराम करने तथा सोचने का पूरा अवकाश मिल सके।

—०—

प्रभाव का उतार—जब मामूल से मेस्मरेजिम का काम निकल जाय तब सिद्ध को उलटे पास कर करके सचेत कर देना चाहिये। जब तक मामूल सचेत न हो अपने उलटे पासों को बराबर जारी

रखो और यदि आमिल का अभ्यास अच्छा बढ़ गया है तो उसको उलटे पास करने की भी आवश्यकता नहीं होती। वह जिस समय मामूल को सचेत होने की आज्ञा देगा उसे तुरंत होश आ जायेगा। इसका कारण यह है कि सीधे पासों के द्वारा आमिल की आकर्षण शक्ति मामूल के शरीर में प्रभावित होकर उसकी बाह्य इन्द्रियों को निर्बल बना देती है मानो विद्युत प्रभा का आक्रमण हो जाता है परन्तु उलटे पास करने से मामूल के शरीर की आकर्षण शक्ति निकल कर फिर आमिल के हाथों में वापिस चली आती है। परन्तु जिस अवस्था में कि उलटे पास करने की आवश्यकता नहीं होती उसमें मामूल आमिल का परम आज्ञाकारी होता है आमिल का विचार शक्ति के बल से ही आज्ञा देते ही मामूल की अचैतन्यता नष्ट हो जाती है। अतएव नौसिखों को उलटे पासों के द्वारा ही मामूल को सचेत करना आवश्यक है और पूर्ण अभ्यासी को अपनी इच्छा के अनुकूल उतार करना चाहिये।

अचैतन्यता का कारण—बहुत से मनुष्यों के हृदय में यह स्वाभाविक प्रश्न होगा कि मामूल की

बाह्य इन्द्रियों के (स्मरण शक्ति तथा भाषण को छोड़कर) शिथिल हो जाने का क्या कारण है। इसके सविस्तार विवरण देने के लिये तो अधिक समय और स्थान की आवश्यकता है अतएव हम यहां पर इसका मोटा तत्व बतला देना ही उचित समझते हैं। मनुष्य के नेत्रों की पुतलियां मानों शरीर रूप ग्रह की दो शीशे की किवाड़ें हैं। आमिल को जब अच्छा मेस्मरेजिम का अभ्यास हो जाता है तो वह इन्हीं नेत्र द्वारों द्वारा मामूल के समस्त आन्तरिक शरीर की निरीक्षण कर लेता है चूंकि यह स्वाभाविक मोटा तत्व है कि विशेष आकर्षण शक्ति अल्प आकर्षण शक्ति को अपनी ओर खींच लेती है। जैसा कि हम पहिले वर्णन कर चुके हैं कि गेंद या ईंट फेंकने से वह पृथ्वी पर ही आ पड़ती है क्यों कि गेंद या ईंट की अपेक्षा पृथ्वी में आकर्षण शक्ति बहुत ही अधिक है और चूंकि यह बात हम पहिले कह चुके हैं कि मामूल आमिल की अपेक्षा छोटा निर्बल तथा आज्ञाकारी विश्वासी तथा कर्त्तव्य शील हो अतएव मामूल में आमिल की अपेक्षा आकर्षण शक्ति बहुत कम होती है या यदि अधिक होती है तो मामूल

अपने उस समय की अवस्था से प्रकाशित कर देता है कि उसमें आमिल की अपेक्षा आकर्षण शक्ति न्यून है परन्तु वास्तव में आमिल के आकर्षण शक्ति की अधिक परिमाण बढ़ा लेने के कारण मामूल की आकर्षण शक्ति सर्वदा ही कम होती है अतएव यह आवश्यकीय और स्वयं सिद्ध है कि आमिल की आकर्षण शक्ति की अधिकता मामूल की आकर्षण शक्ति की न्यूनता को अपनी ओर खींच लेगी। चूंकि नेत्र ही शारीरिक बढ़े गृहद्वार हैं अतएव आमिल के नेत्रों की शक्ति अदृष्टव्य ज्योति के तार द्वारा मामूल के नेत्रों में होकर शरीर में प्रवेश कर जाती है तथा उसके नेत्रों की आकर्षण शक्ति को खींच्र कर उनको शिथिल कर देती है यही कारण है कि उसके नेत्र बन्द हो जाते हैं तथा वह अचैतन्य हो जाता है।

ठीक उत्तर देने का कारण—पाठकों को इस बात से परम आश्चर्य होता होगा कि एक मामूल अचैतन्य होने पर आमिल के प्रश्नों का कैसे ठीक-ठीक उत्तर दे देता है तथा उसको भूत भविष्यत तथा वर्तमान का ज्ञान कैसे हो जाता है। इस विषय पर अधिक विस्तार से तो आगे लिखेंगे जो मेस्मरेजिम की अवस्थाओं के वर्णन में मिलेगा। यहां केवल

थोड़ी सी मोटी-मोटी बातें ही लिख देना उचित समझते हैं। मनुष्य जब सो जाता है तो वह अनेक स्वप्न देखता है। बड़ी-बड़ी अद्‌भुत घटनायें उसको स्वप्नावस्था में दृष्टिगोचर होती हैं। कभी उसका जीव किसी देश में पहुंच जाता है और कभी कहीं। बहुत से ऐसे स्थानों के भी दृष्य देखने में आते हैं जहां कि वह मनुष्य न कभी गया हो और न जिसका किसी ने नाम कभी न सुना हो। इससे स्पष्ट विदित है कि जीव की गति बड़ी विलक्षण है क्योंकि बहुत सी स्वप्न की बातें सत्य भी बैठ जाती हैं। यह बातें हमारे दिन रात के अनुभव की हैं।

मामूल के अचैतन्य होने पर मामूल का जीव आमिल का आज्ञाकारी हो जाता है। जीव के आने जाने के लिये किसी स्थान में रोक नहीं है अतएव वह आमिल की आज्ञानुसार चाहे जिस स्थान और अवस्था में पहुंच जाता है तथा जैसा उसको दृष्टि आता है ठीक वैसा ही उत्तर देता है। मैस्मरेजिम की पृथक-पृथक अवस्थाओं में हम बतलावेंगे कि मामूल का जीव कहां-कहां पहुंच कर क्या-क्या कर सकता है क्योंकि भूत, भविष्यत और वर्तमान में दूसरे स्थान में होने वाली बातों को मामूल इस

प्रकार बतलाता है मानों वह उन बातों को सम्मुख होती हुई देख कर बतला रहा हो। अचैतन्यता दूर होने पर मामूल को बहुत सी बातें याद नहीं रहतीं जिस प्रकार कि सोते से उठने वाले मनुष्य को अपने स्वप्न की बातें याद नहीं रहतीं।

पाठकों के मनोरंजन के लिये मैं एक घटना का वर्णन करना चाहता हूँ। एक मनुष्य जो मेस्मरेजिम विद्या में बड़ा कुशल और दक्ष था हमारे स्कूल में जबकि मैं एन्ट्रेन्स में पढ़ता था, आया हुआ था। हम लोग मेस्मरेजिम की आश्चर्यजनक घटनाओं को अपने सामने देखने के लिये बहुत दिनों से लालायित थे। हम चार पांच लड़के उस मेस्मरेजिम वाले को घेरे हुए कमरे में बैठे हुए थे कि यकायक हमारे हेडमास्टर साहिब कमरें में आये। उनके चेहरे की हवाइयां उड़ी हुई थी उनके इस आकस्मिक आगमन पर हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने आते ही मुझ से पूछा "हमारी जेब घड़ी कोट में से गायब है न मामूल किसने निकाल ली। बहुत ढूंढा पता नहीं मिला। क्या तुम हमारी मदद कर सकते हो? मैंने उसी समय हेडमास्टर साहब से मेस्मरेजिम द्वारा

घड़ी के हालात मामूल हो जाने की बात कही तथा मेस्मरेजिम वाले मनुष्य का भी उनसे परिचय कराया हेडमास्टर यूरोपियन थे। उनको मेस्मरेजिम पर पूर्ण विश्वास था। उसी समय बीच के हाल में प्रबन्ध किया गया। और एक छोटा खूबसूरत लड़का जो छोटे दर्जे में पढ़ता था बुलाया गया। कमरे में हम चार लड़के, मेस्मरेजिम वाला, हेडमास्टर तथा छोटे दर्जे में पढ़ने वाला लड़का कुल आठ मनुष्य थे। सब चुपचाप बैठे हुए मेस्मरेजिम करने वाले की ओर विस्मय कारक दृष्टि से देखने लगे उसने उस छोटे बच्चे को अपने सामने बिठला कर अपने नेत्रों की ओर देखने के लिये कहा और थोड़ी ही देर उसको अचैतन्य कर दिया।

मामूल को अचैतन्य करने बाद आमिल ने उसको एक तकिये के सहारे लिटा दिया। फिर इसके बाद आमिल ने कुछ पढ़कर के मामूल के मुंह पर दम किया। हम लोग आमिल की ओर बड़ी उत्कन्ठा और आश्चर्य के साथ देखने लगे। आमिल ने इस प्रकार प्रश्न करने आरम्भ किये।

प्रश्न—कन्चन (मामूल का नाम)

उत्तर—हां,

प्रश्न—तुम इस समय हेडमास्टर के मकान में जा सकते हो।

उत्तर—हां।

प्रश्न—अच्छा, वहां जाओ, देखो वहां तुम्हारे हेडमास्टर की जेब घड़ी मौजूद है या नहीं।

उत्तर—जाता हूं, सारे कमरे देख डाले परन्तु वहां कोई भी घड़ी मौजूद नहीं है।

प्रश्न—हेडमास्टर के कमरे में इस समय कौन-कौन हैं?

उत्तर—मैम साहिब और उनका बैरा दोनों इधर-उधर घड़ी तलाश कर रहे हैं।

प्रश्न—अच्छा देखो घड़ी कौन ले गया है।

उत्तर—साहब के चपरासी हसन खां पर घड़ी है वह देखो वह अपनी कोठरी में से निकला और बाजार की ओर चला। अरे उसने उस घड़ी को एक और आदमी के हाथ में दे दिया। हसन खां और उस आदमी में बातें हो रही हैं।

प्रश्न—उस आदमी का नाम क्या है।

उत्तर—नाम नहीं मामूल। काली अचकन और ऊँचा साफा बांधे है नीची दाढ़ी है खिजाब लगा है। बुड्ढा मुसलमान है।

प्रश्न—घड़ी इस समय कहां है?

उत्तर—उस काली अचकन वाले की वास्कट की सीधी जेब में है।

प्रश्न—उस घड़ी का हुलिया तो बतलाओ?

उत्तर—सुनहरी घड़ी बारीक सुनहरी चैन और शीशे का कवर।

हमने उसी समय हेडमास्टर की ओर देखा। हेडमास्टर साहिब बड़े आश्चर्य के साथ इस जादू को देख रहे थे आमिल के संकेत करने पर हेडमास्टर ने धीरे से कहा 'ठीक वही घड़ी है, आमिल ने मुस्करा कर फिर प्रश्न करने आरम्भ किये।

प्रश्न—अब वह काली अचकन कहां है?

उत्तर—काली अचकन वाला बड़े बाजार में पहुँच गया और हसन खां फिर कोठी की ओर चला गया।

प्रश्न—अच्छा तुम भी काली अचकन वाले का पीछा करो और देखो कि वह क्या करता है?

उत्तर—बहुत अच्छा, वह एक सराफ की दुकान पर जाकर बैठ गया।

प्रश्न—उस सराफ का पता बतला सकते हो।

उत्तर—हां, डाक खाने के लैटर बक्स के सामने एक मोटा सा सराफ ऊंची दुकान पर काला कोट

और कत्थई पेन्ट टोपी पहने बैठा है एक लौंडा उसके पास और बैठा है। लो उसने वह घड़ी जेब में से निकाल कर सराफ के हाथ में दे दी। सराफ उसको देख रहा है। सराफ ने दस रुपया उस आदमी के हाथ में दे दिये। वह आदमी वहां से चल दिया।

प्रश्न—अब वह कहां जा रहा है?

उत्तर—कोठी की ओर। आमिल ने हेडमास्टर साहिब से कहा आप अभी जाकर इन सबको गिरफ्तार कीजिये हेडमास्टर साहिब सलाम कर वहां से चल दिये। आमिल ने उसी समय सावधान! उठ, होशियार हो कहा, मामूल आंख मलता हुआ उठ बैठा और आश्चर्य के साथ चारों ओर देखने लगा हमने उस लड़के कन्वनसिंह से पूछा कि उसको कुछ याद है या नहीं परन्तु उसको कुछ भी खबर न थी के उसने क्या देखा था या उसने क्या-क्या बात कही थी। खैर, हमने सोचा कि देखें आगे क्या होता है। हेडमास्टर साहिब उसको पकड़कर अपनी घड़ी निकाल सकते हैं या नहीं। हम भी इसी विचार से मेस्मरेजिम वाले को साथ लेकर साहिब की कोठी की ओर चले। देखा तो साहिब कोठी पर नहीं है। पूछने पर मालूम हुआ कि हसन खां और

एक मनुष्य को साथ लेकर शहर की ओर गये हैं। हम भी शहर में गये। देखा तो उसी मोटे सराफ की दुकान पर भीड़ लगी है। सराफ, हसन खां तथा वह तीनों आदमी हथकड़ी पहने हैं और शहर कोतवाल तहकीकात कर रहे हैं। एक बक्स के ऊपर हेडमास्टर साहब की वही सुनहरी घड़ी रखी थी। हेडमास्टर साहब का मुख प्रसन्न था। निदान तीनों मनुष्यों को अन्ततः सरकार का मेहमान बनना पड़ा।

चिकित्सा—यह हम पहिले लिख चुके हैं कि मेस्मरेजिम द्वारा मनुष्यों की चिकित्सा भली भांति हो सकती है। मनुष्य तो मनुष्य, पशु आदि की चिकित्सा हो सकती है। अमरीका, जर्मनी आदि देशों में इस प्रकार की चिकित्सा अधिक होती है मनुष्य में आकर्षण शक्ति एक ऐसी चीज है जो चिकित्सा में खासतौर से सहायता देती है आपने देखा होगा कि यदि किसी मनुष्य के चोट लग जाय, शिर में दर्द हो, हाथ पैरों में हड़कल हो तथा कहीं तकलीफ हो तो हाथों से दबाने मालिश करने, फूंक आदि मारने से तुरंत शान्ति हो जाती है। कारण यह है कि हाथों के दबाने या मालिश करने में आकर्षण शक्ति उत्पन्न होकर अपना प्रभाव दिखाती है और शीघ्र आराम कर देती है। इस प्रकार

की चिकित्सा दिन प्रति दिन हमारे देखने में आती है। यह और भी आश्चर्यजनक बात है कि मशीन की बनी हुई औषधियों की अपेक्षा हाथ की बनी हुई औषधियां अधिक प्रभाव दिखाती हैं क्यों कि हाथों के लगने से आकर्षण शक्ति का प्रभाव अधिक हो जाता है।

मेस्मरेजिम द्वारा चिकित्सा करने की हम कई साधारण रीतियां बतलाना चाहते हैं। एक रीति तो यही है कि रोगी को मामूल बना कर उसको मेस्मेराइज किया जाय रोगी निर्बल होने के कारण आमिल की आकर्षण शक्ति को शीघ्र स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार अनेक बीमार आरोग्य हो गये। साथ ही उसको आकर्षित पानी पिला दिया जाय। मेस्मेराइज्ड या आकर्षित पानी बनाने की तरकीब यह है कि एक गिलास में पानी भरकर आमिल उस पर अपनी आकर्षण शक्ति नेत्रों द्वारा डाले और फिर उस पानी को रोगी को पिलादे तो अवश्य ही रोगी आरोग्यता लाभ करे। दूसरी रीति यह है कि मनुष्य के जिस शारीरिक भाग में रोग या दर्द हो उसी भाग पर मेस्मरेजिम किया जाय तो विश्वास है कि अवश्य ही उसको लाभ हो जाय।

तीसरी रीति यह है कि रोगी को मामूल बनाकर उसके रोग का निदान पूछा जाय। साधारण रोगों की

चिकित्सा में ऐसा रोगी मामूल स्वयं अपनी चिकित्सा का नुस्खा आदि बतलाता है चिकित्सों को चाहिये कि ठीक उसी के अनुसार कार्य करें। परन्तु भयानक रोगों की अवस्था में रोगी को मामूल बनाने से अधिक लाभ नहीं होता। रोग के कारण आत्मा कलुषित रहती जिसके कारण रोगी अपने रोग की उपयुक्त चिकित्सा बनलाने में असमर्थ रहता है। ऐसी अवस्था में अन्य को मामूल बनाकर रोगी के रोग की चिकित्सा तथा निदान ज्ञात करना चाहिये और अधिकतर यही ढंग ठीक भी है परन्तु मामूल पर अधिक रोगियों के रोग की चिकित्सा पूछने का कष्ट प्रति दिन न डालना चाहिये। ऐसा होने से सम्भव है कि मामूल थक जाय और अनुपयुक्त उत्तर मिलने से लाभ के बदले हानि होने लगे। अब हम विविध रोगों की चिकित्सा सूक्ष्मतः लिखते हैं। पाठकों को चाहिये कि अधिक ध्यान से देखकर मनन करें।

आसेव—रोगी पर मेस्मरेजिम कर उसे अचैतन्य कर आज्ञा दो कि अब तुम किसी जिन या आसेव से मत डरो। वह उतर जायेगा तथा रोगी जागने पर ठीक हो जायेगा।

मेस्मरेजिम द्वारा रक्त विकार चिकित्सा

हम कह नहीं सकते कि मेस्मरेजिम से इन रोगों की ठीक चिकित्सा क्या है किसी पुस्तक में कुछ और किसी में कुछ लिखी है। अच्छे-२ विद्वान् एक दूसरे से मतभेद रखते हैं परन्तु पाठकों के हित के लिये जो कुछ हम अच्छा समझते हैं वह यह है कि सम्मत्ति में औषधियां तो वहा प्रयोग करनी चाहियें जो किसी चिकित्सक ने दी या बतलाई हों परन्तु यदि उन पर मेस्मेराइज और कर लिया जाय तो मैं जहां तक समझता हूं यह रोग अत्यन्त शीघ्र नष्ट हो जाय। आकर्षण शक्ति का प्रभाव बड़ा ही विलक्षण और तीव्र होता है। यह मानी हुई बात है। साथ ही रोगी को चित्त लिटाकर उसके पेट से लेकर नीचे तक खूब पास किया करो तो शीघ्र ही आरोग्यता लाभ हो।

मस्तिष्क रोग—इस रोग के लिये आवश्यक है कि रोगी को उत्तर की ओर मुंह कर लिटाओं। उसके शिर पर पास करो तथा उस पर मेस्मरेजिम कर कह दो कि तुम्हारा यह रोग बिलकुल निकल गया। रोगी के समस्त मस्तिष्क सम्बन्धी रोग नष्ट हो जायेंगे।

सिर दर्द—सिर दर्द के लिये पहिले शिर तथा गर्दन पर खूब पास करो। इसी से आराम हो जायगा

यदि इससे आराम न हो तो मेस्मरेजिम कर उसके शिर दर्द का नाश करो। इसी ढंग से शरीर के सारे दर्द नष्ट हो सकते हैं।

दांत दर्द—इसके लिये दांतों पर पास करो और हाथ को साथ ही झटका देते जाओ। आराम हो नेत्र रोग-नेत्र रोगों के लिये रोगी को आकर्षण द्वारा अचैतन्य करना अधिक लाभदारी है। अचैतन्य होने पर आंख पर खूब पास करो तथा आकर्षित पानी से नेत्रों को धोओ। आशा है कि दो एक दिन के प्रयोग से ही नेत्रों के रोग जाते रहेंगे।

अंजीर्ण—आकर्षण पानी का प्रयोग तथा पेट पर पास करना सर्वोत्तम है।

ज्वर—आकर्षण पानी का प्रयोग ठीक है चिकित्सा के विषय को हम अधिक बढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि समस्त रोगों के लिये पृथक-पृथक निदान लिखकर पुस्तक को हम बहुत बड़ी बनाना नहीं चाहते। केवल इतना कहना ही काफी होगा कि रोग का निदान आकर्षण के पानी, पास या आकर्षण के स्वप्न द्वारा हो सकता है परन्तु आमिल का मेस्मरेजिम में पूर्ण कुशल और चतुर होना

परमावश्यक है। इसलिये यदि प्रत्येक घर में मेस्मरेजिम का आमिल हो तो बहुत अच्छा। वैद्य हकीम या डॉक्टरों का मेस्मरेजिम जानना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि आकर्षित औषधियों से बहुत ही शीघ्र लाभ होता है।

—o—

हिप्नोटिज्म

या दूसरों को वश में करना

हिप्नोटिज्म या मेस्मरेजिम में विशेष अन्तर नहीं है। हिप्नोटिज्म में यह विशेषता है कि आमिल मामूल को बिलकुल अपना आज्ञाकारी बना लेता है। जो आमिल सोचता है वही बात मामूल के मस्तिष्क में आती है या जो आज्ञा देता है उसे मामूल तत्काल करता है।

सजेशन—आमिल जो आज्ञा देता या अपने विचारों को मामूल के मस्तिष्क पर अंकित कर अपना आज्ञाकारी बनाता है वही सजेशन कहलाता है। हम इस विषय को और भी विस्तार पूर्वक लिखकर पाठकों को समझाना चाहते हैं।

विचार शक्ति की पूर्ण महिमा तो हम आगे लिखेंगे। यहां केवल इतना ही लिखना ठीक है कि विचार शक्ति बड़ी ही प्रबल होती है। यदि मनुष्य में विचार न रहे तो वह मनुष्य ही नहीं रहता इसीलिए कहा है कि संसार विचारमय है अर्थात् विचारों के समूह का ही नाम संसार है। विचार की पहुंच न मालूम कहां तक हो सकती है। विचार विद्युत प्रभा की तरह सर्वत्र व्यापक है। यही कारण है कि एक विचार एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंच सकता है। इस विचार परिवर्तन की प्रक्रिया को हम आगे लिखेंगे।

आपने देखा होगा कि एक फकीर साहूकार से पैसा मांगता है। एक बार न देने पर वह दुबारा मांगता है। तिबारा मांगता है यहां तक कि साहूकार को विवश हो देना पड़ता है अर्थात् साहूकार का विचार फकीर के विचार के आधीन हो जाता है। यही सजेशन कहलाता है और भी उदाहरण लीजिए। बच्चे और स्त्री आप से हठ करते हैं। आपको विवश हो अपने विचारों को उनके विचारों के अधीन करना पड़ता है विज्ञापक लोग विज्ञापन देते हैं। कट्टर से कट्टर मनुष्य जो विज्ञापन के नाम से भी नाक भौं सिकोड़ते

हैं एक न एक दिन विज्ञापन के जाल में फंस ही जाते हैं। लेख द्वारा विज्ञापक का सजेसन अपना प्रभाव पाठक के मस्तिष्क पर डालता है। दुकानदार लोग चीज को अच्छा बतलाकर और दिखलाकर आपके विचार को अपने अधीन बनाते तथा आपसे रुपया छीनते हैं। इधर उधर फिरने वाले एजेन्टों का भाषण भी सजेसन का काम देता है। इसे सजेशन का एक रूप ही कहना चाहिए परन्तु यदि हिप्नोटिज्म जानने वाला मनुष्य दुकानदारी आदि करे तो फिर भला क्या कहने। कोई ग्राहक उसकी दुकान से कदापि सौदा खरीदे बगैर जा नहीं सकता।

हिप्नोटिज्म और सजेशन का परस्पर विशेष संबन्ध है। इस विद्या के सीखने के लिये अत्यन्त फुरती, चालाकी, बुद्धिमता, दृढ़ता, कुशलता एवं ईमानदार होने की आवश्यकता है उदार, सच्चे, और ईमानदार मनुष्य इस विद्या को सीखकर वसुन्धरा का हित कर सकते हैं परन्तु बुरे और अयोग्य मनुष्य इस विद्या से वह-२ रहस्यपूर्ण घटना पैदा कर देते हैं कि जिनका सुलझाना दूभर पड़ जाता है। अतएव उदार और पवित्र हृदय वालों को ही इस विद्या का

अध्ययन और मनन कराना चाहिये क्योंकि इसमें मामूल सर्वथा आमिल के अनुकूल तथा उसका आज्ञाकारी होता है। हिप्नोटिज्म में भी मामूल को अचैतन्य कराना होता है परन्तु यह अचैतन्यता और ही प्रकार की होती है। उसे सोना नहीं पड़ता। केवल उसके वाह्य शरीर पर आकर्षित निद्रा का अधिकार हो जाता है। मामूल चल फिर कर आमिल की आज्ञानुसार काम कर सकता है।

शरीर ढीला होना—हिप्नोटिज्म आदि से मामूल को अचैतन्य करना या उस पर प्रभाव पड़ने के लिये विधि पीछे लिखी जायगी यहां केवल आप अपने शरीर को हिप्नोटिज्म के प्रारम्भिक व्यायाम के आधीन करदो जिनका वर्णन कि यहां किया जाता है। इन व्यायामों से आमिल को हिप्नोटिज्म के कुशल अध्यक्ष बनने में बड़ी सहायता मिलेगी। अधिकतर मनुष्य अपने अवयवों को सदा तना हुआ रखते हैं जिसके कारण वह सदा थके हुए रहते हैं। यदि वह अपने शरीर को कभी-२ ढीला छोड़ दिया करें तो उनको बहुत आराम मिले और शरीर में बल भी अधिक उत्पन्न हो जाय। उनके शरीर में न तो कभी पीड़ा होगी

और न अनियमित बातें ही सता सकेंगी। उनकी जीवनावधि-वृद्धि में भी कोई सन्देह नहीं।

शरीर को ढीला करने की विधि यह है। एक एकान्त निर्जन तथा नीरव कमरे में शुद्ध होकर एक मनुष्य को अपने पास बिठलाओं। अपने चित्त की वृत्तियों को चारों ओर से समेट कर एक करो। उस मनुष्य से भी ऐसा ही करने के लिये कहो। इसके पश्चात् उससे कहो कि वह अपने सीधे हाथ को अपने बाम हाथ की उंगलियों पर रखे और दोनों हाथों को बिलकुल ढीला छोड़ दे। ऐसा मालूम पड़ने लगे मानों हाथों का सारा बोझ उंगलियों पर ही आ पड़ा है। पांच मिनट तक ऐसा ही रहने दो। तत्पश्चत् उसे कहो कि वह अपनी बाम हस्त की उंगलियों को निकाल ले। तो वह हाथ निर्बल होकर उठ न सकेगा। अगर पहिले दिन ऐसा न हो तो घबड़ाने या हताश होने की आवश्यकता नहीं और इससे हिप्नोटिज्म विद्या पर अविश्वास ही कर बैठना चाहिये वरन् प्रतिदिन इसका अभ्यास नियत समय पर करना चाहिये। ईश्वर की कृपा से अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

एक बात का इस अभ्यास के करने में और भी ध्यान रखना चाहिये यदि तुम यह देखो कि जो मनुष्य अपने शरीर को ढीला डालने का अभ्यास कर रहा है कई दिन के लगातार अभ्यास करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं करता तो तुमको अपने हृदय में तुरंत यह समझ लेना चाहिये कि उसने अपने हाथ का पूरा बोझ उंगलियों पर नहीं छोड़ा। यदि बोझ को पूर्णतय: छोड़ देता तो इतने दिनों तक असफल रह ही नहीं सकता इस लिये तुमको उचित है कि शरीर ढीला करने के अभ्यास करने वाले को स्पष्ट समझा कर कह दो कि वह पूरा बोझ छोड़ दे अन्यथा सफलता बहुत दिन देरी में जाकर होगी।

इस अभ्यास को कम से कम एक मास तक खूब जी लगाकर करना चाहिये। यह आवश्यकीय नहीं कि अभ्यास दिन में ही किया जाय। रात्रि का समय अधिक उपयुक्त है। जब तक यह अभ्यास पूरा न हो जाय कदापि न छोड़ना चाहिये और न आगे के अभ्यास की ओर बढ़ना चाहिये। इस अभ्यास में पूर्ण सफलता और क्षमता प्राप्त करने के लिये हम बार-२ इस कारण से जोर देते हैं कि यही अभ्यास हिप्नोटिज्म की जड़

है। जड़ के मजबूत होने से ऊँचे-ऊँचे और टिकाऊ भवन बन सकते हैं सफलता प्राप्त होते ही इसको छोड़ देना अभ्यास को अधकचरा छोड़ देना है। अतएव खूब जी लगाकर इसमें पूर्ण कुशलता लाभ करना चाहिये जब ऐसा हो जाय तो इसके अन्य अभ्यासों के करने में प्रवृत्ति होना चाहिये।

—०—

पीछे की ओर आकर्षण—जिस मामूल में शरीर ढीला करने की क्षमता आगई हो उसको सीधा इस प्रकार खड़ा करो कि उसकी एड़ियां जुड़ी हों, हाथ दोनों ओर सीधे पड़े हों नेत्र बन्द हों, शरीर ढीला हो। अब तुम उसके पीछे खड़े हो जाओ और मामूल से कहो कि वह अपने मन में यह विचार करे कि मुझे पीछे गिरना है तुम अपने बायें हाथ को मामूल के मस्तक पर और सीधा हाथ शिखा से तनिक नीचे हट कर लगाओ। धीरे-धीरे अपने बांये हाथ के सहारे से मामूल के शिर को दांये हाथ की हथेली पर लो। जब मामूल झुकने लगे तो धीरे से अपना बायां हाथ इस प्रकार हटालो कि मामूल को मालूम न पड़े और फिर अपना सीधा हाथ भी उसी प्रकार

हटाओ तो मामूल पीछे की ओर गिरने लगेगा परन्तु मामूल को गिरने न दो और सावधानी के साथ उसको पकड़ लो। ऐसे समय पर आमिल के बहुत अधिक सावधान होने की आवश्यकता है। मामूल को भी पूरे तौर पर विश्वास रखना चाहिये कि मैं गिरूंगा तो मुझे आमिल पकड़ लेगा अतएव पूर्ण विश्वास से इस अभ्यास को पूरा करना चाहिये और उस समय तक इसको बराबर नियत समय तक करते रहना चाहिये जब तक आमिल के मामूल के कंधे से हाथ लगाने से ही मामूल खिंचना आरम्भ न करदे। इसके बाद भी इसका अच्छा अभ्यास करना चाहिये। यह अभ्यास भी कम से कम दो मास में पूर्ण होगा। यद्यपि लोगों को इसमें शीघ्र साफल्य लाभ करते हमने देखा है परन्तु उनमें आकर्षण शक्ति का स्वाभाविक अन्श ही कुछ अपेक्षाकृत अधिक होता है।

अग्राकर्षण—जिस प्रकार मामूल को पहिले खड़े होने के लिए कहा गया है उसी प्रकार अब भी खड़ा हो। यह मामूल वही मामूल होना चाहिए जिस पर पहिले अभ्यास पूर्ण सफल हो चुके हों।

खड़े होने की स्थिति में केवल इतना अन्तर होना चाहिये कि इस अभ्यास में मामूल को अपने नेत्रों के बन्द करने की आवश्यकता नहीं है मामूल को चाहिये कि वह अपने मन में यह ध्यान जमाता रहे कि मैं आगे की ओर खिंचूगा। अब आमिल को चाहिये कि वह अपने दोनों हाथों की उंगलियों को मामूल की कनपटियों पर रखे। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि आमिल को मामूल के सन्मुख खड़ा होना चाहिये अब मामूल से अपनी आंखों की ओर टकटकी लगाकर देखने के लिये कहो। और मामूल की नाक की जड़ की ओर देखना प्रारम्भ करो परन्तु आमिल को अपने मन से हर समय यही ध्यान रखना चाहिये कि मैं मामूल को अपनी ओर आकर्षित कर रहा हूँ। जब दो मिनट इस प्रकार हो जायं तो आमिल को चाहिये कि अपने दोनों हाथों की उंगलियां धीरे-धीरे कनपटियों पर से इस प्रकार हटाले कि मामूल को मालूम न पड़े तो मामूल आगे की ओर खिंचने लगेगा। इस प्रकार के अभ्यास पूर्ण होने पर मामूल आमिल की आज्ञा पर ही आगे खिंचने लगेगा। इस अभ्यास के लिये दो मास से कम की आवश्यकता नहीं है।

हाथ बांधना—हिप्नोटिज्म का चौथा अभ्यास हाथ बांधना है। जब पहिले तीनों अभ्यासों में पूर्ण निपुणता प्राप्त हो जाय तब इस चौथे अभ्यास की ओर प्रवृत्त होना चाहिये। मामूल को अपने सन्मुख खड़ा करके उसके दोनों हाथों की उंगलियों को अपने हाथों की उंगलियों में मिलाकर बांधों तथा मामूल से कहो कि वह तुम्हारे नेत्रों की ओर दृष्टि बांध कर देखता रहे तुम भी उसकी नासिका की जड़ की ओर दृष्टि जमा कर देखो। मामूल को चाहिये कि वह मन में इस बात का ध्यान करो कि मेरे हाथ बंध गये। अब वह पृथक-पृथक नहीं हो सकते। आमिल भी मन में यही विचारता रहे। ५ मिनिट पीछे आमिल को चाहिये कि वह धीरे-धीरे अपने हाथों की उंगलियां निकाल ले तथा अपने दोनों हाथों से मामूल के दोनों बाहुओं पर पास करे। मामूल अपने जुड़े हुए हाथों को अलग-अलग नहीं कर सकता। यह बात पहिले ही दिन प्राप्त नहीं हो सकती। पूर्ण अभ्यास की आवश्यकता है। उपर्युक्त अभ्यासों में आमिल और मामूल को अपने मन में ही कार्यवाही के ध्यान में रखने से पूर्णता प्राप्त हो सकती है परन्तु यदि आमिल रोबदार आवाज में

सजेशन भी देता जाय तो शीघ्र ही अभ्यासों में सफलता हो सकती है। जैसे इसी अभ्यास में यदि आमिल यह कहता जाय कि तुम्हारे हाथ बंध गये अब तुम अपने हाथों को अलग-अलग नहीं कर सकते तो अवश्य ही सजेशन मामूल के हृदय पर प्रभाव डालेगा और अभ्यास की पूर्ति में सहायता मिलेगी। यों तो हिप्नोटिज्म सीखने के लिये बहुत से अभ्यास करने पड़ते हैं परन्तु ऊपर लिखे चारों अभ्यास बड़े उत्तम हैं। उनके प्रयोग से आमिल शीघ्र ही हिप्नोटिज्म में सुदक्ष बन सकता है। इन अभ्यासों को हमने कई हिप्नोटिज्म के जानने वालों से मशवरा करके तथा पुस्तकों का मनन करके लिखा है। अतएव यह अभ्यास सर्वोत्तम हैं अत्यन्त स्थिरता, बुद्धिमता और सावधानी के साथ इन अभ्यासों में कुशलता प्राप्त करनी चाहिये क्यों कि यही अभ्यास इस अद्वितीय विद्या के सीखने की सीढ़ियां हैं। इन चारों अभ्यासों के पूर्ण करने में थोड़ा सा समय तो अवश्य लगेगा परन्तु नियत समय पर एकान्त में इसका अभ्यास करना, चित्त को एकाग्र करना आदि बातें इस विद्या के सीखने में और भी शीघ्रता ला सकती हैं।

जब मामूल के हाथ बंध जायं तो उसे प्रभाव के दूरीकरण का प्रयोग करना चाहिये। इसकी सरल तरकीब यह है कि जोर से तीन बार ताली बजा कर सजेशन दो कि अपने हाथों को पृथक करो सावधान हो। मामूल अवश्य ही अपनी स्वाभाविक अवस्था पर आ जायगा और वह अपने दोनों हाथों के पृथक -पृथक करने में समर्थ होगा यदि ऐसा हो कि मामूल हाथ अलग-अलग न कर सके तो आमिल को बारम्बार ताली बजाकर सजेशन देते रहना चाहिये। अवश्य ही मामूल के हाथ खुल जायेंगे।

इन चारों अभ्यासों के पूर्ण करने पर उनको प्रति दिन करते रहना चाहिये ताकि आकर्षण शक्ति और भी प्रबल हो सके और आमिल अपनी करामात दिखाने में सुदक्ष दीख पड़े।

हिप्नोटिज्म का स्वप्न— जब तुम्हारा इन अभ्यासों पर पूर्ण अधिकार हो जाय तो समझ लो कि अब तुमको हिप्नोटिज्म करने की शक्ति आगई। परन्तु अपनी इस शक्ति पर कभी अभिमान न करना चाहिये।

हिप्नोटिज्म के आमिलों के नेत्रों से एक विचित्र प्रकार की ज्योति निकलती रहती है। साधारण मनुष्य इन नेत्रों की ओर देखकर भयभीत होने लगते हैं।

यदि किसी आमिल के नेत्रों की ओर देखिये तो आपको अग्नि सी जलती हुई मालूम देगी। और उनमें से एक ऐसे प्रकार का प्रकाश निकलता हुआ मालूम देगा जिससे यह ज्ञात हो मानो कोई हमारे ऊपर अधिकार कर रहा है। हिप्नोटिज्म का स्वप्न एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें मनुष्य अपनी बाह्य अवस्था से सर्वथा अनभिज्ञ होता है। वह स्वप्न ऐसा नहीं होता कि मामूल सो जाय अपरन्च वह आमिल के आधीन होता है। आमिल के सजेशन के साथ ही मामूल उसकी आज्ञानुसार काम करने लगता है। आमिल अपने सजेशन से ही मामूल को अनेक प्रकार के तमासे दिखला सकता है। मामूल को वीर-भीरू, भीषण बनाना आमिल के हाथ में ही है। इसी के द्वारा मामूल की बुरी आदतें भी छुड़ाई जा सकती हैं। अच्छी-२ बातें और तत्व उसके मस्तिष्क में डाले जा सकते हैं जिनसे मामूल को लाभ हो सके।

दिल का भेद लेना—यदि तुम यह चाहो कि किसी मनुष्य के हृदय में कोई गुप्त भेद है तो तुम उसके नेत्रों की ओर तीव्र दृष्टि से देखकर उस पर अपनी शक्ति का प्रभाव डालो। यह ध्यान में रखो कि

हिप्नोटिज्म की शक्ति का प्रभाव हर मनुष्य पर अच्छी प्रकार हो सकता है। आमिल लोग बातें करते ही अपना प्रभाव डाल देते हैं और मामूल को यह भी मालूम नहीं होता कि उन पर कोई शक्ति अपना अधिकार जमा रही है। किन्तु वह अज्ञात अवस्था में हो जाते हैं। आमिल के सजेशन देने पर ही मामूल अपने दिल के सारे भेद प्रकट कर देता है। आप जो कुछ उससे पूछेंगे उसका ठीक-२ उत्तर देगा। तथा उसको जो कुछ मालूम होगा बतला देगा।

हिप्नोटिज्म का तमाशा—हम आपको अपने पर ही बीती एक बात सुनाते हैं। जिस स्कूल में मैं पढ़ता था अचानक वहीं एक हिप्नोटिज्म का उस्ताद भी ठहरा हुआ था। एक दिन उसने हिप्नोटिज्म के तमाशे दिखलाये थे एक गोल मेज के पास कुरसी पर बैठ गया और हम चार लड़के भी कुरसियों पर बैठ गये। एक गिलास में जल भरा हुआ मेज के ऊपर रखा था उसने कहा कि तुम चारों लड़के दृष्टि जमाकर इस गिलास के पानी की ओर देखो अतएव हम लोगों ने वैसा ही करना प्रारम्भ किया। उस आमिल के पास एक किताब थी जिसकी ओर वह गौर के साथ देख रहा था। हमको बड़ा आश्चर्य

हुआ क्योंकि उस गिलास के पानी में से सफेद धूम्र उठता हुआ दिखलाई दिया। पहिले २ यह धुंआ बहुत हलके परिमाण में उठता हुआ दिखलाई दिया परन्तु धीरे-धीरे उसकी मात्रा बढ़ती गई। हमने देखा कि सारा कमरा धूम्रमय हो रहा है। परन्तु हमको किसी प्रकार का कष्ट न मालूम होता था। थोड़ी ही देर बाद हमने देखा कि हमारे नेत्रों के सम्मुख धूम्र पुन्ज एकत्रित है। परन्तु हमको यह देखकर और भी कुतूहल हुआ कि उस धूम्र पुन्ज में से नीचे की ओर दो पांव लिकलते हुए दिखलाई पड़े। वह पांव धीरे-धीरे बढ़ने लगे। तथा बीच का धड़ उत्पन्न हो गया और क्षण भर में ही हाथ और मुंह भी बन गया अब हम अपने सन्मुख परम सुन्दरी बाला को देखते हैं जिसकी अवस्था अनुमान से पन्द्रह सोलह वर्ष की जचती थी। उसके शरीर पर दक्षिणी ढंग की साड़ी शोभा दे रही थी। हाथ पैरों और गले में अनेक अमूल्य आभूषण थे ऐसी मनोहर छवि देख मुझ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर तक हम उसके रूप रंग की बहार निरखते रहे परन्तु एक साथ ही हमारे नेत्रों के सम्मुख अंधेरा हो गया। देखा तो कमरे में हम पांचों आदमियों के अतिरिक्त

कोई भी नहीं है। हम चारों लड़के विस्मयापन्न हो एक दूसरे की ओर देखने लगे। आमिल ने हमसे पूछा कि तुमने क्या चीज देखी। अतएव जिस जिसने जो देखा था वही बयान किया परन्तु इस बात ने हमारा आश्चर्य और भी बढ़ा दिया कि हम चारों लड़कों ने एक ही प्रकार तमाशा देखा था। वह छवि मूर्ति तथा उसके वेश भूषण नख सिख आदि सबका वर्णन मिलता था। हम लोग बड़े कौतूहल के साथ आमिल की ओर देखने लगे आमिल का मुख प्रसन्न था। वह सफलता के कारण हंस रहा था। हम लोगों ने बहुतेरा सोच विचार किया परन्तु उसका रहस्य समझ में न आया अन्ततः जब हमने उस आमिल से पूछा। उसने आंय बांय शांय करके टाल दिया परन्तु हम भी एक ही बिगड़े दिल थे उसके पीछे पड़ गये। खैर, उसने दो चार तमाशे और दिखलाने बाद हमको इसका रहस्य समझाने का वचन दिया।

इस खेल की तह में दृष्टि डाली जाय तो अच्छी तरह अब समझ में आ सकता है। हम कह चुके हैं कि आमिल के पास एक किताब थी जिसकी ओर वह अधिक ध्यान के साथ देखता जाता था हमने

देखा तो आमिल उस किताब के एक चित्र की ओर देख रहा था। चित्र को देखा तो और भी चकित रह जाना पड़ा क्यों कि चित्र बिलकुल वैसा ही था जैसी छवि हम हिप्नोटिज्म स्वप्न में देख चुके थे। इसका कारण केवल यही है कि आमिल के सजैशन ने हमको ऐसी छवि दिखला दी वह चित्र की ओर देखकर सजैशन कर रहा था कि इस चित्र की छवि मामूल को दिखलाई पड़े।

मामूल आमिल के हाथ में कठपुतली होता है। आमिल जैसा चाहे नाच नचा सकता है। आमिल अपने सजैशन द्वारा मामूल को इतना आज्ञाकारी बना सकता है कि वह हर प्रकार का अच्छा या बुरा कार्य सम्पादन कर सकता है। बीसियों घटनायें इस प्रकार की देखने और सुनने में आई हैं कि अमुक मनुष्य ने अमुक मनुष्य के द्वारा अमुक मनुष्य की जान ले ली। यह भी सजैशन का बहुत छोटा सा अंश है। परन्तु हिप्नोटिज्म में मामूल को आकर्षण शक्ति से प्रभावित कर यदि उसके हाथ में तलवार देकर यह सजैशन दे दिया जाय कि तुम अमुक मनुष्य को मार आओ। तो मामूल ज्ञान शून्यावस्था में अंधों की भांति चल देगा और सीधा उस मनुष्य

को जिसके मारने की आज्ञा दी है बधकर आवेगा। सजैशन का प्रभाव ही ऐसा प्रबल होता है तथा हिप्नोटिज्म मामूल को ज्ञान शून्य बना देता है।

आदमी कुत्ता बिल्ली बन्दर या शेर नजर आवे

अपने मामूल पर प्रभाव डालकर उससे कहो कि हम तुमको एक शेर दिखलाते हैं। तथा किसी मनुष्य की ओर संकेत कर कहो कि देखों शेर खड़ा है। या कुत्ता या बिल्ली मौजूद है तो मामूल सजैशन के प्रभाव से पूर्ण हो उठेगा तथा उसको शेर, कुत्ता या बिल्ली (जो कुछ दिखलाना हो) वही दिखलाई पड़ेगा। तथा मामूल की भी वही अवस्था हो जायेगी जैसी मनुष्यों की शेर कुत्ता या बिल्ली के देखने के समय हो जाती है। मामूल से पूछने पर वह कहेगा कि मुझको शेर, कुत्ता बिल्ली या बन्दर दृष्टिगोचर हो रहा है।

जादू—आपने अब तक बीसियों जादूगरों का तमाशा देखा होगा। परन्तु अब तक यह बात समझ में न आई होगी कि किस प्रकार एक गुठली से उसी समय आम का वृक्ष बन गया तथा उसमें फल लग गये या किस प्रकार मनुष्य को एक छड़ी सांप

की शकल में दिखलाई देने लगी या घड़ी कूटने से फिर कैसे ठीक हो गई या कुंए में डाली हुई अंगूठी किस प्रकार बाहर निकल आई या स्त्री किस प्रकार उड़ गई तथा फिर दूसरे के पास दिखलाई देने लगी आदि महान आश्चर्य कारक खेल तमाशे हैं जिन्हें हम लोग जादू के नाम से पुकारते हैं। बुद्धि लड़ाने पर भी इनकी कुछ असलियत ज्ञात नहीं होती। जादूगर भी इस को केवल हाथ की सफाई बताकर टाल देता है परन्तु यदि अधिक ध्यान से विचार किया जाय तो सारा रहस्य खुल जाता है। यह जादूगर लोग मेस्मरेज्मि या हिप्नोटिज्म की असलियत से जानकार होते हैं। उनके नेत्रों में विलक्षण आकर्षण शक्ति तथा बढ़ी हुई मांसिक शक्ति होती है जिसके कारण वह अपना काम कर जाते हैं। जिस प्रकार आमिल एक मनुष्य पर हिप्नोटिज्म स्वप्न का प्रभाव डाल सकता है उसी प्रकार वह पूरे समूह पर भी डाल सकता है यही कारण है कि तमाशाई समूह कुत्ते को बिल्ली या शेर आदि दिखलाई पड़ने लगते हैं। आमिल के सजैशन के प्रभाव ही से लकड़ी या रस्सी सांप दृष्टिगोचर होता है। यही बातें घड़ी टूटने तथा उसके ठीक हो जाने, स्त्री खो जाने तथा पा

जाने, अंगूठी को कुएं में डाल देने तथा उसके फिर पा जाने में काम आती हैं। इसमें केवल दृष्टि बन्धन तथा विचार के प्रभाव की बात है। अपने विचार का प्रभाव कैसे पड़ता है इसको हम आगे समझावेंगे।

बहुत से खेलों का सम्बन्ध हाथ की सफाई से है और बहुतसों का दृष्टि बन्धन से और बहुतसों में दोनों बातों का काम पड़ता है। चालाकी फुरती और जोरदार भाषण की बड़ी आवश्यकता होती है जिससे समस्त तमाशाइयों पर प्रभाव पड़े, वे चकित और स्तम्भित होकर तुम्हारी कार्यवाही को देखें। उनकी दृष्टि पर प्रभाव पड़ेगा। उनको जो बात जैसी दिखाओंगे दिखलाई पड़ेगी। मानो तुम अकेले आमिल बनकर अपने समस्त मामूलों पर हिप्नोटिज्म का प्रभाव डालते तथा उनको इच्छानुसार तमाशा सजैशन के द्वारा दिखलाते हो।

मेस्मेरेजिम के स्वप्न—मामूल पर जब मेस्मरेज्मि किया जाता है तो स्वप्न की कई आवस्थायें होती हैं। मेस्मरेजिम करते-करते ही मनुष्य एक अवस्था से दूसरी अवस्था पर पहुंच जाता है। वास्तव में यह जितनी अवस्थायें लिखी जाती हैं वह सब योग से सम्बन्ध रखती हैं परन्तु चूंकि मेस्मरेजिम भी योग की

ही एक शाखा है अतएव इन अवस्थाओं का बहुत थोड़ा सा वर्णन कर देना ही यहां पर्याप्त है।

जागृत अवस्था—आमिल जब मामूल पर प्रभाव डालता है तो मामूल में सबसे पहिली अवस्था जागृतावस्था की होती है। इसमें मामूल की वाह्य इन्द्रियां अपना सब काम करती हैं परन्तु वह अपने आमिल के आधीन हो जाती हैं। आप इस जागृतावस्था में मामूल से पूछेंगे कि तुम पर कुछ प्रभाव हुआ या "नहीं"। मामूल तुरन्त जबाब देगा कि नहीं, इस अवस्था में मामूल अचैतन्य नहीं होने पाता और न इस अवस्था मं मेस्मेरेजिम की करामातें ही दिखलाई जा सकती हैं। यदि आमिल होश्यार हो तो इस अवस्था में भी बहुत सी बातें दिखला सकता है। परन्तु आमिल को मामूल की शक्ति से पूर्ण सामना करना पड़ता है।

तुर्य अवस्था—जागृतावस्था के पश्चात् तुर्यावस्था का नम्बर है। मामूल पर प्रभाव पड़ते-पडते जब तक आंखें बन्द न हों जागृतावस्था है तत्पश्चात् वह तुर्यावस्था में परिवर्तित हो जाती है। इस अवस्था को अर्द्ध स्वप्न कहना चाहिये क्योंकि इस में नेत्र बन्द होने के अतिरिक्त अन्य इन्द्रियां ज्यों का त्यों

काम करती रहती हैं तथा मामूल पर इतनी अचैतन्यता नहीं व्यापती कि उसको सहारा लगाना पड़े या लिटाना पड़े ऐसा ज्ञात होता है कि मानों वह किसी गूढ़ विचार में तल्लीन बैठा है।

इस अवस्था में मामूल आमिल के बहुत से प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक दे सकता है परन्तु ऊंचे दर्जे और मार्के की बातें नहीं बतला सकता। हां, पहिली और यह दूसरी अवस्थायें चिकित्सों के खास मतलब की हैं क्योंकि हर एक छोटे मोटे रोगों की चिकित्सा इन अवस्थाओं में हो सकती है।

सुस्वप्ति—मेस्मरेजिम के प्रभाव की अधिक मात्रा के करण तुर्य्यावस्था से सुस्वप्ति अवस्था होती है। इस अवस्था में मामूल पर पूर्ण अचैतन्यता होती है। मामूल गहरी निद्रा में सो जाता है। यद्यपि मामूल आमिल की आज्ञा के आधीन होता है। आमिल जब जो प्रश्न करेगा मामूल उसका उत्तर देगा परन्तु उसके उत्तर देने के ढंग से यह बात ज्ञात होगी कि वह बोलना नहीं चाहता परन्तु उसको न तो कोई कष्ट ही होता है और न कोई क्लेश ही सताता है आमिल के प्रत्येक प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर इस अवस्था में मिलेगा और सम्भवतया रोगी के मस्तिष्क

सम्बन्धी रोगों की चिकित्सा इस अवस्था में बहुत अच्छी प्रकार से हो सकती है।

अन्तर दृष्टि—यदि किसी मामूल से उसके हृदय का हाल पूंछते रहो तो होते-२ उसको अन्तर दृष्टि प्राप्त हो जाती है। अधिकतर रोगी मामूलों को यह दृष्टि प्राप्त होना सम्भव रहता है। जब अन्तर दृष्टि प्राप्त हो जाती है तो मामूल अपने शरीर के समस्त हालात इस प्रकार वर्णन करने लगता है मानो वह किसी छपी हुई पुस्तक को पढ़ रहा हो। मेस्मरेजिम से मामूल को उसी समय अन्तर दृष्टि प्राप्त होती है जबकि उस पर प्रभाव ही किया जाय। बिना प्रभावित होने के वह कुछ कह नहीं सकता परन्तु योग के नियम साधन इस बात को बतलाते हैं कि योगी स्वयं और हर समय अपने शरीर के समस्त हालात बयान कर सकता है। क्योंकि मन की निश्चलता और पवित्रता उसकी दृष्टि को बहुत की सूक्ष्म कर देती है जो शरीर के परदों में पार होकर सब बातें देखकर बतला सकती है।

दूर दृष्टि—मेस्मरेजिम का अभ्यास करते २ मामूल को दूर दृष्टि प्राप्ति हो जाती है। वह दूर-दूर की बातें वहीं बैठे हुए बतला सकता है। यह केवल

आमिल के अभ्यास की शक्ति पर निर्भर है, आमिल जब पूरा पारांगत हो जाय तो वह हर किसी मामूल को प्रभावित कर, चाहे जिस जगह का हाल वहीं बैठकर पूंछ सकता है परन्तु इसमें दिक्कत बस यही है कि बिना मामूल की सहायता के वह कुछ कर नहीं सकता। मामूल का मन आमिल के वश में होकर चाहे जहां तक आ जा सकता है।

त्रिकालदर्शी या दिव्य दृष्टि — ऐसी दिव्य दृष्टि प्राप्त करना कि भूत, भविष्य तथा वर्तमान का हाल जाना जा सके या जिससे अन्तर दृष्टि या दूर दृष्टि का भी काम लिया जा सके योगियों को ही यह प्राप्त हो सकती है हर किसी को नहीं। इसके सम्बन्ध में हम योगाभ्यास के विभाग में वर्णन कर चुके हैं परन्तु यहां पर केवल यह दिखाना है कि ऐसी अन्तर दृष्टि, दूर दृष्टि या दिव्य दृष्टि प्राप्त होना सम्भव है या नहीं। बुद्धि या साइन्स भी कुछ सहायता करती है या नहीं। पहिले हम यह बात दिखलाना चाहते हैं कि भूत काल की बातें कैसे देख सकते हैं। देखो सूर्य प्रकाश पुन्ज है। सूर्य ने समस्त प्राकृतिक वस्तुओं को प्रकाश दिया है। कोई भी चीज ऐसी नहीं जिसमें प्रकाश की लहर न हो। देखो बिजली

एक साथ कड़कती और चमकती है परन्तु उसकी चमक हमको बाद में ज्ञात होती हैं। सूर्य पूर्वी देशों के अतिरिक्त यहां देर में उदय होता है। विलयात का तार यहां देर में आता है यद्यपि उसको चले हुए कई घंटे हो जाते हैं, आदि इस बात के प्रसिद्ध प्रमाण हैं कि हमको भूतकाल की बातें मामूल हो सकती हैं। इसी सिद्धान्त पर यह भी कहा जा सकता है कि संसार में प्रत्येक वस्तु, घटना, शब्द आदि की लहरें हैं जो हर समय वायु मण्डल में घूमती रहती हैं। साधन उपस्थित हैं जिनके द्वारा इन लहरों को इकट्ठा किया जा सकता है। वह लहरें तुरन्त ही भूतकाल की बातों का ज्ञान करा देती हैं। हमारे योग शास्त्र द्वारा भूतकाल की बातें जानना बहुत साधारण बात है। ज्योतिष भी भूतकाल की बातें अच्छी तरह बता सकती हैं।

आप देखते हैं कि ज्योतिषशास्त्र भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सहस्रों बातों के बतलाने में समर्थ है। सामुद्रिक द्वारा मनुष्य ही बहुत सी बातें बतलाई जाती हैं। इन ग्रहों और नक्षत्रों तथा तारों से भी घटनाओं का विशेष सम्बन्ध है। हम कह चुके हैं कि सूर्य के द्वारा समस्त विश्व प्रकाशित है परन्तु

समस्त विश्व की प्रत्येक वस्तु तथा घटना भी अपना प्रकाश फैलाती हैं जैसे यद्यपि चन्द्रमा सूर्य से रोशनी लेता है परन्तु रात्रि को वह भी अपना आलोक दिखलाता है। सहस्त्रों तारे और नक्षत्र रात्रि को चमकते हैं। उन सब में सूर्य का प्रकाश है। हमारी पृथ्वी भी एक तारे के समान है जो हर समय चमकती रहती है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक घटना जो हो गई होती है, या होगी उसके प्रकाश की लहरें ग्रहों, नक्षत्र, तारों तथा वायु मण्डल में फैली हुई हैं यही कारण है कि ज्योतिष द्वारा घटना सम्बन्धी बातें विशेष रूप से ज्ञात हो सकती हैं।

आप एक बन्द कमरे में बैठ जाइये परन्तु उस कमरे की किवाड़ों में थोड़ी सी दरार वायु तथा आलोक के लिये हो। उस कमरे के दरवाजे के सन्मुख होकर भी कोई निकलेगा उसी की छाया कमरे में होकर जाती हुई दृष्टिगोचर होती होगी। यद्यपि उस मनुष्य आदि को तुम देखते नहीं हो, वह चाहे जितनी होश्यारी या सावधानी से निकले परन्तु तुम्हारे कमरे में होकर उसके साये का गुजर अवश्य होगा और तुम तुरंत ही अपने मन में जान सकते हो कि बाहर होकर अवश्य ही कोई मनुष्य निकला है। इस सिद्धान्त से यह पता

चलता है कि हमारे परोक्ष की वस्तुओं तथा घटनाओं का हाल भी हमको मामूल हो सकता है और भी लीजिये, डाक्टर-हकीम शारीरिक अवस्था देखने के लिये यंत्र का प्रयोग करते हैं। नब्ज देखकर वह लोग सारे शरीर की अवस्था बतला सकते हैं। तार या बिना तार का तार जितनी चाहें दूर भेजा जा सकता है, दूरबीन से दूर की बहुत सी चीजें देखी जा सकती हैं। ज्योतिष यंत्रों से तारे नक्षत्रों का हाल भी जाना जा सकता है। इससे इस बात का पता चलता है कि दूर की बातें जिनको हम देखते नहीं हैं हमारे देखने तथा ज्ञान में आ सकती हैं।

अब रहा भविष्य की बातें और घटनाओं के सम्बन्ध में। मैं पहिले कह चुका हूं प्रत्येक कि गत, उपस्थित तथा भावी घटना के बीज नक्षत्रों आदि में मौजूद हैं देखिये आपने प्राय: देखा है कि लोग अपने अनुभव से आगे की बहुत सी बातें बतला दिया करते हैं और वह सत्य ही बैठती हैं। ज्योतिषी लोग भविष्य की बातें कहते हैं और वह प्राय:सत्य होती हैं। इस महा प्रलयकारी युद्ध के सम्बन्ध में यूरोप के किसी-किसी राजनीति विशारद ने पहिले ही से कह दिया था। बहुत सी बातें आप अपने

अनुभव से देखते हैं। प्रायः उनको सही ही पाया होगा परन्तु इतनी बात अवश्य है कि भूत काल या वर्तमान की बात से भविष्य की घटना बतलाना तनिक अधिक कठिन सा है परन्तु एकाग्र चित्त रखने वाले महापुरूषों, योगियों आदि के लिये यह बात भी कुछ कठिन नहीं है।

हिप्नोटिज्म या मेस्मरेजिम कर्त्ता की त्त्तिवृत्ति यदि अच्छे कार्यों की ओर रही और वह उसी की ओर बढ़ता गया तो एक दिन ऐसा अवश्य होगा कि वह अपने अभ्यास द्वारा ही दिव्य दृष्टि प्राप्त कर लेगा यद्यपि इस दृष्टि की प्राप्ति करना अत्यन्त गुरूतर काम है परन्तु करने वाले कर ही लेते हैं। किन्तु योग विद्या के जानने वाले योगाभ्यासियों के लिये यह बात कुछ भी कठिन नहीं है। यह चमत्कार तो कोई चीज नहीं, योगाभ्यासियों को बड़े-बड़े अद्‌भुत विस्मय कारक चमत्कार प्राप्त हो जाते हैं जिनका वर्णन हमने सूक्ष्मतयः योगाभ्यास के प्रकरण में किया है।

विचार शक्ति

विचार के सम्बन्ध में हमने पहिले थोड़ा बहुत लिखा है। यहां केवल उसके सम्बन्ध की आवश्यकीय बातें ही और लिखना चाहते हैं।

चारों ओर देखिये विचार ही विचार हैं। विचार के अतिरिक्त कुछ नहीं, मनुष्य विचारों का समूह है। संसार भर में विचार भरे पड़े हैं। फिर मनुष्य बिचारहीन कैसे रह सकता है। मन में न मालूम कैसे कैसे विचार उठा करते हैं। ज्यों-२ मन में विचार कम उठते हैं त्यों त्यों मन संशोधित होता जाता है। विचारों के दृढ़ और सबल होने पर मन में संशोधन का आरम्भ होता है अतएव मन में किसी विचार को स्थान मत दो परन्तु ऐसा बिना प्राणायाम के हो नहीं सकता।

अपने मानसिक विचारों को दृढ़ करने के लिये तुमको बड़ा भारी प्रयत्न करना चाहिये। इसके लिये तुम अपने विचार की शक्ति पर भरोसा करो अपने पर भरोसा करो और समझो कि तुम में असम्भव से असम्भव काम करने की शक्ति है। विचार करो कि मैं ही सब कुछ हूं और सब कुछ कर सकता हूं इस प्रकार तुम्हारी आत्मा सबल होगी। तुम्हारे विचार सबल होंगे, तुम्हारे कार्य सबल होंगे। विचार सबल होने से मन की चन्चलता कम होगी। बार-बार एक दूसरे से विरूद्ध विचारों का आना बन्द होगा। मन में स्थिरतत्व और निश्चलत्व की लहरें उत्पन्न होंगी।

। जल में यदि तुम अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहो तो देखा जा सकता है परन्तु यदि जल में जल्दी-२ लहरें उठ रही होंगी तो तुमको अपना प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ नहीं सकता हां, लहरों के बन्द होने अथवा जल के स्थिर होने पर ही तुमको फिर अपना प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ सकता है। यही बात बिलकुल मन की है। मन में यदि अनेक प्रकार के विचार भरे रहेंगे तो मन स्थिर न होगा और न किसी प्रकार की सिद्धि ही प्राप्त होगी। विचार से जगत बना है। विचार एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ जा सकता है। हम आपको आपके ही अनुभव की बात बतलाना चाहते हैं। आपको हिचकियां आने लगीं तो आप कहते हैं कि हमको किसी ने याद किया आपके हृदय पर यदि किसी प्रकार का क्लेश स्वत: हो जाता है तो आप कहते हैं कि कोई अपशगुन होने वाला है और प्राय: यह बातें सही ही निकलती हैं। कोई किसी का अजीज रिश्तेदार मर जाय तो दूर रहने पर भी उसको कुछ न कुछ शोकप्रद लक्षण दिखलाई पड़ेंगे। आप किसी को प्रेम की दृष्टि से देखें तो अवश्य उसके हृदय में भी प्रेम उत्पन्न होगा। गुरु गोरक्षनाथ अपने भक्तों की सहायता के

लिये तुरंत ही याद करते पहुंच जाते थे। श्री कृष्ण भी केवल याद करते ही अपने भक्तों की सहायता के लियें नंगे पांव दौड़ते हैं। द्रौपदी के याद करने पर ही श्री कृष्ण उसके चीर को बढ़ा देते तथा समस्त सभा सदों को अपना योग चमत्कार दिखाकर चकित कर डालते हैं आदि अनेक बातें जो इस बात के प्रमाण में पेश की जा सकती हैं कि एक हृदय से विचार उठकर दूसरे हृदय पर भी प्रभाव डाल सकता है। यही स्वाभाविक बिना तार की तार बर्की है जो मनुष्यों के हृदयों में प्रकृति ने उत्पन्न कर दी है।

अब यह तो प्रमाणित हो गया कि हृदय का विचार दूसरे हृदय पर प्रभाव डाल सकता है। परन्तु इस विचार परिवर्तन की विधि क्या है इसका वर्णन हिप्नोटिज्म या मेस्मरेजिम में अच्छे प्रकार हो चुका है। हमको यहां व्यर्थ पृष्ठ काले करना स्वीकार नहीं है।

आत्मिक विद्या

जीवात्मा और भूत प्रेत

संसार में भूत, प्रेत, जिन्न या जीवात्माएं विचार कर लोगों को हानि लाभ पहुंचाते हैं या नहीं यह हमारे दिन रात के देखने की बातें हैं। इन जीवात्माओं

से कोई काम लिया जा सकता है या नहीं अथवा यह जीवात्माएं वास्तव में संसार में विचरती भी हैं या नहीं आदि भूत प्रेतों के संबंध में अनेक प्रश्न मन में स्वत: उत्पन्न होते हैं। भूत, प्रेत या जीवात्मा संसार में कोई चीज बिचरने वाली है भी या नहीं जब इस प्रश्न के ऊपर ध्यान देते हैं तो चित्त डांवा डोल हो जाता है। भूत जिन्नों के सहस्त्रों किस्से प्रसिद्ध हैं। हिन्दू पुराण इस बात की पुष्टि करते हैं कि जीवात्माएं विचरती रहती हैं, मुसलमानों की सुप्रसिद्ध धार्मिक कुरान शरीफ से भी यह बात प्रमाणित है कि भूत जिन्न आदि कोई चीज है जो संसार में रहती है चाहे वह दृष्टि में न आवे। ईसाइयों की बाइबिल से भी यही पता चलता है। तिलिस्म होश रूबा, चिराग अलाउद्दीन तथा आलिफ लैला आदि कहानियों से भी यह बात प्रमाणित है कि भूत प्रेतों की स्थिति तो अवश्य है। कुछ जातियां तो इन जीवात्माओं को ईश्वर के तुल्य मानती हैं। मसानी देवी, देवता, सैयद और भसान तथा माता चामुण्डा का पूजन किया जाता है।

विलायती समाचार पत्र रिव्यू आफ रिव्यूज के सम्पादक स्वर्गीय सैंड साहिब भी भूतों की उपस्थिति

की पुष्टि करते हैं। उन्होंने भूतों का अनुभव कर स्वयं उनके चित्र तक लिये हैं। कोई भी देश ऐसा नहीं जहां के निवासी भूतों के अस्तित्व पर विश्वास न करते हों। हम लोग भी दिन रात सुना करते हैं कि अमुक मकान में भूत प्रेत का दखल है। अमुक पीपल के वृक्ष पर भूत रहता है आदि बातें ऐसी हैं जो भूत प्रेत जिन्न या जीवात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास करने पर विवश करती हैं।

यह आत्मायें निराकार होती हैं। इनकी सूरत दिख नहीं सकती यही कारण है कि पढ़े लिखे विद्वान लोग कम विश्वास करते हैं। परन्तु अनपढ़ लोगों को उनका विश्वास है, उन लोगों का इस विषय में अनुभव है। विलायत के कितने ही विद्वानों ने अनुसंधान और अनुभव कर ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें उन्होंने इस बात का अच्छी प्रकार अनुमोदन किया है। बिलायत के भी कितने ही ऐसे मकानों का समाचार पत्रों में वर्णन छपा है जहां पर कि भूतादि के सम्बन्ध में अनुसंधान किये गये थे। या जिनमें भूतादि का रहना बयान किया जाता है। भारतवर्ष में भी ऐसे सहस्त्रों कही घर होंगे परन्तु यहां की पठित जन समाज में इस बात की क्षमता नहीं कि इन

बातों का अनुभव कर इनसे कोई काम ले। अस्तु इन बातों से यह स्पष्ट प्रकट है कि आत्मायें हवा में अवश्य विचरती रहती हैं जिनके अविश्वास करने के लिये अब कहीं भी स्थान नहीं।

बच्चे आदि टका उठाने या उतारा आदि करने से ही आरोग्य हो जाते हैं। यह बातें असत्य नहीं हैं दिन रात अनुभव में आती हैं। अतएव संदेह करने की गुंजाइश नहीं।

यह शक्तियां या आत्मायें अच्छी बुरी दोनों तरह की होती हैं। अच्छी आत्माएं लाभ और बुरी आत्माएं हानि पहुंचाती हैं। इन आत्माओं का अधिकतर अपने कुटुम्बियों से ही सम्बन्ध रहता है या जिनसे अधिक प्रेम या सम्बन्ध हो। ऐसा भी होता है कि जिन आत्माओं की इच्छा या रुचि जहां पहले अधिक रही हो वहीं विचरती रहती हैं। बहुत सी आत्माएं इधर उधर जंगल में मंडलाती रहती हैं और बहुत सी धन आदि पर बैठी रहती हैं।

इन आत्माओं को प्रसन्न कर बुलाना या अपने आधीन करना हर किसी का काम नहीं। हर एक काम के लिए परिश्रम प्रयत्न, सहनशीलता और स्थिरता की आवश्यकता है। अतएव मनुष्य यदि

उद्योग करे तो आत्माओं को भी अपने वश में कर सकता है।

आत्माओं को वश में रखने वाले या उन्हें प्रसन्न करके बुलाने वाले लोग स्याने कहलाते हैं। आजकल यह लोग कुछ धोखेबाजी भी करने लगे हैं। यह लोग मूर्ख होते हैं तथा पैसा कमाने के लिए इसको एक प्रकार का पैसा नहीं खाते उनसे आत्माएं अधिक प्रसन्न रहती हैं तथा उनको अपने कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त होती हैं। इन आत्माओं का आवाहन लोग कितने ही प्रकार से करते हैं।

साधारण रीति पर आत्माओं के आवाहन के लिये सुगन्धित पदार्थों की धूनी दी जाती है परन्तु आत्मायें मिर्च आदि की धूनी से अप्रसन्न होती हैं। देवी, भैरों, भगवती, हनुमान, शुक्र, शनि आदि देवताओं को सिद्ध करने की पृथक-पृथक विधि है। कुछ विधियां मंत्रों और जापों की हैं और कुछ जंत्रों और नकशों की। इन देवताओं और सितारों के सिद्ध करने की सैकड़ों पुस्तकें छपी हुई हैं अतएव हम इस विषय में कुछ भी लिखना नहीं चाहते।

खोर—खोर देखने की भी विभिन्न तरकीबें हैं। कोई भी मनुष्य किसी तरह देखता है और कोई

वस्तु किसी तरह। कुछ तरकीब हम यहां देते हैं। एक तरीका तम्बाकू द्वारा है। एक चिलम तम्बाकू लेकर किसी ऐसे रोगी पर जिस पर की भूत आदि का दबाव हो या जिस पर किसी दबाव के होने का सन्देह हो सिर से लेकर पांव तक सात बार उतारे अर्थात् पास करे। फिर तम्बाकू को चिलम में भर कर धीरे-धीरे पीता हुआ एकाग्रचित्त होकर ध्यान करने लगे। जिस भूत, चुड़ेल, मसानी, माता आदि का तम्बाकू पीने वाले के मस्तिष्क पर अपना प्रभाव डाल कर बतला देगा कि मैं आमुक हूं और मेरा अमुक रीति से प्रबन्ध होना चाहिये अतएव स्याने लोग रोगियों को उसी आत्मा का नाम तथा उसका प्रयोग आदि सब बातें बतला देते हैं। रोगी लोगों को इस प्रकार आराम हुआ है। बहुत से स्याने लोग ताबीज गण्डे भी बनाकर दे देते हैं जिसके कारम आसेब आदि का दबाव नहीं रहता।

अब यदि प्रत्येक आत्मा आदि से निवृत्ति पाने के लिए मंत्रों को नकश ताबीजों का बयान लिखा जाय तो एक पूर्ण ग्रन्थ तैयार हो जाय। अतएव चुड़ेल आदि आसेब के दूरीकरण के लिये बहुत ही उत्तम है।

आसेब दूर करने का जन्त्र

४	ल ७	१
३ न	ष २	५
कृ ८	९	च ६

इस नक्शे को सिरके की धूनी देकर रोगी के दाहिने हाथ पर बांध दे। तुरन्त रोग नष्ट होगा बहुत से आमिल लोग मन्त्र से पढ़ी हुई काली मिर्चें आदि दे देते हैं।

खोर देखने को दूसरी तरकीब यह है कि अपना एक हाथ रोगी के हाथ में दो और दूसरे हाथ से एक तराजू के दोनों पलड़े बराबर अर्थात् ऊंचे नीचे तो नहीं हैं। कमरे में खामोशी छाई हो। तुम भी एकचित्त होकर पलड़े की ओर ध्यान करो। यह बात ध्यान में रखो कि इस पलड़े में कोई आत्मा आदि आने वाली है। आत्मा के आते ही एक ओर का पलड़ा नीचे की ओर झुक जावेगा। अब यह बात कि कौन सी आत्मा आई है जानने की विधि यह हैं कि प्रत्येक आत्मा का नाम धीरे-धीरे अपने मन में लेना आरम्भ करो। तुम्हारे और रोगी के हाथ मिले होने के कारण तराजू में प्रभाव उत्पन्न होगा

और जिस आत्मा का दबाव होगा उसी के नाम के ध्यान के साथ ही एक ओर का पलड़ा झुक जायेगा। फिर उसी आत्मा को सन्तुष्ट करने का सदुपाय करने देना चाहिये वह आत्मा उस रोगी पर से अपने प्रभाव को उठा लेगी और रोगी अच्छा हो जायेगा।

साधारणतय: एक यह उपाय भी किया जाता है कि तीन सुर्ख मिर्चों को रोगी पर सात बार उतार कर जला दो। आत्मा डर कर भाग जायेगी।

करामाती मेज — करामाती मेज के विषय को भी हट योग का एक अंग ही समझना चाहिये इस मेज को कोई-कोई हाजिरात की मेज भी कहते हैं। हाजिरात या करामाती मेज में आत्मा का अविर्भाव होता है।

एक गोल हल्की मेज बनवाओ जिसमें तीन पाये हों। मेज में किसी प्रकार की धातु का संयोग न हो यह मेज सदैव शुद्ध और साफ तथा कपड़े से ढकी हुई रखनी चाहिये।

एक शुद्ध और उत्तम स्थान में मेज को रखकर पांच छै उत्तम विचार के मनुष्यों को मेज के चारों ओर बिठाओ उन मनुष्यों के दोनों हाथ मेज पर रखे हों। हाथों की उंगलियां एक दूसरे से मिली हुई हों परन्तु उन मनुष्यों (मेम्बरों) के कपड़े या शरीर

का दूसरा भाग यह एक दूसरे से छूने न पावे। यह आवश्यक नहीं है कि मेज पर हाथ रखने वाले सब पुरुष ही हों, स्त्री भी हो सकती हैं। इनको मेम्बर कहते हैं। इन मेम्बरों के अतिरिक्त एक और मनुष्य होता है जो उन सबका लीडर होता है। उसे प्रधान या आमिल कहते हैं।

यह आमिल और मेम्बर सब ही शुद्ध चरित्र होने चाहियें। सब ही लोग करामाती मेज की सत्यता पर विश्वास रखते हों तथा हृदय में इस बात की इच्छा रखते हों कि आत्मा मेज में अवश्य प्रवेश करे।

हर काम में पहिले अभ्यास करने की आवश्यकता होती है। इसलिये कुल मेम्बरान को नियत समय पर प्रतिदिन इसका अभ्यास करना चाहिये। कोई दिन नागा नहीं जाना चाहिये। लगभग एक मास के पूर्ण अभ्यास में आत्मा उतरने में देर न लगा करेगी। जहां शुद्ध चित्त होकर आत्मा का ध्यान किया कि वह मेज में अवतरित हो गई। अतएव यदि दो चार दिन आत्मा के प्रवेश करने में देर लगे या आत्मा न आवे तो हताश होने की आवश्यकता नहीं है। स्थिरता

के साथ काम करना चाहिये, दो चार दिन बाद ही कार्य में सफलता होना प्रारम्भ हो जायेगी।

मेम्बरों से कहो कि मेज पर हाथ का किन्चित भी दबाव न डालें। अपने शरीर को ढीला छोड़ दें और हृदय में आत्मा का ध्यान करें। थोड़ी ही देर पश्चात् मेम्बरों को अपने हाथों में एक प्रकार की सनसनाहट और उष्णता सी प्रतीत होने लगेगी और मेज का एक पाया ऊपर की ओर उठने लगेगा। उसी समय प्रधान को समझ लेना चाहिए कि किसी आत्मा का मेज में प्रवेश हो गया है।

जब मेज में आत्मा का प्रवेश होने लगे तो तुम आत्मा से प्रश्न करने के संकेत नियम करो जैसे यदि अमुक बात हो तो इतनी बार पाया उठे। मेज आपकी बातों का ठीक-ठीक उत्तर दे सकेगी। इसी प्रकार आपको मेज हर प्रकार के गुप्त रहस्यों तक का पता बतला सकती है। जब काम निकल जाय या अभ्यास का समय समाप्त हो जाय तो आत्मा से वापिस जाने के लिए कहो। आत्मा चली जायगी। फिर तुम किसी और बात का उत्तर मांगोगे तो मेज का पाया न उठेगा।

मेज के पायों के उठने का संकेत लेकर प्रधान को चाहिए की भाषा बना डाले जैसे यदि अमुक पाया अमुक बार उठे तो अमुक अक्षर होगा इसी प्रकार आत्मा से बड़े लम्बे चौड़े उत्तर लिये जा सकते हैं।

प्रधान या सिद्ध को अभ्यास द्वारा जीव से प्रेम हो जाता है, जिस जीव से प्रेम होता है वह संकेत पाकर तुरन्त मेज में आ जाता है। उसी जीव के द्वारा अन्य जीवों को भी बुलाया जा सकता है यह जीव भी विभिन्न प्रकृति के होते हैं। सच्चे, झूंठे, नेक तथा बद हर प्रकार से निकलते हैं। अच्छे ही जीवों से अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहिये बुरे जीव उत्तर भी गलत दें सकते हैं। और गलत उत्तर मिलने से करामाती मेज का सारा गौरव नष्ट हो जाता है।

कोई-कोई आत्मा खेल से अधिक प्रसन्न होता है। उनको खेल खिलाकर खुश करने की विधि यह है कि अपने मेम्बरों को मेज के चारों ओर उकड़ू बिठलाओ। उनके हाथ बदस्तूर मेज पर रखे हुए हों। अब तुम जीव से खेलने के लिये कहो। उसी

समय चक्र धीरे-धीरे घूमने लगेगा चक्र के साथ-साथ मेम्बरों को घूमना चाहिये। मेम्बरों को चाहिये कि अपने हाथ जोर से मेज के ऊपर न दबावें। नहीं तो चक्र टूट जाने का डर है।

मेम्बरों को चाहिये कि इस Table Science पर पूर्ण विश्वास रखें। बिना विश्वास के इसमें सफलता होना कठिन है। सदैव शुद्ध रहे अभ्यास का स्थान भी शुद्ध और ऊष्ण हो तथा वहां स्वच्छ हवा का गुजर हो। सुगन्धि हो अर्थात् इस अभ्यास के करने वालों के मन को उकता देने का कोई कारण न हो और न उनके ध्यान बिगाड़ने का कोई कारण हो। जैसे शोर, घड़ी की टन टन आदि। इस साइन्स को खेल समझकर न करना चाहिये। ऐसा करने से लाभ के बदले हानि होने की सम्भावना है।

थाली बजाना

सांप के काटे हुए रोगी या भूतादि के दबाये हुए रोगी को आरोग्य करने के लिये थाली बजाने का प्रयोग किया जाता है। स्याना एक मटके पर कांसे की थाली रखकर स्वयं उसके बराबर एक मूंडे या ऊंचे स्थान

पर बैठ जाता है और स्वयं किसी लकड़ी से थाली बजाता हैं। यह प्रयोग रात्रि में किया जाता है दिन में नहीं। रोगी सामने बैठ जाता है सबका विश्वास यही होता है कि इस प्रयोग से उसको आराम हो जायेगा। थाली बजाने से रोगी को बाह्य निर्बल इन्द्रियां बहुत ही कमजोर पड़ जाती हैं। चूंकि उसका ध्यान यही होता है कि कोई उसके शिर आने वाला है, उसके मस्तिष्क में खलबली उत्पन्न होती है जिससे वह यह समझता है कि उसके शिर कोई देवी या देवता आ रहा है जिसके वेग में शिर हिलाकर घूमने लगता है। थाली का नाद उसके इस कार्य में सहायता देता है। उसके मानसिक विचार एकत्र हो जाते हैं। उस समय आप उससे जो बात पूछेंगे उसका उत्तर वह ठीक देने के लिये उद्यत होगा। यदि उसको सांप ने काटा है तो पृथ्वी पर सांप की सी लकीर काढ़ दो और उस रोगी को उसकी ओर देखने के लिये कहो। वह लकीर ही उसको सांप के रूप में दिखलाई पड़ेगी। उस लकीर के काट देने से उसके शरीर के सांप का विष उतर जायेगा या यदि किसी भूत आदि का दबाव है तो वह अपनी चिकित्सा का स्वयं बतला देगा। थाली बजाने

का प्रयोग भी योग के तत्व और नियमों पर निर्भर है अतएव इसकी सत्यता में सन्देह की गुंजाइश नहीं है।

झाड़ना—बच्चों के छोटे मोटे रोग झाड़ फूंक से ही आराम हो जाते हैं। स्याना नीम के पत्तों का झाड़ा बीमार बच्चे पर देता है। बार-बार उसके शिर से पांव तक लाकर जमीन पर उसको झाड़ देता है। इससे मानो बच्चे का रोग शरीर से निकल कर भूमि में घुस जाता है। इसमें अविश्वास करने का स्थान नहीं है क्योंकि चिकित्सा का यह प्रयोग भी योग का मेस्मेरेजिम के तत्वों पर निर्भर है। स्याने लोग कुछ मन्त्र पढ़ते जाते हैं जो अधिकतर ईश्वर के नाम के अतिरिक्त कुछ अतिरिक्त कुछ नहीं होता। बच्चा निर्बल तो होता ही है स्याने के पासों का आकर्षिणी प्रभाव पड़ता है जिससे बीमार बच्चों को तुरन्त ही आराम हो जाता है यही कारण है कि भारतवर्ष के अपठित स्त्री पुरुषों को आज भी फूंक का प्रयोग सूर्योदय से पूर्व का सूर्यास्त के पश्चात् किया जाता है।

आंकना—शिर पीड़ा या कण्ठे के रोगी केवल आंकने से आराम को प्राप्त हो जाते हैं। हाथ की उंगली से मालिश करने का नाम आकना है। शिर

पीड़ा के समय माथे के दोनों ओर अपने हाथ की उंगलियां रखो और माथे पर उंगली दबाते हुए दोनों भृकुटियों के बीच में लाकर एक फूंक मार कर छोड़ दो। ऐसा प्रयोग थोड़ी देर करने से शिर पीड़ा जाती रहेगी। कण्ठे के लिये थोड़ी सी गंगा रज लगाकर उंगली से मालिश करना चाहिये। इन प्रयोगों में मन्त्र पढ़ा जाता है जिससे रोगी का चित एकाग्र हो जाय। मेस्मरेजिम के पासों पर ही ये प्रयोग हैं। प्रातः सायं ही ये प्रयोग अधिक अच्छे हैं।

नजर लगना — आपने प्रायः देखा होगा कि बच्चे नजर लगने से बीमार पड़ जाया करते हैं। यह नजर दो प्रकार की होती हैं। जिन लोगों की दृष्टि में प्रायः आकर्षण शक्ति अधिक होतो हैं। उन्हीं लोगों की दृष्टि बच्चों को खा जाती है। अन्य मनुष्यों की बुरी दृष्टि से बच्चे अधिक कष्ट पाते हैं। तन का रंग पीला पड़ जाता है तथा उनके शरीर से एक प्रकार की दुर्गन्धि सी निकलने लगती हैं। जिन लोगों के बाल बच्चे नहीं होते या जो बूरी नियत से बच्चों की ओर दृष्टि भर कर देखते हैं उन्हीं की दृष्टि बच्चों पर प्रभाव डालकर

निस्तेज और बीमार बना देती है। दूसरी दृष्टि घर के ही मनुष्यों की लगती है। बच्चे जब अधिक कौतूहल वर्द्धक कोई कार्य करते हैं तो घर के मनुष्य उसको अत्यन्त प्यार के साथ दृष्टि भर कर देखते हैं हृदय से उल्लास के कारण प्रभाव जनक शब्द निकलते हैं जिनसे बच्चों पर प्रभाव पड़ता है और वे रोगी हो जाते हैं। घर के मनुष्यों में प्रायः माता पिता की दृष्टि प्यार के कारण लग जाती है। ऐसा अनुभव बहुधा बहुत से गृहस्थियों को होगा। जो बच्चे सुन्दर या लाड़ प्यार के होते हैं। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक नजर लगती हैं। इसका कारण केवल यह है कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की चाहना लोगों को अधिक होती है। यही कारण है कि अपठित भारतवासियों के बच्चे अधिक मैले रहते हैं। उनके पिता जान बूझकर उनको कुत्सित बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। जब कभी बच्चों को नहला धुलाकर साफ कपड़े पहनाये जाते हैं तो बच्चों की मातायें उनके काजल लगाने के साथ ही उनके माथे पर नजर गुजर का टीका लगा देती हैं। यह काजल का काला चिह्न

उनको बुरी या अच्छी दृष्टि से बचाये रहता हैं। और इसी कारण से आंखों में फैला हुआ काजल लगाया जाता है।

बच्चों को यदि नजर लग जाय तो उसकी चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि या तो बच्चों को गायत्री मन्त्र द्वारा सात बार आंका हुआ पानी पिला दे जिससे बच्चे तुरन्त चैतन्य हो जाते हैं या सात सुर्ख मिर्चें बच्चों के शिर से पाव तक सात बार उतार कर अग्नि में झोंक देना चाहिये या दीपक की लौ में जला देना चाहिये उसी समय से बचा आरोग्य होने लगेगा। बच्चों की गर्दन में बजर बट्टू के दाने शेर का गोश्त रीछ का नाखून या बाल तथा चांदी या सोने का सूर्य और चन्द्र मूर्त्ति बनवाकर पहना देना चाहिये। नजर लगने की चिकित्सा ऐसे ही टोटकों से अच्छी तरह होती हैं।

नजर की चिकित्सा प्रायः स्याने लोग केवल झाड़ फूंक कर देते हैं या नीम के पत्तों का झाड़ा देकर। कभी-कभी बच्चों पर से आटा उतार कर उसकी रोटी बनावा कर किसी गाय को खिला देने

निस्तेज और बीमार बना देती है। दूसरी दृष्टि घर के ही मनुष्यों की लगती है। बच्चे जब अधिक कौतूहल वर्द्धक कोई कार्य करते हैं तो घर के मनुष्य उसको अत्यन्त प्यार के साथ दृष्टि भर कर देखते हैं हृदय से उल्लास के कारण प्रभाव जनक शब्द निकलते हैं जिनसे बच्चों पर प्रभाव पड़ता है और वे रोगी हो जाते हैं। घर के मनुष्यों में प्रायः माता पिता की दृष्टि प्यार के कारण लग जाती है। ऐसा अनुभव बहुधा बहुत से गृहस्थियों को होगा। जो बच्चे सुन्दर या लाड़ प्यार के होते हैं। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक नजर लगती हैं। इसका कारण केवल यह है कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की चाहना लोगों को अधिक होती है। यही कारण है कि अपठित भारतवासियों के बच्चे अधिक मैले रहते हैं। उनके पिता जान बूझकर उनको कुत्सित बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। जब कभी बच्चों को नहला धुलाकर साफ कपड़े पहनाये जाते हैं तो बच्चों की मातायें उनके काजल लगाने के साथ ही उनके माथे पर नजर गुजर का टीका लगा देती हैं। यह काजल का काला चिह्न

उनको बुरी या अच्छी दृष्टि से बचाये रहता हैं। और इसी कारण से आंखों में फैला हुआ काजल लगाया जाता है।

बच्चों को यदि नजर लग जाय तो उसकी चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि या तो बच्चों को गायत्री मन्त्र द्वारा सात बार आंका हुआ पानी पिला दे जिससे बच्चे तुरन्त चैतन्य हो जाते हैं या सात सुर्ख मिर्चें बच्चों के शिर से पाव तक सात बार उतार कर अग्नि में झोंक देना चाहिये या दीपक की लौ में जला देना चाहिये उसी समय से बचा आरोग्य होने लगेगा। बच्चों की गर्दन में बजर बट्टू के दाने शेर का गोश्त रीछ का नाखून या बाल तथा चांदी या सोने का सूर्य और चन्द्र मूर्त्ति बनवाकर पहना देना चाहिये। नजर लगने की चिकित्सा ऐसे ही टोटकों से अच्छी तरह होती हैं।

नजर की चिकित्सा प्रायः स्याने लोग केवल झाड़ फूंक कर देते हैं या नीम के पत्तों का झाड़ा देकर। कभी-कभी बच्चों पर से आटा उतार कर उसकी रोटी बनावा कर किसी गाय को खिला देने

से भी नजर की चिकित्सा हो जाती है। इस विषय में स्यानों के जितने पन्थ हैं उतनी ही विभिन्न प्रकार की नजर की चिकित्सायें हैं जो उन्हीं स्यानों के हृदय पट में बन्द हैं। साधारणतः गृहस्थी जिन चिकित्साओं को बच्चों के नजर लगने पर करते हैं उन्हीं का संक्षिप्त वर्णन यहां पर कर दिया गया है।

बहुत से शिक्षित लोग इस कुदृष्टि रोग को नहीं मानते परन्तु योग या मेस्मरेजिम का तत्व जानने पर विवश हो उन्हें हमसे सहमत होना पड़ेगा।

भैरवी चक्र तथा भैरव सिद्धि

जिस प्रकार मुसलमान हाफिज और मौलवी वजीफा सिद्ध करने के समय एक लकीर अपने चारों ओर खींच लेते हैं। उसी प्रकार हिन्दू सिद्ध करने के लिये अपने चारों ओर लकीर खींच लेतें हैं। उसे ही भैरवी चक्र कहते हैं।

भैरव सिद्ध करने के समय प्रतिदिन उसी लकीर के भीतर बैठ कर मन्त्रों का जाप करना होता है एकान्त तथा पवित्र स्थान हो, सुगन्धित पदार्थों के जलने की सुगन्धि आ रही हो। अभ्यासी को भैरव

के सिद्ध होने का विश्वास हो तो अवश्य ही भैरव सिद्ध होगा।

भैरव सिद्ध करने के अनेक मन्त्र हैं। उनके लिखने की यहां आवश्यकता नहीं। मन्त्रों की पुस्तक बाजार में मिल सकती है। चाहे जिस मन्त्र को याद कर लो। सुन्दर स्थान में हवन रूप में सुगन्धित पदार्थों को जलाओ, घृत का दीपक जोड़ो और सिन्दूर का तिलक लगाओ तथा अग्नि में मदिरा की आहुति दो। प्रिय सहस्र मन्त्र प्रति दिन एकाग्रचित्त हो मन-ही-मन में शान्ति के साथ जाप करो। थोड़े ही दिन में उसका चमत्कार ज्ञात होने लगेगा। बड़े-बड़े उपद्रव दृष्टिगोचर होंगे। ऐसा ज्ञात होगा मानो कोई तुम्हें जान से मारने के लिये भक्षण करने के लिये क्रोध कर दबाना चाहता है परन्तु तुमको भयभीत होना न चाहिये स्थिरता के साथ उस परिक्रमा को सिद्ध करने में लगे रहो। ३९ दिन तक अंत्यन्त भयानक बातें दृष्टिगोचर होंगी परन्तु चालीसवें दिन भैरव सिद्ध होगा तुम्हारे हृदय में एक अद्भूत ज्योति और शक्ति उत्पन्न होगी। भैरव फिर तुम्हारा

आज्ञाकारी होकर रहेगा जिससे तुम्हारी समस्त इच्छाएं पूर्ण होंगी जिस काम के करने की भैरव को आज्ञा दी जायगी वह उसको तुरन्त करेगा। भैरव सिद्धि करने वालों को मांस मदिरा आदि से कोई परहेज नहीं होता। हां असत्य भाषण, रमण आदि हानिकारक हैं। कुत्तों की इन लोगों में विशेष प्रतिष्ठा होती है।

छाया पुरुष सिद्धि—यह प्रयोग बड़ा ही विचित्र और बड़े ही काम का है। छाया पुरुष सिद्ध होने से मनुष्य उन समस्त अद्भुत कार्यों को कर सकता है। जिसको कि लोग जादू के नाम से पुकारते हैं। हमने भूत प्रेत सम्बन्धी जिन घटनाओं का पहिले वर्णन किया है। वह सब छाया पुरुष सिद्धि से कुछ न कुछ सम्पर्क अवश्य रखते हैं।

छाया सिद्ध होने से मनुष्य की छाया उसके आधीन हो जाती हैं। वह जिस काम को कहता है वह छाया तुरन्त कर देती है। यदि इसके भीतर तनिक अधिक ध्यान से देखा जाय तो इसमें भी योग का तत्व अपना काम करता है। यदि तुम्हारे पास कोई तुम्हारा मित्र नियत समय पर आया करता हो। तो उस समय के

होने पर तुरन्त ही तुम्हारे मित्र की याद आ जायेगी। रात्रि को अपने मन में यह कहकर सोओ कि हम आज चार बजे उठेंगे। तो एक बार आपकी आंख चार बजे अवश्य ही खुल जायगी चाहे आप फिर आलस्य में आकर सो ही क्यों न जाओ। यह बात हमारे दिन रात अनुभव में आती है। इसी तत्व के आधार पर मनुष्य अपनी छाया को सिद्ध करता है। वास्तव में छाया सिद्ध नहीं होती। मनुष्य अपने जीव को ही सिद्ध करता है परन्तु चूंकि उसका प्रयोग छाया के साथ है और सिद्ध की सूरत भी अपनी जैसी होती है इसलिये उसको छाया पुरुष सिद्ध के नाम से ही पुकारते हैं। इस तसखीर हमजाद के ऊपर आज तक कितने ही ग्रन्थ लिखे गये हैं। लोग इस विद्या और प्रयोग के अभ्यासी बनने की बहुत बड़ी लालसा रखते हैं परन्तु चूंकि हर एक सुख के साथ दुख, शान्ति के साथ अशान्ति, तथा लाभ के साथ हानि का स्वाभाविक सम्बन्ध है और चूंकि अधिक लाभप्रद कार्य के अधिक हानि कर होने की सम्भावना भी हो सकती है अतएव इस प्रयोग के करने से लोग घबड़ाते हैं। वास्तव में

बात तो यह है कि यही प्रयोग क्या, समस्त प्रयोगों की यही अवस्था है। यदि किसी प्रयोग में भी स्थिरता, निर्भीकता तथा दृढ़ता से काम न लिया जाय तो हर एक प्रयोग लाभ के बदले पूरी हानि पहुंचा सकता है। अतएव किसी भी प्रयोग में हाथ क्यों न डाला जाय मन को निश्चल रखने से ही यह समस्त आवश्यकीय गुण मनुष्य में उत्पन्न हो जाते हैं। छाया पुरुष सिद्धि के प्रयोग में तो इस निश्चलता की विशेष आवश्यकता है क्योंकि तनिक भी भय करने या मन के चलायमान होने से पागल या मृत्यु हो जाने का भय होता है अतएव इस प्रयोग को बहुत सावधानी के साथ प्रारम्भ करना चाहिये।

छाया पुरुष सिद्धि के कितने ही प्रयोग हैं। यदि कुल लिखे जायं तो इसी विषय पर एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो सकता है। यहां पर दो तीन प्रयोगों का देना ही यथेष्ट होगा। इस प्रयोग को मंगल के दिन से प्रारम्भ करना अति उत्तम है। एक नीरव जंगल में जहाँ ध्यान बटाने का कोई विषय न हो दोपहर के समय जाय और सूर्य की ओर दृष्टि जमाकर देखे

और पांच मिनिट पश्चात् आकाश की ओर देखे और फिर अपने साये पर दृष्टि जमाये और साथ ही "ओं श्री माधवाभ्याम नमः" मन्त्र का पांच हजार जप करे परन्तु जप इस प्रकार से करे कि दृष्टि चलायमान न होने पावे। बस यही प्रयोग नित्य प्रति नियत समय पर करे। अपने इस प्रयोग के सम्बन्ध में न तो किसी से कुछ कहे और न किसी पर अपने मत का प्रकाश करे। इस प्रयोग अभ्यासी अत्यन्त परहेजगार, पवित्र और सत्यभाषी होना चाहिये। तथा भोजन स्वल्प तथा हल्का और एक समय करे, मांस, मदिरा, का प्रयोग न करे। रात्रि को कम सोवे। अभ्यासी को अभ्यास करते-करते जब कई दिन हो जावेंगे तो उसको आकाश पर किसी प्रकार की छाया सी दीख पड़ेगी परन्तु अभ्यासी को चाहिये कि वह अभ्यास को बराबर करता रहे यहां तक कि जब उसको वह साया आसमान पर स्पष्ट दिखलाई देने लगे। उस समय अभ्यासी को अनेक प्रकार की भयानक घटनायें प्रतीत होंगी। तथा भीषण सूरतें दिखलाई पड़ेगी। परन्तु अभ्यासी को बड़े साहस तथा सन्तोष से काम लेना चाहिये, स्थिरता निर्भीकता तथा दृढ़ता को कदापि हाथ से न

जाने देना चाहिये अन्यथा इससे या तो अभ्यासी के प्राणों पर आ बनेगी और या सदैव के लिये ऐसा पागल हो जायेगा। कि जिसकी चिकित्सा असम्भव ही होगी। यदि अभ्यासी इन भयानक बातों को पार कर गया तो उसको अपने अभ्यास में सफलता प्राप्त करने में तनिक भी संदेह न रह जायेगा। चालीस दिन के अभ्यास में आकाश में दृष्टि आने वाला साया अभ्यासी की सूरत बनकर उसके सम्मुख आकर खड़ा होगा और उससे आज्ञा चाहेगा। अभ्यासी को उस समय निर्भीकता के साथ अपना आज्ञापालक बना लेना चाहिये। इसके पश्चात् अभ्यासी जब इच्छा करेगा वही साया उसका काम तुरन्त कर देगा।

अन्य प्रयोग भी इसी प्रकार के हैं। रात्रि को चन्द्रलोक में ही यह प्रयोग किया जा सकता है परन्तु चूंकि चन्द्रालोक न्यूनाधिक होता रहता है अतएव इस प्रयोग में सफलता प्राप्त नहीं होती और यदि होती भी है तो बहुत कठिनता के साथ। बाकी बातें एक ही हैं। हां, यदि रात्रि में यह किया जाय कि एक नीरव कमरे में जहां किसी अन्य के आने की सम्भावना न हो लैम्प जलाओ और उसकी

ओर पीठ करके खड़े हो और अपने साये पर दृष्टि जमाओ। और इस कार्य में सफलता प्राप्त करो।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत से प्रयोग हैं जिन को हिन्दू और मुसलमान सिद्धों ने अपने-अपने ढंग पर लिखा है। बातें दोनों की एक ही हैं। एक ने संस्कृत का मन्त्र दे दिया तो दूसरे ने कुरान शरीफ की कोई आयत रखदी या किसी न कहा कि अमुक ओर को मुंह करके खड़े हो या अमुक ओर को लैम्प रखो परन्तु जहां तक देखा गया है तत्व इनका एक ही है जिसको ऊपर वर्णन कर दिया गया है।

छाया पुरुष सिद्धि से मनुष्य को कितनी सिद्धियां प्राप्त होती हैं यदि उनका वर्णन किया जाय तो पूरी एक पुस्तक तैयार हो सकती है। यहां केवल इतना ही लिख देना पर्याप्त है कि संसार में कोई बात ऐसी नहीं जो उसकी क्षमता के बाहर हो परन्तु अभ्यासी को इस शक्ति का दुरुपयोग न करना चाहिये

यक्षिणी सिद्धि

यक्षिणी एक देवी का नाम है जिसके सिद्ध करने से मनुष्य सफल मनोरथ होता है। इसमें

यदि तनिक ध्यान से देखाजाय तो योग का वही प्रसिद्ध सिद्धान्त मन के निश्चलत्व और आकर्षण का काम करता है। यक्षिणी सिद्धि के साधन से मनुष्य को बहुत लाभ होता है। ब्राह्मणों विद्वानों के द्वारा भी यदि यह साधन कराया जाय तो भी इसकी सिद्धि हो जाती है परन्तु स्वयं साधन में अधिक आनन्द, लाभ और फल होता है। अब हम इसके प्रयोग लिखते हैं।

यक्षिणी साधन का अभ्यासी परम शुद्ध, विश्वासी सत्यभाषी तथा स्थिरचित्त हो। यह प्रयोग पूरे एक मास का है। इसके अभ्यासी को चाहिये कि आषाढ़ी पूर्णिमा को या श्रावणी प्रतिपदा को किसी निर्जन बन में जाय और एक बेल के वृक्ष के नीचे पवित्र स्थान पर उत्तर की ओर मुख करके प्रतिदिन इतना काम करे कि पहले तो वह रुद्र पाठ करे, फिर "त्रयम्बक यजा मेह" मन्त्र का पांच हजार बार जप करे। तत्पश्चात् निम्न लिखित मन्त्र से कुबेर जी का १०८ बार पूजन करे।

यक्षराज नमस्तभ्यं शंकर प्रिय वान्धव एकां मेवशगां नित्यं यक्षिणीं कुरुते नम:

फिर रात्रि भर अनिद्रित रहकर नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे:—

ओं ह्री ह्लीं ऐं श्री महा यक्षिण्यै सर्वेश्वर्य प्रदात्र्यै नम:।

जिस अवधि तक यह प्रयोग हो उस अवधि तक ब्रह्मचर्य रहना परम आवश्यक है। एक महीने के साधन करने से यक्षिणी देवी का आविर्भाव होगा। और सब कार्यों को सफल करेगी तथा धन धान्य और पुत्रों से अभ्यासी को प्रसन्न करेगी।

हनुमान सिद्धि

यदि समस्त देवी और देवताओं की सिद्धि का ही वर्णन किया जाय तो पूरी एक पुस्तक तैयार हो सकती है। दो एक सिद्धियां पहिले वर्णन कर चुके हैं। अब केवल हनुमान जी की सिद्धि का वर्णन और करते हैं। यदि आपको अन्य सिद्धियां करने की आवश्यकता हो तो आपको किस प्रकार के अनेक ग्रन्थ बाजार में मिल सकते हैं जिनसे आपकी इच्छा पूरी हो सकती है।

सिद्धियां चाहने वालों को यह बात अत्यन्त ध्यान में रखने योग्य है कि वह ब्रह्मचर्य से रहें सत्य भाषण

करें, विश्वासी हों तथा स्थिर और दृढ़ चित्र के हों, तथा परिश्रमी हों। इन बातों की सदैव आवश्यकता पड़ती है। अपना शरीर शुद्ध रखें, सांसारिक लोगों में अधिक मिल जुलकर न रहें अन्यथा सांसारिक बातें उनके ऊपर अपना प्रभाव डाले बिना न रहेंगी।

अब हम हनुमान जी की सिद्धि का प्रयोग लिखते हैं। मंगल या शनिवार के दिन नदी तट पर निर्जन तथा नीरव जंगल में शुद्ध पवित्र होकर पहुंचे और एक छोटी सी मूर्त्ति हनुमान जी की स्थापित कर हवन करे और "ओं हनुमानः हनुमन्तः राम भगतः स्वाहा" की दस सहस्त्र प्रतिदिन आहुति दे और सिंदूर घृत आदि मूर्त्ति पर चढ़ावे। ग्यारह दिन तक इसी प्रकार प्रयोग करे तथा रात्रि को घर आकर भूमि शयन। करे ग्यारहवें दिन अभ्यासी को अवश्य ही सिद्ध होगी। परन्तु अभ्यासी को भय न करना चाहिये अन्यथा हानि उठाने का भय है। अतएव इस साधन को बड़ी सावधानी के साथ करने की आवश्यकता है।

यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र

अब तक हमने योग, मेस्मरेजिम तथा आत्मिक विद्या का वर्णन किया। इन विद्याओं का केवल

आत्मिक शक्ति तथा उसके उपयोग से ही सम्बन्ध था। अब हम ऐसी बातों का वर्णन करना चाहते हैं जिनका आत्मिक शक्ति से कोई सम्बन्ध न हो परन्तु फिर भी आत्मिक पवित्रता होने की हर तरह आवश्यकता है।

यन्त्र—ताबीज कहो या यन्त्र, बात एक ही है। यह मानी हुई बात है कि समस्त तारे और नक्षत्रों का प्रकृति पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। मनुष्यों की आत्माओं पर भी ताराओं का प्रभाव है। ताराओं की आकर्षण शक्ति में ही मनुष्यों की प्रारब्ध छुपी हुई है। यही कारण है कि ज्योतिषी लोग तुरन्त हिसाब लगाकर मनुष्य के प्रारब्ध के संबन्ध में पूर्व से ही कह देते हैं। और वह बहुदा ठीक निकलती है। इन ताराओं में कोई शुभकारी और कोई अशुभकारी होता है। जब अशुभकारी तारा या गृह के कुफल से मनुष्य को हानि पहुंचती है तब ऐसा मन्त्र कागज या धातु पर लिखकर उस मनुष्य की गर्दन या बांह पर बांध दिया जाता है जिसको कि हानि पहुंची या पहुंचने की सम्भावना है। इन यंत्रों का भी ताराओं और गृहों से सम्बन्ध होता है यही

कारण है कि यंत्र आदि यदि मनुष्य पहन ले तो उस पर उसका अवश्य प्रभाव होता है। अब हम यहां कुछ यन्त्रों और ताबीजों का वर्णन करते हैं जिनकी लोगों को विशेष आवश्यकता रहती है।

बन्धक यन्त्र—निम्नलिखित मन्त्र को शुद्ध पवित्र होकर कागज पर लिखे और अगर का धुंआ देकर मनुष्य की कमर में बांध दें तो वह बाजीकरण प्रमाणित होगा—

वशीकरण यंत्र— अपने जिस मित्र को वश में करना अभीष्ट हो उसके पहनने के वस्त्र पर निम्न लिखित मन्त्र लिखें।

अरे.

४	१	१०
७	८	९
५	३	१२
२	११	६

ओ.

अमुक

७	७	७	७
७	७	७	७
७	७	७	७
७	७	७	७

इस यन्त्र को शनिवार के दिन लिखकर और एक सहस्त्र बार गूगल की धूप देकर बत्ती बनावे तथा उसको घी के दीपक में रखकर इस प्रकार जलावे कि दीपक का मुख अपने अभीष्ट के घर की ओर रहे। उससे जो काजल बने उसको नेत्रों में आंज एक बार अपने मित्र की ओर दृष्टि भर देखे तो अवश्य ही उसको सफलता हो और उसके मित्र के हृदय में उसके प्रति प्रेमांकुर उत्पन्न हो।

यह यन्त्र बहुत ही अद्भुत है। मेरे एक मित्र ने जो बुलन्द शहर के रहने वाले हैं अनुभव करके मुझे बतलाने की कृपा की है।

ओ३म्

६	१	८
७	५	३
२	९	४

पन्द्रह का यन्त्र—यह यन्त्र बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सिद्ध होने से मनुष्य को हर एक कार्य में सफलता होती है यदि प्रति दिन प्रातः पवित्र होकर सौ बार

पन्द्रह का यन्त्र लिख लिया करे तो उसके यश और गौरव की वृद्धि हो। यदि बहीखाते आदि पर पन्द्रह का यन्त्र खींच दे तो उसके व्यापार में सफलता हो। विशेषरूप से इसके सिद्ध करने की रीति यह है कि सोमवार के दिन प्रातः ही शुद्ध होकर हवन करे और ईश्वर का नाम लेकर और अपने कार्य की ओर लक्ष्य रख कर कागज पर जाफरान से यन्त्र लिखे और धूप से उसको धूमृत करे। फिर उसको सन्दूक में रख दे। इसी प्रकार २१ दिन तक करे तो साधक के हर कार्य में अच्छी सफलता हो। यदि इस यन्त्र को चांदी में मढ़वा कर गर्दन में डाल ले या बाजू पर बांध ले तो यह यन्त्र उसकी हर समय रक्षा करता रहेगा। पन्द्रह का यन्त्र यह है।

चौंतीस का यन्त्र—

यह यंत्र भी बड़ा विचित्र है जिस कार्य की ओर लक्ष्य करके इस यन्त्र को लिखोगे वही कार्य सिद्ध होगा। यन्त्र यह है:—

अरे.

१०	५	४	१५
३	१६	९	६
१३	२	७	१२
८	११	१४	१

इस मन्त्र को सिद्ध करने की विधि यह है कि शुद्ध पवित्र होकर इसको ३४ दिन तक ३४ की संख्या में प्रति दिन लिखकर किसी पास के तालाब या कुंए में डाल आया करे परन्तु इतना ध्यान रहे कि कोई रोकने न पावे। चौंतीसवां दिन समाप्त होते ही कार्य सिद्धि भी अवश्य हो जायगी।

४	२	८	६
६	८	२	४
२	४	६	८
८	६	४	२

बीसा यन्त्र—और यंत्रों को चाहे लोग बतला भी दें परन्तु इसको लोग अवश्य छिपाते हैं। यही कारण है कि लोग यह कह देते हैं कि बीस का यंत्र तैयार ही नहीं हो सकता। सिद्ध बीसा यंत्र के समाचार पत्रों में, इसी कारण से विज्ञापन दिखलाई पड़ते हैं क्योंकि लोग इस यन्त्र की बहुत दिनों से तलाश में थे। पाठकों के सुभीते के लिये हम उस यंत्र को यहां देते हैं।

ओ३म्

२	४	६	८
८	६	४	२
४	२	८	६
६	८	२	४

यह मन्त्र हर काम में आता है। रक्षा, व्यापार, सफलता सबके मतलब का है। इसको इस प्रकार सिद्ध करे कि प्रातः पूजा-पाठ हवन के पश्चात् इसको ६२ की संख्या, प्रतिदिन ४१ दिन तक लिखे, ब्यालीसवें दिन उनको किसी नदी में डाले जो यन्त्र सबसे आगे वह कर निकले उसे निकाल ले और सोने के पत्र में मढ़वा कर बाजू या गरदन में पहन लें। ईश्वरेच्छा से विचार मात्र से ही उसका प्रत्येक कार्य सिद्ध होगा। इस यन्त्र की प्रशंसा तन्त्रकारों ने बहुत की है। परन्तु मैं स्थानाभाव से अधिक लिख नहीं सकता। हां अनुभव करना शर्त है।

मन्त्र— वाक्य शक्ति का नाम मन्त्र है। भाषण में जो प्रभाव है वही शक्ति है। किसी से यदि कुछ काम करने के लिये कहा जाय और वह उसको करे या करने पर उद्यत हो तो वही मन्त्र की व्याख्या में

आ सकते हैं। परन्तु यहां पर शब्दों की परिमित सीमा को जहां तक की उनका विशेष प्रभाव से सम्बन्ध है मन्त्र कहा गया है। यही परिभाषा ठीक भी है।

आप किसी को अपशब्द कहें। अपशब्द सुनकर उसे क्रोध आवे और लड़ने मरने पर उतारू हो जाये। बस यही अपशब्द मंत्र है यदि आप किसी अन्य मनुष्य से यह कहें कि 'आ' और वह न आवे तो आप बुरा नहीं मानते, आप फिर उससे दुबारा कहते हैं, तिबारा कहते हैं, और यहां तक कि जब तक वह न आवे आप बराबर कहते ही रहते हैं बच्चों को प्रसन्न करने के लिये आप बार-२ उनको अच्छे शब्दों से सम्बोधन करते हैं। आप यदि किसी से किसी काम के लिये कहें और वह कुछ ध्यान भी न दे परन्तु आप फिर भी उससे उसी काम के करने के लिये कहते हैं और वह मनुष्य भी तुम्हारे शब्द प्रभाव से प्रभावित हो कर तुम्हारे कहे

अनुसार काम करने के लिये तैयार हो जाता है। इन्हीं उदाहरणों से यह बात अच्छे प्रकार समझ में आ सकती है कि क्यों मंत्रों के लिये यह लिखा जाता है कि सहस्त्र बार पढ़ो या लाख बार।

ऐसे ग्रन्थ बहुत से हैं जिनमें मंत्र भरे पड़े हैं। परन्तु जिन मंत्रों की लोगों को अधिक आवश्यकता रहती है उनमें से भी बहुत थोड़े से मंत्रों का नीचे वर्णन करते हैं।

मन्त्र का एक भेद

हृदय के भाव के साथ शाब्दिक शक्ति या प्रभाव का विशेष सम्बन्ध है। आपके हृदय में से यदि कोई बात किसी के सम्बन्ध में स्वतः निकल जाय वह अवश्य ही सत्य होगी। इस बात का अनुभव सहस्रों बार किया जा चुका है आप भी अनुभव कर चुके होंगे और भी कर लीजिये।

जिस काम को आप करना चाहें उसका हृदय में ध्यान रखें और मन ही मन यह कहते रहें कि ऐसा हो, तो अवश्य ही वैसे साधन उपस्थित होंगे और वह कार्य उसी प्रकार होगा जैसा कि वह चाह रहा है। यदि कोई रोगी मनुष्य मन में यह ध्यान करे कि मैं अब अच्छा हो रहा हूँ और उसका यह ध्यान विश्वास पूर्वक हो तो उसे अवश्य ही आराम होगा। आप यदि किसी मुकदमें में जीत चाहते हैं तो उसकी जीत का ध्यान रखें, आप यदि किसी का हित चाहते हैं तो हर समय उसके हित का ध्यान रखें, और यदि आप किसी का अहित चाहते हैं तो हर समय उसका अहित विचारते रहें। आप यदि यह चाहते हैं कि अमुक मित्र मेरे ऊपर विशेष कृपा रखे, वह मेरा आज्ञाकारी होकर

रहे तो आप वैसा ही हर समय ध्यान रखिये आपको अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

आपने बार-बार सुना होगा कि मैं सीधी माला फेरूंगा और मैं उलटी उसमें हित अथवा अहित का ध्यान रखना ही विशेष महत्व की बात है। यही भेद ईश्वर की प्रार्थना में है और यही भेद माला जपने में। इसी हेतु को लेकर देवताओं का आराधन किया जाता है। और यही बात प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने की कुन्जी है।

बिच्छू काटने का मन्त्र

पूर्णमासी की अर्द्ध-रात्रि को निर्जन स्थान में बैठ कर २१ अंगूरों को ले और हर एक अंगूर को ले और हर एक अंगूर पर सात बार यह मंत्र पढ़े।

ओं बिच्छू का बिष दूर हो, आराम भर पूर हो। हनुमान की लगै दुहाई, विष को खाय कालका माई। जारे जारे विष जल्दी से उड़ जा।

तत्पश्चात् उन अंगूरों को किसी फकीर को खिला दे तो बिच्छू काटे का मंत्र सिद्ध हो जायगा। जब किसी मनुष्य को कोई बिच्छू काट खाय तो उस

स्थान पर जहां कि बिच्छू ने काटा है एक लाल दियासलाई को मसाले की ओर से उपर्युक्त मंत्र पढ़ता हुआ घिसे। जब एक बार मंत्र समाप्त हो जाय तो उसमें फूंक मारता जाय। १०१ बार ऐसा करने से विष उतर जायगा। आराम होने पर मंगल के दिन बन्दरों को चने डलवावें।

सांप काटे का मंत्र

जिस स्थान पर सांप ने काटा हो तुरंत वहीं मजबूत धागे से दोनों ओर बंध बांध दे। और केले के अर्क पर निम्नलिखित मंत्र को सात बार दम करे फिर उसे रोगी को पिलावे और काटने के स्थान पर मंत्र पढ़ता हुआ मालिश करे यहां तक कि मंत्रों की संख्या एक हजार हो जाय । ईश्वर की कृपा से सर्प विष दूर हो। अच्छा होने पर पांच ब्राह्मणों को भोजन करावे।

मंत्र- सर्प विष नष्ट हो, रोगी हृष्ट-पुष्ट हो कन्हैया नाग नाथेगा, ऊपर काना नाचेगा शेष नाग की मचै दुहाई। लक्ष्मण शक्ति करे सहाई। बम-बम त्रिष हर।

थप्पड़ मार कर सांप का विष उतारना

यह बात यद्यपि बिलकुल ही अद्भुत और अविश्वास योग्य मालूम होती है परन्तु बात सर्वथा सत्य है। हिन्दुस्तान अखबार लाहौर में स्वर्गीय निजाम हैदराबाद के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ था कि वह इस प्रकार की चिकित्सा करने में बड़े ही सिद्धहस्त थे। रोगी के जहां थप्पड़ मारा कि आराम हुआ। उनमें तो यहां तक करामात बतलाई जाती थी कि यदि कोई मनुष्य सांप के काटे की सूचना भी लाता था तो स्वर्गीय निजाम साहिब उस सूचना लाने वाले के मुंह पर इस जोर का चाटा मारते थे कि उसका मुंह सूज जाता था परन्तु उससे सांप के काटे का रोगी तुरन्त ही अच्छा हो जाता था चाहे वह कितनी ही दूर क्यों न रहता हो। उस समाचार पत्र में इस साधन की समस्त परिक्रमा भी लिखी थी परन्तु वह पत्र खोजने पर भी हमको नहीं मिला। खैर हम एक बार चंदौसी गये थे। वहां एक शाह साहिब आये हुए थे। वह

भी इसी प्रकार की चिकित्सा करते थे। हमको जो ज्ञात हुआ वह नीचे लिखते हैं।

मंत्र—खुदामा सम रफा अलम मदह दस्ते मा कबी विकुन या हजरत या खैर।

साधन विधि— जिस रात्रि को चन्द्र ग्रहण पड़े उस दिन से प्रारम्भ करे। ४१ दिन तक रात्रि के मध्यम भाग के चार घंटो तक इस मंत्र का जाप करे। जाप से पहिले सूरे नासूर को ११ बार पढ़े, हर मंत्र के अन्त में अपने सीधे हाथ पर फूंक मार लिया करे। ४१ वीं रात्रि को किसी प्रकार के विष डंशित मनुष्य को अपने पास बिठलाले परिक्रमा समाप्त होने के पश्चात् ही उसके मुंह पर चांटा मारे। हर तरह का विष दूर हो। हाथ में विषनाशक शक्ति आ जायगी।

चोरी का माल निकालने का मन्त्र

जिस मनुष्य के यहां चोरी हो गई हो उससे दो पैसे भर चांवल मंगावे और उनको ४१ इकतालीस बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसे देदे यदि चोरी करने वाला उन चावलों को चबायेगा तो उसके मुंह से खून आने लगेगा। मंत्र यह है। "ओं ह्रीं क्लीं मधुकैट मारे अर्थी स्वाहा॥

आसेव उतारने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को रोगी पर पढ़कर फूंक मारे और थाली में आदमी की शक्ल आटा गूंध कर बनावे परन्तु उसके पांव उल्टे रक्खे और एक तेल का चिराग जलाकर रखे। उस आटे के आदमी को घी और सिंदूर से पोत दे। जब एक सौ एक बार पढ़कर रोगी पर मन्त्र फूंक चुको उसी समय एक चाकू से उस शक्ल के टुकड़े कर दे। रोगी एक दम चीखकर हत ज्ञान हो जायेगा। उसी समय उस थाली को वहाँ से हटवादे और उसको किसी चौराहे पर रखवादे, उसी समय से रोगी को आराम होना प्रारम्भ हो जायेगा। यह प्रयोग रात्रि के समय एकान्त में करने का है।

मन्त्र—*ओं चन्डी मसान वीर भान भूत प्रेत के औसान भस्मी भूतं स्वहा:*

झपकी का मन्त्र

बच्चों को जब झपकी का रोग होता है तो निम्नलिखित मंत्र को बार-बार पढ़कर उसके नेत्रों

पर मारते हैं। यह प्रयोग सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात् किया जाता है। हमारे मुहल्ले का स्याना इसी प्रकार झपकी दूर करता है।

मन्त्र— *ओं चैतन्य शंकर बालरक्षकायनम:।*

आधा शीशी का मन्त्र

माथे के जिस ओर पीड़ा होती हो उस ओर अपने दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से मालिश करता हुआ साठ बार इस मंत्र को पढ़कर झटका दे तो दर्द जाता रहे। मंत्र यह है।

आधी शीशी पीड़ा जाय।
गुरु गोरख शीरा खाय॥

सिर दर्द का मन्त्र

माथे के दोनों ओर अंगूठा और बड़ी उंगली रखे और सात बार मंत्र पढ़ता हुआ अंगूठे और उंगली को माथे पर दबाता हुआ माथे के बीचों-बीच तक लावे और फूंक मारता जावे। सात बार ऐसा करने से दर्द दूर हो यदि बिल्कुल दर्द न गया हो तो फिर सात बार ऐसा ही करे।

मंत्र—ओं महाकाली शिर पीड़ा अमुक की खोवे। मेरा रोगी कभी न रोवे। सेवक पर रक्षा कर मात। तुझ पर चढ़ाऊं गुड़ का भात।

दर्द अच्छा हो जाने पर गुड़ का भात तैयार करावे और रोगी के शिर पर सात बार वार कर कुतिया को खिलादे।

बावले कुत्ते का मन्त्र

सांप की बांबी की मिट्टी को छानकर ताजा पानी से सानकर सात गोली बनावे और निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता हुआ कुत्ते के काटे के स्थान पर मलता जाय तो उस गोली में से कुत्ते के रंग के बाल निकलने लगेंगे मानों विष बाल रूप में बाहर निकलने लगेगा ऐसा करने से समस्त विष बाहर निकल जायेगा।

मंत्र—*ओं गांधारी स्वाहा:।*

तंत्र—प्राकृतिक पदार्थों को स्वाभाविक गुण ज्ञान कर उनके संयोग का वियोग से कोई चमत्कार दिखलाना तन्त्र कहलाता है। पाठकों ने बीसयों बाजीगरों का अण्डा उड़ाते, बोतल में पेड़ उगाते, आग खाते आदि अनेक अद्भुत बातें करते देखा

होगा, यह सब तन्त्र ही हैं। जितनी औषधियां आज बनाई जाती हैं वह भी तंत्र हैं।

प्राकृतिक प्रदार्थों के स्वाभिवक गुण जानने के लिये पदार्थ शास्त्र देखने की आवश्यकता है यहां तो केवल उसके मोटे सिदान्तों का ही विचार किया जायेगा।

हम देखते हैं कि चूहा बिल्ली से, हिरन सांप से, कौआ चील से, सांप नेवले से बैर मानते हैं इसी सिद्धान्त पर उच्चाटन और मलोमालिन्य बढ़ाने का चमत्कार दिखलाया जा सकता है।

जड़ी बूटियों की सूरत देखकर भी उसके गुण रूप जाने जा सकते हैं जिनसे औषधियां के अविष्कार में खास सहायता मिलती है। चन्द्र और सूर्य का भी प्राकृतिक पदार्थ और मानसिक विचारों पर विशेष प्रभाव पड़ता है जिनसे बहुत से चमत्कार दिखलाये जा सकते हैं। यह विषय इतना बड़ा है कि यदि इसको हम पूर्ण रूपेण लिखने के लिये बैठें तो एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो जाये। अतएव हम स्थानाभाव के कारण यहां लिखने में असमर्थ हैं। हां यदि अवकाश मिला तो तंत्र शास्त्र पर एक पृथक ग्रन्थ ही पाठकों को भेंट करेंगे।

ब्रह्म मुहूर्त स्मरण

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास एवं अपने धर्म ग्रन्थों को श्याम लेखनी से पत्र पर अंकित सरल है, किन्तु उसकी सुरक्षा एवं स्थिरता का अनुमान भी नहीं किया जा सकता। आसुरी प्रवृत्तियां जब जाग्रत हो गईं, उस समय हमारे साहित्य को नष्ट कर दिया गया किन्तु आज भी हमारे वेद दर्शन पुराण एवं धर्म ग्रन्थ उसी मात्रा में पूर्व की भांति सुरक्षित हैं। उसका एकमात्र कारण और श्रेय उस परिपाटी को है जिसमें गुरु, शिष्य को समस्त श्रुति वेद कंठस्थ कराया करते थे और कंठस्थ विद्या हृदय पर उसके जीवन काल तक अक्षय रही और आज भी जीवित है।

आज एक नवीन लहर दौड़ रही है कि यह युग भौतिकवाद का है, आध्यात्मवाद का नहीं। किन्तु यह ज्ञान एक अज्ञान ही है। यह भी आज प्रतीत हो रहा है कि यह आध्यात्मवाद, नष्ट नहीं हो सकता। आध्यात्मवाद का युग सदा बढ़ा है और बढ़ेगा, भारतीय संस्कृति विश्व में सर्व प्रथम प्रसारित रही

और अभी तक इसी प्रकार अपना संस्कार प्रसारित कर रही है।

भारत में प्रात:काल, संध्याकाल, दोनों समय सन्ध्या और प्रातः स्मरण होता है। एक सृष्टि की उत्पत्ति एवं संसार का सम्पूर्ण विज्ञान सम्मिलित है। प्रात:काल प्रातः स्मरण में हम सभी भारत के नदी-नद, झील, तीर्थ एवं समस्त भारत के त्रिख्यात महापुरुषों का स्मरण करते हैं। उनके चरित्र को अनुसरण करने की प्रतिज्ञा करते हैं। और इस पर भारत की अखंडता एवं सभी ज्ञानों का स्मरण करते हैं।

यह पुस्तक इसी दिशा की ओर ले जाने का प्रयास करती है। पुस्तक में जो नवीनतम पुण्यश्लोक महापुरुषों का समावेश किया गया है, वह और भी उसकी उपयोगिता के लिये भला है। इस प्रकार की जितनी भी पुस्तकें हमारे यहां प्रसारित होंगी और उनको कंठस्थ किया जायेगा। मेरी सम्मति में यही देश का उपकार कर सकेगी और पाश्चात्य लोक से उतार कर भारत स्वर्ग भू की महानता को प्र॰ट करने में सुदृढ़ स्तम्भ का कार्य करेंगी। इस प्रकार

की पुस्तकों में सही अर्थ और उसके अन्तंगत प्रत्येक आख्यायों को जो उसमें निहित हैं, ज्ञान होना परम आवश्यक है।

एक वक्तव्य

भारत के उन महापुरुषों तथा दिवंगत व्यक्तियों एवं विभूतियों के प्रति, जब हम उनका नाम उच्चारण करते हैं तब, पूज्यपाद, ब्रह्ममुहूर्त तथा परम पूजनीय आदि आदि उपाधियों से उनको विभूषित करते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ४ बजे से ५ तक शैया त्यागने से पूर्व उच्चारण अथवा स्मरण करने का एक मात्र यही समय बुद्धि के लिये निर्मल होता है और उस समय हमको अधिक से अधिक अपनी बुद्धि को पवित्र तथा श्रेष्ठ कार्य करने के लिये संकल्प करने के लिये लगाना चाहिये। यह प्रथा भारतीयों के लिये नवीन नहीं, प्राचीन काल से चली आने वाली प्रथा है। जो अपनी अज्ञानता के कारण लोप होकर आज पुनः नवीन हो गई है।

ब्रह्म मुहूर्त कोई नियमित सीमित सूची नहीं है, जिन्होंने भी भारत के लिये अपने जीवन को होम किया है, जिन्होंने राष्ट्र को ही सर्वोपरि माना है हम उनके नाम निरन्तर बढ़ाते जायेंगे। अब से २ हजार पूर्व हमारे ब्रह्म मुहूर्त में केवल १७ अथवा १८ श्लोक थे, जिनको वेद तथा अन्य पौराणिक ग्रन्थों से संकल्प किया गया था। तदुपरांत उसके पूर्ण करने का भार श्रीयुत् नरहरि नारायण भिड़े ने लिया।

आशा है यह पुस्तक भारतीय सन्तान के लिये लाभप्रद होगी।

***

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर-दर्शनम् ॥१ ॥

(कर+ अग्र) हाथ के अगले भाग में प्रत्येक मनुष्य के यहां लक्ष्मी का वास होता है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति हाथ से ही लक्ष्मी का दान एवं संचय करता है। उसकी हथेली में सरस्वती का निवास कहा गया है। प्राचीन कथा है कि लक्ष्मी और सरस्वती एक साथ निवास नहीं करती हैं परन्तु सरस्वती का प्रधान कार्य भी हाथ से ही सम्बन्धित है और यही हमारी कल्पना है। हाथ की जड़ में भगवान का निवास होता है, तब इस प्रकार मनेच्छापूर्णकारी हाथ के प्रातःकाल दर्शन करना प्रत्येक कार्य के लिये शुभ है, मैं उसी हाथ के नित्य प्रति दर्शन करूं, यही मेरी शुभाकांक्षा है ॥१ ॥

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन-मण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्य पादस्पर्श क्षमस्व मे ॥२ ॥

इस श्लोक में विष्णु की उपासना की गई है। कवि ने विश्व को माता का रूप दिया है, जिसके लिये उसने समुद्र को जिसमें विश्व का ३/५ भाग समा गया है,

वास माना गया है और भूतल के सभी पर्वतों, कण्टकों को जो पृथ्वी पर नुकीले खड़े हैं, स्तन कहा गया है। सृष्टि के पालनकर्ता त्रिमूर्ति रूप में विष्णु ही है अत: कवि ने उसको नमस्कार किया है। मनुष्य, विष्णु पत्नि(लक्ष्मी) को अपने व्यापार एवं जीवकोपार्जन के लिये उपयोग में लाता है। उसको वहां पर मोह भी उत्पन्न होता है, उसके मन में एक चंचलता का निर्माण हो जाता है, और अपने को वह समस्त दिन में ऐसा न करे, प्रातःकाल क्षमा मांगता है ॥२ ॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी।
भानु:शशी भूमि-सुतौ बुधश्च ॥
गुरुश्च शुक्र: शनि-राहु केतव:।
कुर्वन्त सर्वे मम सुप्रभातम् ॥३ ॥

मानव जीवन का समस्त सम्बन्ध भूतल के पश्चात् भी अनेक नक्षत्र, गण, ग्रह मण्डल से अभिन्न रहता है। मनुष्य भगवान और देवी उपासना के उपरान्त सृष्टि विनायक ब्रह्मा, स्त्रिपुरांतकारी(भगवान शंकर) आकाश में विचरने वाले देव एवं ग्रह जिनमें सूर्य, चन्द्र सप्तम दिनों तथा आकाश के देवगण, सोम, मंगल, बुध शुक्र, शनि आचार्य बृहस्पति

मंगलकारी राहू केतव, सभी का स्मरण कर, नित्य प्रति के कार्य करने से पूर्व शैया त्यागता है, वह देवगण से प्रार्थना करता है कि आपकी कृपा से मेरा समस्त दिन सुखदायक व्यतीत हो ॥३ ॥

भृगुवसिष्ठः ऋतुरङ्गिराश्च।
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गोतमः।
रैम्भो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः।
कुर्वन्त सर्वे मम सुप्रभातम् ॥४ ॥

हम प्रातः काल उठकर, भूगोल खगोल का स्मरण करने के पश्चात् भारतीय सप्त ऋषियों,देवताओं, एवं उनका, जो हम भारतीयों की रोम-रोम में बस गये हैं, स्मरण करते हैं। विष्णु तक के वक्ष पर पदाघात करने वाले, ज्योतिष विद्या के प्रकांड पंडित आदि, देव भृगु, भगवान के आचार्य ब्रह्मर्षि, वशिष्ठ, मानव को जीवन देकर उसकी व्यवस्था करने वाले मनु, जिनकी मनुस्मृति भारतीय जीवन का सर्वोच्च विधान है। ऋषियों में पुलस्त्य, पुलह, गौतम, मरीची, दक्ष इत्यादि, भी मेरे दिन को सार्थक बनायें ॥४ ॥

भगवान गौतम— भारत के प्रसिद्ध ऋषियों में से एक थे जिन्होंने अपनी रूपसि प्रेयसि अहिल्या

को, उस पर शंकित होकर पाषाण होने का अभिशाप दिया था। वहां अहिल्या बाद में भगवान राम की कृपा से जब वह धनुष यज्ञ समारोह में जनकपुरी जा रहे थे उद्धार हुआ था।

राजा भरत—राजर्षि विश्वामित्र के दहोत्र थे। बन में शेरनी की गोद से दूध पीते, सिंह के बच्चे को हटाकर स्वयं उससे क्रीड़ा करने लगे। आपका यश कीर्ति साहस वीरता सदैव सूर्य की भांति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। हमारे देश का नाम भारतवर्ष भी आपके नाम पर चलाया गया था।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः।
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि।
कुर्वन्त सर्वे मम सुप्रभातम्॥५॥

पुन्य प्रातः काल की वेला में हम सभी महान विभूतियों का, जिन्होंने भारत और उसकी संस्कृति के पुनरुद्वार के लिये प्राण अर्पण किये, जिन्होंने अपने रक्त की प्रत्येक बून्द भारतीय यज्ञ में आहुति देकर समाप्त किया हैं। हम उन महर्षियों का स्मरण

करते हैं। आज के दिन सभी देवगण, सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन और पिंगल मेरे कार्य में सिद्ध हों। मेरी आत्मा को इतनी शक्ति दें कि मैं उनके प्रभाव से संसार में अपने देश एवं जाति का सम्मान कर सकूं ॥५ ॥

सप्तार्णवा सप्त कुलाचलाश्च।
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त।
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥६ ॥

भारतवर्ष के सातों ऋषि, सप्त कुल, सातों समुद्र, सात स्वर्ग, सात द्वीप, सप्त भवन एवं सप्त बन, सभी मेरे आज के प्रभात को मंगलकारी बनायें ॥६ ॥

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः।
स्पर्शों च वायुर्ज्वलनं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव।
कुर्वन्तु सर्वे सुप्रभातम ॥७ ॥

समस्त रत्नों एवं गुणों की खान पृथ्वी, मनुष्य जीवन को प्रेरणा एवं जीवन देने वाला स्वादु जल, प्राणों को संचारित एवं सुखदायक वायु,समस्त ब्रह्मांड को अपने प्रकाश से आलौकिक करने

वाली सूर्यकिरण, अपनी ध्वनि से विश्व को कम्पायमान करने वाले आकाश, अर्थात् पंचभूत जिससे मानव जीवन की रचना की गई है सभी मेरे प्रभात को सुखकारी बनायें। मुझमें साहस बल वीर्य का संचार करें ॥७॥

इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं।
पठेत् स्मरेद्वा श्रणुयाच्च तद्वत्।
दुः स्वप्नाशस्त्विह सुप्रभातम्।
भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात्॥८॥

ऐसे प्रभात को, जो परम पवित्र एवं मानसिक बाधाओं से मुक्त करने वाला है, सभी महान् पुरुषो का स्मरण करें। उनके जीवन को यदि स्वयं अध्ययन नहीं कर सकता हो, तब अन्य किसी से पाठ करा कर सुने। ब्रह्म मुहूर्त में महापुरुषों का चिन्तन करने से रात्रि की सकल बाधायें दूर हो जाती हैं, और उसका अगला दिन पूर्ण रूप से कल्याणकारी होता है॥८॥

वेन्यं पृथुं हैहयमर्जुनं च,
शाकुन्तलेयं भरतं नलं च।

रामं च यो वै स्मरति प्रभाते,

तस्यार्थ लाभो विजयश्च हस्ते ॥९ ॥

अत्याचारी राजा बेन को संहार कर समस्त पृथ्वी का भार सम्हालने एवं उसकी व्यवस्था करने वाले राजा पृथ्वी सुत पृथु। अपनी प्रजा को प्राणों से भी प्यारे उसके सुख दुख की सदा चिन्ता करने वाले राजा है। हयार्जुन, शकुन्तला सुत-भरत, जिसके नाम पर आज हमारे देश का नाम भारतवर्ष प्रचलित है। अपने यौवन एवं सुन्दरता में देवों को भी परास्त करने वाले नृपपति नल, त्रेता युगपति, जिन्होंने मानव जीवन की पूरी कल्पना ही अपने कार्य से एक नया आदर्श उत्पन्न किया, महामानव राम, इन सब राजाओं का जो व्यक्ति स्मरण कर उनके जीवन पर अपने को चलाने का प्रयास करेगा उसका जीवन सदा कल्याणकारी होगा। उसके चरणों में लक्ष्मी एवं यशकीर्ति सैदव वास करेगी। संसार में कोई उसको पराजित नहीं कर सकेगा ॥९ ॥

राजा नल-आप यौवन सम्पन्न राजकुमारी दमयन्ती के पति थे। जुये में आपने समस्त राजपाट त्याग किया था। बन में प्रथम दमयन्ती आपके साथ

थी, किन्तु दैवयोग से आप से बिछुड़ गई। बाद में जब स्वयंबर हुआ। तब अनेक राजे नल की सुन्दरता के कारण नकली नल बनकर गये और वहां सभी-नकली नल लज्जित होकर लौटे। दमयन्ती आपकी रही।

बलिर्विभीषणो भीष्मः प्रह्लादो नारदो ध्रुवः।
षडेते वैशणवाः प्रोक्ताः स्मरणं पापनाशनम् ॥१०॥

प्रख्यात व भारतीय दानवीरों में प्रमुख महाराज बलि, राम भक्त रावणनुज भक्त विभीषण, महाभारत काल के प्रथम कौरव कुल सेनापति बाल ब्रह्मचारी भीष्म, शैशव काल में ही ज्ञानी प्रहलाद, जिसने राम का स्मरण किया, भक्ताचार्य मुनि नारद्, नक्षत्रों में जिसका स्थान है, बालभक्त ध्रुव। इन्हीं छः वैष्णवों को जो विष्णु पूजा में विश्वास करते हैं नाम का स्मरण करने से पापों को नाश होता है ॥१०॥

राजा बलि—महाराज बलि ने समस्त देवलोक में अपने दान के कारण एक भूकम्प उत्पन्न कर दिया था। आप पाताल लोक के राजा थे, जहाँ पर कोई चोर या डाकू नहीं रहता था। देवराज इन्द्र को उनके दान और तप के कारण अपना आसन डोलता

हुआ दिखाई दिया। भक्त दुःख भजन, विष्णु भगवान् इन्द्रासन की रक्षा के लिये बामन अगुंल का रूप धारण करके बलि के राज्य दरबार में याचक बनकर गये। महाराज बलि से तीन पैर की भूमि की याचना की और प्रथम दो पदों में समस्त मृत्यु लोक, पाताल लोक तथा बलि राज्य की सीमा को लाँघ गये, तीसरे पैर के लिये महाराज बलि ने अपना वक्षस्थल समर्पित कर दिया। भगवान विष्णु ने दानवीर को परीक्षा में उर्तीण कर सीधा स्वर्ग धाम भेजा, उसी काल से विष्णु का बौना अवतार भी कहते हैं।

विभीषण—पुलस्त्य ऋषि का नाती एवं दशानन रावण का छोटा भाई था जिसको अपने दो भाईयों के साथ शिव द्वारा राम भक्ति का वर मिला था। समस्त रावण के दरबार में विभीषण ही एक ऐसा था जो प्रत्येक कार्य पर सतोगुण बुद्धि से विचार किया करता था। उसको यह भलीभाँति ज्ञात हो गया था कि अब रावण राज्य में रहना उचित नहीं, और इसीलिये उसने अपने भाई का राज्य त्याग कर राम की शरण ली। कुछ व्यक्ति विभीषण को आज की राजनीति का वातावरण देखकर

पंचमार्गी कहते हैं, परन्तु समय न तो आज के समान राष्ट्र की सीमा कही थी और न विभीषण ने परकीय सहायता के समान राम की सहायता ही ली। राम-रावण का युद्ध सुर एवं आसुरी प्रवृतियों का युद्ध था, जिसमें स्वार्थ नाम की कोई वस्तु नहीं थी। इसीलिये विभीषण को देश द्रोही कहना भूल है।

भीष्म पितामह—महाभारत युग के प्रतिनिधि महाराज शान्तनु के सुपुत्र थे जिन्होंने पिता इच्छा के लिये राज्य भाग न लेने और आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी। कुरुक्षेत्र समारागण में आप, विचार एवं सम्पति पाण्डवों को दिया करते थे। आपको छल कपट से शिखन्डी नामक एक नपुंसक द्वारा मारने का प्रयत्न किया गया था।

भक्त प्रहलाद—बाल्यकाल में आपको एक कुम्हार द्वारा आश्चर्यजनक लीला को देखकर भगवत भक्ति की धुन सवार हो गई थी, इधर इनके पिता हिरणयकिश्यप स्वयं को भगवान समझ कर विष्णु को अपना शत्रु समझते थे। शिव वरदान पाकर वह देवगण पर अधिक से अधिक अत्याचार करने लगे।

अन्त में आसुरी प्रवृतियों को नष्ट करने के लिये भगवान ने नृसिंह अवतार धारण कर प्रहलाद की प्राण रक्षा की।

भक्त ध्रुव—आप को जन्म काल में माँ ने बताया था कि पिता के आसन से भी बढ़ कर भगवान का आसन है, यदि सौतेली माँ ने तुम्हें उनकी गोद से हटा दिया तब मैं तुम्हें भगवान की गोद में बिठाउंगी। बालक ध्रुव जंगल में जाकर परम पद पाने के लिये आसन जमाकर बैठ गये, अन्त में भगवान् विष्णु ने ध्रुव तारा होता है जो सबसे अधिक प्रकाशमान है। इसी तारे के पास उसकी माता सुनीति का भी एक तारा है।

प्रहलाद—नारद—पराशर—पुण्डरीक,
व्यासांबरीषशुक्रशौनक भीष्मदाल्भ्यान।
रुक्माँगदार्जुन वसिष्ठ विभीषणादीन्,
पुण्यानिमान् परम भागवतान् स्मरामि॥११॥

प्रहलाद-नारद ऋषि पाराशर, भक्त पुण्डरीक महाभारत प्रणेता भगवान व्यास, भक्त अम्बरीष परम ज्ञानी एवं तत्वदर्शी शुकदेव, राजा राम, एवं दशरथ के राजगुरु ब्रह्मर्षि वशिष्ठ तथा रामभक्त विभीषण

इन सभी पुण्य आत्माओं का मैं, प्रात: काल चिन्तन करता हूँ। मैं उनके जीवन को स्मरण करके अपने में अनुसरण करने का प्रयास करूगां ॥११॥

भगवान व्यास—आपका जन्म एक क्षुद्र परिवार में हुआ था। किन्तु आप ज्ञान की राशि थे। महाभारत को कथा बुद्ध आपने ही किया है बन में जिस समय पाण्डव विहार करते थे, उस समय आप अपनी द्विव्य ज्योति से उनकी रक्षा करते थे।

भक्त अम्बरीष—आप काशी नरेश के ज्येष्ठ पुत्र थे। एक बार ब्रह्म लोक में भक्ति और तप की महानता पर वाद विवाद हुआ, जिसके लिये परम तपस्वी दुर्वासा और विष्णु भक्त अम्बरीष को संसार नाट्य शाला में अभिनय करना पड़ा जिसमें दुर्वासा की पराजय तथा अम्बरीष की विजय रही।

शुकदेव—देवताओं के राजगुरु थे, इन्होंने समस्त चराचर में ज्ञान का प्रचार किया।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमाँश्च विभीषण:।
कृप: परशुरामश्च सप्तै तेचिरजीविन ॥१२॥

महाभारत के द्वितीय सेनापति आचार्य द्रोण के पुत्र अश्वात्थामा, महादानी बलि, महर्षि व्यास, राम

भक्त हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, भगवान परशुराम .जिनको चिंरजीवि कहा गया है, सातों महात्माओं को स्मरण करता हूं ॥१२॥

अश्वत्थामा—निर्धन द्रोणाचार्य के प्रिय पुत्र थे। पाण्डवों द्वारा अश्वत्थामा की मृत्यु का झूठा समाचार देने का द्रोण ने हथियार डाल दिए थे। इसी छल के बदले में अश्वात्थामा ने द्रोपदी के पांचो बेटों की हत्या कर दी थी। कहा जाता है कि अश्वत्थामा आज भी जीवित है।

हनुमान—पुराणिक गाथा के अनुसार हनुमान की अग्नि माता तथा पवन(वायु) पिता थे। यौवन काल में आप किष्किन्धा पुरी में बानर राज सुग्रीव के महामन्त्री होकर कार्य करने लगे हनुमान जी आदर्श रामभक्त थे।

भगवान परशुराम—शिव शंकर के परम भक्त एवं जमदाग्नि ऋषि के सुपुत्र थे। आपने अपने पिता की आज्ञानुसार माँ, रेणुका की हत्या की थी। उसके पश्चात् प्रायश्चित के लिये। तीर्थयात्रा को गये। आपकी अनुपस्थिति में राजाधिराज सहस्त्रबाहू ने जमादग्नि ऋषि के आश्रम में प्रवेश किया और

कामधेनु के न मिलने पर ऋषि की हत्या की। परशुराम जब तीर्थयात्रा से लौटे तब क्रोध से अपने को सम्हाल न सके, उन्होंने भूतल से क्षत्रीय वंश मिटा डालने की प्रतिज्ञा की। समस्त पृथ्वी पर से क्षत्रियों को संहार कर आश्रम में निवास करने लगे। राजा जनक की राज सभा में पुन: राम से आपका युद्ध हुआ। और राम को अवतारी समझ कर आप जंगल में निवास करने लगे।

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं साग्रमप- मृत्युविवर्जित ॥१३॥

पहिले कहे गए सात चिरंजीवों तथा आठवें मार्कन्डेय का जो व्यक्ति स्मरण करता है उनकी कभी भी अकाल मृत्यु नहीं होती। स्मरण करने वाले व्यक्तियों की आयु १०० वर्ष से कम नहीं होती है ॥१३॥

पुण्यश्लोको नलो राजा।
पुण्यश्लोको युधिष्ठर:।
पुण्यश्लोको व्रिदेहश्च।
पुण्यश्लोको जनार्दनक ॥१४॥

जिनके कार्य और प्रताप सभी जगत में छा रहे हैं महान प्रतापी राजा नल, धर्मराज युधिष्ठिर, संसार में रहकर देहवान, विदेह महाराजा जनक तथा जनता एवं भक्तों की सदा कामना को पूर्ण करने वाले जर्नादन,महामानव कृष्ण, सभी महापुरुषों का जीवन अनुकरणीय है उन सभी का स्मरण करना अपने जीवन को चलाने के लिए आवश्यक है ॥१४॥

युधिष्ठर—पाण्डव राज के ज्येष्ठ पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर महाभारत के मुख्य पात्रों में से एक थे। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने कभी भी झूठ नहीं बोला। आचार्य द्रोण के सामने जब उन्होंने कहा, तब भी यह कहा था "अश्वत्थामा हतो नरो वा कुन्जरों" महाराज युधिष्ठिर को इसी अपराध के कारण स्वर्ग लोक में जाकर भी ३ दिन नरक में वास करना पड़ा।

महामानव जनार्दन—कुछ व्यक्ति कृष्ण को सोलह कला सम्पूर्ण अवतारी मानते हैं और कुछ उनको योगीराज। महाभारत में आप अर्जुन के सारथी बने और अर्जुन को कर्महीन समझकर गीता ज्ञान

का पवित्र उपदेश दिया। गीता ज्ञान भारतीयों के लिये आत्म चिन्तन का परम ग्रन्थ है।

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षे कीर्तनं कलिनाशनम् ॥१५॥

कार्कोटक नागराज, नल दमयन्ती राशिऋतु पर्ण इनका चिन्तन एवं गुण गान करने से प्रत्येक जगह क्लेश का नाश होता है। सभी स्थान पर आपस में प्रेम और भक्ति का संचार होता है ॥१५॥

नल दमयन्ती—पुराणिक कथा है कि राजा नल के राज्य में कुछ काल के लिये कलि का प्रवेश हो गया था। कलि के आते ही राजा नल और उनके भाई पुष्कर में द्वेष हो गया। नल और पुष्कर दोनों ने जुआ खेला, राजा नल जुये में हार गए और समस्त राजपाट पुष्कर के अधीन कर दिया। दमयन्ती राजा नल की रानी थी। नल ने भाई प्रेम को अधिक महत्व दिया और राज पाट को कुछ महत्व नहीं। इसीलिये राजा नल को भ्रात प्रेम का आदर्श माना गया है।

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर-कीर्तनेन।
पापं प्रणश्यति वृकोदर—कीर्तनेन।

जिनके कार्य और प्रताप सभी जगत में छा रहे हैं महान प्रतापी राजा नल, धर्मराज युधिष्ठिर, संसार में रहकर देहवान, विदेह महाराजा जनक तथा जनता एवं भक्तों की सदा कामना को पूर्ण करने वाले जर्नादन,महामानव कृष्ण, सभी महापुरुषों का जीवन अनुकरणीय है उन सभी का स्मरण करना अपने जीवन को चलाने के लिए आवश्यक है ॥१४॥

युधिष्ठर—पाण्डव राज के ज्येष्ठ पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर महाभारत के मुख्य पात्रों में से एक थे। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने कभी भी झूठ नहीं बोला। आचार्य द्रोण के सामने जब उन्होंने कहा, तब भी यह कहा था "अश्वत्थामा हतो नरो वा कुन्जरों" महाराज युधिष्ठिर को इसी अपराध के कारण स्वर्ग लोक में जाकर भी ३ दिन नरक में वास करना पड़ा।

महामानव जनार्दन—कुछ व्यक्ति कृष्ण को सोलह कला सम्पूर्ण अवतारी मानते हैं और कुछ उनको योगीराज। महाभारत में आप अर्जुन के सारथी बने और अर्जुन को कर्महीन समझकर गीता ज्ञान

का पवित्र उपदेश दिया। गीता ज्ञान भारतीयों के लिये आत्म चिन्तन का परम ग्रन्थ है।

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षे कीर्तनं कलिनाशनम् ॥१५॥

कार्कोटक नागराज, नल दमयन्ती रार्शित्रृतु पर्ण इनका चिन्तन एवं गुण गान करने से प्रत्येक जगह क्लेश का नाश होता है। सभी स्थान पर आपस में प्रेम और भक्ति का संचार होता है ॥१५॥

नल दमयन्ती—पुराणिक कथा है कि राजा नल के राज्य में कुछ काल के लिये कलि का प्रवेश हो गया था। कलि के आते ही राजा नल और उनके भाई पुष्कर में द्वेष हो गया। नल और पुष्कर दोनों ने जुआ खेला, राजा नल जुये में हार गए और समस्त राजपाट पुष्कर के अधीन कर दिया। दमयन्ती राजा नल की रानी थी। नल ने भाई प्रेम को अधिक महत्व दिया और राज पाट को कुछ महत्व नहीं। इसीलिये राजा नल को भ्रात प्रेम का आदर्श माना गया है।

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर-कीर्तनेन।
पापं प्रणश्यति वृकोदर—कीर्तनेन।

शत्रुर्विनश्यति धनंजय—कीर्तनेन।
माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः॥१६॥

पाण्डव कुल भूषण धर्मरक्षक महाराज युधिष्ठिर का स्मरण करने से धार्मिक ज्ञान एवं धर्म चर्चा में रुचि बढ़ती है। धर्मराज के अनुज महाबलि भीम का मनन करने से पापों का नाश होता है। महाभारत के विजयी योधा वीर अर्जुन का स्मरण करने से अनेक बैरियों-शत्रुओं का नाश होता है। माद्री, युधिष्ठिर की विमाता के दोनों सुत नकुल सहदेव का स्मरण करने से स्वास्थ्य में वृद्धि एवं आत्म ज्ञान होता है॥१६॥

पाण्डव कुल—राजा पाण्डु के दो रानी थीं, कुन्ती और माद्री। एक बार जंगल में राजा पाण्डु द्वारा भूल से गर्भवती हिरणी के उदर में तीर जा लगा। आहत हिरणी ने उसी क्षण श्राप दिया कि जिस प्रकार मेरा परिवार नष्ट हो रहा है तू भी पुत्र उत्पन्न करने के योग्य न रहे। राजा पाण्डु, दो रानियों के होते हुये भी सांसारिक आनन्द से वंचित रहे। एक बार माद्री अपने को न सम्हाल सकी, जिसके फलस्वरूप राजा पाण्डु के प्राण कूच कर गये। माद्री को अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ उसने

राजा के साथ उसी चिंता पर अपनी देह विर्सजन की। बाद में कुन्ती ने उसके दोनों सुत, नकुल, सहदेव को अपने पुत्रों के समान पाला औरं कुन्ती पाँच पुत्रों की माँ कहलायी।

बनवास काल के यक्ष-युधिष्ठिर संवाद, युधिष्ठिर के भ्रातृ प्रेम, ज्ञान तथा धर्म पालक का अद्‌भुत उदाहरण है। महाभारत के ग्रन्थ में पाँचो पाण्डवों युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, तथा सहदेव के बारे में हमें विस्तृत जानकारी मिलती है।

अर्जुन फाल्गुनो जिष्णु किरीटी श्वैतवाहनः।
बीभसुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः॥१७॥

इस पद्य में पाण्डव सुत गाण्डीवधारी अर्जुन के नाम का विभिन्न नामों से स्मरण किया गया है। श्लोक में जितने भी नाम हैं वह सभी अर्जुन के नाम हैं जिनका किसी न किसी घटना से सम्बन्ध है। अर्जुन को ही महाभारत में नर कहा गया है। प्राचीन कथा आती है कि जिस मनुष्य के स्तन छाती नहीं होते वह पूर्ण नर होता है। अर्जुन के वक्ष पर अन्य पुरुषों की भांति स्तन चिन्ह नहीं थे। अर्जुन की एक विशेषता उसकी धनुष विद्या थी।

अर्जुन के समान लक्ष्य भेदी तीर चलाने वाला कोई नहीं था ॥१७॥

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्च-कन्याः स्मरेन्नितत्यं महापातकनाशनम् ॥१८॥

जो कन्या जीवन में समाज द्वारा अपमानित एवं तृषित की जाती हैं, उनको हमारे समाज में पंचकन्या कहा गया है। प्रातःकाल की बेला में हम उनका स्मरण करें। इनसे पापों का नाश होता है और मनुष्य पाप करने से डर जाता है। हमको इनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिये ॥१८॥

द्रौपदी—यह पांचाल नृपति की पुत्री थी जिसका, धनुर्विधा में विजयी होकर अर्जुन ने स्वयंबर किया था। भिखारी ब्राह्मण वेश में जिस समय पाँचो पाँडव घूम रहे थे, वह घर पर द्रोपदी को लेकर पहुंचे, और द्वार से कहा माँ 'हम एक बड़ी अच्छी वस्तु लाये हैं।' कुन्ती ने भी बिना देखे ही कह दिया अच्छा बेटा जाओ "पाँचों बराबर-2 बाँट लो" किन्तु जब कुन्ती को ज्ञात हुआ कि भाज्य वस्तु खाद्यान्न न होकर प्राणी हैं और वह भी स्त्री,

तब उनको बड़ा दुःख हुआ किन्तु माँ की आज्ञा सर्वोपरि थी।

इस प्रकार द्रोपदी के पांच पति थे। पांच पति होते हुए भी वह एक आदर्श नारी के रूप में भारतीय इतिहास में सम्मानित है। प्रत्येक सुख दुख में द्रोपदी ने पांडवों का पूरा साथ दिया। द्रोपदी का जीवन चरित्र भारतीय ललनाओं के लिए एक अद्भुत उदाहरण है।

सीता—महामानव राम की धर्मपत्नी थी, बनवास काल में सीता को बन बन में ठोकरें खानी पड़ीं। रावण के यहाँ, वह राम विरह में एक एक दिन स्मरण कर अपना जीवन व्यतीत करती। अयोध्या में पटरानी बनने पर भी उसको प्रजा द्वारा तिरस्कृत होकर बन जाना पड़ा और अन्त समय में पृथ्वी भाग में समाई। सीता का जीवन एक आदर्श नारी का जीवन था।

तारावती—इस बारे में दो मत मिलते हैं। कुछ विद्वान तारा को अयोध्या नृपति सत्यवादी हरिशचन्द्र की पत्नी मानते हैं और कुछ सुग्रीव की भार्या, जिसको उसके ज्येष्ठ भाई बलि ने अपने घर में बलात डाल लिया।

जहाँ तक कथा का प्रश्न है दोनों ही पंचकन्या हैं तारावती अयोध्या नरेश सत्यवादी हरिशचन्द्र की धर्मपत्नी थी। ऋषि, विश्वामित्र द्वारा कठिन से कठिन परीक्षा लेने पर भी सत्यवादी हरिशचन्द्र ने अपने धर्म, कर्त्तव्य, सत्य, धैर्य, चरित्र व साहस को कायम रखा, इन्हीं सब कष्टों में रानी तारावती ने अपने पति का अक्षरशः अनुसरण किया। राजा हरिशचन्द्र के बारे में कहा भी गया है।

चन्द्र टरे सूरज टरे, टरे जगत व्यवहार।
तै पग दृढ़ हरिशचन्द्र के, टरे न सत्य विचार॥

तारावती—बानर नरेश सुग्रीव की महारानी थी। सुग्रीव बालि का छोटा भाई था। एक बार बालि किसी राक्षस से लड़ने को एक गुफा में गया उसने सुग्रीव को कुछ दिन उसकी प्रतिक्षा करने को कहा। निश्चित अवधि समाप्त होने पर सुग्रीव बालि को मरा जानकर शासन करने लगा। कुछ समय बाद बालि राक्षस को मारकर अपनी नगरी किष्किन्धा लौटा। उसने क्रोध से सुग्रीव को राज्य से बाहर भगा दिया तथा तारावती को अपने कब्जे में ले लिया। भगवान राम की कृपा से बालिवध के बाद सुग्रीव ने पुनः तारावती को प्राप्त किया।

मन्दोदरी—लंका पति रावण की पत्नी का नाम मन्दोदरी था। लंका में राक्षसों तथा रावण के वध के पश्चात् दो मुख्य व्यक्ति लंका में बचे थे, विभीषण तथा मन्दोदरीश्री राम की आज्ञा से विभीषण से विवाह कर लिया ताकि पुलस्तय ऋषि का समस्त परिवार नष्ट न हो जाए और रावण का कुल भी चलता रहे।

शास्त्रानुसार एक विवाहित स्त्री को विधवा हो जाने पर, विवाह करने का अधिकार नहीं दिया गया है। जबकि वह निसन्तान न हो, युवती न हो अथवा उसके लिये ही विधवा विवाह प्रचलित किया। विधवा विवाह उसी समय से भारत में प्रचलित है।

गांगं वारि मनोहारि, मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि, पापहारि पुनातु माम् ॥१९॥

भगवान विष्णु के चरणों से निकला हुआ जल जिसका वास शंकर की जटाओं में रहा। वह पवित्र जल मेरे मन को मुग्ध करे और कल्याणकारी बनाये ॥१९॥

गंगा—पुराणों में कथा आती है कि विष्णु भगवान की एक पत्नी गंगा भी थी, जिसको लक्ष्मी

डाह हो गया था। एक बार लक्ष्मी ने क्रोधित होकर गंगा को श्राप दिया कि तू पृथ्वी में समा जाये, समस्त स्वर्गलोक में श्राप के कारण एक हलचल मच गई, जिस समय विष्णु भगवान ने उसको अपने पैरों से विमुख किया और वह पाताललोक को जाने लगी तब स्वयं सृष्टि रचने वाले ब्रह्मा ने उसको अपने कमण्डल में रख लिया।

अपने पित्रों को मानवरूप में जीवित करने के लिये अयोध्या नृपति रघुकुल में दिलीप ने भारी तपस्या की, जिस पर ब्रह्मा ने उसको प्रसन्न होकर वर दिया कि जा तुझको गंगा को पृथ्वी पर ले जाने का वर दिया। किन्तु गंगा की प्रचन्ड धारा को रोकने का सामर्थ्य किसी में नहीं है। इसके लिये तुझे पुनः तपस्या करनी पड़ेगी और शिव को उसने प्रसन्न कर प्राप्त किया। भोले शंकर ने भक्तोद्धार के लिये गंगा का वेग शान्त करने के लिये अपनी जटाओं पर उसका भार सम्हाला। इस प्रकार पतित पावनी गंगा जी भारत भूतल पर आई। गंगा जिस स्थान पर गई वहां प्रेम भक्ति प्रदान करती गई।

भारतवर्ष की भूगौलिक दृष्टि के अनुसार श्री गंगा जी हिमालय की शिखाओं से, गंगोत्तरी की घाटी से निकली है जो एक क्षुद्र नाले के रूप में प्रथम आई है और पत्थरों बनों-जंगलों से टक्कर लेती हुई मैदान में विशाल रूप से आगई। संयुक्त प्राँत में गंगा का फाट दो मील चौड़ा हो गया है।

ऋषिं नमामि दध्यञ्चं देवानामुपकारकम्।
वाल्मीकिं च मुनिंवन्दे श्री रामायणकोकिलम् ॥२०॥

जिस महान आत्मा ने देवलोक को सुरक्षित रखने के लिये अपने शरीर तक का दान कर दिया ऐसे महर्षि दधीचि को मैं नमस्कार करता हूं। जिन्होंने सृष्टि में सर्वप्रथम भारतीय कोकिला के समान सरस्वती कण्ठ से राम महिमा का गुणगान किया है, आदि कवि वाल्मीकि को भी नमस्कार करता हूं ॥२०॥

दधीचि— भारत के सप्त ऋषियों में आपकी भी गणना है। वृत्रासुर राक्षस को मारने के लिये सभी देवगणों को चिन्ता व्याप्त हुई। आचार्य बृहस्पति की आज्ञा से इन्द्र दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाकर वृत्रासुर का वध किया जा सके। महर्षि दधीचि ने

इस कार्य के लिए सहर्ष अपने शरीर का दान इन्द्र को दे दिया। इस प्रकार महर्षि दधीचि की हड्डियों के वज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया और देवताओं को शान्ति प्रदान की। इस प्रकार जीवित रूप में ही अपना सर्वस्व दान कर महर्षि दधीचि ने अद्‌भुत त्याग का परिचय दिया जो अमर है।

बाल्मीकि—बाल्मीकि का शुरु का नाम रत्नाकर था। परिस्थितियों वश वह परिवार का पालन करने के लिए लोगों की लूट-पाट -हत्या आदि करने लगे। कुछ समय तक तो वह एक भयंकर डाकू माने जाने लगे। एक समय देवर्षि नारद अन्य ऋषियों सहित रत्नाकर को मिल गए। उन्होंने रत्नाकर को पाप-पुण्य, धर्म-अर्धम आदि का भेद समझाया तथा शुद्धि के लिए "राम-राम" जपने को कहा। बड़ी कठिनाई से रत्नाकर यह बात मान गया लेकिन शब्दों का ठीक बोध न होने के कारण वह राम के स्थान पर "मरा-मरा" शब्द का प्रयोग करता था। पन्द्रह वर्ष की कठिन तपस्या के बाद वह ऋषि पद को प्राप्त हुआ।

महर्षि बाल्मीकि की किसी घटना के प्रहसन में देवर्षि नारद ने बाल्मीकि जी से कहा कि तुम्हारी

वाणी से सरस्वती का छन्दी बद्ध छन्द फूटा है, तुम इसके लिए राम चरित्र को काव्य में रूप दो। उसके उपरांत महर्षि बाल्मीकि ने रामायण की रचना की जो कि भारतीय इतिहास का एक पवित्र ग्रंथ है। जिस समय राम ने जनता की आवाज के कारण सीता को अपने राज्य से पदच्युत करा दिया, उस समय भी महर्षि बाल्मीकि ने रघुवंश कुल की रक्षा करते हुये सीता को अपने यहाँ आश्रय दिया। महर्षि बाल्मीकि को त्रिकालदर्शी कहा गया है।

मनुं स्मराम्यादि—गुरुं प्रजानम्
भगीरथं धीरमुदग्रयत्नम।
भूपं हरिश्चन्द्रमभङ्गवाचम्,
श्रीरामचन्द्रं रघुवंश-सूर्यम् ॥२१॥

किवदन्ती है कि इस पृथ्वी तल पर १७ बार प्रलय आई और प्रलय काल से पूर्व की समस्त सृष्टि जल में समा गयी थी। एक बार प्रलय आई थी और उस समय समस्त चराचरों में एक मनु ही शेष रह गये थे। मनु भगवान् ने ही मानव जीवन को व्यवस्था दी। उन्होंने ही मनु-स्मृति रचकर सर्वप्रथम

भारतीय जीवन के विधान की रचना की। आज भी हिन्दु धर्म का सबसे बड़ा कानून (नियम) ग्रन्थ मनुस्मृति ही है।

जिन्होंने अपने पराक्रम से, स्वर्गलोक से पृथ्वी तक गंगा को लाने में विजय प्राप्त की ऐसे प्रयत्नशील भागीरथी का मैं स्मरण करता हूं। जिसने अपने वचन के लिये समस्त परिवार की बलि दी, ऐसे सत्यवादी हरिश्चन्द्र का मैं स्मरण करता हूं। प्रातः काल की पुण्य बेला में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का स्मरण भी हमारे जीवन के लिये एक महान आदर्श है ॥२१॥

यमजेत्री च सावित्री
भगिनी च निवेदिता।
मीरालक्ष्मीरहल्या च
पंचैताः पुण्यचिंतनाः ॥२२॥

जिसने अपने सतीत्व के बल पर, यमराज को भी पराजित कर दिया ऐसी सती सावित्री का, जिसने समस्त वेदों का ज्ञान अपनी वाणी से भारतीय जनता को दिया, बाल्यकाल में ही जिसने

कृष्ण की प्रतिमा को अपना पति बना लिया जिसके लिये उसने जहर के प्याले पिये उस राजस्थान की परम भक्त देवी मीरा, स्वाधिनता संग्राम में ब्रिटिश नौकरशाही के दांत खट्टे करने वाली महारानी झांसी, जिसकी वीरता का बखान दिल्ली के लाल किले की दिवारें कर रही हैं, नमस्कार करता हूँ। इन सबके चिन्तन से सभी प्रकार के समस्त दु:ख नष्ट हो जाते हैं ॥२२॥

सती सावित्री—अयोध्या नरेश की एक मात्र कन्या थी। एक बार सखियों के साथ वह उपवन में घूम रही थी, उसने यकायक एक युवक सत्यवान देखा। सावित्री सत्यवान को देखकर मोहित हो गई। राजा ने नारद मुनि से पूछा कि सत्यवान किस वरण का व्यक्ति है और उसका भविष्य क्या है। स्वयंबर के समय सत्यवान की अवस्था केवल १ वर्ष ही शेष थी, किन्तु सावित्री ने, भारतीय आदर्श नारी के कर्त्तव्य को निभाया और उसी के साथ शादी का निर्णय किया। सत्यवान को मृत्यु के पश्चात् यमराज से सावित्री ने अपनी पति सेवा के कारण फिर से

प्राप्त किया। यह घटना सावित्री के पतिव्रत धर्म की शक्ति का प्रतीक है।

मीरा—मीरा का जन्म एक वैष्णव राज्य परिवार में, राजस्थान में हुआ था। इस परिवार ने कृष्ण-भक्ति के लिए अपने राज्य को त्याग दिया था। बालिका मीरा ने कृष्ण को अपना पति मानकर, जिस पति से उसकी शादी हुई थी कोई प्रेम इत्यादि नहीं दर्षाया। मीरा सदा साधु सन्तों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने लगी। मीरा को उसकी बड़ी भौजाई ने विष का प्याला पान करने के लिए दिया, किंतु उस पर कोई असर नहीं हुआ। बाद में मीरा अधिक संघर्षों के पश्चात् वृन्दावन चली गई, जहां पर उसने अपने प्राण विसर्जन किये। मीरा स्वयं एक उच्चकोटि की कवियत्री थी। आज भी मीरा का रहस्यवाद हिन्दी की उच्चत्तम परीक्षाओं में पाठयक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है।

महारानी लक्ष्मी—झांसी की रानी लक्ष्मी की गाथा सर्वविदित है। बाल्यकाल में ही रानी लक्ष्मी ने अपने पिता के यहाँ कानपुर के नाना पन्त साहिब

के साथ युद्ध एवं वीरता पूर्ण खेल खेलें। विवाह के पश्चात् उसके पति की मृत्यु हो गई। रानी उस समय अकेली ही थी। डलहोजी की हस्तक्षेप नीति के कारण झाँसी को भी ब्रिटिश फौज के साथ अन्त समय तक समर में धैर्य के साथ युद्ध किया और विजय प्राप्त की। अंग्रेज सेनापतियों ने झांसी की रानी की वीरता का वर्णन करते हुये कहा कि "उनकी युद्ध संचालता एवं नेतृत्व हम लोगों के वास्ते एक आदर्श था, हमने अभी तक इस प्रकार का युद्ध एवं सकुशल समर संचालित सेनापति नहीं देखा। श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने "मुकुल" में लिखा है—

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।
बुन्देले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी॥

प्रयागं पाटलीपुत्रं
विजायानगरं तथा
इंद्रप्रस्थं गयां चैव
प्रत्यूषे प्रत्यहं स्मरेत्॥२३॥

तीर्थराज प्रयाग, पाटलीपुत्र, विजयनगर, इन्द्रप्रस्थ और गया इन सब तीर्थों का प्रतिदिन स्मरण करें॥२३॥

प्रयागराज—आज जिसको हम इलाहाबाद कहते हैं, पूर्वकाल में यह प्रयाग के नाम से ही जाना जाता था। प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती, तीनों पवित्र नदियों का संगम है। महामानव राम तथा श्रवण कुमार आदि महापुरुषों ने यहां पर तीर्थ यात्रा कर इसे और भी पावन बना दिया है। प्रयाग में हरिद्वार एवं उज्जैन की भांति १२ वर्ष के पश्चात् कुम्भ पर्व आता है। माघ मास में यमुना संगम पर जब कि भयंकर हिमपात होता है। तब भक्तगण विश्वास एवं श्रद्धा सहित स्नान करते हैं।

पाटलीपुत्र—बौद्ध संस्कृति का प्रमुख तीर्थ एवं ऐतिहासिक स्थान है। यहां पर भगवान बुद्ध जिन्होंने बौद्ध धर्म को जन्म दिया, उत्पन्न हुए थे। बुद्ध अनुयायी अशोक महान की यह राजधानी थी, ईसामसीह से ३९० वर्ष पूर्व जितना स्थान पाटलीपुत्र को था, आज उतनी महत्ता भारत की राजधानी दिल्ली को भी नहीं, जितनी इसे थी। यह महत्ता केवल ४००,५०० वर्ष तक ही रही , उसके पश्चात् सम्राट विक्रम द्वितीय के समय में उज्जैन भारत का

प्रमुख नगर बन गया था। आज पाटलीपुत्र ही को पटना कहा जाता है। वर्तमान शासन व्यवस्था के अनुसार यह बिहार प्रांत की राजधानी है। प्रातः स्मरण में इसका उल्लेख केवल बौद्ध संस्कृति की महानता के कारण ही किया गया है।

विजयनगर—एक युग था जब विजयनगर की कीर्ति ध्वजा भारत का गौरव बढ़ा रही थी, अब तो केवल वहां पर उसके अवशेष ही रह गये हैं। लोदी वंश के प्रमुख राजे महाराजे जिस समय दिल्ली के ऊपर अपना अधिकार जमाये बैठे थे, उसी समय दक्षिणा में ब्राह्मणों ने विजयनगर की स्थपना की थी। प्राचीन भारतीय कला, संस्कृति का यह उद्गम था, आज नगर के अवशेष देखकर बरबस आंखों से नीर निकलने लगता है।

इन्द्रप्रस्थ—भारत की राजधानी दिल्ली का प्राचीन नाम इन्द्रपस्थ था जिसको पाण्डवों ने अपने राजसूर्य यज्ञ में राजधानी बनाकर प्रचलित किया था। इन्द्रप्रस्थ का भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। यह १७ बार उजड़ी और बसाई गई।

धार्मिक महत्ता का आधार यहां यमुना की महत्ता है। इन्द्रप्रस्थ आज के काल में भी भारत की राजधानी ही है।

गया—बिहार प्रांत का प्रसिद्ध स्थान है, यहां पर समस्त पित्रों का वास माना गया है। जो व्यक्ति अपने पित्रों का तर्पण करता है उसको गया ही जाना पड़ता है। प्राचीन काल में एक कथा आती है, कि गया, गया सो गया। आज यहां यान सुविधा होने के कारण गया जाना सभी के लिये सरल है। कोई भी व्यक्ति रेल एवं यान द्वारा गया जा सकता है।

अशोकश्चन्द्रगुप्तश्च।
विक्रमः शालिवाहनः॥
हूणजे ता यशोवर्मा।
समुद्रो गुप्तवंशजः॥२४॥

इस श्लोक में भारतवर्ष के चक्रवर्ती सम्राट तथा उसकी वीरता का वर्णन किया गया है। मौर्य कुलभूषण महान प्रतापी, विश्वविजेता सिकन्दर को पराजित करने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य्य अहिंसा के सिद्धांत को अपने जीवन में पूर्णरूप से पालन करने

वाले, जिसने लोक परलोक सुधारने की दृष्टि से प्रजा पर राज्य किया, महान अशोक, अवन्तिका पति विक्रम, जिसके युग को भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग कहा जाता है, महाराजा विक्रम द्वितीय, आज जिनके नाम पर भारत में विक्रम सम्वत् की स्थापना की गई है। अनार्य एवं हूणजाति पर, विजय पाने वाले महान प्रतापी राजा शालिवाहन, जिनके नाम पर शक सम्वत् प्रचलित है। सभी महान चक्रवर्ती सम्राटों को प्रातःकाल का बेला में मैं नमस्कार करता हूं ॥२४॥

श्रीहर्षः पुलकेशी च।
दाहिरो हुतजीवनः॥
पृथ्वीराजो महावीर्यः।
प्रतापादित्य भूपतिः॥२५॥

भारतवर्ष के अन्तिम चक्रवर्ती सम्राट महाराज हर्ष, जिनके राज्य काल में सभी भारतीय धर्मों को मान्यता थी, जिनका राज्य समस्त दक्षिणा भाग में था, जिसने अपने जीवन को यवनों से धर्म एवं प्राण संकट की रक्षा के लिये अर्पित कर दिया। सतरह बार मोहम्मद गोरी को पराजित करने वाले, चौहान,

दिल्ली नृपति पृथ्वीराज को प्रातः काल स्मरण करता हूं जिनका जीवन काल हमारे लिये अनुकरणीय है।

मध्यकालीन इतिहास के दो महावीर, लौह पुरुष जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता एवं कुल की रक्षा के लिये अपने प्राणों को दान कर दिया, राजस्थान केसरी महाराणा प्रताप एवं दक्षिणपति शिवाजी का आज की बेला में मैं स्मरण करता हूं ॥२५॥

राजा दाहिर—पंजाब से परे भारतीय सीमा के परा तक्षशिला के राजा दाहिर पर मोहम्मद विनकासिम ने आक्रमण कर दिया। उस समय वहाँ पर एक देव का मन्दिर था। जिसके बारे में एक किवदन्ती प्रचलित थी कि यदि कभी भी देवी मन्दिर का ध्वज झुक जायेगा तब समझना चाहिये कि अब दाहिर का विनाश होने वाला है। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न एक देशद्रोही ने कुछ चाँदी के टुकड़ों में फंसकर ध्वज को झुका दिया। धर्म विश्वास से अन्ध दाहिर ने झुके हुये ध्वज को देखकर समझा कि अब हमारे राज्य के नाश में कोई विलम्ब नहीं है। समस्त सेना को आज्ञा दी कि वह शस्त्र डाल दे। राजादाहिर

ने समरागण में अन्तिम समय तक युद्ध किया और अपने परिवार के साथ जौहर कर दिया।

पृथ्वीराज—दिल्लीपति अनंगपाल का दौहित्र था। राजा अनंगपाल ने अपने राज्य को जयचन्द, जो उसका बड़ा दौहित्र था, राज्य न देकर पृथ्वीराज को राज्य दिया। इधर पृथ्वी और जयचन्द दोनों में जरा से राज्य के लिये द्वन्द्व हो गया। संयुक्ता स्वयम्बर ने इस द्वन्द्व में और भी अग्नि भड़का दी।

जयचन्द ने परकीय सत्ता को लेकर भारतीय इतिहास को कंलकित किया। उसने अफगानिस्तान के बादशाह मोहम्मद गोरी को भारत में बुलाया और समस्त सैनिकों के साथ पृथ्वीराज के साथ लड़ा और अन्त में मारा गया। संयुक्ता उसके साथ सती हो गई।

उग्रवीर्यः प्रतापश्च।
धर्मगोप्ता शिवो नृपः॥
यस्यामेतेनृपतयो धन्या।
सा भारती क्षितिः॥२६॥

मध्यकालीन इतिहास के दो महावीर लौह पुरुष जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता एवं कुल की रक्षा के

लिये अपने प्राणों का दान कर दिया, राजस्थान केसरी महाराणा प्रताप एवं दक्षिणपति शिवाजी का आज की बेला में पुनः स्मरण करता हूं ॥२६ ॥

राणा प्रताप—राणा सांगा परिवार के दिव्यमान दीपक थे, जिन्होंने राजस्थान के लिये तथा राजपूती आन के लिये अपने जीवन को भेंट चढ़ा दिया। राजस्थान के सभी राजा अकबर की आधीनता स्वीकर करके तथा अपनी राज्य कन्यायें, बहिनें बेचकर अपनी शर्म खो बैठे थे। केवल राणा प्रताप ही शेष रह गए थे। एक अवसर पर राजा मानसिंह से उनका संघर्ष हो गया, राणा प्रताप ने पाषाणों को अपना प्रर्यक बनाया, बनों के कन्द फल खाकर जीवन व्यतीत किया और भारतीय स्वाधीनता को मुगल काल में ही प्राप्त किया।

शिवाजी—महाराज शिवाजी के पिता दक्षिण में बीजापुर नवाब के जागीरदार थे, जो सलाम झुकाकर ही अपना पेट पालते थे। छत्रपति शिवाजी बाल्यकाल में जब दरबार में गये, उस समय उन्होंने बादशाह को सलाम नहीं किया और "कहा मैं

इसको किसी कारण वश सलाम नहीं करूगां, यह मेरा बादशाह नहीं।''

धीरे-२ महाराजा शिवाजी ने अपने सांथियों के साथ दक्षिण के किलों पर अधिकार जमा लिया था। छत्रपति शिवाजी की, जयसिंह ने औरंगजेब से मित्रता करानी चाही,किन्तु दिल्ली पति औरंगजेब ने उस पर अपना जाल फेंका, किसी प्रकार शिवाजी जेल से भाग कर दक्षिण पहुंचे।

शिवाजी ने औरंगजेब के राज्य काल में ही हिन्दूपद बादशाही स्थापित की। उस समय एकमात्र हिन्दू गौ ब्राह्मण प्रतिपालक महाराज शिवाजी ही थे। आज ब्रिटिश इतिहासकार उनको चूहा कहते हैं, किन्तु आज के युग में शिवाजी ही भारत के आदर्श हैं और आज जैसी परिस्थिति में वह सदा पथ-प्रदर्शक रहेंगे।

बुद्धो दयाधनः श्रीमान्।
महावीरो जिनेश्वरः॥
यतीन्द्रः शंकरश्चैव त्रयो।
धर्मस्य धारकाः॥२७॥

जिन्होंने अपने जीवन को दया के लिये ही बनाया था, प्रत्येक सूक्ष्म प्राणी को एक सृष्टि का समान भागी समझ कर उसके प्रति प्रेम दर्शाया था, जिनके जीवन में अहिंसा परमोधर्म का सिद्धान्त समा गया था, बौद्धधर्म के प्रर्वत्तक भगवान बुद्ध, इन्द्रियों को जीतने वाले भगवान बुद्ध के समान अहिंसा-सत्य आदि सिद्धान्तो के प्रतिपालक जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी, जिस समय भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू धर्म की धज्जियां बौद्ध संस्कृति एवं प्रचार के कारण टूट गई थीं, भारतीय जीवन में जिन्होंने एक नवीन व्यवस्था दी। भगवान शंकराचार्य, जिनके द्वारा भारत भाग के चार कोनों में निर्माणित ४ मठ आज भी उसी समान भारतीय संस्कृति, ध्वजा को दिनों दिन बढ़ा रहे हैं, तीनों युग के धर्मपतियों, धर्म रक्षकों का मैं प्रातःकाल की पुण्य बेला में स्मरण करता हूँ ॥२७॥

आचार्य-त्रिततं वन्दे।
भक्ति-मार्ग-प्रवर्तकम् ॥
माध्वं रामानुजं चैव।
सादरं वल्लभं था ॥२८॥

जिन्होंने संसार के अन्दर भक्ति मार्ग का बोध कराया, जिन्होंने मानव समाज में धर्म भावना एवं श्रद्धा के बीज बोये, ऐसे तीन आचार्य, सर्वश्री रामानुज, वल्लभाचार्य एवं माधवाचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ। उनके जीवन को लक्ष्य कर मैं भविष्य में कार्य का प्रयास करूंगा। उनके समान मेरा जीवन लोक कल्याणकारी रहे यही मेरी एकमात्र कल्पना है ॥२८॥

ज्ञानेशं श्रीसमर्थं च।
कबीरं पूतचेतसम् ॥
चैतन्यं तुलसीदासं।
तुकारामं रिप्रियम् ॥२९॥

समस्त गुणों को खान, जिन्होंने महाराष्ट्र में अपने आलौकिक ज्ञान से महाराष्ट्र में एक लहर उत्पन्न कर दी, हरि कथा में सदा आनन्द लेने व देने वाले चैतन्य जिन्होंने कीर्तन प्रचलित किया, मुगलकालीन महाकवि तुलसीदास जिनका महाग्रन्थ रामचरित्र मानस है, महाराष्ट्र के हरिकीर्तन एवं महान सुधारक, सन्त तुकाराम जिनके द्वारा निर्मित अभंग आज दक्षिण

भारत में छोटे-छोटे गांवों में प्रचलित हैं। उन सभी को मैं नमस्कार करता हूँ। इस पुण्यकाल में मैं उनका स्मरण करता हूँ ॥२९ ॥

समर्थ गुरु रामदास—महाराष्ट्र के एक योगी थे, जो जंगलों में धूनि रमाकर कार्य करते थे। छत्रपति शिवाजी महाराज पर स्वामी रामदास की बड़ी अनुकम्पा थी, शिवाजी इन्हीं गुरु के सच्चे शिष्य थे। एक बार शिवाजी की गुरु भक्ति परीक्षा हुई। शिवाजी ने गुरु चरणों पर अपना समस्त राज्यपाट वार दिया। केवल एक मात्र अपने वस्त्र छोड़कर गुरुदक्षिणा में समस्त दक्षिण का भाग गुरु के चरणों में था। समर्थ रामदास ने शिवा से कहा कि अब यह राज्य मेरा है तुम मेरी आज्ञा से यहां पर राज्य करो। किवदन्ती है कि शिवाजी ने भगवे ध्वज को रामदास स्वामी से ही लिया था, किन्तु अपना भगवा ध्वज नवीन नहीं, उसमें पुरातन छाप है। किसी न किसी प्रकार कैसे भी कहा जाय शिवाजी को छत्रपति शिवाजी बनाने का श्रेय स्वामी समर्थ रामदास को ही है। आज भी दक्षिण में समर्थ के नाम का जाप होता है।

"श्री राम जय राम जय जय राम"

तुलसीदास—मुगल सम्राट अकबर के काल में आपका जन्म हुआ था। अपनी पत्नी के रंग रूप पर यह बहुत मोहित थे। एक दिन इनकी पत्नी ने इनको क्रोध से कहा-यदि इतना प्यार, जितना तुम मुझसे करते हो, राम से करते, तो निश्चित रूप से तुम्हारा उद्धार हो जाता।

तुलसीदास को यह शब्द चुभ गये, वह चित्रकूट पर जाकर निवास करने लगे। किवदन्ती अनुसार वहां पर उनको रामभक्त हनुमान के दर्शन हुए। हनुमान की भक्ति से प्रभावित होकर ही श्री तुलसीदास ने महाकाव्य की रचना की। महामानव राम का चरित्र हमारे लिये आज की परिस्थिति में भी एक आदर्श धर्म ग्रन्थ है।

श्रीमत्परहंसं च।
रामकृष्णं सतां वरम्॥
प्रातरेतान् प्रणम्याशु।
विलयं याति पातकम्॥३०॥

आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति के उद्धारक बंगवासी श्रीरामकृष्ण परमहंस को मैं नमस्कार करता

हूँ, उनका स्मरण करने से सभी पापों का नाश होता है ॥३०॥

श्रीरामकृष्ण परमहंस, बंग के प्रसिद्ध साधु थे, जिन्होंने समस्त मानव जीवन में एक समता एवं प्रेम व्यवहार को लाने की दृष्टि प्रदान की। आपके शिष्य श्री स्वामी विवेकानन्द थे, जिन्होंने यूरोप एवं अमेरिका में अपने देश की धर्म पताका को समुन्नत किया।

चाणक्यं तीव्रधिवणं।
राजनीति-धुरन्धरम्॥
नमामि तिरुवलवार।
द्राविड़ं कवि-पुंगव॥३१॥

राजनीति में परम कुशाग्र विद्वान, बुद्धिकारक चाणक्य, जिनका नाम बौद्ध इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा है। महापद्मनन्द का नाश कर आपने सम्राट चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर विराजमान कराया था। सेल्यूकस पर विजय पाकर विश्वविजेता सिकन्दर का मानदण्ड दूर करने वाले नीति विशारद चाणक्य को मैं नमस्कार करता हूँ॥३१॥

अमात्यं माधवाचार्य।

सर्वज्ञं धर्मरक्षकम्॥

शस्त्रशास्त्रं-धुरीणं तं।

गुरुं श्रीवसवेश्वरम्॥३२॥

धर्म की रक्षा करने वाले अमात्य माधवाचार्य तथा धर्म प्रवीण धर्मगुरु श्री विश्वेश्वर का मैं स्मरण करता हूँ॥३२॥

विख्यातं गुरु गोविन्दं।

गुरुं नानकमेव च॥

सेनं केशवचन्द्रं च॥

राजानं राममोहनम्॥३३॥

सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह एवं नानकदेव, बंगाल के प्रसिद्ध धार्मिक क्रांतिकारी केशवचन्द्र, राजा राममोहन राय इन तीनों महापुरुषों को नमस्कार करता हूँ॥३३॥

गुरु गोविन्द सिंह—सिक्खों के दसवें गुरु थे, आपने अपने पिता गुरु तेग बहादुर का बदला चुकाने के लिये एक सेना बनाई। उसके अन्दर प्रत्येक सेना में भरती होने वाले को गुरु का शिष्य कहा गया,

जिसको (सिक्ख) कहने लगे। गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब तथा अन्य बादशाहों के सामने एक गुरिल्ला युद्ध किया। आपके चारों पुत्र जोरा, फतह सिंह तथा अन्य दोनों मारे गये, इनके दो पुत्रों को दिवार में चुनवा दिया गया। गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पिता के वधिकों से जहां तक हो सकता था, चुन चुन कर बदला लिया।

नानकदेव—सिक्खों के प्रवर्तक थे, उन्होंने महाभारत एवं रामायण को पढ़ कर छोटे-छोटे भजनों का संग्रह किया, उनको लोग प्रेम से पढ़ते और गाते हैं। गुरु नानक प्रत्येक शिष्य पर समान प्रेम करते थे। उन्होंने कभी भी ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं किया।

एक बार की कथा है कि उनके पास दो, राज घराने व मजदूर के यहां से भोजन आया, किन्तु नानक महाराज ने दोनों रोटियों को निचोड़ा किन्तु उनमें एक से खून और दूसरी से दूध निकला, गुरु नानकदेव ने कहा कि यह मजदूर के घर से आई हुई रोटी दूध से सम्पन्न है इसमें कोई छल कपट का कार्य नहीं किया गया। अमीर घर से आई हुई

रोटी खून से भीगी हुई है, क्योंकि वह गरीबों का खून चूस-चूस कर बनाई गई है। गुरु नानकदेव भारत में प्रथम समाजवादी थे, जिन्होंने यहां के लिये सब कुछ बलिदान कर दिया।

राजा राममोहन राय—अंग्रेज काल में आपका जन्म हुआ। आपने भारतीय शिक्षा पद्धति एवं ब्रह्म समाज की स्थापना की। राजा राममोहन राय ने सती-प्रथा एवं बाल विवाह प्रथा को भारत में रोकने का प्रयास किया।

शिक्षा धर्म एवं आचार में आपने जिस प्रकार कार्य किया वह विस्मरणीय है।

रामतीर्थं दयानन्दं
विवेकानन्दमेव च॥
एतेषां स्मरतां नित्यम्।
अविर्भवति पौरुषं॥३४॥

भारतवर्ष के कीर्ति स्तम्भ स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द एवं विवेकानन्द का मैं स्मरण करता हूँ। इनके नित्य स्मरण से पौरुष जागता है॥३४॥

रामतीर्थ—स्वामी रामकृष्ण परमहंस के समान आपने वेदान्त एवं ब्रह्म ज्ञान का प्रचार किया। स्वामी

रामतीर्थ का विदेश में जिस प्रकार सम्मान हुआ है, वह अन्य किसी भारतीय का नहीं। स्वामी रामतीर्थ के उपदेशों को सुनकर कितने ही विदेशियों ने अपने भारतीय ब्रह्म एवं शास्त्र की स्थापना की।

दयानन्द—आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द का पारिवारिक नाम पं. मूलशंकर था। शिवरात्रि के महान व्रत पर आपने अपने पिता की भांति सनातन धर्म के ढंगों पर व्रत किया किन्तु जागरण करने के पश्चात् ज्ञान हुआ कि जिस प्रतिमा की मैं उपासना कर रहा हूँ वह एक पाषाण हैं। वास्तविक शिव की उपासना करना आवश्यक है, उन्होंने वैराग्य लिया और प्रत्येक गुरु आश्रम को खोजते हुए अन्त में मथुरा में स्वामी विरजानन्द् के पास गये। वहां पर सभी प्रकार के धर्म ग्रन्थ वेदान्त व्याकरण का अध्ययन किया।

समस्त ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात् स्वामी विरजानन्द ने भारत में मत-मतान्तरों का खण्डन करने व पोप लीला को दूर करने की उनसे प्रतिक्षा करवाई। स्वामी दयानन्द ने देश के प्रत्येक भाग में शास्त्रार्थ किया, जहां भी गये वहां

वैदिक धर्म की ध्वजा गाड़ते चले गये। आप पर राजा कर्ण सिंह ने तलवार का बार किया। किन्तु अखण्ड ब्रह्मचारी के सामने उनका कुछ वार न चल सका। महाराणा जोधपुर के राज्य दरबार में आप बहुत दिनों तक वास करते रहे। एक बार जब स्वामी दयानन्द राज्य भवन में जा रहे थे, तब उन्होंने देखा कि महाराजा वेश्या से प्रेम-विहार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि तुम इस कुतिया के साथ विश्राम करते हो, तुम स्वयं सिंह सपूत हो। महाराजा ने तो स्वामी जी के चरण पकड़ लिये किन्तु वेश्या को यह बर्दाश्त न हो सका। उसने एक रसोइये के साथ मिलकर जहर दिला दिया। स्वामी जी को ज्ञात हो गया, उन्होंने स्वयं रसोइये को मुद्रा प्रदान कर उसको जीवन दान दिया।

स्वामी दयानन्द ने आर्य संस्कृति का पुनःरुद्धार किया। भारतीयों के जीवन में एक राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न कर दी। समस्त तत्कालीन धर्म ग्रन्थों एवं पोप लीलाओं का खण्डन एक सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक द्वारा किया। आपके द्वारा भारत के

कई भागों में गुरुकुल एवं ऋषिकुल कॉलिजों की स्थापना की गई।

विनायकं महर्षिं च।
पटवर्धन-वंशजम्॥
न्यायमूर्तिं महादेवं।
रानड़े-वंशदीपकम्॥३५॥

महार्षि विनायक एवं न्याय के अवतार श्री महादेव रानाडे, दोनों मिल कर मेरे प्रभात के लिये कल्याणकारी सिद्ध हों, उनकी कृपा से मेरा समस्त दिन सुख शांति व प्रेम के साथ व्यतीत हो॥३५॥

महादेव रानाडे—पूना में आप का एक निर्धन परिवार में जन्म हुआ था। आपके पिता बचपन में ही स्वर्गधाम सिधार गये थे। विधवा मां ने बालक रानाडे को पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया।

श्री रानाडे पूना और बम्बई हाईकोर्ट के प्रमुख न्यायाधीश रहे। आपके राज्य काल में कोई भी अपराधी छूट कर नहीं गया। आपकी न्याय कथा घर-घर में प्रचलित है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में आपने प्रमुख रूप से भाग लिया। आपको सभी व्यक्ति न्यायमूर्ति कहते हैं।

तिलक लोकमान्यं च।
रवीन्द्रं कविभूषणम्॥
केशवं हेडगेवारं।
वंशरत्नं दृढव्रतम्॥३६॥

अपने वंश के रत्न जिन्होंने जो मुख से कहा, उसको अक्षरशः पालन किया। महाराष्ट्री गौरव राष्ट्रीय क्रांति के नायक भगवान तिलक, जिनका गीता ज्ञान आज हमारे लिये एक आदर्शनीय ग्रन्थ है। विश्व कवि टैगोर जिन्होंने 'गीतांजलि' लिखकर विश्व में नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। आप ने अपनी काव्य धारा से नीरस एवं अचेत व्यक्तियों में चेतना फूंकी। श्री केशवराम बलिराम हेडगेवार जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में क्या कमी है? इस नब्ज को पहचान लिया। इन तीनों वीरों को मैं, नमस्कार करता हूँ॥३६॥

लोकमान्य तिलक—महाराष्ट्र के गरीब घराने में आपका जन्म हुआ था। प्रारम्भ से ही आप में एक दिव्य शक्ति अंकुरित थी। प्रत्येक राष्ट्रीय आंदोलन को, चाहे वह किसी प्रकार का क्यों न हो, आपने चलाया। आप गर्म दल के मानने वाले थे। उस समय भारत में तीन स्थान बंगाल, पंजाब एवं महाराष्ट्र में

क्रांति थी, पंजाब से लाला लाजपतराय, बंगाल से विपिनचंद्र पाल एवं महाराष्ट्र से लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की धूम थी, उस समय 'लाल बाल पाल' एक त्रिदलीय कार्यक्रम भी चलता था। आपको ब्रिटिश सरकार ने माण्डले जेल में आजन्म कारावास दिया, वहीं पर आपने 'गीता रहस्य' लिखा। आप स्वतंत्रता के प्रथम मन्त्रदाता थे। आपका सिद्धांत था, "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम उसमें भीख नहीं मांगते।"

पत्रकार कला में भी आपने एक नवीन क्रांति उत्पन्न कर दी। दक्षिण से केसरी पत्र का संचालन किया। केसरी की प्रत्येक लाईन में आग रहा करती थी।

विश्व कवि टैगोर—बंगाल में आप का जन्म हुआ था। प्रारम्भ में आपका स्कूल जीवन में पढ़ने में मन नहीं लगता था। कलकत्ते में आप अपने पिता के साथ रह कर प्रकृति वर्णन एवं दृश्यों से मुग्ध हुए। आपके मन में कविता की लहर उत्पन्न हुई। जो टैगोर स्वयं हाई स्कूल भी पास न कर सके, वह और उनका काव्य आज एम.ए. की श्रेणियों में पढ़ाया जाने लगा है। टैगोर के उपन्यास, कहानियां

और कवितायें आज भी हमारे लिये एक शान्तिप्रद ग्रन्थ हैं। आपने प्रयास करके शांति निकेतन की स्थापना की।

डॉ० हेडगेवार—एक ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ था। वाल्यकाल में आप अपने ज्येष्ठ भ्रात के समान, पितृ आज्ञा पालक एवं उत्साही बालक थे। जिस समय आप विद्योपार्जन कर रहे थे, कालिज में आप को बन्देमातरम् कहने के अपराध में दण्ड का भागीदार बनना पड़ा, यहां तक कि आपको स्कूल से निकाल दिया गया।

आपने उसके पश्चात् कलकत्ते में एल. एस.एम.एफ. की परीक्षा पास की, वहीं पर आपका सम्पर्क श्री तिलक एवं अन्य क्रांतिकारियों से हुआ। आपने अ.भा. कांग्रेस, वर्तमान संस्थायें हिन्दू महासभा, रामकृष्ण परमहंस मिशन आदि में पूर्ण रूप से काम किया। कांग्रेस द्वारा संचालित सन् १९२० एवं ३१ के आंदोलन में आपने पूर्णरूप से कार्य किया था।

सब संस्थाओं में कार्य करने के पश्चात् डॉ. साहिब को ज्ञात हुआ कि हमारे यहां जब तक पूर्णरूप से समाज को एक सूत्र में नहीं बांधा जायेगा,

कार्य नहीं हो सकता। उन्होंने यहां पर सन् १९२५ में 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' की स्थापना, विजयदशमी के शुभ पर्व पर की। संघ में आपने अपने जैसे कोटि कर्मठ एवं आदर्श ब्रह्मचारी कार्यकर्त्ताओं का निर्माण किया। उन्होंने अपनी सर्वशक्ति चरित्र पर लगा दी।

आज 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' का कार्य समस्त समाज में भारतीय भावना की भक्ति दिन दूनी रात चार गुनी बढ़ा रहा है।

अहिंसा सत्यवादी च,
लोक कल्याणकारकः तत्परः।
शुक्रनीति समाचर्य गांधी,
रासीद राजक्रांति कारकः ॥३७॥

सत्य अहिंसा के प्रतिपादी जिन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिये अपना जीवन भारतीय एकता एवं धर्म रक्षा में लगाया। मुनि शुक्राचार्य के समान परम नीतिवान् भारतीय स्वाधीनता के एकमात्र कर्णधार गांधी को, मैं नमस्कार करता हूँ॥३७॥

महात्मा गांधी—गुजरात प्रदेश के काठियावाड़ के समीप पोरबन्दर में आपका जन्म, दो अक्तूबर को

हुआ था। आप प्रारम्भ में बचनप से ही कुशाग्र बुद्धि थे। एक बार स्कूल में इन्सपैक्टर आया तब आपको अध्यापक ने परीक्षा के लिये डिक्टेशन दिया, आप जिस समय अशुद्ध अक्षर लिख रहे थे, अध्यापक ने संकेत भी किया, किन्तु अध्यापक की उन्होंने एक न मानी और अपनी गलती को गलत ही रहने दिया। आपके जीवन पर सत्यवादी हरिश्चन्द्र के एक नाटक को देख, सत्य बोलने का प्रभाव पड़ा था।

आपने इंग्लैण्ड में जाकर बैरिस्ट्री पास की, तदुपरान्त भारत से दक्षिण भारतीयों के लिये अफ्रीका में संघर्ष छेड़ा। सन् १९१४ ई० में आपने ब्रिटिश महायुद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया, किन्तु बाद में उनको अपनी भूल का अनुमान हुआ। सन् १९२० में महात्मा गांधी की सहायता का बदला गोलियों से दिया गया। लाखों बच्चे अनाथ हो गये।

उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति एक विभिन्न देश भक्ति पूर्ण आन्दोलनों का संचालन किया। स्वतंत्रता प्राप्ति में उनका एक मुख्य स्थान रहा। ३० जनवरी १९४८ को गोली मारकर प्रार्थना स्थल पर उनकी हत्या कर दी गई। वे मरकर भी भारतीय इतिहास में

अमर हैं। हमें उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर देश की तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए।

आर्य संस्कृति सम्पन्नं,
कर्मठं समदर्शकम्।
जितेन्द्रिय सत्यवादी च मालवी,
नमामि सर्वस्य जन्द्रितम्॥३८॥

जिन्होंने आर्य संस्कृति को पूर्ण रूप से सम्पन्न किया, अर्थात् जिन्होंने देश के लिये प्रेम एवं आत्मीयता उत्पन्न कर दी। जिन्होंने देश के लिये अपने जीवन को सदा कार्य में लगा कर एक कर्मकाण्डी का आदर्श रखा, जो सभी इन्द्रियों पर विजय पाकर स्वयं जितेन्द्रिय कहलाये, उन महामना मालवीय को जिन्होंने सदा लोकहित की भावना को सन्मुख रखकर कार्य किया, नमस्कार करता हूँ। उनका जीवन मेरे लिए अनुकूल रहे।

महामना मदनमोहन मालवीय—आपका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। आपके पिता स्वयं संस्कृत के एक धुरन्धर विद्वान थे। आपने भगवान तिलक एवं महात्मा गांधी के समान भारतीय

आंदोलन में प्रमुख रूप से भाग लिया। कांग्रेस के अन्दर आपको कुछ पक्षपात नीति दिखाई दी। उन्होंने, उससे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा' की स्थापना की। काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना आपका एक महान कार्य रहा। अ. भा. सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, महावीर दल एवं देश के विभिन्न भागों में आपने मन्दिर निर्माण किए। महामना मालवीय जी के १० श्लोक जिनमें उन्होंने हिन्दुओं को संगठित रहकर कार्य करने की अपील की थी, आज की वर्तमान परिस्थिति के लिए भी बड़े अनुकूल हैं।

महामना मालवीय सन् १९३१ से भारतीय विधान सभा के सदस्य रहे। गोलमेज परिषद में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए आपने भाग लिया था।

महामना मालवीय जी १९४५ के बाद हमारे मध्य में नहीं रहे। अब महामना जी के कार्य तथा उनकी प्रसिद्ध स्मृति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ही उनकी कर्मठता, देशभक्ति, कर्त्तव्यपरायणता आदि की अमर गाथा कहते हैं।

अयोध्या, मथुरा माया।

काशी, कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैवः।

सप्तैता मोक्षदायिका: ॥३९॥

भारत के अन्य प्रसिद्ध स्थान जिनमें राम जन्मस्थान अयोध्या, भगवान कृष्ण का जन्मस्थान मथुरा, हरिद्वार के पास कुछ दूरी पर भवानी का मन्दिर और मायापुरी, माया नगरी, विश्वनाथ भोले बाबा भगवान शंकर का प्रसिद्ध स्थान, काशी जिसको आज हम बनारस कहकर पुकारते हैं। विक्रमादित्य की वैभवशालिनी, हिन्दूकालीन स्वर्णयुग की राजधानी अवन्तिका, समुद्र स्थित श्री कृष्ण भगवान की नगरी द्वारकापुरी तथा दक्षिण भारत का तीर्थ स्थान कांच यह सातों मोक्ष को प्रदान करने वाले हैं। इनका प्रातःकाल स्मरण करने से मानव की बाधायें दूर होती हैं तथा जीवन कल्याणकारी सुखदाई होता है ॥३९॥

सन्ततं चिन्तयेन्दतर्य।

एतान् पुरुषर्षभान्॥

तीब्रा मनस्विता तस्य।

नित्यं जागर्तिं चेतसि ॥४०॥

जो व्यक्ति निरन्तर, प्रतिदिन, प्रातःकाल की बेला में ब्रह्म-मुहूर्त में इन व्यक्तियों को स्मरण करता है और उनके जीवन को लक्ष्य कर अपना जीवन बनाता है, उसके मन में समस्त मानवमात्र के प्रति उपकार की भावना जागेगी। वह सदा परोपकार को चाहे वह कैसा भी कठिन कार्य क्यों न हो, करता ही रहेगा ॥४० ॥

अनुक्ता ये भक्ता।
हरिचरणे संसक्तहृदयः ॥
अविज्ञाता वीरा।
समरमधिसंप्राप्तमरणाः ॥
असंख्येयाः सन्तो।
भरत भुवि ये सन्ति च परे ॥
नमस्तेभ्यो भूयादुषसि।
सकलेभ्यः प्रतिदिनम् ॥४१ ॥

भगवान की भक्ति में जीवन अर्पण करने वाले जिन भक्तों का नाम हमें ज्ञात नहीं, तथा वे वीरपुत्र जिन्होंने भारतीय धर्म रक्षा स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन का होम किया है, किन्तु हमें उनका नाम ज्ञात नहीं, वह भारतीय असंख्य जन, जो प्रसिद्धि से

परे आज भी लोक कल्याण कर रहे हैं, हमारे भारतीयों के लिए कार्य कर रहे हैं, उनको प्रतिदिन प्रात:काल की बेला में हमारा नमस्कार पहुँचे ॥४१ ॥

प्रात:स्मरणमेतद्यो।
नित्यं नियमत: पठेत् ॥
अखंड भारतं नित्यं।
तस्य स्फुरित चेतसि ॥४२ ॥

इस प्रात: स्मरण को जो व्यक्ति प्रतिदिन नियम पूर्वक पढ़ेगा उसके मन में अपने भारत के प्रति सदा अखण्डता का विश्वास रहेगा। वह भारत के लिए कल्याणकारी रहेगा।

विदित्वेदं पठद्यस्तु।
प्रात: स्मरणमादरात् ॥
स धर्माचरणे बुद्धिं।
समयग् विन्देत सर्वदा ॥४३ ॥

जो व्यक्ति श्रद्धा एवं विश्वास के साथ प्रात: स्मरण को पढ़ता अध्ययन करता और जाप करता है, वह प्रत्येक धर्म के कार्य में रत रहेगा। प्रत्येक भारतवासी अपने देश, भारत-माता एवं इतिहास के प्रति कार्य करेगा। उसका हृदय भारतीय होगा ॥४३ ॥

प्रार्थना

निम्नांकित प्रार्थना राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा रची गई है। प्रार्थना में भारत तथा ईश्वर की उपासना की गयी है, उसमें कहीं भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का नाम नहीं। प्रार्थना में भारत के लिये, उसके गौरव के लिये मिटने मरने व कार्य करने की ही भगवान से प्रार्थना की गई है। उक्त प्रार्थना संस्कृत में है, जो देश के प्रत्येक भाग में प्रातःकाल तथा सायंकाल गाई जाती है। यदि भारत में कभी संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा माना गया, तब निम्नांकित प्रार्थना राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार की जायेगी, ऐसी हमारी आशा हैं:-लेखक

नमस्ते सदा वत्सले मातृ भूमे,
त्वया हिन्दू भूमे सुखं वर्धितोहम्।
महामंगले पुण्य भूमे त्वदर्थे,
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते ॥१॥

शब्दानुवादः-(सदा वत्सले मातृ भूमे) हे सदा पुत्रवत् प्रेम करने वाली मातृभूमि। (नमस्ते) तुझे नमस्कार है। (हिन्दू भूमे) हिन्दूभूमे! (त्वया इम् सुखं वर्धितः) तेरे द्वारा मैं सुख पूर्वक (भली भांति

पाल पोस कर) बड़ा किया गया हूँ। (महामंगले पुण्यभूमे) हे अत्यन्त कल्याण करने वाली पुण्यभूमि ! (एष: कायो) यह शरीर (त्वदर्थे पततु) तेरे लिये गिरे अर्थात् काम में आए (इस भावना से) (नमस्ते नमस्ते) तुझे बार-बार नमस्कार है ॥१ ॥

प्रभो: शक्तिमन् हिन्दू राष्ट्रांग भूता
इमे सादरं त्वां नमामो वयम्।
त्वदीयाय कार्याय वद्धा कुटीयम्
शुभमाशिषं देहि तत्पूर्तये ॥२ ॥

(शक्तिमन् प्रभो) हे शक्तिशाली प्रभो! (हिन्दू राष्ट्रांग भूता) हिन्दू राष्ट्र (शरीर) के अंग (इमे वयम्) ये हम सब (त्वां) तुझे (सादरं नमामो: वयम्) आदर सहित नमस्कार करते हैं। (त्वदीयाय कार्याय) तेरे (ईश्वरीय) कार्य के लिये (इयं कटिबद्ध) यह कमर कसी है, (तत्) कार्य की पूर्ति के लिये (शुभाम् आशिषम्) शुभ आशीस (देहि), दे ॥२ ॥

अजय्याञ्ज विश्वस्य देहीश शक्तिम्
सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्
श्रुतञ्चेव यत्कण्टकाकीर्ण मार्गम्,
स्वयं स्वीकृतं न: सुगं कार्येत् ॥३ ॥

(च ईश) और हे ईश्वर (विश्वस्य अजय्यांच) जिसे संसार न जीत सके ऐसी (शक्तिं) शक्ति (सुशील च एवं) और अच्छा शील (स्वभाव) भी (देहि) दो, (येन जगत्) जिससे दुनियां (नम्रं भवेत्) झुक जाए (श्रुतं च एवं)और ऐसा ज्ञान भी दो (यत्) यह (स्वयं स्वीकृतम्) अपने आप (सोच समझकर) हमारे स्वीकार किए गए (कंटक आकीर्ण मार्गम्) काँटों से भरे हुए मार्ग को (सुगम कारयेत्) सरल कर दे ॥३ ॥

समुत्कर्ष नि:श्रेय-यसस्वीकमुग्रम,
परं साधनं नाम वीर ब्रतम्।
तदन्त स्फुरत्वक्षयाध्येग्र निष्ठा,
हृदन्तः प्रजागर्तु तीब्रानिशम् ॥४ ॥

(समुत्कर्ष नि: श्रेयस्य) इह लोक में अभ्युदय-सब प्रकार की उन्नति और परलोक में कल्याण का अथवा शारीरिक और आत्मिक उन्नति का (एकम् उग्रम्) एकमात्र प्रभावी और (परंसा धनं) प्रबल साधन (वीरव्रतम् नाम) वीरता का व्रत ही है, (तद्

अन्त: स्फुरतु) वह वीर व्रत अन्तःकरण में प्रकट हो तथा (अक्षया ध्येयनिष्ठा) क्षीण न होने वाली ध्येय के प्रति श्रद्धा (हृद्अन्त) हृदय में (अनिर्श) रात दिन तीब्रा प्रजागर्त्तु) तीव्रता से प्रज्वलित रहे ॥४॥

विजेत्री च नःसंहता कार्य शक्तिर
विंधायास्य धर्मस्य संमक्षणाम्।
परं वैभवं नेतुमेतत्स्वराष्ट्रम्
समर्था भवत्षशिइते भृषम् ॥५॥

(च) और (न:) हमारी (संहत: कार्य शक्ति:) संघटित हुई कार्य की शक्ति (अस्य धर्मस्य) इसे स्मुत्कर्षानि:श्रयस रूप भारतीय) धर्म की (संरक्षण विधाय) अच्छी तरह रक्षा करके (एतत् स्वराष्ट्र) इस अपने राष्ट्र को (परं वैभवंमेतुम्) परम वैभव पर ले जाने के लिए (ते आशिष) (हे प्रभु) तेरे आशीर्वाद से (भृशं) अत्यन्त (समर्था भवतु) समर्थ होवें ॥५॥

ॐ भारत माता की जय ॐ

प्रकाशकीय

- उस परमपिता परमेश्वर का लाख-लाख धन्यवाद है कि हम यह असली, प्राचीन, हस्तलिखित इन्द्रजाल प्रकाशित करने में सफल हो गये हैं। असली इन्द्रजाल वर्षों से मिल नहीं रहा था, हमने कई वर्षों की खोज के उपरान्त हजारों रुपये व्यय करके इसे ढूंढ निकाला है और आपकी सेवा में समर्पित कर दिया है।

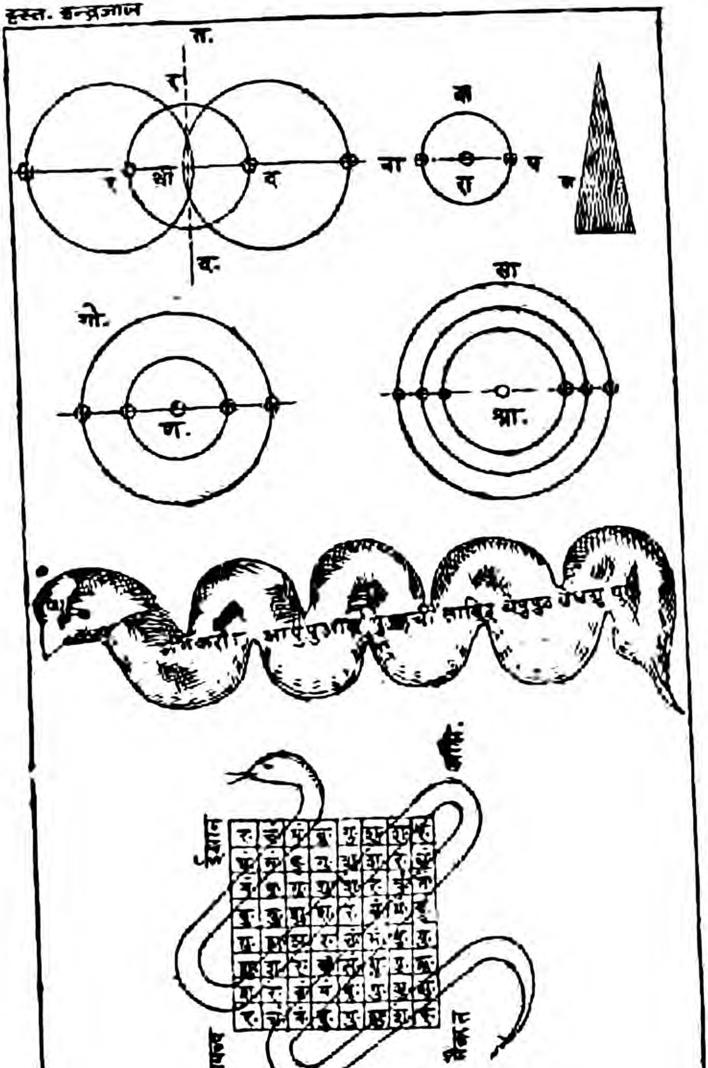
- यह असली पुराना इन्द्रजाल जिसके पास होगा, उसे संसार में भला किस बात की कमी रहेगी? धन, मान, यश, सन्तान, शत्रु पर विजय आदि जो भी इच्छा हो, इससे पूरी हो जाती है।

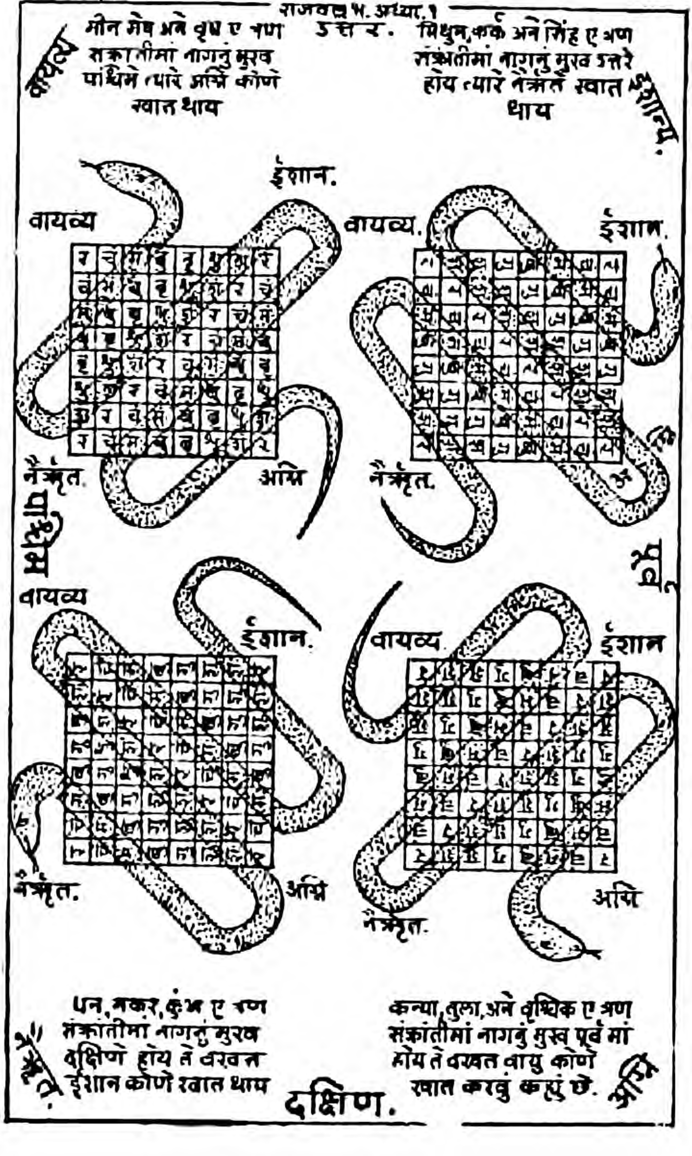
- असली पुराना इन्द्रजाल आपके हाथों में है। यह शिवजी महाराज का रचा हुआ पुराना इन्द्रजाल ग्रन्थ है। अतः इसे पवित्र स्थान पर रखना और शरीर व मन पवित्र रखकर इसे हाथ में लेना अथवा पाठ करना चाहिए। श्रद्धालु सज्जन गल्ले, तिजोरी, ट्रंक, अल्मारी में रखें। फिर देखें इसका चमत्कार।

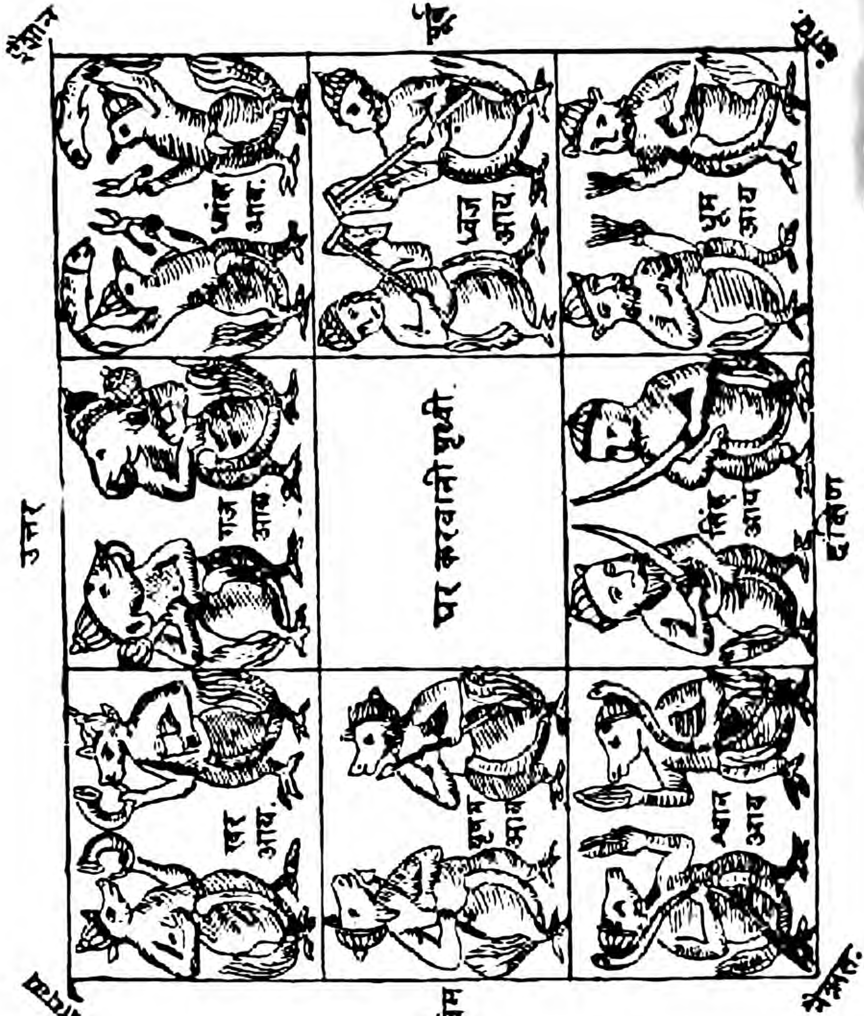
- यह सभी जानते हैं कि संसार में एक पत्ता भी भगवान की इच्छा के बिना नहीं हिलता परन्तु मनुष्य को चेष्टा करनी चाहिए। कर्म मनुष्य का धर्म है और फल देने वाला ईश्वर है। अतः ईश्वर को सर्वव्यापी जानकर इसकी क्रियाएं करें। कोई कार्य ऐसा न करें, जिससे दूसरों का अनिष्ट हो। पहले दूसरों का भला करें, फिर अपना भला करें, तभी ईश्वर आपका भला करेगा।

—प्रकाशक

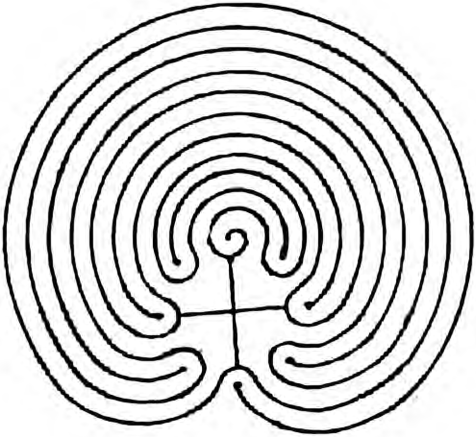





राजवल्लभ. अध्या. १
मीन मेष अने वृष ए त्रण
संक्रांतीमां नागनुं मुख
पश्चिमे त्यारे अग्नि कोणे
खात थाय
उत्तर.
मिथुन, कर्क अने सिंह ए त्रण
संक्रांतीमां नागनुं मुख उत्तरे
होय त्यारे नैऋत खात
थाय
वायव्य
ईशान्य.
ईशान.
वायव्य
नैऋत.
अग्नि
वायव्य.
ईशान.
नैऋत.
पश्चिम
पूर्व
वायव्य
ईशान.
नैऋत.
अग्नि
वायव्य
ईशान
नैऋत.
अग्नि
धन, मकर, कुंभ ए त्रण
संक्रांतीमां नागनुं मुख
दक्षिणे होय ते वखत
ईशान कोणे खात थाय
नैऋत.
दक्षिण.
कन्या, तुला, अने वृश्चिक ए त्रण
संक्रांतीमां नागनुं मुख पूर्व मां
होय ते वखत वायु कोणे
खात करवुं कह्युं छे.
अग्नि


ईशान
पूर्व
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम
वायव्य

चक्रव्यूह



१५ यन्त्रम्

६	१	८
७	५	३
२	९	४

स्वस्तिक



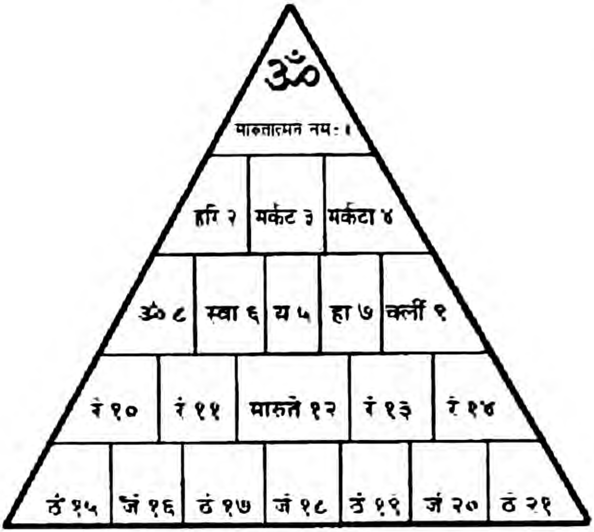
षोडश मातृका आसनम्—

आत्मन: कुल देवता १६	लोक - मातर: १२	देव सेना ८	मेधा ४
तुष्टि: १५	मातर: ११	जया ७	शची ३
पुष्टि: १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति: १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी+ गणेश १

३४ यन्त्रम्

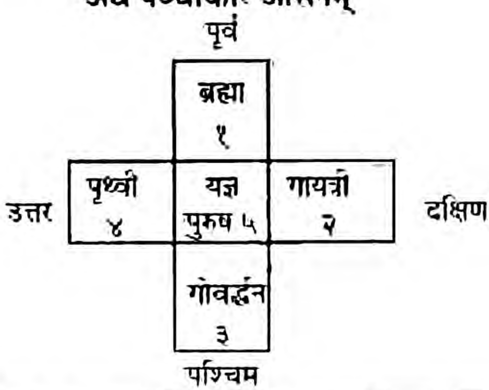
७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

हनुमत्-यन्त्रम्

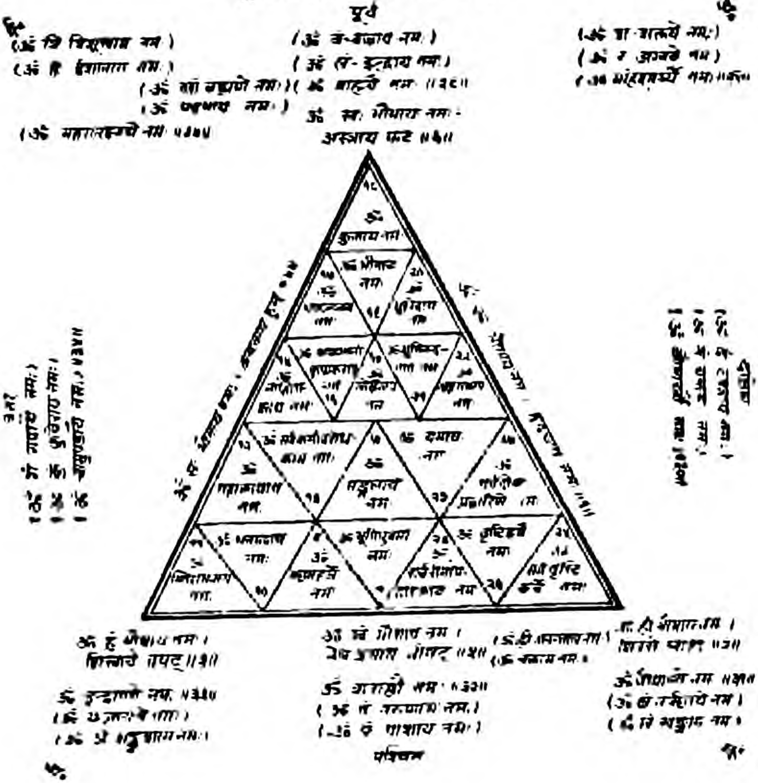


इस यन्त्र को अष्टगंध से ग्रहण में भोजपत्र पर लिखकर ग्रीवा या दक्षिण भुजा में धारण करने से समस्त कार्यों की सिद्धि होती है और सर्व-व्याधियों से भय दूर होता है।

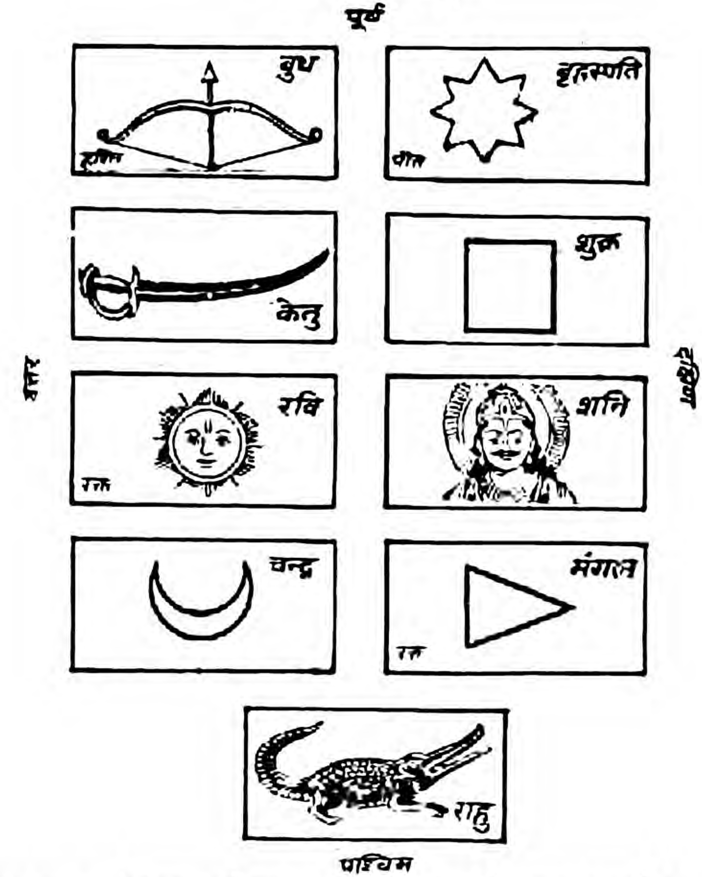
अथ पञ्चोंकार आसनम्



मङ्गल (भौम) पूजनयन्त्रम्



नवग्रह यन्त्रम्



स्कन्दपुराणे-शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ, गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ।
प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः, शेषाः दक्षिणतोमुखाः ॥१॥
आदित्याभिमुखाः सर्वे, साधिप्रत्यधिदेवताः।
स्थापनीया मुनिश्रेष्ठाः नान्तरेण पराङ्मुखाः ॥२॥

विषय अनुक्रम

असली प्राचीन-हस्त लिखित
पुराना

इन्द्रजाल



जहां देखिये, विद्या का जग में बोल बाला है।
जो सच पूछो, तो विद्या के बिना संसार में मुंह काला है॥

आज के नवीन युग में हमारी यह पुस्तक लोगों को अनोखी मालूम होती है कारण है आज का मनुष्य हर एक कठिन काम से डरता है वह चाहता है कि सब काम बगैर कुछ हाथ पैर हिलाए बन जावें। एक समय था जब लोग आधी-आधी रात जाकर शमशान भूमि पर प्रेत की तपस्या करते थे

जब कहीं जाकर "मृतक आत्माओं" को वश में करके बड़े-बड़े काम निकालते थे।

सकल पदारथ हैं जग माहीं।
भाग्यहीन नर पावत नाहीं॥

हैं सब चीजें दुनियां में और वह मिलती भी हैं संसार वासियों को। मगर- यथा कर्मम् तथा फलम् के अनुसार जो वस्तु जिसके भाग्य में होती है, उसे वो ही मिल जाती है। जो पदार्थ दुर्लभ हैं — अप्राप्य हैं उनके लिए भी कुछ साहसी मनुष्य ऐसे-ऐसे उपाय और साधन करते हैं कि अन्त में वह अप्राप्य वस्तु भी उन्हें प्राप्त हो जाती हैं; परन्तु आवश्यकता है परिश्रम करने की। शुद्ध मन से दृढ़ इच्छा शक्ति को लेकर के जिस काम को करेगा कोई वजह नहीं कि फिर वह उसमें सफलता प्राप्त न करे। ईश्वर की दया से जो पुस्तक आज हम आपकी भेंट कर रहे हैं। हमें पूर्ण आशा है यह आपकी अनेक इच्छाओं को पूर्ण करने में पूरी-पूरी सहायता देगी। पढ़कर अवश्य लाभ उठावें।

श्री गुरु गणपति सरस्वती शिवगिरिजा गुण गाज।
जिनके सुमिरण कियेते सिद्धि होत सब काज॥

धन्यवाद प्रभु और प्रभु की प्रभुताई को जिसने इस संसार में ऐसे-ऐसे पदार्थ उत्पन्न किये हैं जो किसी के ध्यान और गुमान में न आ सकें। उनमें से अत्यन्त न्यून वस्तु जो तृणपात हैं तिनके समान किसी की सामर्थ्य नहीं जो बना सके उसकी माया का भेद किसी ने नहीं पाया जिसने गाया उसने अपनी मति के अनुसार गाया वह परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म अनादि और अनन्त है ज्योति स्वरूप सर्व व्यापक सबसे न्यारा है। उस निर्गुण ब्रह्म सगुण स्वरूप श्री कृष्णचन्द्रमा जी के चर्णार्विन्द में बारम्बार सिर नवाय कर अपने चित्त के मनोर्थ को प्रकट करता हूँ कि इस संसार में जितने देहधारी गृहस्थी बनवासी बुद्धिमान मतिहीन हैं उनमें कोई ऐसा नहीं है जिसको अपने सुख-दु:ख हानि लाभ का ज्ञान न हो और अपने मनोर्थ सिद्धि करने को अनेक प्रकार का यत्न और उपाय न करता हो जो कि बहुधा मनुष्य अपने अधिकार के बढ़ाने को मंत्रदिक के

द्वारा उपाय कर मनवांछित फल पाते हैं। इसलिये उनका चित्त इस प्रकार के यत्न और उपाय में लगता है जो कि यह विद्या सदा से लोगों को हितकारी अत्यन्त है हरिजन दासांदास रामधन दूसर प्रसिद्ध खुश नवीस ने जो इस विद्या के संग्रह करने में चालीस वर्ष बराबर बड़ा परिश्रम करके अनेक मंत्रदिक श्री गुरुदयाल श्री रामदयाल जी व श्री मिश्ररजानन्द जी महाराज और चन्द्रलाल से बड़ी की कृपा से सिद्धि करके सदा राज दरबार में उच्चस्थान पाकर बैरियों पर गालिब रहकर मनवांछित फल पाता रहा अब चिरंजीव रामनारायण सम्पादक मथुरा प्रेस ने सब पत्रों को जहां तहां से इकट्ठा करके छापने की प्रार्थना की इसलिये ये चार मांसलों बराबर श्रम करके सबको विधि युक्ति लिखके ग्रंथ द्वारा पूरा किया जो कि विद्यारूपी कामधेनु से यह अमृतरूपी दुग्ध प्राप्त हुआ इसलिये इस ग्रन्थ के चार पाद किये पहले में वह सब बातें लिखी गयी हैं जिनका जानना आवश्यक है। यंत्र लिखते और मंत्र जपने वालों को दूसरे पाद में तंत्र विद्या इन्द्रजाल के तीसरे पाद में सावरी और अनेक प्रकार के मंत्र

चौथे पाद में यंत्र क्रिया और नाम ग्रन्थ का कौतुक रत्न मंजूष रक्खा प्रगट हो कि यंत्र यद्यपि सिद्ध हैं तद्यपि जिसकी क्रिया कठिन है उसकी और यंत्र-मंत्र की क्रिया गुरु से पाकर करना उचित है गुरु का धर्म है कि अपने किये को बतावे इसलिए इस पुस्तक में अपने किये हुए पर ऐसा चिन्ह कर दिया है परन्तु इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस यंत्र मंत्र का स्वामी अपने से ऋणी होगा वह शीघ्र सिद्धि होगा अब उत्तम जनों से प्रार्थना है कि जहां कहीं भूल चूक देखें कृपा दृष्टि से शुद्ध कर लें और इतना समझ लें कि ईश्वर के सिवाय कोई निर्दोष नहीं है।

अथ प्रथम पाद

प्रगट हो कि यंत्र मंत्र के पढ़ने में और लिखने जैसा मनोर्थ होता है वैसा ही यत्न विधि युक्ति करने से सिद्धि प्राप्ति होती है। विपरीत करने से श्रम निष्फल जाता है। बहुधा मनुष्य विधि जाने बिना जो कुछ करते हैं और उसका फल नहीं पाते तो विद्या पर दोष लाते हैं। जिन पर अमल करने से

श्रम निष्फल न होवे जो मनुष्य यंत्रादिक द्वारा किसी मनोर्थ से सिद्ध करने का उपाय किया चाहें वो पहले इतनी बातों को जान लेवें तब आरम्भ करने को स्थिर होवें।

प्रथम ऋणी धनी का विचार ऋणी लेने वाला और धनी देने वाला होता है। जो करने वाला धनी हो तो कार्य निसन्देह सिद्ध को प्राप्त होवे।

दूसरे

वर्ग और राशि को मिलावे अपना वर्ग और राशि प्रवल हो तो श्रेष्ठ है।

तीसरे

मासवार तिथि नक्षत्र चन्द्रमा योगिनी दिशाशूल और दिशा इन सबको जानकर मनोरथ की जैसी संज्ञाचर स्थिर शुभ अशुभ हो उसके अनुसार सबका निश्चय करके आरम्भ करें।

चौथे

जिस स्थान में बैठे कूर्म चक्र से स्थान को शोधकर कूर्म के सिर पर आसन बिछा कर बैठे।

पांचवें

जिस दिन कार्य का आरम्भ करें उस दिन को पूर्व में दूसरे को अग्निकोण में इसी प्रकार सातवें को उत्तर में रखकर ईशान-कोण को खाली रखे फिर शुभ कार्य को जिस दिशा में मुख रखने से चन्द्रमा और शुभवार सन्मुख और दायें रहे जोगिनी अशुभवार पीठ पीछे या बायें रहें उसी दिशा में मुख कर बैठे।

ऋणीधनी का विचार

प्रथम वर्गों के नाम और वर्गों के अक्षर और अक्षरों के अंक नीचे लिखे यंत्र से जानना।

वर्गांक	नाम वर्ग	वर्गों के अक्षर						व्यवस्था
१	गरुड़	अ	इ	उ	ए	०	८	जिसके नाम में इन
२	विलाव	क	ख	ग	घ	०	५	४ अक्षरों में से कोई
३	सिंह	च	छ	ज	झ	०	६	एक अक्षर हंवे वह गुरु
४	स्वान	ट	ठ	ड	ढ़	ण	७	ड़ वर्ग है औ। इन चारों
५	सर्प	त	थ	द	ध	न	७	अक्षरों के गुणन अंक
६	मूसा	प	फ	ब	म	म	१	८ ही हैं इसी प्रकार
७	मृग	य	र	ल	व	०	३	सब अक्षर और वर्गों
८	मेंढ़ा	श	ष	स	ह	०	०	को जानना चाहिए

फिर धनी ऋणी को दूसरी रीति से जान लेवें।

उदाहरण

रामलाल सेठ धनवान से नौकरी मिलने के लिये विधीचन्द नामी मनुष्य मंत्रादि के द्वारा उपाय किया चाहता है तो दोनों के वर्गांक निकाल कर उनको दो गुणा करके न्यारा न्यारा धरे और प्रत्येक में दूसरे का वर्गांक जोड़ के उनमें ८ का भाग दे शेष बचें उनको काकिणी जाने जिसकी काकिणी अधिक हो वह ऋणी है और थोड़ी वाला धनी जैसे रामलाल का वर्गांक विधीचन्द का वर्गांक।

७×२=१४	६×२=१२
६ दूसरे वर्गांक	७ दूसरे वर्गांक
८)२०(२	८)१९(२

शेष काकिणी $\frac{१६}{४}$ रामलाल शेष काकिणी $\frac{१६}{३}$ विधीचन्द

इस रीति से रामलाल सेठ ऋणी है और विधीचन्द धनी तो विधीचन्द की आशा रामलाल पूर्ण कर देगा।

वर्ग मिलाना

वर्ग के ३६ मिलान हैं। इनमें देखना चाहिये ऋणी धनी दोनों के एक ही वर्ग हों तो श्रेष्ठ हैं और धनी का वर्ग प्रबल हो तो अति श्रेष्ठ हैं ऋणी का वर्ग प्रबल हो तो कार्य सिद्ध होने में बिलम्ब होगा और अपने वर्ग से जो वर्ग पांचवां है सो वैरी तथा चौथा मित्र तीसरा सम है।

वर्ग		प्रबल	निबल	वर्ग		प्रबल	निबल
१ का	२ का			२ का	२ का		
गरुड़	गरुड़	सम	सम	गरुड़	सिंह	गरुड़	सिंह
गरुड़	विलाव	गरुड़	विलाव	गरुड़	स्वान	गरुड़	स्वान
गरुड़	सर्प	गरुड़	सर्प	सिंह	सिंह	सम	सम
गरुड़	मूंसा	गरुड़	मूंसा	स्वान	स्वान	सम	सम
गरुड़	मृग	गरुड़	मृग	स्वान	सर्प	स्वान	मूंसा
गरुड़	मेंढ़ा	गरुड़	मेंढ़ा	स्वान	मूंसा	स्वान	मूंसा
विलाव	सिंह	सिंह	विलाव	स्वान	मृग	स्वान	मृग
विलाव	स्वान	स्वान	विलाव	स्वान	मेंढ़ा	स्वान	मेंढ़ा
विलाव	सर्प	विलाव	सर्प	सर्प	मृग	सर्प	मृग
विलाव	मूंसा	विलाव	मूंसा	सर्प	मेंढ़ा	सर्प	मेंढा
विलाव	मृग	विलाव	मृग	सर्प	मूंसा	सर्प	मूंसा
विलाव	मेंढ़ा	विलाव	मेंढ़ा	सर्प	सर्प	सम	सम
विलाव	विलाव	सम	सम	मूंसा	मूंसा	सम	सम
सिंह	विलाव	सिंह	स्वान	मूंसा	मृग	सम	सम
सिंह	स्वान	सिंह	सर्प	मूंसा	मेंढ़ा	सम	सम
सिंह	मूंसा	सिंह	मूंसा	मृग	मृग	सम	सम
सिंह	मृग	सिंह	मृग	मृग	मेंढा	मेंढ़ा	मृग
सिंह	मेंढ़ा	सिंह	मेंढ़ा	मेंढ़ा	मेंढ़ा	सम	सम

राशि का मिलाना

धनी ऋणी दोनों की राशि एक ही हो तो समान और धनी की राशि प्रबल हो तो अति श्रेष्ठ है ऋणी की राशि प्रबल हो तो कार्य बिलंब से होवे।

राशिपत्र हिलंकी	राशिदू सरेकी	परस्पर हिताहि	बलाबल			
			प्रबल	निबल	बराबर	व्यवस्था
आवी	खाकी	प्रीति	सम	सम	चर	हित बढ़ावे
आवी	आवी	प्रीति	आवी	खाकी	०	मिलाप करावे
आवी	आत्शी	बैर	आवी	खाकी	०	सुलह करावे
आवी	वादी	बैर	वाही	आवी	०	भय उपजावे
खाकी	रवाकी	प्रीति	सम	सम	स्थिर	हित करावे
खाकी	वादी	बैर	वादी	खाकी	०	क्रोध बढ़ावे
खाकी	आत्शी	बैर	आत्शी	खाकी	०	तथा
वादी	वादी	प्रीति	सम	सम	चर	हित बढ़ावे
वादी	आत्शी	प्रीति	वादी	आत्शी		क्रोध मिटे
आत्शी	आत्शी	प्रीति	सम	सम	स्थिर	हित बढ़ावे

राशि जानने की रीति

हर एक राशि पर चन्द्रमा दो नक्षत्र तक रहता है और हर एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं जो अक्षर चरणों में लिखे हैं उनसे राशि जानी जाती है जैसे रामलाल के सिरे का अक्षर है वह तुला राशि के सामने चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में है तो मालूम हुआ कि रामलाल की तुला राशि है और जन्म उसका चित्रा के तीसरे चरण में हुआ है। इस प्रकार जिस नाम की राशि देखना चाहो देखो।

राशि चक्र

नाम राशि	नक्षत्रों के नाम और चरण के चरण सवा दो नक्षत्र के		प्रत्येक राशि
मेष	आश्वनी के ४ चू चे चो ला	भरणी के चार ली लू ले लो	कृतिका के ४ अ० ० ०
वृष	कृतिका ० इ उ ए	रोहिणी ओ दा वी वु	मृगशिर वे वो ० ०
मिथुन	मृगशिर ० ० का की	आर्द्रा कु घ ङ छ	पुनर्वसु के को हा ०
कर्क	पुनर्वसु ० ० ० ही	पुष्य हू हे हो डा	अश्लेषा डी डू डे डो
सिंह	मघा मा मी मू मे	पूर्वा फाल्गुनी मो टा टी टू	उत्तरा फाल्गुनी टे ० ० ०
कन्या	उत्तराफाल्गुनी ० टो पा पी	हस्त पू ष ण ठ	चित्रा पे पो ० ०
तुला	चित्रा ० ० रा री	स्वाँति रु रे रो ता	विशाखा ती तु तें
वृश्चिक	विशाखा ० ० ० तो	अनुराधा ना नी नू ने	ज्येष्ठा नो या यी पू
धन	मूल ये यो भा भी	पूर्वाषाढ़ भू धा फा ढ़ा	उत्तराषाढ़ में ० ० ०
मकर	उत्तराषाढ़ ० भो जा जी	अभिजित श्रवण जू जे जो खी खू खे खो	धनिष्ठा गा गी ० ०
कुम्भ	धनिष्ठा ० ० गू गे	शतभिषा गो सा सी सू	पूर्वाभाद्रपद से सो द
मीन	पूर्वाभाद्रपद ० ० ० ही	उत्तराभाद्रपद दू य झ ज	रेवती दे दो चा ची

राशि वृतान्त

गगन मंडल में १२ स्थान हैं उनको राशि और लग्न कहते हैं उनके नाम स्थान लग्न कुंडली में मालूम होंगे।



१२ राशियों के स्वामी

अर्थात् मालिक ७ देवता हैं उन्हीं को ग्रह कहते हैं ५ देवता २ घर के और दो देवता २ घर के मालिक हैं नीचे लिखे चक्र में उनके रुप गुणादि दें।

राशि भेद चक्र

राशि नाम	जातिरा	स्थान	चराचर	स्वामी	राशि के स्वामी का अमल
१ मेष	आतशी	पूर्व	चर	मंगल	पहल गृह में जो गृह हो वह अपनी देह को शुभाशुभ बतावे।
२ वृष	खाकी	दक्षिण	स्थिर	शुक्र	२ घर का धन
३ मिथुन	वादी	पश्चिम	दु:स्वभाव	बुध	३ भ्राता का
४ कर्क	आवी	उत्तर	चर	चंद्रमा	४ माता पिता व आरोग्यवता
५ सिंह	आतशी	पूर्व	स्थिर	सूर्य	५ संतान वा वुद्धि का
६ कन्या	खाकी	दक्षिण	चर	बुद्धि	६ वैरी और रोग का
७ तुला	वादी	पश्चिम	स्थिर	शुक्र	७ स्त्री और सफा का
८ वृश्चिक	आवी	उत्तर	दु:स्वभाव	मंगल	८ मृत्यु और रोग का
९ धन	आतशी	पूर्व	दु:स्वभाव	गुरु	९ धर्म और भजन का
१० मकर	खाकी	दक्षिण	चर	शनि	१० राजा स्थान का
११ कुंभ	वादी	पश्चिम	स्थिर	शनि	११ द्रव्योंपार्जन
१२ मीन	आवी	उत्तर	दु:स्वभाव	गुरु	१२ खर्च का

ग्रह भेद चक्र

ग्रह	एक राशि प्रमाण	१२ राशि प्रमाण	शुभाशुभ	वर्ण
मंगल	४५ दिन	१॥ वर्ष	न्यून अशुभ	रक्त
शुक्र	२३ वटघट	१ वर्ष	शुभ	श्वेत हरित
बुध	१७॥ वट घु.	१ वर्ष	शुभ	नीला
चन्द्र	२१ वर्ष	१ मास	अति शुभ	श्वेत
सूर्य	२०'/₃	१ वर्ष	महाशुभ	पीत
गुरु	१३ मासवघ	१२ वर्ष	अति शुभ	मंदली
शनि	२॥ वर्ष	३० वर्ष	अति अशुभ	काला

चन्द्रमा वृत्तान्त। चन्द्रमा जिस राशि में जाता है। उसके गुण और प्रकृति से रोग प्रसिद्धि होता है।

पूर्व दिशा में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में
मेष सिंह धनु	वृष मकर कन्या	मिथुन कुंभ तुला	कर्क वृश्चिक मीन
आत्शीचर	खाकी स्थिर	वादी दु:स्वभाव	आवीचर

चन्द्रमा एक ही राशि में आठों दिशा की सैर करता है आवश्यकता के समय इस रीति से सन्मुख करें।

पहले	फिर	३	४	५	६	७	८	जोड़
पूर्व में	अग्निये	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	०
१७ घड़ी	१५ घ.	२१ घ.	१६ घ.	१७ घ.	१४ घ.	२० घ.	१५ घ.	१३५ घ.

चन्द्रमा के फल

पहला जन्म का शुक्र	२ मनोरथ पूरा करे	३ धन का लाभ करे
४ झगड़ा करावे	५ बुद्धि सुधारे	६ लाभ करावे
७ राजा से मिलावे	८ दुख मृत्यु दिखावे	९ धर्म करावे
१० सुख उपजावें	११ लाभ करावे	१२ हानि करावे

सिर पर	पांव पर	पीठ पर	दिल पर
१ २	४ ८		७ १०
३ ४	१२	६ ९	११
लाभ करावे	घर २ फिरावे	हानि करावे	सुख दे

मास और बार वृतान्त

चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की पढ़वा से कृष्ण पक्ष की ३० तक होता है आदि के १० दिन उत्तम मध्य के १० दिन मध्य अंत के १० दिन निकृष्ट और शुक्ल पक्ष की आदि की पहली बृहस्पति रविवार और चन्द्रवार बड़े उत्तम कहाते हैं इन तीन दिन में जिस शुभ कार्य का आरम्भ करें वह शीध्र सिद्ध हो।

यन्त्र

उत्तम मासवार वृतान्त	माघ चैत्र आपाढ़ क्वार	मास वैशाख श्रावण पूष
मार्गशिर फाल्गुन ज्येष्ठ भाद्रपद	मध्यम	निकृष्ट
रवि. चन्द्रः गुरु	शुक्र - बुद्ध	शनि-भौम
वसीकरन-धन लाभ गर्भ स्थिति-खेती-आकर्षण ण-देह बल-आरोग्यता	दो मित्रों में जुदाई कराना वस्तु बेंचना गर्भ स्तम्भ न भूतादिक बीज निवारण	धन हानि गर्भ खंडन मारण उच्चाटन-दुकान सम भय बंधन आदि

रात्री की और दिन की ६० घड़ियाँ में १२ लग्न बीतते हैं उनका प्रमाण इस चक्र से जानों।

मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८

लग्न जानने की रीति

जिस मास में लग्न की संक्रांति होती है प्रातः काल वही लग्न होती है और ज्यों-ज्यों संक्रांति के अंश जाते हैं लग्न के प्रमाण में उतने ही अंश गये पर सूर्योदय होता है।

उदाहरण—पौषवदी १३ को वृश्चिक की संक्रांति के १३ अंश गये ३० में से तो वृश्चिक लग्न का प्रमाण ५। घड़ी ४५ पल है तो एक अंश के ११॥ पल हुए १३ अंश की १४९॥ पल अर्थात् २ घड़ी २९॥ पल के उपरान्त सूर्योदय होगा फिर घड़ी २॥ पल १५॥ अमल वृश्चिक फिर ५ घड़ी १ पल मकर इसी प्रकार ६० घड़ी में सब बीत

जावेंगी १२ दिन के १२ दुघड़िये मुहूर्त जानने की रीति एक बार के पीछे दूसरा छठा आता है जैसे रविवार से छठा शुक्र इसी प्रकार रात्रि के १२ दुघड़िये जानो।

मुहूर्त												
दिन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रवि	र-	श्रु-	वु-	च-	श-	वृ-	म-	र-	श्रु-	बु-	चं-	म-
चन्द्र	चं-	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-	वु-	चं-	श-	वृ-	मं-	र-
भौम	मं-	र-	श्रु-	बु-	चं-	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-	बु-	चं-
बुध	बु-	चं-	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-	वु-	चं-	श-	वृ-	मं-
गुरु	वृ-	मं-	र-	श्रु-	बु-	चं-	श-	वु-	मं-	र-	श्रु-	वु-
शुक्र	श्रु-	बु-	चं-	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-	बु-	चं-	श-	वृ-
शनि	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-	बु-	चं-	श-	वृ-	मं-	र-	श्रु-

रात्रि के १२ दुघड़िये

जानने की रीति रात्रि में पाचवीं गणित पर अगले दिन होगा जैसे रवि से पांचवें गुरु और भी इसी प्रकार जानो।

रात्रि के १२ दुघड़िये

रात्रि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रवि	र-	वृ-	चं-	श्र-	मं-	श-	बु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	म-
चन्द्र	चं-	श्रु-	मं-	श-	वु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	मं-	श-	बु-
भौम	मं-	श-	वु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	मं-	श-	बु-	र-	वु-
बुध	बु-	र-	वृ-	चं-	श्र-	मं-	श-	बु-	र-	वृ-	चं-	श्र-
गुरु	वृ-	चं-	श्र-	मं-	श-	बु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	मं-	श-
शुक्र	श्रु-	मं-	श-	वु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	मं-	श-	बु-	र-
शनि	श-	वु-	र-	वृ-	चं-	श्रु-	मं-	श-	बु-	र-	वृ -	श्रं-

एक दिन रात्रि में ढ़ाई २॥ घड़ी ७ दिन तक रहता है।

उस का शुभा शुभ फल

रवि	चन्द्र	गुरु	शुक्र	बुध	शनि	भौम
उद्वेग यानी प्रेम	अमृत	शुभ	चर	लाभ	काल	रोग

तिथि वृत्तान्त

कृष्ण पक्ष की ९ तिथि में सूर्य का अमल रहता है ६ तिथि में चन्द्रमा का इसी प्रकार शुक्ल पक्ष की ९ तिथि में चन्द्रमा का अमल और ६ में सूर्य का अमल रहता है इसलिये सूर्य के अमल में चरकार्य और चन्द्र के अमल के स्थिर कार्य करने चाहिये चरकार्या वह कहाता है जो थोड़ी देर रहे जैसे नाव पर घोड़ा चढ़ाना जो शीघ्र उत्तर आवे रोगों का इलाज जो जल्द आराम पावे रसोई जेमला जो शीघ्र पच जावे आकर्षण मारण उच्चाटन व्यापार विद्या सीखना स्थिर कार्य वह हैं जो बहुत मुद्दत तक रहें मकान बनाना बाग लगाना गद्दी पर बैठाना जलपीना बसी गांव बसाना इत्यादि जानो। अति उत्तम शुभ तिथि किसी संक्रान्ति में रविवार सप्तमी तिथि हो तो जो कार्य उसमें किया जाय तो निःसन्देह सिद्धि हो।

शुक्ल पक्ष में		कृष्ण पक्ष में	
चन्द्र तिथि	सूर्य तिथि	सूर्य तिथि	चन्द्र तिथि
१ २ ३	४ ५ ६	१ २ ३	४ ५ ६
७ ८ ९	१० ११ १२	७ ८ ९	१० ११ १२
१३ १४ १५	---------	१३ १४ १५	---------

नक्षत्र बार संज्ञा युक्त

नक्षत्र	संज्ञा	दिन	कार्य
पूर्वाफा. उ.फा. उत्तरा	ध्रुव संज्ञा		बीज बोना-मकान बनाना बाग
बा पुनर्वसु-उत्तरा	अर्थात्	रवि	लगाना स्थिर कार्य करना-गद्दी
भाद्र पर रोहिणी	स्थिरकार्य		पर बैठना ग्राम बसाना
विशाखा-कृत्तिका	मिश्र	बुध	अग्नि काज हो मादि यंत्र
			जलाकर विजार दागना
स्वाँति पुनर्वसु-श्रवण	चरजल	चन्द्र	गज तुरंग वाव पर सवार कराना
धनिष्ठा-शतभिषा	संज्ञिक		सैर करना-यात्रा
मृगशिर रेवती	मृदु	शुक्र	गाना सीखना वस्त्र गहना पहनाना
चित्रा अनुराधा	मित्र		मित्री संक्रीड करना मित्र से
			मिलना वसीकरण करना
पूर्वा फा. पूर्वा फा	उग्रकूर	मंगल	धातु अग्नि में जलाना-विष देना
पूर्वा भा. भरणी मघा.	०	०	शस्त्र मारना
हस्त अश्विनी-पुष्य	लघु सी	०	स्थिर कार्य करना, दुकान व्यापार
अभिजित	परलाव	गुरु	रति करना, गहना गढ़ाना-शिल्प
	संज्ञा	०	विद्या सीखना-पटेबाजी तिरंदा जी
			कुश्ती करना
मूल-ज्येष्ठा	तीक्ष्ण	०	डाकिनी स्यारी का मंत्र सीखना
आर्द्रा-श्लेषा	दारुण	शनि	मूठ चलाना-जादू करना
योग २८	०	०	बैल नाथना मारण उच्चाल ओढ़ा
			फेरना

भद्रा वृत्तान्त

स्थान	चन्द्रमा में भद्रा				शुभा शुभ
मृत्यु लोक में	कुम्भ	मीन	वृश्चिक	सिंह	बहुत बुरे सब काम बिगाड़े
स्वर्ग में	मेष	वृष	कर्क	मकर	संपूर्ण कामना सिद्धि करे
पाताल में	कन्या	मिथुन	तुला	धन	धन का लाभ करावे

भद्रा की तिथि

शुक्ल पक्ष में				कृष्ण पक्ष में			
आदि की तिथि में		अंत की अर्द्ध तिथि में		आदि की अर्द्ध तिथि में		अंत की अर्द्ध तिथि में	
८	१५	४	११	७	१४	३	१०

५ नक्षत्र तिथि संबंध से निकृष्ट है

१ में मूल	५ में भरणी	८ में कृतिका	९ में रोहिणी	१० में श्लेषा

इनमें कोई शुभ कार्य करना चाहिये।

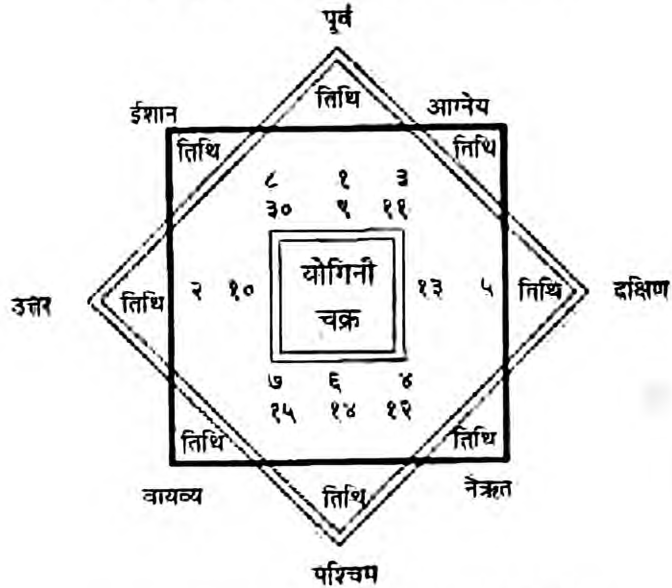
---

५ नक्षत्र अर्थात् पंचक में शुभ कार्य करना उचित नहीं

धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती

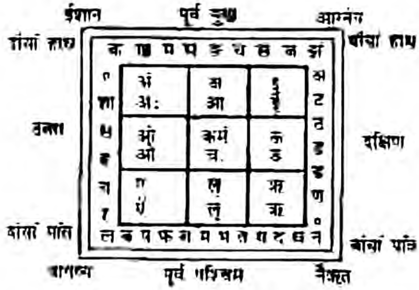
दिशाशूल

सोम शनिश्चर पूरबवासा।
रवि शुक्कर पश्चिम के पासा॥
बुध मंगल उत्तर की याहीं।
रहे वृहस्पति दक्षिण माहीं॥

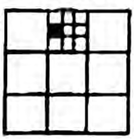


आसण पर बैठिवा की विधि

कर्म चक्र को देख कूर्म के सिर पर आसण विछाय बैठे तो मंत्र शीघ्र सिद्ध हो।



जिस स्थान में पूजन को बैठे उसके नौ भाग करे फिर स्थान के नाम से सिर के अक्षर को जिस भाग में देखे उसके भी नौ भाग करे फिर पूर्व अक्षर में जो मास होवे उसी मात्रा के स्थान में आसण बिछावे जैसे का कोठा पहला अक्षर का कूर्म के शिर में है सिर के नौ भाग में ओ को मात्रा उत्तर दिशा के वीचल स्थान में है वही स्थान जिसमें स्थाही लगी है आसण बिछोणे का है और इसी स्थान में कूर्म का सिर जानिये कूर्म चक्र में जितने स्थान हैं सब को कूर्म का सिर ही जानना चाहिये।



दिन दिशा विदिशा के विचार पर काम करने की विधि

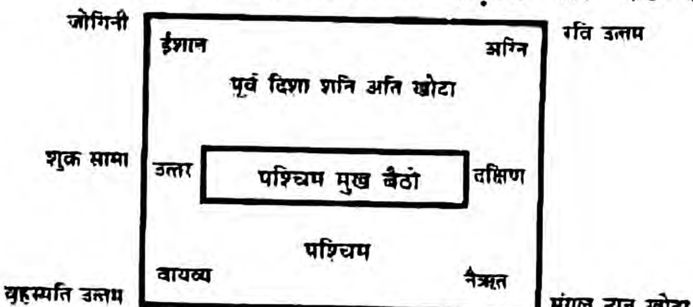
विदित हो कि जिस दिन यंत्र लिखने और मंत्र जपने को बैठे उस दिन पूर्व दिशा में रखे दूसरे दिन को अग्नि कोण में फिर दक्षिण में इसी प्रकार सातवें दिन उत्तर में रखे ईशान कोण खाली न रहे फिर शुभ कार्य हो तो चन्द्रमा और शुभवार शुभ दिशा को सामने और दायें रखे जोगिनी दिशाशूल निकृष्टवार को पीछे और बायें रखे और निकृष्ट कार्य को जोगिनी निकृष्ट दिन दिशाशूल सामने दायें चन्द्रमा मध्यमबार सन्मुख दायें जोगिनी पीछे शुभवार को कोण में हो तो सामने के कोण में निकृष्टवार हो तो समाने के कोण में निकृष्टवार को देखे जो चाहें कि बहुत शीघ्र मनोर्थ सामान्य सिद्धि हो तो शनिवार को आरम्भ करे पश्चिम मुख बैठने से चन्द्रमा और सामान्य दिशा और बार सामने शुक्र सामान्य बार दायें जोगिनी ईशान में पीठ पीछे के दिन सामान्य खोटा दिन शनिवार पीठ पीछे और उत्तम बार चन्द्र जो वायां है शुक्र को देखता है जोगिनी की दृष्टि



किसी कार्य के लिए रविवार को बैठे तो यह सूरत हो



मंगल पर जो बायें है बृहस्पति रविवार को देख रहा है। किसी अधिकार के बढ़ाने को बैठे तो



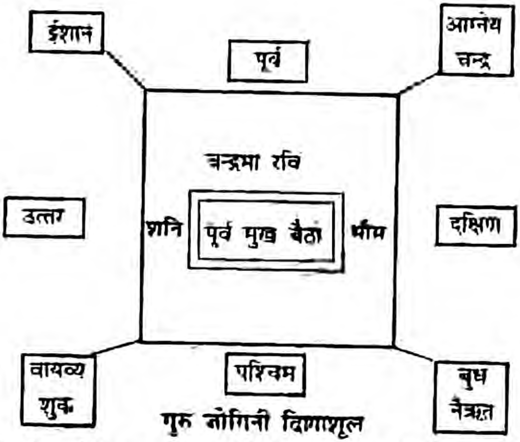
सन्मुख चन्द्रमा है बुधवार सामान्य

बुधवार को और ऐसी सूरतहाय उत्तर आवे तो बहुत शीघ्र कार्य सिद्धि हो।

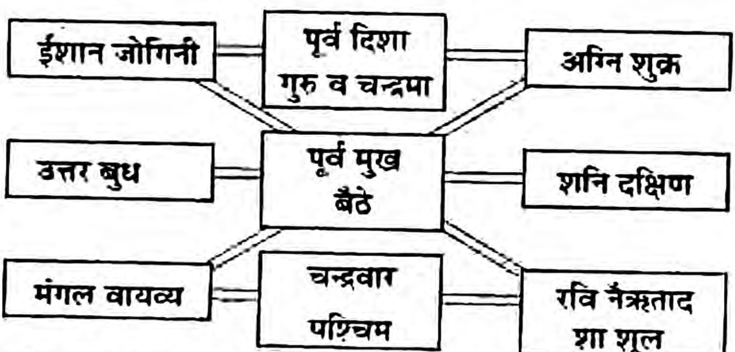
पूर्व मुख बैठने से चन्द्रमा और बुध सामने रविवार पीछे बुध को देख रहा है शुक्र गुरु दायें बायें मंगल जोगिनी शनि दोनों पीठ पीछे ईशान मुख बैठे चन्द्रमा बुधवार गुरु दायें जोगिनी बांयें शनि पीछे हो मंगल



भी बायें तुल्य हो और इसी युक्ति से मारन उच्चाटन का आरंभ करे तो नैऋत मुख बैठ शनिवार अति खोटा बिन सन्मुख जोगिनी दायें बृहस्पति शुभवार बांये और चन्द्रमा भी बांया ही जाये अधिकार की प्राप्ति को कहीं जाने के लिये उपाय करे तो रविवार को बैठे पूर्व मुख चन्द्रमा और शुभवार रवि सन्मुख हो बृहस्पति जोगिनि दिशा शूल सहित पीठ पीछे शनिवार अति निकृष्ट बायें दोनों हो तो मनोर्थ शीघ्र सिद्धि हो किसी के काम में बिलंव डालना चाहे तो इस सूरत पर आरंभ करें।

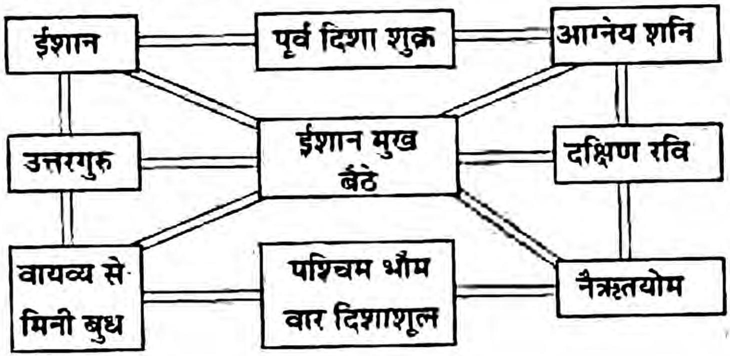


पूर्व यंत्र में सन्मुख जोगिनी दायें शनि दिशाशूल बायें बुद्ध शुक्र पीछे रवि चन्द्र उत्तम और शुक्र पर मंगल की दृष्टि। किसी मनोर्थ वैर और क्रोध के लिए शुक्ल पक्ष की पहली बृहस्पति को बायें सुर में बैठे पूर्व मुख और जोगिनी शुभ कोण शुभ दिशा में हो बहुत शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति हो।



चंद्रमा बृहस्पति सामने चंद्रवार पीछे जोगिनी ईशान में बायें शनिश्चर दिशाशूल दायें शुक्र मंगल सामने कोण में रविवार जोगिनी ईशान आमने सामने कोणों में बुद्ध शनि आमने सामने दिशाओं में किसी को बिगाड़ने का उपाय देखकर बैठे।

ईशान मुख बैठने से शनिश्चर दायें जोगिनी बायें पीछे चन्द्रवार सामने सुन्न है तो इस रीति से निश्चय मनोर्थ सिद्धि हो।



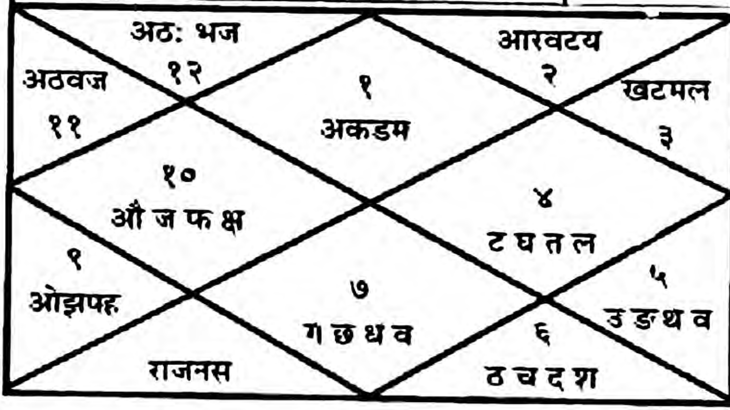
इति विचार

मंत्र प्रकृति

मंत्र की चार प्रकृति है और उनके न्यारे-न्यारे फल हैं।

सिद्धि	साध्य	सुसिद्धि	अरि
सिद्धि हो तो समय पाकर कार्य को बनावे	साध्य हो तो कार्य को नहीं बनावें	सुसिद्धि हो तो कार्य बहुत शीघ्र बनावे	अरि हो तो कार्य बिगाड़े

यंत्र १२ कोठे का



मंत्र की प्रकृति जानने की रीति।

अपने नाम और मंत्र के सिरे के अक्षरों का १२ कोठे के यंत्र में देखे अपने कोठे से मंत्र का कोठा पहला पांचवां या नवां हो तो मंत्र सिद्धि जानना और दूसरा छट्य दसवां हो तो साध्य है और तीसरा सातवां ग्यारहवां हो तो सुसिद्धि है और चौथा आठवां बारहवां हो तो अरि जानिये। मंत्र सुसिद्धि हो तो

उनके जाप से सुख प्राप्ति हो कदाचित मंत्र में तीन या चार बीज हों तो लोभ प्रति लोभ की राह से जो बीज हो तो लोभ प्रति लोभ की राह से जो बीज सुसिद्धि हो उसे मंत्र के आदि में लगावे उदाहरण बैनीराम इस मंत्र सरकशह को जपा चाहता है तो लोभ प्रति लोभ करने से छः सूरत होती हैं। वह यह है।

१	२	३	४
कशह	कहश	शहक	शकह
	५	६	
	हकश	हशक	

इन छ:सूर्तो में तीनों अक्षर कशह १२ कोठे के यंत्र में बैनीराम के सिरे काव ११वें कोठे में हैं और मंत्र का पहला अक्षर क उक्त यंत्र के पहले कोठे में हैं तो ११ वें से तीसरा सुसिद्धि है अति दूसरा अक्षर श यंत्र छटे कोठे में है ११ वें से ९ वां अरि अति निकृष्ट है तीसरा अक्षर ह यंत्र के ९ वें कोठे में है ११ वें से ९वें सुसिद्धि अति उत्तम है जो कि इस

मंत्र में आदि अंत के दो अक्षर उत्तम और मध्यम का निकृष्ट है। इसलिए ऊपर लिखी ६ सूरतों में २वां ५ वां ९ वा ६ में से जिस का जाप किया मनोरथ को सिद्धि करे और सूरत ३ व ४ निकृष्ट है उनके जपने से बिगाड़ होगा।

इति कौतुक रत्न मंजूष प्रथम

पाद

समाप्तम्।

***

इन्द्रजाल द्वितीय पाद

॥ दोहा ॥

इन्द्र जाल अद्‌भुत कला सुनो चित दे ख्याल।
प्रथम एक वर्णन करूं पढ़ौ तरुण वृद्ध वाल॥
जंत्र मंत्र नहीं तंत्र है करो जुगतियों कोई।
सौ देखे अचरज करै सिद्धि नाम तें होई॥
कौतुक यह संसार के बरने जायं अनेक।
जतन सुने देखे कहूं औरें बुधन अनेक॥
जैसें जैसें सुमन को तिल की संगत मल।
तैसी तैसी वासना कहिये नाम फुलेल॥

॥ चौपाई ॥

कोऊ ब्रह्म आश्चर्य दिखावै।
कोऊ नाटक चेटक भावै॥
कोई इन्द्रजाल ले आया।
काहू काया कल्प बताया॥
कोऊ मोहनि लुकांजन करै।
कोऊ चित्रक मूरति हरै॥

कौऊ रुप पलटिकें रहै।
देखै और कछु कहै॥

कोऊ उड़ान गगन में चलै।
कोऊ फल फूल विरुति में चलै॥

जी चाहै तब कौतुक कर नों।
धीरज धरै न मन में डरनों॥

सो जोगी जो जुगतहिं जानें।
पंडित वही जी वेद बखानें॥

जुगतिन भूलै तौ सिद्धि पावै।
नातर जोग अकारथ जावै॥

चूकै यत्न सिद्धि ना होई।
मोकों दोष न दीजै कोई॥

अग्नि शीतल करन विधि

॥ छन्द ॥

मूल वैंत की खोदि मंगावे, घोड़ा कौखुर लावै।
अग्नि मांझ उनको जो ना वैसो पर चौ यह पावै॥
अग्नि जरैना करौ भुतेरौ धुंआ बाहर आवै।
कपड़ा रुई न लागै ज्यों-२ त्यों-२ वायु लगावै॥

लागी अग्नि के बुझावे की विधि

ग्राम माहिं घर जरं किसी के तब यह जतन करीजै।
लोंटा जल मंगवाई कूप तें अग्नि ओर मुख कीजै॥
ठाड़ौ होई हाथ लै लोटा जल कों इह विधि पीजै।
अग्नि देव को सिर नवाय के बहुविध्रि बिनती कीजै॥
बहुरो सांस जाय जब भीतर तुरत वही जल पीजै।
शीतल होइ अग्नि जल पीयें सब हन को सुख दीजै॥

जलथंभन विधि

अरलू रुप काढ़िये जादिन कटि माहीं कर लीजै।
कारीगर घर जाइ खराऊं जुगकराइ कैंली जै॥
पहरें पांय खराऊं ढ़ोनों जल ऊपर ज्यों धावै।
नीर वाट में वहै भुतंरो तखा नाहिं चिगावै॥

बाल दूर करण विधि

सात भार चूना के लेवै-इक हरता लमिं लावै।
उभय पीस दोंउ जलसेती बालों पर जो लगावै॥
रहंन रोम जतन यह कीजै-मन में अति सुख पावै।
बार-बार मुंडनतें छूड़न्द्र जालयों गावै॥

युद्ध में घाव न आइवे की विधि

जहां सफेद होय सर्पों का तहां यह जतन करीजै।
पुष्य नक्षत्र जान उत्तर दिशिमूल का दिकर लीजैं॥
होय युद्ध जब पड़ै लड़ाई जब यह सिर धर लीजै।
लगे घाव लडै बहुतेरो लोहू लोह न भीजै॥
जब लग मुख से बोल न तब लग घाव न आवै।
कोई मार सकै ना युद्ध में कायरता सब भागे॥

युद्ध में कुशल सों आइवे की विधि

सूरज ग्रहण कृष्ण चौदस को आदितिवार जो पावै।
पाडल की जड़ खोद मंगावै जो इसकी सुधि आवै॥
सबै लराई मुख में राखै ये मुख सीं नहीं बोले।
क्षेम कुशल जो जानें जी की आनन्द करि रन डोलै॥

चलने की विधि

सात काक जंघा की मिलि जड़ और मैनफल आनें।
दोनों वस्तु एक एकसी करके भोज पत्र मिल सानैं॥
तीनों वस्तुन पीस दूध सों पगतर लावै।
दूध होय इक रंग गाय का पशु पंछी नहीं पावैं॥

तथा

परले अग्नि वंसलोचन को श्वेत भांगरा लीजै।
माखन दूध आनि छेरी को पुष्य नक्षत्र में कीजै॥
मिहीं पीसि तखा में लेपै दोय घड़ी सुख रावै।
मारग चलै कोई ना पूछे उड़ौ पवन जो जावै॥

ढोल बजे मदला नहीं दीखै

गूगल लेय वंसलोचन को अरु पीपल का पानी।
करे लेप मिल ढोलक सेती तीन वस्तु मिल सानी॥
दोनों पुरी सुकाय लेप करि कोऊ ताहि बजावै।
शब्द सनेंम दला नहिं दीखै क्योंहूं नजर न आवै॥

सभा काणी दीखै

वृक्ष आमेर के ऊपर जो नीम लगौ कहूं पावै।
ले आवै फल फूल मूलसों ताकों छांह सुखावै॥
पीसकूट कर चूरन कीजै बातीं एक बनावै।
सो लैंधरै के माहीं तेल नीमको पावै॥
जिस-जिस ऊपर लड़ै उजेला कानी सभादि खावै।
जब ही बंद करें दीया कों ज्यों के त्यों दरसावै॥

पाणी का मठ दृष्टि आवै

कोरा घड़ा मुंगाइ मृत्तिका आक दूध पुट-दीजै।
पानी भरे मठा दिखरावै तब यह कौतुक कीजै॥

चौकी सों न उठिवे की विधि

शनिवारी कोई बन में जावै अंडी रूख जहां वह पावैं।
डोरा रक्त बांधि शाखा पर न्योंता दे निज घर को आवै॥
प्रात समय रविवार जायके शाखा वही तोड़कर लावै।
गूगरखे वे रवि दिन माहीं जब कूकर रतिकर तो पावै॥
शाखा वही लिंगपर मारै भिन्नभाग दोई हो जावै।
एक भाग पृथ्वी पर गिरे दूजा भाग हाथ रहयौ आवै॥
दोनों को लागूगर खेवै सिद्धि होय जब जतन उपावै।
चौकी पर जो बैठा पावे, करका भाग लायकर छावै॥
चौकी सो उठि सकन न पावे, कोटि उपाय कीये भिर्मावै।
गिरा भाग पृथ्वी जब छावे, चौंकी से वह उठने पावै॥

तथा

नदी मिले जो जिहि के ताई दोऊ करार जाने।
आपा जाया करा भरे भीतर दह की मांटी आने॥
आदिति बार करे रति कू कर पूछ बारता आनें।
मांटी वार दुहुन की गोली तेल अंकोल में वानें॥
चौंकी में गोली चिपकावै उठिभ सके भिर्मावैं।
गोली काढ़त ही उठि सकै मन की चिन्ता जावै॥

दिन में तारे दीखिवे की विधि

॥ चौपाई ॥

सुर्मा सेतु मुगावै कोई।
ताकों पीसि धरे वह लोई॥
फूल अगस्त को रस जो लेई।
तामें राखे सुर्मा भेई॥
तीन दिवस लों रस में धरै।
चौथे पीस जो मैदा करै॥

॥ दोहा ॥

सो सुर्मा अंजन करै दृष्टि गगन में राखि।
दिन में तारा दीखि हैं जगत भरे सब साखि॥

निसाना पर तीर लगै

पांख उखारि मुगावै कोई।
सो वह पर कर गस का होई॥
तीन पांख का राखे तीर।
खेल करे राखे मन धीर॥
आगे होइ निसाना धरे।
मछली का कांटा उस भरै॥
तीर चलावै सनमुख वाई।
चूके नहीं मार ले जाई॥

कपड़े की ओट में निशाना मारिवें की विधि

तुपक मांझ पारा भरे गोली डारे नाहिं।
फैर करे पंछी मरे कपड़ा दाग नरवाहि॥

मच्छी पैदा होने की विधि

वेरी की लाख मंगाइ के अण्डा मछली लाय।
तोला २ तोल में दुहुन पीस धरवाय॥
एक उंगली पर ले उसे चूल्हा माटी लाय।
थाली में जल नांखिकर तामें दोऊ मिलाय॥
थाली पर थाली ढके घड़ी जब एक होई।
मछली देखे जल विषै कितनी पैदा होई॥

मरी मछली जल में तैरे

मछली मरी मुंगाइ के कीजै वही उपाय।
तेल भिलावा चुपड़ कर जल में तिन्हें गिराय॥
तैरन लागें मछलियां देखि अचम्भा आय।
इन्द्रजाल विद्या सही कर देखो चितलाय॥

बुझा दीपक बिना अग्नि जरै

दीपक बुझा रहै गुल जरता तो यह जतन बनावै।
गंधक और हरताल कपूर सब महीन पिसवावै॥

चुटकी भरकर नाखे गुलपर तुरत दिया बर जावै।
जबलों गुल की अग्नि न जावै तब लों खेल करावै॥

अनोखा तमाशा

जुगनूं का सिर काटि हिरन की चरवी मांझ लपेटे।
तिहि की वाती वान जरावै खेल अनोखा भेटे॥

दीपक बिन उजियारा होय

तब कीले हरिताल और मुकत्तर सिरका॥
सीसा में भरि धरै होय उजियारा तिही का॥

पानी में दीपक जरै

॥ चौबोला ॥

चीनियां कपूर लाय बाती कीजै।
पानी में नाखि दीयारो शन कीजै॥
चांदना उसी का सब घर में होवे।
इस करतब को देख लोग हैरां होवै॥

तथा

बकरी दूध समान माजुफल लीजिये।
दुहन पीस रुई मांझ सात फुट दीजिये॥
ताकी बाती बनाय नीर में नाखिये।
जल में बाती बरै सु अचरज माखिये॥

तथा

दे खिरनी के दूध में रुई लाय फुट सात।
बाती वार दिया धरैं ताहि बरावै तात॥

तथा

राल कपूर एक टांक।
पीस मिलावै जल में लांक॥
दाय जले अचम्भा आवे।
बाजीगर यों खेल दिखावे॥

दीपक का उजियारा न हो

झाग समन्दर का मले किसी वस्तु पर लाय।
दीप के सन्मुख धरे उजियारा घट जाय॥

दो दीपक लड़ें

एक दीपक में भरि धरे चर्बी लियों लाय।
दूजे में चर्बी भरे व करा की मंगवाइ॥
बाती दुहुन जराय के सन्मुख दुहुन धराय।
जवै बुझाके एक कों दूजे आप बुझाय॥
तलबों व हहू बर उठे बुझबे ताहि फिर आय।
ऐसे ही जब एक कों आके आप बुझाय॥
दूजा दीपक बर उठे बुझन न एकहु पाय।

दांत सुखसों निकसे

सिरस बीज की मालकरि बालक के गरबाधं।
उपसे सुखसों दांत सब कटें कष्ट के फांध॥

चांदनी न जरे

चीनियां कपूर और हरदी रसपान।
सबको एकत्र करि गोलियां जो बान॥
चांदनी पै गोली धरे आग मांझ पजरे।
निश्चें तू जानले चांदनी भीन जरे॥

धुंधु जाती रहे

संती चिरमिठी पानरस आंजे आंखिन माहिं।
धुंध मिटे दृष्टि बढ़े देख लेहु कर ताहि॥

सर्प विष हरन विधि

नये कमल गटटे की मिंगी न हनी पीस मंगाय।
सुर्मा जो नैनन में आंजे तुरत रोग मिटि जाय॥

तथा

नीला थोथा पीस के नहना तुरत मंगाय।
नासा माहि फूंक दे तुरन्त रोग मिटि जाय॥

सर्प खाये की औषधि

सर्प खाये को कहत हूं तासों सहज उपाय।
गूदा काचे आंव को पीस छान पिलवाय॥

धतूरा विष हरन विधि

गूदा पेंड़ पंवार का मांसे चार मंगाय।
पानी में तिहि पीस के बेगी छान पिलाय॥

बावरे कूकरा को विष जाय

जाकों काटे बावरो कूकर सो वेगी मंगवाय।
विष्टा मूंसा पीस के सूखी ही बंधवाय॥
विष उतरे पीड़ा टरे काटे बहुर न आय।
नीको होके रेवड़ी चूहन को खिलवाय॥

बीछू पकड़न विधि

रसमूलो के पातक मले जो करसों लाय।
बीछू को पकड़े सही डंक मारे न ताय॥

बीछू विष हरन विधि

कीड़ा एक आक का लावे वीठ छपकलो लीजे।
बड़ी हर्ड और मैनसिल दोनों आन इकठ्ठी कीजे॥
गोली करके चिरमिठी जैसो नहनी पीस बनावे।
जहां डंक बीछू का लागे जलसों पीस लगावे॥

पीड़ा जाय और निर्विष हो दुख भागे सुख आवे।
ऐसा जतन करे जो कोई बहु असीस वो पावे॥

तथा

इक रस बेर पलास पापड़ा आक दूध में मेवे।
नहना करे दूध में पीसे गोली कर रख लेवे॥
लाचा होय डंक बीछू का घिसके तुरत लगावे।
उतरत बार न लागे बीछू दुख खोवे सुख पावे॥

तथा

फल अंकोल का तेल कढ़ाके ले बासन में धरिये।
जामन और अनार फूल को तेल बराबर करिये॥
निर्विष होय डंक तब त्यागे बीछू लागे जाके।
जो निर्विष के अंग लगावे विष चढ़ावे ताके॥

कलाबतू बनाने की तरकीब

खालिस चांदी की लगड़ी बनाकर सोहन या और किसी चीज से ठोंक कर रबड़ बड़ी करदे फिर उस पर पारा लचाकर मोटावर्क या सोने का पतला पत्रा लपेट कर तावदे इससे पारा उड़ जावेगा और सुनहरी वर्क चांदी की लकड़ी को बारीक सलाइयां बनाकर जंत्री में तार खींचकर

जितनी चाहिये उतनी लम्बी बारीक करले और हतौड़े से चपटी करे पीछे उसके लेप और जोश देकर जिला देवे फिर बढ़े हुए रेशम पर इस पत्तरे को चढ़ा देवे इस तौर से बनाने में चांदी ज्यादा कम खर्च होती है और दूसरी सहज की तरकीब नीचे लिखी है।

दूसरी तरकीब

खालिस चांदी का जितना चाहे उतना बारीक या मोटा तार जंत्र में खींचकर चप और अलक द्रिक व्याटरी (अर्थात् वर्की यंत्र) के जरिये से मोटा या पतला जितना मुलम्मा मंजूर हो उस चपटे तार पर चढ़ाकर उसको जिलादे और बटे हुए पीले रेशम पर चढ़ावे।

सोने की चीज को जिला देने की तरकीब

गेरु दो हिस्से, नौसादार दो हिस्से इन दोनों को पानी पीसकर साफ पत्थर पर पीसे। फिर उस बनाई चीज पर लगाकर आग पर सुखलावे। धुंआ मौकूफ होने पर निकाल कर ठंडे पानी में

बुझावे और साफ पानी से धोकर फिर गेरु पानी में पीसकर उस चीज से लगावे और आग पर सुखावे और बुर्श या साफ कपड़े से पोंछकर जिला देने की सलाई से मुहरा करे।

मुरदासंग बनाने की क्रिया

जितना चाहे उतना सीसा लेकर एक रंजन में रखे और उस रंजन को चूल्हे पर टेढ़ा रखकर चूल्हे को चारों तरफ से बन्द करदे और नीचे आग जलाकर लोहे के गज से चलाया करे और सोहन मक्खी और ईंट का चूरन थोड़ा २ उसमें डालता जाय इससे सीसा जलकर खाक हो जायेगा सो निकाल लिया करे इसी तरह सीसे की खाक हो तब उसको निकाल कर मिट्टी के मोटे कूंडे में डाले और उस कूंडे के मुंह पर एक बड़ा रोजन काठी करा रखकर भट्टी पर रखदे और बाहर पहर खूब तेज आग को जलावे इससे उहकी सब खाक नीचे जम जायेगी उसको निकाल कर रख छोड़े यह दवा व मरहम में काम आती है इसका नाम मुरदासंग है।

तलवार को जौहरदार करना

तेजाब फारूक ८ तोला और गरम पानी ४ तोला दोनो को मिलाकर तलवार को ताव देकर उसमें बुझावे तो जौहरदार हो जावे।

तरकीब रस कपूर की

जर्द मुल्तानी मिट्टी, फिटकरी, नमक, दर्या की सफेद रेती और पारा समभाग और फटकिया संबुल आधा भाग सबको जुदा २ बारीक कूटकर चलनी में छाने और पारे में मिलाकर डमरू यंत्र में रखकर चार पहर तक धीमी आग दे फिर एक सौ बीस पहर तक खैर बेरी या बबूल की लकड़ी को तेज आग देवें। इसके उपर के बर्तन में रसकपूर जम जायेगा। मो जंत्र ठंडा होने पर निकाल लेवें और उसको बनाते वक्त धुंआ बड़ा नुकसान देने वाला होता है।

तरकीब रसिया सिंदूर (अर्थात् रूमी) शिंगरफ

गंधक दस तोले, नौसादर पांच तोले, मिलाकर खरल करे जब काजल सा हो जाय तब आतिशी शीशी में भरकर गरम रेत की हांडी

में जौहर उठावे और शीशी को तोड़कर सिंदूर को निकाल लेवे यह सिंदूर दवा के काम में आता है।

पारे का कटोरा बनाने की विधि

लोहे का तवा चूल्हे पर रखकर उस पर नीला थोथा बारीक पीसकर फैलावे। उस पर पारा डालकर नमक बिछावे फिर उस पर प्याला औंधा रखकर उसके चारों तरफ गेंहू का आटा पानी में उसन कर लगावे और किनारे बन्द करें और उस पर ठंडा पानी डालकर नीचे आग जलावें और खूब पकावें। जब पारे का गोला बंध जाय तब जो चीज मंजूर हो बनाकर सुखलावें और डोल यंत्र में बकरे के पेशाब से भीगा रख कर गरम करे। इससे वह चीज साफ चांदी की सी रंगत सरल हो जायगी। फिर उस चीज को चाहे जिस काम में लाओ।

इसी प्रकार

पारा और कलई दोनों को देव चंपा के दूध में खरल करने से एक दूसरे से कभी जुदा नहीं होता है फिर इनकी जो चीज चाहो सो बनालो और सुखाकर काम में लाओ।

तथा

इसी प्रकार लोहे की कड़ाही में अलसी के तेल से पारे को पकावे इससे भी पारा जम जाता है फिर उसकी जो चीज चाहो मूर्तियां कटोरा बनालो।

तथा

इन दोनो तर्कीबों से जो चीज़ बनाई जावे उनको बहुत सख्त करना चाहो तो उनको नीबू के रस में चन्द रोज रक्खो तो वह सख्त हो जायेगी।

सोने के मुलम्मे पर जिला देना

साफ नमक और गंधक को एक जानकर पानी में मिलावे और मुर्गी के अंडे के छिलके में रखकर इतनी आंचदे कि जिसमें छिलका न जलने पावे फिर उस पानी को मुलम्मे की चीज पर लगावे तो मुलम्मे की सूरत बहुत खूबसूरत और साफ दिखाई देगी।

सोने के मुलम्में का दाग दूर करना

फिटकरी को गरम पानी में जोश देकर दाग खाई हुई मुलम्मे की चीज को गोता देकर साफ करें दाग छूट जायेगा।

सोने का मुलम्मा छुटाने की क्रिया

नौसादार एक भाग, शोरा आधा भाग दोनों का बारीक चूर्ण करे और तिली के तेल में मिलाकर मुलम्मे पर लेप करे और उस पर थोड़ा नौसादार और शोरे का खुश्क चूर्ण बुरके और आग पर ताव दे और गरम २ एक रकाबी में ठोक कर सफूफ को झाडले उसी में निकल आवेगा।

हर एक धातु पर सुनहरी रंग चढ़ाने का पानी बनाने की तरकीब

उम्दा धुली गंधक का सफूफ दो औंस या बरसात का पानी जोश दिया हुआ आधी बोतल उड़ेल कर हिलाना और आग पर रखकर बीरा दखन ढ़ाई तोले शामिल करके खूब जोश दे और नीचे उतार कर कपड़ छन कर शीशे में भर रखे जब किसी चीज पर रंग चढ़ाना हो तो उसको चूल्हे पर रखकर उस चीज को उसमें डालकर जोश देना उस पर सोने रंग हो जायेगा।

तरकीब दूसरी

पीला एलिया शोरा तूतिया सवज हर एक चीज तोल में बराबर लेकर कूटकर पानी में डाल अन्वीक यंत्र अर्क खींचे पहले तो अर्क निकलेगा उसको फेंक दे और पीछे जो पीला अर्क निकले उसको जिस धातु पर लगावे उस पर उम्दा सुनहरी रंग चढ़ता है।

तरकीब फुलझाड़ी की

शोरा और कोयला ढाई २ तोले गंधक सवा दो तोले बीड ८ तोले।

तरकीब फुलझाड़ी दूसरी

शोरा २८ तोले, उम्दा बंदूक की बारूद ४८ तोले दोनों को खूब बारीक पीसकर उसमें उम्दा बीड ८ तोले मिलावे तो फुलझड़ी भरना बहुत उम्दा और लासानी परन्तु शोरा बंगाली और बारूद विलायती उम्दा होवे।

गुलरेज फुलझाड़ी

शोरा १२ तोले गंधक और कोयला एक २ तोले लोहे का बुरादा ३ तोले ले।

वजन महताब का

शोरा १० तोले, गंधक ४ तोले, हरताल १ तोला, नील ३ माशे लेकर बनावे।

मुर्गी का अण्डा कूदे फांदे

चौपाई

मुर्गी का अण्डा मंगवावे सिर पर उसके छेद करावे।
एक टांक पारा जो लावे सो अण्डे के मांझ भरावे॥

दोहा

रूमी मस्तंगी लायके करो छिद्र को बन्द।
धरें धूप में दो घड़ी करे कूद और फान्द॥

नीबू उछले कूदे

नीबू में पारा भरे और नौसादार लाय।
उछल कूद तड़फन लगे विधि कर गहो न जाय॥

कबूतर के अण्डे पर जैसा चिन्ह बनावे वैसा ही बच्चा होवे

जहां कबूतर श्वेत हों नरमादी तहां जाय।
उनके अण्डे पर लिखे जा विधि कहूं बनाय॥
नौसादर काजल लहे और भिलावा लाय।
तीजा सिर का मेल कर लिखिये जो मनभाय॥

फिर अण्डे को लायकर मादी तर रख वाय।
बच्चा वैसा होयेगा अद्‌भुद रूप दिखाय॥

घाणी का तेल ऊंचा होय

बिष्टा स्यार मांझ जो होई।
झड़बेरी की गुठली सोई॥
नांगो होय रविवार जो आनें।
धोके ताकी माला बानें॥

रवि दिन खररति करता पावे।
उसके गले में माला नावे॥
फिर उतारकें बाकों लावें।
धाणीं साम्हीं उंची उठावें॥

धाणी तेल तुरत हो ऊंचा।
भूले तेली सुधि-बुधि कूंचा॥

अन्य प्रकार

दांतों तर दावे जो माला।
फूटें बाजा पर मरसाला॥
जो दांतों पर लावे माला।
टूट जाय लकड़ी तिहि काला॥

मंत्र

ओं नमो इसेश्वरं कुरु २ स्वाहा ३१ बार जपे।

पनिहारी का घड़ा टूटे

दीत वार उत्तम दिवस यह जतन उपावे।
वागर लिपटी रुख जिंहिं तिंहिं शाखा लावे॥
प्रथम शनिचर जाय के तिहि तिन्योता करिये।
तहां सवेरे जायके शाखा लेटरिये॥
घर आ गूगर खेइके तिहिं सिद्धि जो कीजै।
घाट वाट पनिहारी के लागाढ़ि जो दीजै॥
लाघि चले पनिहारी गिरे घट सिर का फूटे।
देख लोग सब हसें लाज की डोरी टूटे॥

तिलक राज सभा जीतने का

पक्का फल अंकोल मंगावे और मैनफल लावे।
गौ दूध में पीस दुहून को गोली बड़ी बनावै॥
जामन सम जो गोली करके छाया मांझ सुखावे।
पोला सींग गौ मंगवा के गाया दूध पकावे॥
सींग मांझ गोली को राखे दिवस सान जब बीतें।
ऐसा जतन करे जो कोई राज सभा में जीते॥

बहती नाव थमे

बहती नाव जहां कोई दीखे तहा बिलंब न करिये।
जहां छिद्र नवका में होवे तामें गोली धरिये॥

कोल्हू चलता रुके

साबुन पर स्याही लगाय के कोल्हू में जो नाखे।
चलता कोल्हू रुक ही जावे तेली पद मुख राखे॥

मुर्गा वांग न दे सके

रांग एक दिरम ले वांधे मुर्गा के जो गर में।
बांग देने से मुर्गा छूटे जतन करे जो घर में॥

नींद आवे

हरियल चिड़िया की लै छैरी।
दूजी मिर्च मंगावे फेरी॥
तिन्हें तुरंग छाग में साने।
अंजनत कर नींद जो आवे॥

नींद न आवे

नौंन मिरच और सोंठ मंगावे।
तीनों इकतर पीस धरावे॥
सात दिना लों जो नर खावे।
ताकू नींद कबहूं न आवे॥

तथा

एक दो तोला बुन मंगाय के आधा सेर जल नावे।
चूल्हे धरे अग्नि को बारे आधा जल जरि जावे॥
तब उतार कें मिश्री नाखं सीर गरम पी जावे।
सगरी रैनि नींद नहीं आवे करै जो कुछ मन भावै॥

तथा

मांखी सिर की सुई छोंड़ि के सिर को काटि जुलावे।
ताहि जराय नैन जो आंजे ताकों नींद न आवे॥

कोड़ी का नाम रूप गुण

प्रथम हंसनी

श्वेत रंग की हंसनी छोंटी हल्की होय।
अति कोमल उज्जवल सरस जल में पैरें सोय॥
हंस पदी में पीसिये पाप ताम्र मिलाय।
ताहि हंसनी में भर दीजे मुख बंधवाय॥
अपने मुख में जो धरे इस कौड़ी कों लाय।
सर्व सिद्धि आवे तहां रोग न उपजे ताहि॥
जो काटे ता पुरुष कों सर्प कदाचित कोय।
विष तन पर नाहीं चढ़े हानि कछु ना होय॥

द्वितीय मृगी

मिरगी को सिर पेट मुख पीठ जु पीली होय।
मृग मूत्र के ठौर की माठी लावे कोंय॥
तामें पारा सानि के मृग नक्षत्र जब होय।
ताकों कौड़ी में भरे घरे जो मुख में लोय॥
जहां जाय दारबार में राजादिक बश होय।
कामिनि संग जो रति करे कभू थकित ना होय॥

तीसरी व्याघ्री

धुंआ के रंग होत है तासु व्याघ्री नाम।
जड़ी व्याघ्री रस विषैं पाय सोंले काम॥
पारा रस में सानिके कौड़ी में भरवाय।
फिर वाको मुख वन्द करि गूगर धूप दिवाय॥
जोले राखे मुख विषेंदू इस कौड़ी को लोय।
सिंह होत दृष्टि पड़े देखें अचरज होय॥

चौथी सिंहनी

रंग सुनहरी सिंहनी कौड़ी कों जो लाय।
पारा और कढ़ाइ रस दो उनको मिलवाय॥
भरि कौड़ी में मोमसों करे चंद मुखतारा।
मुख धरि जावे रण विषें हार न आवे पारा॥

सिंह रूप जिहि को भलो देख डरें नर नारि।
कर बांधे जे पाय है जुवा राज दरबार॥

भूख प्यास बन्द हो

लट जीरा का चावल लावे।
गाय दूध मंगावे रवि दिन खीर पकावे॥
ताकी ऊंगा आन मिलावे।
पारा सोंठ से बंद करे मुख पवन बडन ना पावे॥
जल में गाढ़ि करे संकल्प भूख प्यास ना लागे।
दिन बीत तब काढ़ि खाइये, भूख प्यास तब लागे॥

घर में सांप न रहे

चरबीसिंह जहां धरे और धरे जहां प्याज।
निकसि जायं तिहि ठौर ते सर्प सर्पिनी भाज॥

माखी निकसे

नर्गिस मूल अकरकरा अरु गंधक को लाय।
छिड़के जल में बाठिं के तहा न माखी आय॥

तथा

दांत गाय को छाछ में पीस धरे जो कोय।
जिहि जामें गाढ़े उसे माखी रहे न कोय॥

मूंसा निकसे

दायें हाथ ऊंट का नखले जिहि घर में जर बावें।
मूंसा भाग जायं तिहि घर सों एक रहन न पावे॥

तथा

खार समंदर लायके आटे माहिं मिलाय।
चूहों को डारे कोई तुरत निकसि सब जाय॥

तथा

एक मूंसा को पकड़ के नील माहिं छुड़वाय।
देखत ही वारू पके तुरत निकस सब जाय॥

पतंग दीया पास न आवें

टूक प्याज का इक मंगवावे।
दीया मारू उसे धर बावे॥
एक पंतग पास न आवे।
इस करतब से मन सुख पावे॥

खटमल निकसे

जहां होंय खटमल तहां धूनी गंधक देय।
रहें नहीं खटमल तहां मर २ छोड़ देह॥

तथा

रवि शनि धूनी दीजिये बीज लोबिया लाय।
खटिया सों बाधे उन्हें खटमल निश्चें जाय॥

धुआं निकसे

धुंआ घर में ना रहे तिहि का यही उपाय।
घड़े चार ओंधे घरे धुंआ उन्हीं में जाय॥

पक्षी पकड़न विधि

हींग मिलायके जल के माहीं।
गेंहू भेवे तिहि के माही॥
एक रात्रि दिन जल में राखे।
बहुरि सुखाय पक्षिन कों नांखे॥
पकड़ लाय जिहि के मन राखे॥

तथा

गेंहू लाय शहद में नांखे।
उक्त युक्ति पक्षी गहिराखे॥

तथा

थूहर दूध मंगाय के तिहि में चामर पीस।
जिहि की गोली कर गहे काग चिरैया बीस॥

शराब का नशा मिटे

मूली और फिटकरी लावे।
जल में घिस मांते को पिलावे॥
उतरे दवा पेट में ज्योंही।
हटे नशा मांते का त्योंही॥

सीसा में अग्नि दीखे

सीसा उज्जवल लाय सुरा आछी ले भरिये।
थोड़ी गंधक नांखि अंधेरे में लै धरिये॥
देखे जो नर ताहि आग सों भरो जुदीखे।
बुद्धि करे सब काम सिद्धि विद्या जो सीखे॥

सीसा चवाने की विधि

नाई जब मसाल को बारे।
सीसा लाकर उसमें नाखें॥
अग्नि रूप जब वह हो जावे।
अदरक रस में राखे जो कोई लेके ताहि चबावे॥
घाव नहीं मुख आवे।
इन्द्रजाल कर खेल तमाशा सबही के मन भावे॥

अण्डा को सीसा में उतारना

अंगूरी सिरका मंगवाके तिहि में अण्डा डारे।
तीन दिवस में नर्म पिलपिला होवे ताहि निकारे॥
फिर मंगाय के सीसा सकड़े मुख का तामें नावे।
जल डाले तो दृढ़ हो जावे अथवा पवन सुखवे॥
जब काढ़े तब इसी युक्ती से सबको काटि दिखावे।
तिल औंटे यह खेल तमाशा पर्वत सा दर्सावे॥

रुख पर फल फूल आवें

गधी गर्भ ते गिरे जो बच्चा।
काढ़ कलेजा लावे बच्चा॥
मरे कलेजा लावे।
ताहि सुखाय धारावे॥
कारी मिर्च सोंठि अरु पीपर सब एकत्र करावे।
चारों को पिसवा के जल में गोली बांधि धरावे॥
जब चाहे तब खेल दिखावें भरी सभा में जावे।
गोली घिस रुखन पर मारे दो घड़ी में फल आवे॥

सीसा में फूल पत्ती काट के बनाना

काचा सूत मंगाय के करे पलीता एक।
जैसा तोड़ा तुपक का तैसा होवे भंक॥

बहुरूं सीसा लायके पैनी छुरी मंगाय।
तिहिसों सीसा पर करे चिन्ह जो चित्त में भाय॥
फिर तोड़ा कों बारि के चिन्ह छुरी मन लाय।
फूंक मारता हीं चले तो सीसा कट जाय॥

सीसा का रस उड़ि जाय

नीबू का रस काढ़ि के जो सीसा भरवाय।
पीरी कोड़ी राख करि रस माहीं नख वाय॥
अंगूठा से बन्द करे सीसा को मुख कोय।
उड़ि जावे रस पल विषें सीसा खाली होय॥

धन बढ़े

सेंत चिरमिठी मूल कों राति दिवारी लाय।
तावें के ताईत में हांडी मांम बंधाय॥

कागज की कढ़ाही आग चढ़े

फिटकरी कपूर पीस कागज पर पारे।
कागज की कढ़ाई कर गुलगुले उतारे॥

कूप जल दूध सम निकले

कोरा घट ले एक मृत्ति का अंडी बीज मंगाय।
ताकी मिंगी काढ़ि पीस के घट भीतर लिपवाय॥

नाँखि कूप में जल भरि काढ़े दूध दृष्टि में आय।
इन्द्रजाल के खेल तमाशे करि देखे जिहि चाय॥

पानी दूध हो जाय

गिहों वस्त्र में दूध के जो पुट दीजे सात।
पानी छाणे ताहिसों दूधिहि सो हो जाय॥

बिच्छू उपजे

गधा मूत्र मंगाय के भैसा गोबर लाय।
दोनों को एक तर करे कुलहड़ा मांझ धराय॥
तांऊ पर लत्ता ढेकै घड़ी दोऊ सस्ताय।
फिर उघारि कर देखिये बीछू उपजे पाय॥

पत्थर पानी में तैरे

ससास्यार की बिष्टा आनें।
झड़बेरी की गुठली लानें॥
तिन्हें पीस पत्थर को लेपे।
जल में तैरे दिवारी दीपे॥

चलनी से पानी छने

घीग्वार का रस छन बावे। चलनी में पुट तीन दिवावे॥
तिहिनें पानी भरि २ डारे। छने नहीं एक बूंद निहारे॥

घड़ा फूटे पानी न टूटे

पिलवन की जड़ जो कोई लावे।
जल का घड़ा भराय मंगावे॥
जड़ को पीस घड़े में नावे।
फोड़े घड़ा बंधा जल पावे॥

ज्वार भुने

थूहर माहिं भिगोय ज्वार को छाया मांझ सुखावे।
धरे धूप में फूल फूला के ज्वार भुनी दृष्टि आवे॥

मुट्ठी में ज्वार भुने

प्रथम जोंडरी लाय तीन दिन जल में राखे।
फिर मंगाय के दूध आक और थूहर नांखे॥
एक एक दिन दोऊ दूध मांझ में राखे।
उसको छाया में सुखाय धूप दे धरिये ताखे॥
मुट्ठी के भरि ज्वार घड़ी भर बन्द जुराखे।
खिल जावे तो तुरत छोड़ि के मुट्ठी नाखे॥

सरसों जमे

प्रथम जो सरसों लायके सफा करे निज हाथ।
बहुरि कूकरी दूध में तिहि देवे पुट सात॥

छाया में सुखराय के खेवे गूगर धूप।
फिरि इक ऊपर मृत्तिका लावे कोरो रूप॥
भरि माटी तामें बवे सरसों दे ढकवाय।
घार घड़ी में देखिये तो सरसों जम जाय॥

हथेली पर सरसों जमे

पाव सेर सरसों मंगवावे।
दुद्धी रस में ताहि डुबावे॥
रस में लाग चुकें पुटसात।
तब छाया में ताहि सुखात॥
रेती भरे हथेली माहीं।
तामें सरसों नाखे जाहीं॥
जलसीं चेट किराखे आगे।
हरी होय कुछ बार न लागे॥

आम का पेड़ उपजे

थूहर दूध आम की गुठली।
पुट इक्कीस दिये हो सुथरी॥
माटी में धरि पानी नाखे।
वस्त्र एक तिहि ऊपर राखे॥
दोय घड़ी में वस्त्र उठावे।
उपजे पेड़ पात फल आवे॥

चार मूंसर लड़ें

काग सिनी की मूल लाय जो रवि दिन कोई।
धरे बीच में चार मूंसरु के वह लोई॥
चारों मूंसर लड़े भिड़ें आपस में सोई।
है अचरज की बात देखि मानेंगे जोई॥

भट्टी फूटे

तीन टांक गूगल ले कूटे।
भट्टी में डारत ही फूटे॥

नागर फूटे

लिर्या की जो खाल लाय यह जतन करावे।
जहां नगारा होय धरा तहां लाय जरावे॥
फटै नगारा तुरत देखके अचरज आवे।
विद्या इन्द्रजाल अनोखे खेल दिखावे॥

चाशनी बिगड़े

हलवाई गुड़ लाय चाशनी जबै बनावे।
बांदर विष्ठवा नांख बिगड़ बह सब ही जावे॥

हाथ अग्नि सों न जरे

मुरहटी अरु भांगरा दो उनको रस लाय।
हाथन ऊपर चुपर के लीजे आग उठाय॥

तथा

पारा रस घी ग्वार से हाथ जो चुपड़ें कोय।
अग्नि लेय झुरसे नहीं बार ना बांका होय॥

तथा

अकरकरा हिरबीज और ले बीज धतूरा।
चौथा अंडी पात रस कढ़वाय पसूरा॥
करि हाथ न सों लेप अग्नि को तुरत उठावे।
झुरसे नाहिं हाथ गुरु यह बचन सुनावे॥

तथा

मेंढक की चरबी मले हाथन सों जो कोय।
तुरत उठावे अग्नि को ताप कछू ना होय॥

तथा

लोही नारि रजस्वाला अरु मेंढक की पीह।
करसों मलि अग्नी उठा क्यों कंपा वे जीह॥

तथा

नौसादर के जल विषेघिसि काफूर हिंलेइ।
हाथन ऊपर चुपड़के आग उठा कर लेइ॥

तथा

मेंढक चरबी केंचुआ मले हाथ सों पीस।
अग्नि दहे वाकों नहीं मानों विस्वा बीस॥

तथा

खारी नोंन चवाय के रस हाथन पर मेल।
बहुरि उठा के अग्नि कों कर देखे यह खेल॥

तथा

सेल समुद्र फल पीस के करि हाथन पर लेप।
अग्नि दहे नाहीं उसे लूटे मुख की खेप॥

ताते गोला को सूंते

रस भांगरा के पात कों हाथन पर मलवाय।
छाया में सुख वाय के गोला लाल सुताय॥

आग सों वस्त्र न जरे

ऊंट कटेरी मूल के रस सों कपरा भेय।
छाया में सुखवाय के अग्नि दाह नहिं देय॥

तथा

फूल शराब मंगाय के तामें कपरा भोय।
अग्नि लगावे जर उठे तार जरे ना कोय॥

तथा

वस्त्र मांझ रस ग्वार के जो दीजे पुटसात।
छाया में सुखराय के दहें न अग्नि तात॥

मुख न भुर्से

पीपल लांवी पीपल गोल।
सोठ लाय पीसे सम तोल॥
मुख धारे चाबी अग्नि मुख भल।
मुख भुरसे ना करे जो खेल॥

जल वंधे और खुले

रुखल्हि सोड़े का फल लावे।
ताकौ चूख पीस बनावै॥
जल पर वुर्के जल जम जावे।
सेंधालौ न पड़े खुल जावे॥

काचे घड़े में भरे

घीग्वार रस कादि के करे जतन या भांति।
काचा घड़ा मंगाय के भीतर दे पुट सात॥
तामें जल भरके घरे गरे न फूटे आहिं।
देखी ताहि अचरज करें लोग तमाशे माहिं।।

जल को धुंआ खैंचे

इक कोरा कूड़ा मंगवावे।
छोटी सी दीवट गढ़वावे॥

ताकू कूंडा मांझ घरावे।
तापर दीपक लायजरावे॥

तापर घट ओंधा धरवावे।
वहुरुं जल कुंडा में नावे॥

धुंआ खैंचे जलके ताई।
घट के भीतर जल भर जाई॥

दीपक लौतक जल जै है।
दीपक बुझे निकस सब अै है॥

कड़ाही में आग न लगे

मूत्र बैल काटंक भर लावे।
तेल कड़ाही मांझ न खावे॥

चूल्हे को वारे दिन राती।
कबून होय कड़ाही ताती॥

तथा

लकड़ी साल मंगाइये अरु तुलसी की साख।
दो उनके करि कोयला गधा मूत्र में नाख॥
तरे कढ़ाही नाखिये एक कोयला लाय।
अग्नि लगे वामें नहीं कोटिक करे उपाय॥

चूल्हे चढ़े धान पकें नहीं

दूध आक मंगवावें कोई।
अथवा दूध थूहर का होई॥
धान दूध सों चुपर बढ़ावे।
चूल्हे लकड़ी आग जलावे॥
एक धान पकने नहीं पावे।
चाहे जितनी आग जलावे॥

माली की डालिया से फूल फल बाहरे निकल पड़े

रविदिन मुआ मेड़का लावे।
गूगर खेकर ताहि जगावे॥
बहरुं मूंग लायके धरिये।
तिहिं की विधिसों पूजा करिये॥
फिर मांटी चिकनी मंगवाय।
मेंढ़क के मस्तक धर वाय॥
तामें मूंग नखाइये बीजें।
ऐसी ठौर गढ़ाय धरीजे॥
जहां पड़ेना पांव नर नारी।
जल सींचत रहिये हर बारी॥

फूले पेड़ फली जब लागे।
काटि लाइये जिहि सौ पागे॥
जिहि जिहि तोड़े विधिसों लावे।
पहला फल न्यारा करिलावे॥
जोलावे वनसों धर ताईं।
पीछे फिर कर देखे नाहीं॥
सब को गूगर धूनी खेवे।
काहू कों यह भेद न देवे॥
जिहि डालिया में माली भारि के
लावे फूल साग को नांखे।
बाहर निकस पड़ें सब साखें॥
माली की सब सुधि जावे।
जब ऐसा करि खेल दिखावे॥

दोहा

जहां जहां विधि लिखि है नर सर्प बिल्ली होय।
तहां तहां योंही करे चूक कछू नहिं होय॥

घोड़ा होय

घोड़े के सिर सना का बीच मंगाय।
तिहि गाढ़े ऐसी जगह छाया पड़ नहिं जाय॥

उपजे पर छिलका लहे ताकों डोरा वांधि।
जाके घर में डारिये घोड़ा दीखे आनि॥

बिल्ली होय

कारी बिल्ली मुख धरे अंड बीज दो चार।
भूमें गाढ़े जब फले पहले फल को लाय॥
जो नर अपने मुख धरे बीज बिलाई होय।
साख भरे सब देखके मिथ्या वाक न होय॥

स्यार होय

गीदड़ के मुख में धरे बीज भांग का लाय।
उपजे पर मुख में धरे बीज स्यार दृष्टि आय॥

सर्प होय

बवै बिनौला सर्प मुख जब उपजे तिहि लाय।
रूई बिनौला काढ़ि के अलग अलग धरवाय॥
बाती रूई बनाय के दीपक बारे लाय।
उजियारा में जायतो सप दृष्टि में आयाल लाय॥
बिनौला को कोई जो मुख में ले भाई।
सोहू सब की दृष्टि में सर्प रूप हो जाय॥

सिंह होय

बाघ खोपड़ी शनि दिन लावे।
रूई बीज तिहि मांझ धरावे॥
जहां गाढ़िये उसके ताहि।
नरका पाय पडन नहि पाई॥
जब कपास उपजे तब जावे।
रवि दिन काढ़ि रूई ले आवे॥
जो नर बीज गरे में नावे।
सिंह रूप सबको दरसावे॥
जो बाती कर दीबा-बारे।
पारी में ले काजर पारे॥
जाके नैनन काजर लावे।
सिंह रूप वह सबको आवे॥
जो दीपक उजियारे आवे।
वह सब सिंह सूरत दरसावै॥

भैंस होय

मरी भैंस के मुख ववे भांग बीज दो लाय।
उपजे पर फल मुख धरे भैंस रूप दृष्टि आय॥

बंदर होय

बंदर के मुख में धरे कारी माटी लाय।
धुंधचिता में नाखिके गाढ़ि धरे कहीं जाय॥
उपजे तब माला करे डारि गरे में जाय।
बंदर आवे दृष्टि में सबहिन के मन भाय॥

सर्प होय

अहि कारे के मुख धरे उपजि पकें तब लाय।
जो नर निज मुख में धरे सर्प दृष्टि में आय॥

कूकर होय

कारे कूकर मुख धरे सनका बीज जो लाय।
उगे बीज जब बांधि के कूकर रूप दिखाय॥

घर में सर्प दिखाई दें

कोचरि सर्प मंगाय के बाती करिये चार।
अरु दीपक मंगवाय के ताम्र पात्र के चार॥
चारों में दीपक धरे पूर्वादिक दिश चार।
उनमें बाती नाखिये सब न एक संगजार॥
उजियारा में जाय नर जिहि को सर्प दिखाय।
दिया बढ़ाये ना रहे सर्प न फेरि लखाय॥

अन्य प्रकार

दीपक एक मंगाय के धरिये बाती चार।
दिया वार के यों धरे बाती मुख दिश चार॥

घर पानी से भरा दीखे

जो मछली भिडियाब की मांटी धरे मंगाय।
दिया माहीं पूरके देवे ताहि जराय॥
घर दीखे पानी भरा डर २ बाहर जाय।
जब दीवे को गुल करे पानी नाहिं दिखाय॥

आरसी में अपनो रूप कुतिया को दीखे

चूची कुतिया काटि मंगावे।
दर्पन के पीछे लगवावैं।।
जो देखे मुखड़ा दर्पन में।
कुतिया रूप आय नैनन में॥

मनुष्य को निज रूप कुरूप दीखे

सूअर छेरी ऊंट तुरंगा।
इन चारों के खुरले संगा॥
पांचम पांव बंदरा लावे।
सबकों लेये जतन करावे॥

हांडी बीज मोचरस में ले।
तिहि पर सब वस्तु को ठेले॥
पाली सोढ़कि चून लगावे।
अग्नि मांझ धरि तिन्हें जलावे॥
जब भस्मी हो जाय सबन की।
पीस घोले चरबी मेंढ़क की॥
दर्पन में जहां लेप करीजे।
रूप कुरूप दिखाई दीजे॥

दर्पण में और प्रकार की सूरत

अमल बेद को आनि धरावे।
पुष्प रक्त कर बीर मंगावे॥
दो उनको मिलवाय रखावे।
तासु आरसी लाय मंजावे॥
जो र्दपण में मुखड़ा देखे।
आन भांति की सूरत बेखे॥

पानी पर मृगछाला बिछावे

लायहि सोड़ा गूदा गाड़े। मृगछाला पर लावे॥
पुट दे आठ नदी पर जावे।
जल पर ताहि बिछावे॥

आसन पद्म लगाकर बैठे हरि सुमरन चितलावे।
पूढ़े नहीं करो बहुतेरा गुरु यह वचन सुनावे॥

बिना जोती की खड़ाऊं पर चलना

धुंधची आनि पिसाय नीर में मले खड़ाऊं ऊपर।
पग जमाय के दोनों तिहि पर कोस दोय चले मगपर॥

पानी में नहीं डूबे

होय सर्प जो दो मूहां ताको लोही।
तामें वस्त्र भिजोय के धरिये धूप सुखाय॥
फिर ताको गोला करे मुख में राखे मेल।
दरया में धसके करे जल भीतर की सैल॥
विद्या इन्द्र जाल की सत्य कहें सब देव।
गुरु बिना नहिं पाइये गुप्त बात को भेव॥

अंधेरी रात्रि में दीखे

रवि दिन मेंडक मेंडकी रति करते जो पाइ।
अथवा मेंडक पीरिया मेंडक ही पर पाइ॥
लावे मार सुखाय कर जारे अग्नि माहिं।
सुरमें का सा पीसके आंजे नैनन माहिं॥
रैनि अंधेरी होय जब करियें जो मन भाय।
दीखें सगरी वस्तों जो दिन में दृष्टि आय॥

कुंजी बिना ताला खुले

रवि दिन दोपहरी समय नंगा होकर लाय।
चील काग का घोंसला लाय धूप देताय॥
बहुरि जरावै अग्नि में लावे राख उठाय।
मुंदे कुफल पर मारिये कुंजी बिन खुल जाय॥

चलती गाड़ी रुके

विष्टा गोली बांधि गोबरा चले सों यन्त्र करावे।
रवि दिन गोली उठा होट सों गूगर खेय धरावे॥
गाड़ी के मार्ग में डारे जब गाड़ी तहां आवे।
हारें बैल जो कर २ के आगे बढ़न न पावे॥
गाड़ी वारे खंत खोद के काढ़ें रेत और मांटी।
तब गोली जो कढ़कर जावे हांक जायं जो नाटी॥

सभा के लोग रात में दरिया की सैर करते दीखें

चरबी कधुआ मांझ अरमनी बूर मिलावे।
बाती बस्त्र महीन ताहि में लाय भिजावे॥
नये दीवले माहिं बहुरि बाती धरि लीजे।
लारांगन सीमा वदीवला में भरि दीजे॥
दीपक के उजियार सभा जो बैठी दीखै।
नवका माहीं करत सैर दरया की दीखै॥

जलसों आग प्रगट होय

नोनिया गंधक और नौसादर बांधि पोटरी लावे।
जल की बूंद डारि कर मसले आग बरे दृष्टि आवे॥

अग्नि पवन सों प्रगट होय

मेंगाने ऊंट जराय सहत में नाखिये।
होय अग्नि की चाह तोड़ि धरि दीजिये॥
बरे पवन के लगात काम निज कीजिये।
फिर गठरी में बांधि ताहि धरि लीजिये॥

जैंमता हंसे

रवि दिन काला खर जहां पावे।
लोटन धूरि ताहि की लावे॥
थारी तरि धरि जैंमें कोई।
हंसे बहुत जैंमे नर सोई॥

जैमें पेट न भरे

रुख बहेड़ा सांझ शनि न्योत आवे।
जो कोई प्रात जाय रविपात तोड़ि लावे॥
वह लोय पगतर पत्ताधर कर जैंवे।
भरे न पेट खाय सो होये॥

जैंवत बमन करै

बगुला की विष्टा का जो नर तिलक करे।
जैंवत नेर जो वाकों देखे दखत बमन करे॥

अदृष्टि होय

दांत दाहिनी ओर चर्व ले बाजू बांधे।
काहू दीखे नाहि फिरे धरि गठरी कांधे॥

हाथ की वस्तु काहू को न दीखे

मैनसिल अरुहरि ताल घिरत गाया में नाखे।
ताकी गोली बांधि मोर को नित्य चुगावे॥
बीते जब दिन सात मोर की बीट उठावे।
कर में करिये लेप खेल यह सबन दिखावे॥
चांदी सुवरन आदि वस्तु जो कर में लावे।
दृष्टि न आवे काहु सभा को अचरज आवे॥

खेत सूखे

ऊंट कटेरा गंधक लावे दोउन को मिलवाय पिसावे।
खेत मांझ कई ठौर न खाये सूखा खेत खड़ा दरसावे॥

रक्त पुष्पश्वेत हों

रक्त पुष्प करबीर जो लावे।
अरु नोंनी गंधक मंगवावे॥

गंधक की धुआं लगावे।
रक्त पुष्प श्वेत हो जावे॥

होंठ सफेद हों

गंधक को धरिपान में जाहि चबाके कोई।
वाके होंठ सफेद हों मानिलेहु सब्र कोई॥
फिर जो चाहे चित्त सों वह नर नीको होय।
कांजी के कुल्ला करे तो वह आछो होय॥

टूटी चीनी को जोड़ना

लाय कली का चूना कोई अरु अंडा की घौल।
सान दुहुन कोंइकसां करले जोड़े चीनी खोल॥

सुवरण की जिला करण विधि

चौपाई

शोरा कलमी लाइ जरावे।
और कली का चूना लावे॥
दोनों को पानी में घिसिये।
सुवरण घट पर लेप जुकरिये॥

दोहा

धर धूप में सुखि वे जिलावे गिकरि लेय।
भूल चूक विधि में करे गुरु को दोष न देय॥

हथियार की जिला करन विधि

प्रथम खटाई काले गूदा और पुराना सिरका।
हथियारन की जिला करन को और लेय जल हड़का॥

बिगड़ा घृत सुधारन विधि

मन दो मन घृत मुदद्ती धरा भयाक ढ़वाय।
अथवा दुर्गन्ध उपजा धरा धरा सड़ जाय॥
चूल्हे पर धरवाय के प्याज गाँठि नखवाय।
सुधर जाय घृत पलबिषे डारे गाँठि कढ़ाय॥

सिंघाड़े और मूंग को कीड़ा न लगे

हींग मिला जल के विषें उन मटकों को धोय।
जिनमें मूंगादिक भरे क्रीड़ा लगे न कोय॥

दुशाला और कपड़ा की चिकनाई जाय

सेलखरी को पीस के चिकनाई पर फेर।
अग्नि कटोरा मांझ धरि तिहि के ऊपर फेर॥

बालक की नाभि के गुण

गुण बालक की नाभि के कहे सुनें सुख होय।
रोगी राखे पास तो रोग कभु ना होय॥

बोतल की चिकनाई जाय

काली सज्जी लायके चिंकनाई पर छाया।
तातें तेलसों धोइये चिकनाई उड़ि जाय॥

बच्चे के पहले दांत का गुण

टूटे दांत जो बालक का गिरे न पृथ्वी माहिं।
किसी यन्त्र सों लीजिये भूल चूकिये नाहिं॥

बैरी मुख बंधन

जो बड़ भागी राज में करे राज के काज।
बालक दांत जो पास हो तो सुधरे सब काज॥
बैरिन के मुख बंद हों कहें न ऊनी बात।
राज सभा के बीच में धरवि दिन रात॥

बालक नाल के गुण

सोरठा

जो नारी हो बांझ गर्भ रहा उसके नहीं।
सो खावे ला नाल पुत्र होय उसके सही॥

स्यार की नाभि विधि

हल्की गोल सुहावनी वन में उपजे घास।
कहीं करील के पेड़ में कहीं कांटेन के पास॥
स्यार नाभि कोक कहे कोऊ कऊआ को कांच।
ताकी विधि सगरी कहूं सुनो कान धरि सांच॥

नाभि एक घृत आधपा चढ़ा कड़ाही मांहि।
नीवे अग्नि बराय के देखत रहियें ताहि॥
नाभि जाय जरि धृत विपें लोहा सों रगड़ाय।
दोनों मिलकर एक जात हों तयै उतार धराय॥

दांत के कीड़ा मरें

दांतन में कीड़ा रहे जिहि ओरी तिहि पाय।
उसी तरफ के कान में बूंद घृत टपकाय॥
बीतें दोय घड़ी जवै कान दूसरे मांहि।
थोड़ा घृत नखवाईये सब कीड़े मर जाहिं॥

पेट पीड़ा शूलादिक मिटे

घिसे न नाभिक तरनी कतरें। गुड़ में नाखि मिलावे पतरे॥
बांधे चार गोलिंया ताकी। पीड़ा तुरत टरे रोंगी की॥
जो रोगी पीड़ा ले आवे। ताकों गोली एक खवावे॥
ताते जल संग पान करावे। जो पीड़ा में घटी न आवे॥
दो घड़ी बाद दूसरी खावे। ऐसी ही गोली चार खिलावे॥
शूलादिक पीड़ा मिट जावे।

मोहिनी तंत्र

शनि सोहरनी होय किसी की तब यह जतन आवे।
खिचड़ी जो बनाय ले जावे तिसके पीछें जावे॥

मुर्दा जहां जराया जावे उस खिचड़ी को नाखे।
वे सब लोग फिरे जब देखें कागन आगे चाखे॥
कुल्हड़ा में कुछ बचे सो खिचड़ी तिहि को ले उठ चाले।
नीव सामने आवे तासों मारे कुल्हड़ा डाले॥
चावल लगें नीव और भूपर न्यारे २ लावे।
गूगर खै चौराहा गाड़े प्रति शनि भोग दिलावे॥
धरे भोग में एक बतासा गूगर मन की धारा।
बीत जायं जब सातशनिचर लाय धरे निज द्वारा॥
चले चित जब किसी नारि पर चावर नींव चलावे।
तन मन धन नौछावर करके बिना बुलाई आवे॥
जब चाहे संग उसका छोड़ें भूवर चावरं खावे।
तोता की सी आंख फेर कर तुरन्त निकसि चलि जावें॥

पान मोहिनी

दीत वार इक बीड़ा लावे रजकसिला पर जावे।
नंगा होकर बीड़ा खोले बहुरी मूंदि तिहि लावे॥
बसन पहरि के घर को आवे पीछे फिर ना देखे।
जिहि को बीड़ा लाय खवावे सो नारी बस पेखे॥

मोहिनी

बरध मरे रविवार को ताका सींग मंगाय।
बायें पगतर नारि की तामें धूर भराय॥

गूगर धूनी खेय के जां गाड़े घर मांहि।
सो नारी बस होय है यामें संशय नांहि॥

तथा

संखा हूली जहां कोई पावे।
शनि को ताहि न्यौता का आवे॥
रवि दिन जाय उखाड़ि ले आवे।
गूगर खेकर दूध मंगावे॥
दूध गाय में पीसे सांधे।
चणा बराबर गोली बांधे॥
मेल मिठाई जिसे चखावे।
सो नारी बस अपने आवे॥

बसीकरन

कारे काग की जीभ जरावे, अरु मसाण की राख मंगावे।
बीसों नख शनि को कटवावे, उनको अग्नि मांझ जरावे॥
फिर निज वीर्य लोहु चटलीका जीभ का मैल उसांधे।
छहों वस्तु को इकठी करके चना बराबर गोली बांधे॥
एक गोली रविवार खिलावे, जिहि नारी को जो मन भावे।
सो तन मन धन तो पर वारे, बस होकर बांदी बन जावे॥

तथा

मंगल अथवा इतवार को इक साखा अंजीर मंगावे।
सो साखा कुतिया पर मारे रति करती पर ताहि जरावे॥

तिहि की राख मूत्र में अपने सान गोलियां बांध बनावे।
उक्त बार नारी के मारे एक गोली तो बस हो जावे॥

तथा

नेत्र चील रविवार मंगावे मिहीं बांटि धरवावे।
कस्तूरी केसर मंगाय के चाहे जाहि खवावे॥

तथा

बगुला मंगलवार मारके अग्नि मांझ जरवावे।
जो जो नारी खाय राख को वशीभूत हो जावे॥

राजा बश होय

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र उपवन में जावे।
लावे तोड़ अनार ताहि को धूप लगावे॥
दायें करसों बांधि सभा के मांझ जो जावे।
राजा इन्द्र जो होय तो वह भी बश हो जावे॥

स्त्री बसीकरन

माघ मास बुद्धाष्टमी स्वांति नक्षत्र जुहोय।
आक पेड़ को न्योंत के दूजा दिन रवि होय॥
उहां जाव को पलालहे पीसि धरावे ताहि।
जिहि के माथे नाखियं नारि तुरत बश होय॥

नारी बसीकरन

इन्द्रायन के मूल को पूष्य नक्षत्र में लाय।
बहुरूपी पर सोंठ औकरी मिर्च मंगाय॥
इन सबको इकतर करे गौ दूध में पीस।
गोली बांधि सुखाय रख जब चिंता उपजे सीस॥
गोली संदल संग घिसगे का करे ललार।
जो देखे वह वस्य हो कहा पुरूष कहा नार॥

हाथी वश होय

जब भरनी नक्षत्र हो आंवले का फल लाय।
गूगर खेकर गंधिये हाथी वश हो जाय॥

सिंह वश होय

ज्येष्ठ मांस में जेष्ठा नक्षत्र जब आय।
गाय दूध की खीर कर तामें खांड मिलाय॥
दिन भर यह मंतर पढ़े जिहि व नर्मिसिंह होय।
जब आवे वह सामने खीर दिये वश होय॥

जाप्य मंत्र

ओं ही बन जा बन मालिनी सिंह कीलनी कसि २ पद स्वाहा।

बसीकरन विधि

जो कोई अपने पांव के बीसों नख कटवावे।
सात शनीचर रवि के पीछे रवि दिन तिन्हें कटावे॥
खुटक बढ़ैया के नख मंगवा उनके मांझ मिलावे।
सबको धरि कुल्हिया के भीतर अग्नि मांझ जरावे॥
राख होय जब उनकी तिहि लेय माखन माहि मिलावे।
जो नारी वह माखन खावे बिना बुलाये आवे॥

तथा

सेत चिर्मिटी लाय पीस के रवि दिन कहूं जो कीजे।
निज लोहू में सानि बाँधि के गोली जतन यह कीजे॥
गोली मेलि मिठाई माहीं जिहि को आनि खवावे।
सो नारी निश्चें वश होकर तरुवा चाटत आवे॥

तथा

तिथि मावस निजवीर्य काढ़ि के पेड़े माँहि मिलावे।
घर कुम्हार के जाय चाक पर उलटा चक्र दिवावे॥
सात चक्र देके ले आवे गूगर धूनी खेवे।
जिहि नारी को पेड़ा खवावे बांदी होके सेवे॥
यह सब जतन अटोक कीजिये दूजा भेद न जाने।
चूके तो सब मेहनत खोवे मन परतीत न आने॥

पुरुष बसीकरन

जब रजस्वला होय नारि तब ऐसा जतन जु कीजे।
चार लोंग ले राखे भग में दिना चार लों भीजे॥
उन लोंगन को पीस खिलावे जिस नर को वह नारी।
वह नर रहे सदां बश उसके भूले बतियां सारी॥

तथा

निज बायें पग के जूता सम आटा तोले नारी।
उस आटे की करे रोटियां दिन रवि मंगल चारी॥
जो नर खाय ताहि यह जानों निश्चें निज मन मांही।
वह नर बश होवे नारी के रहे नार की नाई॥

अंजन बसीकरन

कमल पत्र गोरोचन पतरज सब सम लेकर पीसें।
अंजन करे कामिनी मांहे निश्चे विस्वा बीसे।

बसीकरन तिलक की वस्तुओं पर इस मंत्र को २१ बार जपे तब सिद्ध होय।

ओं नमो भगवते ज्वालाग्नि संध्यादिष्टा विनाय स्वाहा।

बसीकरन पान

सहस मूल और दूजी मिश्री टंक २ भरि लावे।
निज बीरज में ज्वारि बराबर गोली बांधि धरावे॥

पान मांहि धरि उसे चवावे जो नारी मन भावे।
सो तेरे बश होंके प्यारे निशदिन सुख उपजावे॥

सभा मोहिनी तिलक

गोरोचन पतरज और केशर और मैनसिल लीजे।
जल में पीसे तिलक लगावे जिहि सनमुख मुंख कीजे॥
सो बश होय प्यार सों बोले मन की घुंडी खोले।
राज सभा में यही मोहिनी मुख २ नीके बोले॥

मोहिनी

श्वेत आक की जड़ और कुटकी मोथा आनि मंगावे।
चौथा जीरा पीसि रूधिर में माथे तिलक लगावे॥
जो नारी देखे वह टीका देखत ही बश होवे।
कर्त्ता जो चूके ना विधि में तो पूरन पद पावे॥

बसीकरन अंजन

गोरोचन गजकेशर मैनसिल सबै बराबर लीजे।
घिसि आंजे आंखिन में अपने जिहि देखे वश कीजे॥

बसीकरन बुर्की

आक धतूरा की जड़ें वीट कबूतर लाय।
चौराया की खरि अरू गऊ बार मंगवाय॥
अरु मसान की धूरि ले सबको करले चूर।
जाके मस्तक नाखियं सो वश होय जरूर॥

बसीकरन

सोला मन फिशयो और किसी किस्म की मछली लेकर एक चीनी के बर्तन में डाले और उसको मीठे साल्ट आयल से भरदे और मुंह खूब बन्द करके रख छोड़े कि अन्दर हवा न जाने पावे।

दूध का बदल बनाना

तीन अण्डे लेकर एक बर्तन में तोड़े और खूब मचे और थोड़ा २ गरम पानी उसमें आधा पाइन्ट तक डाले और खूब हिलावे यहां तक की बिल्कुल साफ दूध की तरह हो जावे फिर उसको चाय और किसी चीज में डाल कर खावे पीवे।

दूध को सुखा कर रखने की तर्कीब

चौड़े बर्तन में दूध डालकर धीमी आंच पर सुच लावे और सुफूफ बनाकर बोतल में भर कर रख छोड़े मगर बोतल का मुंह बंद कर देवे काम पड़े तब गर्म पानी में भिगो कर काम में लावे।

बुर्की

सवा हाथ धोई गजी नाखि भभूरे माहि।
उड़ि ले आवे ताहिं कों जबैं गगन के माहि॥

चला जाय पीछे लगा चिन्ता चित न लाय।
जब धरती कपड़ा गिरे मांटी सहित उठाय॥
पीछे फिर देखे नहीं रजक सिला पर जाय।
मांटी न्यारी करि धरे कपड़ा वहीं जराय॥
धोबी की सिल पर जला राख धूर दोऊ लाय।
दोनों को धर लाय के मूगर खेवे ताय॥
राख लगाव आय है धूरि लगाये जाय।
इस तंतर के सम नहीं दूजा कोई उपाय॥

मोहिनी

कारी कुतिया व्याय जब बच्चा चूंखत होय।
दूध काढ़ि ताका धरे लोंग तीन दिन जोय॥
बहुरि सुखाकर नाखिये निज बी रजके माहीं।
पुरुष होय या स्त्री लोंग खवावे ताहि॥
देख तमाशा तंत्र का वह वश कैसे होय।
तनदे मनदे चित्त दे जो कर देखे कोय॥

जुआ जीते

हस्त नक्षत्र जब होय पंवार का मूल मंगावे।
शनि न्यौंते रवि लाय अग्नि पर गूगर नावे॥

रवि को हस्त न होय तो पूर्व दिन जावे न्यौत आवे।
विधि उक्त हस्त में ले घर आवे॥
जाय दाहिने हाथ बांध कर जुआ खेले।
लावे धन बहु जीति पुण्य चौथाई मेले॥

विद्या पढ़े

माघ कृष्णाष्टमी पूर्वा षाढ़ जो आवे।
अर्द्ध रात्रि जिह्वापर ओं ह्रीं लिखवावे॥
खुले हृदय की गांठि बुद्धि प्रकाशे ज्यों ह्रीं।
विद्या नित प्रति बढ़े गुरु को सेवे त्योंही॥

जंगार बनाने की विधि

जो चाहे जंगार बनाना करे नहीं कुछ देर।
ताम्र चूर इक सेर मंगावे नौसादर दो सेर॥
चीनी के बासन में भरि के रस नीबू का नाखे।
एक पोर ऊंचा चढ़ि आवे अलमारी में राखे॥
वस्त्र एक ऊपर से ढकि चिल्ला जब एक बीते।
बासन खोल जो वाकों देखे सिद्ध काम कर जीते॥
पक्की चीनी कोई बासन मिलें कहीं तौ लावे।
बासन तांबे का मंगवा के उसमें वस्तु भरावे॥
बासन गाढ़ जमी में देवे कोई जहां न पावे।
के चिल्ला बीते वाहि उघारे सिद्धि मनोरथ पावे॥

सिंदूर विधि

जो चाहे सिंदुर बनावे जो जो वस्तु कहूं सो लावे। सीसा एक सेर मंगवावे साभर आध सेर ले आवे। दो छटांक मंगवाय सुहागा शोरा तिगुना लावे। पहले सुहागा डारि कढ़ाही चूल्हे पर चढ़ावे। सीसा भरे भरै जब चुटकी शोरा को बुर्कावे। फिर चुटकी भरी नांखि सुहागा फिर शोरा फिर सांभर चमचा फेर रफार के बहरु सांभर ले बुर्कावे। इसी प्रकार तिहू वस्तुन कों बुर्के। चुटकी भर भर जब जरि जाय राख हो तब सिल पर पिह वावे। अरु ग्यारह बार कढ़ाही, में धरि दो दो घड़ी तपावे। होय सिंदूर चित होय राजी गुरु प्रताप निहारे। विधि में बुद्धि करे सब सुद्धी चित के मांहि विचारे।

धरन ठिकाने आवे

वन में अंधाहूली जाय शनि को न्यौता देवे।
डोरा बांधे रक्ता धरे गुड़ गुगरु खेवे॥
रवि दिन लावे मूल जाय छाया ना पड़े।
घर में लाय अटोक धूप दे मंत्र उचारे॥

जब लावे कोई जड़ी तवै ऐसा ही कीजे।
चूके विधि में नाहिं सिद्धि का प्याला पीजे॥
जिहि काहू की धरनि जाय तिहिं कों ले दीजे।
कदिपै दीजे बांधि मूल कों सब दुख छीजे॥
धरनि ठिकावे आय चित की चिन्ता जावे।
मंत्र जपिये मूल लाय तब सिद्धि पावे॥

और नमो रुद्राय सवा दृष्टा विनाय स्वाहा बीसे को वार जपेत सिद्धि।

सिर की पीड़ा जाय

लाय अनार ताहि जरावे।
दूध आक में ताहि भिजावे॥
छाया में सुखवाय पिसावे।
नास नासिका मांझ दिवावे॥
सिर पीड़ा जिहि के हो भारी।
रात्री दिवस वह होय दुखारी॥
नास लेय को कई इक बेरी।
छींक आवे बाको बहुतेरी॥
निकसे बल गम पीड़ा जावे।
सुखी होय अरु तन सुख पावे॥

मस्तक पीड़ा जाय

सोरठा

ले घोड़ा की लीद ताती कर रस काढ़िये।
टपकावे कर्ण मांझ मस्तक की पीड़ा टरे॥

मस्तक के कीड़े जायं

मूत्र ऊंट का जो कोई पावे तामें रुई भिजोकर लावे।
जहां होंय कीड़ा तहां धरें, बास पाय के कीड़ा मरे॥

सोता बालक मूते नहीं

जो बालक मूंते सपना में और डरे सूता सें।
ताजसेत मुर्गा का ख्वावे डरे न मूंते तासे॥

नेत्र जल स्तम्भन विधि

जाके नेत्र बहे जल निस दिन नख बालक का लावे।
ताकों ले अंखियन में फेरें रोग दोष भग जावे॥

नेत्र पीड़ा जाय

जाके नयन रोग कछु होंवे सो यह जतन उपावे।
बंदर विष्टा लाय लगावे नेत्र रोग मिट जावे॥

नासूर खोने की विधि

जाके हो नासूर नाक में ताकों दिन में खावे।
तब भुजंग की कांचरि घिस के जल में तहां लगावे॥
सूखे जबलों उठे न तबलों सूखे तवै जगावे।
पांच सात वर योंही करिये मुल रोग कटि जावे॥

कर्ण पीड़ा, राध बहना, बहरापन, बात पित्त, कफादिक के मस्तक रोग मिटै

अरलू की जड़ लायके ताको रस कढ़वाय।
तिहि में तेल चढ़ाय के नर्म अग्नि पकवाय॥
रसजर जावे तेल कों सीसा में भरवाय।
सम्पूर्ण कर्ण रोग को यही तेल मिट वाय॥

नासिका का रुधिर रुके

सूखा गोबर गाय का आनि पीस सुघवाय।
नासा लोही बंद हो चैन चित में आय॥

दंतादिक पीड़ा मिटै

सूखा गोबर गाय का दातों पर मलवाय।
पोतो में जो दर्द हो तो उनहूं पर मलवाय॥

अग्नि जरे का इलाज

जो कोई अग्नि से जरे ताका यही उपाय।
आक पात धरि अग्नि पर ताका रस टपकाय॥
जरे आंच पर और कछु जो न लगाया होय।
तो या रसको चुपड़िये ज्वाला सीतल होय॥

छाजन का इलाज

रुख खासन बीज जो लावे।
पीस पास गोमूत्र में नावे॥
तीन दिवस लों सरे।
बहुरि पीस मल्हम सी करे॥
छाजन ऊपर ताहि लगावे।
बीस बरस तक मिटि जावे॥

दमा का रोग मिटे

जरा तम्बाकू का गुललावे।
ढ़ाई सेर जलमाहीं न खावे॥
सारी रात रहे जल माहीं।
भोर छान राखे निज पाहीं॥
डार कढ़ाई मांझ चढ़ावे।
मासे तीन नमक डरवावे॥

जरके नीर राख रह जावे।
तब उठाय घर में धरवावे॥
रोग दमा जिहि को दुख देवे।
तिहि को नित्त त्रिमासा देवे॥

ताप उतारन विधि

कूकर मूत्र मृत्तिका लावे।
गोली करके धूप सुखावे॥
जिहि को तनके ताप सतावे।
ताके गर में गोली बांधे॥
बांधे गोली ताप मिट जावे।
चंगो होय चित्त सुखपावे॥

कर्ण पीड़ा मिटे

पात आक का लायके घी सो चुपरे ताय।
अग्नि पर तपवाय के रस लेवे कढ़वाय॥
जो रस डारे कान में पीड़ा सब मिट जाय।
पुन्य अर्थ जो दीजिये सोहू अति सुख पाय॥

कारे बाल श्वेत हों

दूध काढ़ि थूहर का लेवे तिल भेवे तिहि माहीं।
बार २ फिर फेर सुखावे करे काहिली नाहीं॥

तिसे पिराय के तेल कढ़ावे स्याह केश पर लावे।
सेत रंग ही जाय पलक में स्याही फेर न आवे॥

बाल उगें

जाके बार उपजते नाहों सो यह जतन करावे।
जो कलाय पकबाय जलाकर ताकी राख बनावे॥
कड़वा तेल मंगाय धरावे तामें राख न खावे।
दोऊ वस्तु मिलाय लगावे वहां बाल उग आवे॥

बाल बढ़ें

घोड़ा की मंगवाय लीद को अग्नि मांझु जरावें।
तिल का तेल अग्नि के तामें जरी लीद पिसवावें॥
बारों का बढ़ना चाहे ताकू लाय लगावे।
बढ़ै बाल थोड़े ही दिन में देखि २ सुख पावे॥

तथा

हाथी दांत मंगाय बन्द करि कुल्हड़ा में जरबाबे।
बाहर धुआं कढ़न न पावे गिलहि कमत करवावे॥
जरे दांत को नांखि आवला के जल में घिसवावें।
बारन पर करि लेप रात्री को खटिया पर सो जावे॥
भोर ही उठिके बार धोयके बढ़ि लावे हो जावे।
ऐसा जतन करे जो कोई बार बढ़े सुख पावे॥

उड़े बाल उगें

जाके बाल बादर खौरा से उड़ि-उड़ि गिरिगिर जावे।
हाथी का दांत जराके भेड़ दूध मंगवावे॥
दूध माहिं दांत को पीसे रसोत चने भरवावे।
तिसको गये बाल पर लेपे बाल बहुरिजम जावे॥

तथा

माखी की विष्टा ले आवे कारी मिर्च मिलावे।
दोनों को एकत्र पीसि के उड़ें बाल पर लावे॥
कई बार दिन भर में औषधि गये बार पर मलदे।
गये बार फिर कर जम जावें जरारूख खजों फलदे॥

बाल मुंडन विधि

गऊ दंत हरताल पांच मासा ले कोई।
अरु इतना ही जवार वार लावे वह लोई॥
दस मासे ले राख पोस्त तिहि पीस जु धरिये।
केला के रस मांझ सान कर लेप जुकरिये॥
सूखा जाय जब बार सों नोंचि उड़ावे।
फिर जब वे बढ़ि जायं इसी प्रकार उड़ावे॥

बाल उगे न हों

मरी जोंक कई एक सुखाके ऐसा जतन करीजे।
घोड़ा लीद मांहि चिल्ला भर गाढ़ जमी में दीजे॥
बहुंरु काढ़ि जहां मलवावे तहां बार नहीं आवे।
बार २ मुंडन तेंछूटे गुरु यों शब्द सुनावे॥

शुभाशुभ रजस्वला भेद

प्रथम रजस्वला होय महरिया ताका भेद बताऊं।
चित्त लगाय सुनो सब कोई शुभ अरु अशुभ सुनाऊं॥
रवि दिन जो राजस्वला होवे यह विधवा निश्चय कर होवे।
चन्द्रवार जिहि के लहू टपके भगवान ताके सुत होये॥
मंगल को दिसधिर दिखाई।
अपने जी सो आप वह जाई॥
बुद्ध जो हो कपड़न से नारी।
निश्चें हो पुत्री बहुतेरी॥
गुरु देवें सुत बली सपूता।
शनि चरदे औलाद कपूता॥
शुभाशुभ जो रजस्वला सोवे दिन में।
पुत्र जणे सुस्ती हो तिसमें॥

नैनमोझ का जर जो डारे।
अन्धा होय पुत्र सिर मारे॥
चंदन तेल जो आग लगावे।
होय पुत्र जो भीख मंगावे॥
हार जो पहरि दिखावे।
सुत मुरख होके दुख पावे॥
नख कटवावे हंसे हंसावे।
कारे होंट पुत्र के पावे॥
बेहूदी बन बात बनावे।
ताको पुत्र निलज्ज कहावे॥
कंघी करके बार जो पेखै।
बार घने सुत के सिर देखे॥
बहत नीर पीवे जो नारी।
गर्भ रोग सुत के तन भारी॥
रोवे तो जब सुत कों जीवे।
दुर्वल और दरिद्री होवे॥
पवन खाय तो सुत जो होवे।
सिर्री और बावरा होवे॥

दोहा

नारि रजस्वला होय जब अलग बैठि घर माहिं।
हरि चरणन मे चित्त धरि अति प्रसन्न मनमाहिं॥

चौपाई

जब स्नान चौथे दिन करे।
जिहि पर दृष्टी जाकर परे॥
जोहरि कृपा गर्भ रहि जावे।
तो वैसी सूरत सुत पावे॥

दोहा

चौथे दिन जो न्हाय धोय कर सूरत पति उरलाय।
मन में अति प्रसन्न होय के सूरज दरसन पाय॥

अफीम का नशा उतर जाय

जिस किसी ने अफीम जियादा खाली हो और बेहोश हो तो शरीफा अर्थात् सीताफल के पत्तों को पीसकर उनका अर्क उस मनुष्य को पिलावे भगवान चाहे तो उसी वक्त नशा उतर जायेगा।

दीमक का इलाज

एक तौला ल्कौड आफ मरक्यरी पारा हलकिया हुआ जिसको (कारोसिव सिविल मेठ) भी कहतें हैं। १४४ तोले पानी में मिलाकर उस पानी को किताबों और कागजों पर छिड़कें तो दीमक और दूसरे कीड़े कभी न लगें।

तदबीर दीमक दफा की

चित्तौर के पत्ते जलाने से दीमक दफा हो जाय।

मसानादिक रोगों का इलाज

जो पीपर के पेड़ पर जमे नीम का रुख।
अथवा एकहिं मूल सों उपजें दोऊ रुख॥
ढ़ाई पाती नीव की ढ़ाई मिर्च मंगाय।
तिहि की गोली बांधिके रोगी कों जो खिलाय॥
मिटि जावें दुख देह के पल्ला भारी मसान।
खांसी पसरी डबकि या बहुरि न पावे आन॥

पसली खांसी का इलाज

एक बाल सुबरन की लीजे।
अग्नि माहि ताती करि दीजे॥
खांसी जिहि बालक के होवे।
टीर उठे खांसी तिहि जोवे॥
तहां दाग बाली सों दीजे।
चंगा होय रोग सब छीजे॥

डबके का इलाज

शनि रवि बारे शशा मंगावे।
ताका रुधिर कढ़ाय धरावे॥

जो बालक रोगी कोई आवे।
जिहि को डबका बहुत सतावे॥
ताको मूली रुधिर खवावे।
खाते ही चंगा हो जावे॥
मिटे रोग सब उसके तनका।
चले न पसली उठे न डबका॥

पल्ले का इलाज

जिहि बालक पर पड़े जो पल्ला दुख पावे अति भारी।
सूखे मांस हाड़ रह जावें कृष देही हो सारी॥
जो कोई मंगल को जावे रजक सिला न्यौता का आवे।
दूजे मंगल ले बालक को उसी सिला पर जावे॥
जो कपड़े बालक तनमें ते उतार डरपावे।
दाल चने की जोले जावे सिला तरे दरकावे॥
बालक को सिल पर बैठा के जलसों वहां नहवावें।
बहुंरू कपड़े नये पिन्हा कर बालक को घर लावे॥
ज्यों २ फंरे दाल चना की त्यों बालक फूले।
देह रोग कढ़ि जावें सिंगरे बहुरि आय नहीं भूले॥

स्त्री का मसान रोग जाय

जिस नारी के होय मसान का खटका।
तिसके नहिं जीवे पूत कीजिये लटका॥

जब होवे नारी गर्भवती तब लावे।
कहीं ला बादर की बींट ताहि सुखरावे॥
एक पके पान में धरिके नारी जो खावे।
जो बीतें दिन इक्कीस तहां लों खावे॥
जब बालक पैदा होय चांवर भरि लावे।
तिहि घुट्टी मोम मिलाय कंठ में नावे॥
वह बालक अच्छा रहे और मंहतारी।
रख ध्यान हरी का करे पुण्य जो भारी॥

बालक के मसान का इलाज

शनि को जंगल जावे कोई।
गिरगट मारके लावे सोई॥
रवि को राख जराय करावे।
गूगर धूनी अग्नि धरावे॥
जो रोगी मसान का आवे।
ताको राख रती भर खावे॥
तनसों रोग तुरत कटि जावे।
चंगा होय ब्रह्म सुख पावे॥
बहुरि रोग तिहि पास न आवे।
पूरा गुरु यह भेद बतावे॥

परी की छाया का इलाज

छाया परियों की परे जिहि बालक पर आय।
वाका तन निर्जीव हो प्रतिदिन घटता जाय॥
कान पकर कर चूंटिये पीड़ा तनक न होय।
मांखी जो खिलवाइये उलटी करने सोय॥
जो चाहे इहि बात कों रोगी अच्छा होय।
कहूं जतन सो कीजिये निश्चें चंगा होय॥
बनवाके लावे प्रथम एक खटोला काट।
हो सेमर की लाकड़ी या पीपर का काठ॥
ताहि बुणावे सूत सों काचा होय जा सूत।
पांचो रंग मंगाय के बहुरि करे करतूत॥
उड़द चून का पूतला एक बनाकर लाय।
तिस पर रोगी अंग का मैल उतारी चढ़ाय॥
लावण लंहगे माहिं का टूक तनकसा लाय।
पुतला के सिर पर धरे मनु उठाय दाय॥
फिर पुतला को सात बर रोगी ऊपर वार।
उसी खटोला पर धरे अरु पांचो रंग धार॥

लेह हाथन पर जा चढ़ं पीपर ऊपर ताहि।
भिन्न भिन्न सब खोल के रंग को देय उड़ाय॥
जो हां पर होवे नदी ताहि उतर कर जाय।
रामसत्त है बोलके पुतला देय बहाय॥
जो नांही होवे नदी तो उसही पीपर धार।
मुख कर धो बैठे कहीं फिर आवे निज द्वार॥
ऐसा जतन जो कीजिये रोगी अच्छा होय।
फिर पास आवे रोग नहीं प्रतिदिन अच्छा होय॥

पानी की बदबू दूर करना

कुए या बावड़ी के पानी में बदबू अर्थात् दुर्गंधि आती हो तो पक्की शोखा सवा सेर कसीस उसमें डाल दें, थोड़ी देर बाद पानी की बात जाती रहेगी कसीस के पानी में मिलने से किसी तरह का नुकसान नहीं होता बल्कि मादे को तक विलय होती है इसी तरह जिस जमीन या जगह में पेशाब की बदबू हो थोड़ा कसीस पानी में घोलकर डालने से दुर्गंधि जाती रहेगी इसका अक्षर तजुर्बा किया गया है और कम खर्च में बहुत फायदा होता है।

सुनहरी लाख बनाने की तरकीब

बेनिसटर पन्टाइन ४ औंस उमदा शललैक ८ औस सोने के वर्क १४ बिरोजा पाउडर आधा औन्स मैगनेशिया रोगन टारपीन के साथ मिला या हुआ डेढ़ ड्रम।

अव्वल दर्जे की सुर्ख लाख

बेनस टरपन्टाइन ४ औन्स शललैक ६९॥ औन्स काली फूनी आधा औन्स सीना वरटाई आधा औन्स मैगनेशिया टारपीन के तेल साथ गीला किया हुआ डेढ़ ड्रम मिलावे॥

सुनहरी लाख मुहर के वास्ते

५ हिस्से शललैक और एक हिस्सा टरपन टाइन को गलाकर मिलावे जब ठंडी होने लगे उस वक्त उसमें अवरका जर्द चमकदार सफूफ या डव लैफ या डच गोल्ड मिलावे।

लाख स्याह वास्ते मुहराके

बलू रेजन (राल जर्द) १५ रत्ती चर्बी १ रत्ती मोम खालिस २ रत्ती काजल ३ रत्ती इन सबको आग पर मिलावे।

नीले रंग की लाख मुहर के वास्ते

चपड़ा लाख दो जुज स्मालट १ जुज ऐलोरेजन दो जुज इन सबको कूट पीस कर कपर छनकर धीमी आंच पर मिलावे।

रंग बिरंगी उम्मदा लाख

जुदे २ रंग की लाख लेकर अलग २ बर्तन में पिघलावे जब थोड़ी ठंडी हो जाय तब सबको एक जगह मिलाकर सांचे में डाले चाहे जैसी कलमें बनावे।

दो मित्रों में लड़ाई हो

सिर बिल्ली के बार लाय के चूहा बार मिलावे।
नीव पेड़ पर कांग घोसला तिहि की लकड़ी लावे॥
शनि को न्यौते रवि को लावे तीनों वस्तु मिलावे।
फिर जराय के तीनों वस्तुन गूगर धूप दिवावे॥
जिन दो मित्रन बीच नाखिये थोड़ी राख उठाके।
वैर होय और होय लड़ाई निश्चय कर मन साके॥

दो मित्रों में वैर हो

करकेंटा अरु मोर के सिरलाय सुखावे।
तिन्हें पीस चूरन करे यह जतन उपावे॥

दो मित्रों में वैर होय चित्त माझ विचारे।
धूनी उनकी दीजिये हित तुर्त सिधारे॥

तथा

घुग्घू अरु कौआ के पर लेकर एकत्र जरावे।
शनि दिन अर्द्ध रात्रि पर जारे गूगर धूनी लावे॥
जिर दोऊन में वैर करावे उनके सिर पर नाखे।
होय परस्पर वैर दुहुन में कपट चित्त में आवे॥

तथा

वस्त्र पुरष सिरबाल महरियां मंगल के दिन जारे।
तिहि की राख खवावे उनको बैर चंदैया मारे॥

तथा

करि नाग की कांचरी अरु न्याराके बाल।
दो मित्रन धूनी लगे उच्चाटन होय हाल॥

तथा

गधा मूत्र लेवे शनि रवि दिन धरती परन न पावे।
तामें राई रखे तीन दिन फिरले ताहि सुखावे॥
रवि दिन धूनी देले जावे जहां मित्र दो पावें।
उनके बीच डारकर आवे वैर भाव हो जावे॥

वैरी के घर कलह हो

दीत वार पंचमी दिन को घुरि मसाया जो लावें।
गूगर धूनी देके बाको बैरी के घर नावे॥
कलह होइ बाघर में निश दिन बैरी अति दुख पावे।
बैर करे का वह फल पावे घर सों निकरि जो जावे॥

तथा

जो मलाया में जाय सोलोई।
हाइ गोड़ देखे तस होई॥
वाये पग की नली जो नाये।
छील छालकर कील बनावे॥
शत्रु के घर में जा गाढ़े।
रार सदा वा घर में बाढ़े॥

तथा

चूहा और विलाव के टंक २ भर वार लेके उर से छान में दुर्जन के रविवार वाघर में विग्रह मचे कलह रहे दिन रात जब्र काढ़े तब ही मिटे सगरो वह उत्पात।

तथा

कूकर सूकर और विलाव इन तीनों के दांत मंगाय, फिर मंगाय मरघट की राख तिहि में धरि

चौराहा नाख, पांचों वस्तु इकट्टी कीजो बैरी के घर लाय गढ़ीजे, कलह होय रात्रि दिन भारी रिपु को चित हो बड़ी को दुखारी।

तथा

लोटे गधा दुपहरी रवि दिन अथवा भैंसा होय।
ताकी धूरि अटोक लाय के गूगर खेवे कोय॥
उक्त धूरि जिहि रिपुके मांथ नांखे निश्चय होय।
कलह राति दिन व्याकुल होवे करे परीक्षा कोय॥

वैरी का मूत्र बंद होय

बैरी मूंते जिहि जगे छांकी मांटी लाय।
खाल छछूंदर में भरे जो रवि दिन मारी जाय॥
ऊंचे पर टांकिये मूत्र बंद हो जाय।
कै गूगां कै बावरा वैरी हो दुख पाय॥
जब आछा करना चहे माटी खाल कढ़ाय।
जब लो मांटी खाल में तब ही लों दुखपाय॥

वैरी मांदा होय

औंधी जूती पांव की रवि शनि लावे कोय।
गरम करे पानी विषे बैरी मांदा होय॥

वैरी दुःख पावे

चन्द्रवार और मंगल को धूरि मसाण मंगाय।
उसमें राई आनि मिलावे लकड़ी आक जराय॥
तिहि अग्नी में दोऊ वस्तु को बीसवार कर होमें।
आहुती के साथ नाम बैरी काले ले होमें॥

नाम लेवा की विधि

अमुकस्य हन हन स्वाहा।

वैरी बावला होवे

पांख दाहिनी भुजा काग की और स्यार की पूंछ जो कोई।
रवि दिन लाय धूप दे गूगर करे जतन ना चूके सोई॥
दोऊ वस्त खटिया तर उरसे भेद न जानना पावे कोई।
जो नर वाखटिया पर सोवे सो दीवाना निश्चय होई॥

वैरी कष्ट पावे

मूंते हगे जहां पर बैरी तहां डंक बीछू का लाई।
रवि दिन गूगर खेकर गाढ़े कष्ट प्राप्त होवे ताई॥

भूत जाय

रवि दिन भूल धतूर का जो बांधे करलाय।
भूत जाय बाका सही बुहरि न कबहू आय॥

भूतादिक उतर जाय

लहसुन का अर्क काढ़िये तामें हींग मिलाय।
तिहि को आंजे नैन में भूत तुरत भग जाय॥
अथवा या की नासदे देवे ही भूतादि।
जो दुख देवे देह को उतर जाय बिन वाद॥

तथा

तुलसी पर पत्र अरु गोल मिरच ये आठ-आठ मंगवाय।
सहदेई की मूल को रवि दिन विधि सों लाय॥
तीनों को एकत्र कर बांधि गरे में देय।
भूतादिक सब दुर हों रोगी अति सुख लेय॥

धूनी डाकिनी भूतादिक सब दोष जायं

नीव पात बच हींग मंगावे।
सर्प कांचुरी सरसूं लावे॥
इन्हें मिलाय धूप जो देवें।
भूत डाकिनी के दुख खोवे॥

ब्रह्म राक्षसादिक जायं

शेरख मुंड़ी गोखरू और बिनौला लाय।
गऊ मूत्र में बांटिके तिनकी नास दिलाय॥

भूतादिक जावें सवै ब्रह्म राक्षस कढ़ि लाय।
यह अति सुन्दर धूप है सगरे दोष मिटाय॥

तथा

संखा हूली मूल मंगावे। रविदिन विधि पूरी करि लावे॥
चांवर अथवा घृत विषें पीस नास जो देय।
भूतादिक के दोष सब दूर होंय सुख लेय॥

धूनी भूतादिक सब प्रकार के दोष जायं

मोरचंद्रिका और कटेरी आनि के।
मरुआ शिव निर्माल बिनौला लानिये॥
बिल्ली विष्टा तज छड़ तीनों पाइये।
तुस वचके स इन्हें मंगवाईये॥
सींग गाय का लाय सांप की कांचुरी।
हींग अरु काली मिर्च सर्प दंतावली॥
बर्द्ध दांत से सबको सम तुलवाइये।
सबको ले पिसवाय कहीं सुखराइके॥
सब प्रकार के दोष इसी से जायेंगे।
माहेश्वर यह धूप अधिक अधिकायेंगे॥

भूतादिक रहन न पावें

सेत मुर्ग जिहि घर में रहवे भूतादिक नहिं आवें।
भीर पड़े जो सुमरन कीजे ताको बोल जगावें॥

भूत दीखे

गंधक मीठे तेल को ले पारी बार।
भूत भयंकर दृष्टि में आवें बारम्बार॥

तथा

चिनौटी रस आँखिन में आंजे।
दीखे भूत भयंकर साजे॥

तथा

सुर्मा राखे योनि में एक दिवस रज माहिं।
वाकों होमे अग्नि में भूत दृष्टि में आहिं॥

पूर्व जन्म दीखे

अंकोल बीज का तेल कढ़ावे, तामें घृत मिलावे।
दिया बार के काजर पारें, पुखनक्षत्र जब आवे॥
अंजन करे नैन भर दोऊ हीये ध्यान लगावे।
जो यह जतन न चूके कोई पूर्वजन्म दिखावे॥

देवी देवता दीखें

फल अंकोल का तेल कढ़ावे, फिर यह जतन करावे।
चूरन करे तगर एक फल का दुह मिलि अंजन लावे॥
जहां दृष्टि तहां लखे देवी देवता देव दिखावे।
तेल तगर का अंजन दीजे दृष्टि मान सी पावे॥

पितृ दीखें

मूत्र गधे का रवि दिन लावे। जमी पड़न ना पावे।
गूगर खेय कहीं धरि देवे नैंनन मांझ लगावे॥
पितृ देव सब देंहि दिखाई रात्रि समें जो कीजे।
जतन करे सो चूके नाहीं तौर न देखि पसीजे॥

चरित्र देखे

मूल चिर्मिटी रुई में बाती धरे बनाय।
कारी गैया घिरत ले दीपक मांझ भराय॥
चौका दे दीपक धरे गूगर खेवे ताय।
ले सिन्दूर पूजा करे कछु चरित्र दरसाय॥

चित्र रोवे

जबै गर्भिणी जणे जो बालक तब इतना छल कीजे।
झिल्ली जो बालक के ऊपर सो मंगाय के लीजे॥
धरे सुखाय कोई नहीं जाने जहां जतन यह कीजे।
मूरत जहां चित्रसाला में तिनको धूनी दीजे॥
झिल्ली जरे धुआं जब लागे दृष्टि सवन की आवें।
रोवे चित्र जहां लग जेते आंसू नैन बहावें॥

चित्र लोप हों

बालक जणे गर्भिणी नारी झिल्ली तुरत मंगावे।
अरु दूजा विलई का आंवल दोऊ दूध पकावे॥
धूनी दतो चित्र लोप हों भैंसा गूगर लावे।
ताकी धूनी देत तुरत ही चित्र सबै दरसावै॥

चित्र दिया तपाये दीखें

आंक दूध सों सूरत लीखे।
दीया तपाये सूरत दीखे ॥

चित्र हंसे

वीर बहुट्टी गंधक साने धरे अग्नि पर खेल दिखावे।
अथवा बाती वानि जरावे हंसे पूत्री जियू भिर्मावे॥

पनिहारी का घड़ा खाली हो फिर भरे

चोंच हंस की लाय के जब दिन मंगल आय।
पनघट के मारग विषें एक लकीर कढ़ाय॥
जो जावे तिहि लाघ के पनघट की पनिहार।
जल बिन खाली जानिके मटका फेर निहार॥
जब हां से उलटी फिरे भरा घड़ा दृष्टि आय।
मूरख तानिज जानिके फिर लंघन कार जाय॥

जब आवे वह वार को मटका खाली आय।
फिर जावे जब पार को भरा हुआ दृष्टि आय॥

पनिहारी का घड़ा फूटे

अंत मांस का मंगल आवे। जब यह जतन करावे॥
जो कुम्हार का डोरा लावे। गूगर अग्नि धरावे॥
रात्रि में जलपग धरि बैठे दक्षिण मुख हो जावे।
गन मांझ दृष्टि को राखे, अंतभाव ना लावे॥
उस डोरा में सात गाँठि दे जब २ तारा टूटे।
गूगर धूनी देकर उसको मन इच्छा फल वूटे॥
बहुरूं डोरा लाय के नाखे मारग में पन घट के।
लावत ही घट पनिहारी का फूट जाय वे खटक॥

लोहा की पाटी पर लिखवाने की विधि

नौसादर अरू नीलाथोथा जो कोई मंगवावे।
दोनों वस्तु को नीबू का रस मांझ मेल पिसवावे॥
लोहा की पाटी पर लिखके जाय कहीं धरवावे।
अक्षर पाटी में धसि जावे ले स्याही भरवावे॥
चाकू ऊपर नाम लिखावे ताको चोर न लेवे।
विद्या जाने बहुफल पावे जो मांगे तिहि देवे॥

पत्थर पर लिखे

औटा लेवे तिल का तेल।
लानि मोम तिहि भी तरमेल॥
पत्थर ऊपर लिखे जो कोय।
सिर का मेले धांवे सोय॥
चार दिवस पीछें ले धोवे।
अक्षर मिटे न जो जुग होवे॥

वस्त्र पर लिख जल से धोवे तो अक्षर दीखें

फूल सिरस का लावे तोड़।
कूट छान रस लेय निचोड़ा॥
रस सों कपड़ा ऊपर लेखे।
सूखे अंग प्रगट नहिं देखे॥
सो कपड़ा जल भेवे कोई।
अक्षर प्रगट तवै सब होई॥
चिट्ठी पकड़न भय जब होई।
ऐसा यन्त्र करे तब सोई॥

हथेली पर राख मलने से अक्षर दीखें

दूध मदार लाय कर रखे।
नजर बचाय हाथ पर लिखे॥
जब सूखें अक्षर तब धावे।
भरी सभा में खेल दिखावे॥
राख मले अक्षर पर ठेल।
प्रगट दिखावे साचार खेल॥
दंभी निजमाया दिखरावे।
तब वह ऐसा खेल दिखावे॥

कागज को धूनी दें तो अक्षर दीखें

लिखे आंक के दूध सों जिहि कागज के माहिं।
गंधक धूनी जब लगे तब अक्षर खुल जाहि॥

कागज जल में डालने से अक्षर दीखें

नीबू के रस मांझ फिटकरी अग्नि मिलावे।
कागज पर कुछ लिख लिखायके तुरत सुखावे॥
दृष्टि न आवे कहा लिखे अक्षर हैं यामें।
जल में नाखे जवै तवै अक्षर दृष्टि आवें॥

तथा

चूना लाय कली का चोखा अक्षर जासु लिखावे।
जब कागज को जल में डारे तब अक्षर दृष्टि आवे॥

अग्नि पर सेकने से अक्षर दीखें

रस निकाश कर प्याज का लिखे जो अक्षर कोय।
कागज सेके अग्नि पर तब वह घट होय॥

अक्षर पीलें हों

नौसादर अरु दूध मिलाकर जो अक्षर लिखवावे।
अग्नि दिखाये पीरे दीखें चाहे जाहि दिखावे॥

तथा

रस प्याज में घिसे छुहारा कागज मांहि लिखावे।
लिख के धूप दिखावें लाल अक्षर हो जावे॥

तथा

राई और छुहारा लेके पानी मांझ पिसावे।
तासों लिखके धूप दिवावे लाल अक्षर हो जावे॥

सुनहरी अक्षर हों

पत्ती कौंच मंगाय के ताका रस कढ़िवाय।
तिहि में चूना पीसि के कागज पर लिखवाय॥

अक्षर सुबरन के दिखें चित देखि हरसाय।
ऐसी ही विधि सौं लिखै जिहि के मन में भाय॥

अक्षर उड़न विधि

नौसादर अरु संखिया और सुहागा लाय।
तीनों सम एकत्र करि अंकन पर लेपाय॥
बहुरि धूप में ला धरै तनक लगावे वार।
अर्क धूप पाये उड़ै गुरु चरण वलीहार॥

तथा

अक्षर ऊपर सहत लिपोवे।
किल्क बार से जल भर धोवे॥

लाखी स्याही बनाने की विधि

कत्था सेत पैसा भर लेवे आधी कारी साजी।
विजैसार की लकड़ी लीजै पैसा भर मन राजी॥
सबको नाखि पावभर जल मं सारी रैनि जुराखे।
भोर चढ़ा चूल्ह औटावै पक जावे मन साखे॥
ताहि उतारि धरे सीसा में कारापन जो चाहे।
हड़बहेड़े आंवले का जल इहि में लाय नखावे॥

काली स्याही साफ बनावें

केला का रस आठ पहर कड़ाई में नखवावे।
माजूफल का रस हूलेके ताहि में नखवावे॥
माजूफल को पीसि भिगोवे जल में निशिभर राखे।
भोर औट के उसको किसी वस्तु में न नाखे॥

नीली स्याही

कालर लाय एक पैसा भर तिगुना गोंद मगावे।
पैसा २ भर फिटकरी बिजै सारहू लावे॥
पीस फिटकरी जल में नांखे मले हाथ में लेकर।
उनका जंल काजल में नांखे घोटे गोंद मिलाकर॥
विजैसार का करके चूरन जल में डारि धरावे।
ताका जल स्याही में देकर आठ पहर घुटवावे॥
तवि का बर्तन हो जिसमें स्याही में देकर आठ पहर घुटवावे।
बन जावें तब सीसा भर कर चाहै जहां धरावे॥

पक्की स्याही लाखी

पीपरी लाख पाव भर लाके ताकों धोंय धरावे।
फिर कोरे खंपरे में जल भरि चूल्हे पर चढ़ावे॥
पानी लगे बोलने जब ही लाख पीस कर डारे।
जब पक जावे लोध पठानी धेला भर ले डारे॥

फिर इतनी ही सज्जी डारे इतना लाय सुहागा पकजावे।
तब ले उतार कर ताम्र पात्र में नांखे।
काजर बांधि पोटरी फेरे मिल जावे तब राखे॥
दिना तीन लौं ताहि घुटावे बहुरि जो लिखकर देखे।
ऐसी स्याही सों लिखाय कोई पुस्तक जब मनमाहीं हरखे॥

काली स्याही कच्ची

दो तोला भर काजर आवे, और फिटकरी इतनी।
दोनों सम माजू ले आवे, गोंद लाय इस वजनी॥
तिहूं वस्तु को जल में नाखे पीस कूट कर नारी।
काजर को जरवाय अग्नि में पगे कचाई सारी॥
प्रथम गोंद झलमाहीं पोटरी काजर बांधि पिसावे।
बहुरूं जल दोउ वस्त भिन्न कर बारी २ नावे।
घड़ी तीन लौं घुटावे उतना ही गुण लावे॥

शिंगरफ बनाना

तोला भर सिंगरफ मंगवावे जल में ताहि पिसावे।
फिर चौथाई गोंद मिलाके दो रत्ती पारा नावें॥
मासा एक नीम दो मासा मिसरी तिहि में छोड़े।
जितना घोटे हो गुण तितना घुटवाके रख छोड़े॥

सुवरण हल करन विधि

सरेस मछलियां ले दो तोला ताकों अग्नि चढ़ावे।
छै मांसे सुवरन का मात्रा हल करने को लावे॥
लाय रकावी काची चीनी बहुरि जतन यह कीजे।
प्रथम नाखिये लौन तनकसा सरेस चौथाई धरिये॥
तामें सुवरन पत्र डारि के पहर एक घुटवावे।
चार अंगुरी से घुटवा के पानी डारि मिलावे॥
प्याला भरिके अलग धरावे बैठि जाय तब सोना।
फिर काढ़ें और सरेस मंगावे फिर घुटवावे उतना॥
फिर जमाइये बैठि जाय तब फिर काढ़े घुटवावे।
तीन चार बारी ऐसे ही घुट कर साफ हो जावे॥
रख छोड़े चीनी प्याली में किल्क बार सों लिखिये।
स्याही लावे तो धरि आमी पर ताको जोश दिलैये॥

रांग हल करन विधि

दो तोला ले रांग सरेस तोला भर लेवे।
दोनों को मिलाय सिला ऊपर धरि देवे॥
पकड़ हथोड़ा हाथ में कूटे चोट लगाय।
और रूखानो हाथ ले तासु लगाता जाय॥

जड़ कुटकर इक जात हो तब उठाय, धर ले।
जल मिलाय जो कुछ लिये गोहरू फिर बादे॥

सुवर्ण हल करन विधि

सुवरण केले पत्र को मिमरी से घुटवाय।
चार बार बैठाय कर फिर उसको घुटवाय॥
जब लिखि को चाहे कोई तनक गोंद मिलवाय।
लिख अक्षर सुखराय के मुहरा तुरत फिराय॥

घोड़े के लाल, काले बाल श्वेत करन विधि

संखिया और गुड़ को मंगवावे।
पेठे के रस मांझर लावे॥
खरल कराय मिट्टी पिसवावे।
घोड़े पर कहीं ताहि लगावें॥
जिन वारन पर लेप करावें।
श्वेत बार सिगरे हो जावें॥

ऊंगा बन की रूखड़ी का गुण और सिद्ध करन विधि

शनि संध्या को बन में जावे।
जहां पेड़ ऊंगा का पावे॥

तार कलाण लात सब और ऊंगा को लेय।
ठौर तरे की गाढ़ की उब पड़ै चित देय॥
तार कंथि कें पेड़ सौंजन को तरै धराय।
गूगर धूनी खेयकें न्यौता दे सिर नाय॥
कहै जो न्यौंता मनिये सिद्ध कीजिये काज।
तुम्हरी महिमा को कहै हे सिर के सिरताज॥

इतना कह निज घर को आवे।
पाछैं फिर कर दृष्टि न लावे॥
रवि दिन प्रात काल हूं जावे।
नयन होय कर वाकें लावें॥
दांए कर सौं वांहि उठावे।
तार कलाया जब हूं लावे॥
जो पेड़ हो जड़ संती ऊंचा।
सो लावे जड़ सहित समूचा॥
सूरज उदय होन नहीं पावे।
छाया तिहि पर पड़ नहीं जावे॥
चलि जावे मुख फेर न जावे।
घर ला धूप अग्नि पर धरवावे॥
छाया किहि की पड़न न पावे।
स्वच्छ ठौर में ताहि धरावे॥

धरन ठिकाने आवे

पुष्य नक्षत्र शुभ जब ही आवे।
सुवरन के ताई तब नावे॥
सिद्ध किये ऊंगा को लीजे।
धरताईत बंद मुख कीजे॥
जाकी नाभि कहीं टर जावे।
ताकी नाभी पर बंधवावे॥
धरन जाय धरन पर बांधे।
कौड़ी हटै कौड़ी पर साधै॥

हाजरात

सूखी साख ऊंगा की लीजे।
बाती रूई लपेट करीजे॥
दीये नये में घिरत पुरावे।
तामें बाती नाखि जरावे॥
उच्चवरण का बालका स्वच्छ पहराय।
दीपक सन्मुख दृष्टि कारे पूछे ताहि बताय॥

भूख नहीं लगे

सुन्दर खीर पकाय के ऊंगाले नखवाय।
गूगर धूनी खेय के सता करे चितलाय॥

फिर हांडी मुख बंद कर चूना पीसि लगाय।
अथवा गुड़ चूना मथे हांड़ी मुख पर लाय॥
भीतर जल जावे नहीं ऐसा मुख मुंदवाय।
बहते जल में गाढ़िये पाताल स्वर खुदवाय॥
जितने दिन की शर्त हो भूख लगे ना ताय।
बीतत ही मियाद के खीर काढ़ि के खाय॥
फिर लागेगी भूख बहुमन चाहे सो खाय।
विधि में चूक न कीजिये गुरू को दोष न लाय॥

बिच्छू का विष उतरे

बिच्छू का डंक जहां कहीं लावे।
पाती ऊंगा पीस खवावें॥
धरे डंक पै विष जर जावे।
पीड़ा टरे देह सुख पावे॥

इति ऊंगा विधि॥

मस्सा कटै

शोरा कल्मी कोई मंगावे।
मूली के रस में डलवावै॥
मस्सा को कटवाय लगावे।
तो मस्सा उपजन ना पावे॥

भैरव पकड़न विधि

जवै अमावस्या की रात्रि को निज वीर्य निकासै।
ताहि सुखाय पिसाय के धरे निज पासै॥
दूजी अमावस आए जब आंखिन में लावे।
जहां आबें भेड़ी बकरियां संध्या समये जावे॥
भेड़ व बकरे पर सवार जब दृष्टि आवे।
ताकी कुलह उतारि के निज कर में लावे॥

॥ दोहा॥

भैख तेरे पास आयकें मांगे टोपी।
धरि ले कहीं छिपायन देवे उसको टोपी॥
जब लौं टोपी रखै पास वह बसि है तेरे।
कहे उसे जो काम तुरत करि लाय धनेरे॥
तीन वचन जो देय याद करते ही आऊं।
तब टोपी को देय यही विधि और बताऊं॥

अन्य प्रकार

शनि रविवार जो रात्रि को यह जतन उपावे।
एक भैर कहीं बैठि गगन में दृष्टि जो लावे॥
तारा टूटें तुरत गांठि पगड़ी में देवे।
जब हो जावें गांठ सात तब गूगर खेवे॥

फिर पनघट पर जाय बैठिये कहीं इक ठौरी।
पनिहारी भरि चले सीस धीर मटकी जोरी॥
खोले एक जो गांठि गिरे मटका जब फूटे।
ऐसे ही खेलत जाय गांठि टौर कटकी टूटे॥
जब कोई साबित रहै घिरगंना ताको लावे।
जहां भेड़ बकरियां जायं तहां संध्या को जावे॥
घिरगंना में सौं करै दृष्टि पास भैरव दिखरावे।
हाथ डारि वाकी टोपी लावे॥
फेर घिरगना के जाय सिला पर टुकड़े कीजे।
मांगे टोपी आय सो टोपी कबहूं ना दीजे॥
तबलौं टोपी रहै पास बस भैख रहवें।
तीन वचन ले देय तो टोपी नित संग रहवे॥

अटूट भंडार

जहां पुरानी होय जगह होरी जरिवे की।
तहां करे वह विधि गुप्त जो है करिवे की॥
गाय घिरत अस तेल तिली गेहूं मंगवावे।
चौथी ज्वार मंगाय और इक पैसा लावे॥
डांड़ो गाढ़ै तहां सबन को माढ़ि धरावे।
जा निशि होरी जारिये यह जतन करावे॥

प्रातःकाल लावे उखारि नहीं जाने कोई।
ले वस्तुन को धरे बाँधि वस्तुन में जोई॥
खर्च करे बहुभाँति घटेगी कोई नाहीं।
विधि में चूके नांहि सतय माने मन मांहीं॥
तेल तर्जनी सिर लगाय सूरज विखिरावे।
बैरी के घर निकरे तो अग्नि जरावे॥

तथा

मरी चिड़िया धरै अन्द जी घुसल माही।
धरि आवे सतनजा तूहीं को आने नहीं॥
जब बच्चे उड़ि जायं सतनजा चुनि के लावे।
धरवे कोठी मांझ अन्न में घटी न आवे॥

तथा

जहां घोंसला उक्त धरै धरती सुखवावे।
धरे अठन्नी एक ईंट भरवाय गढ़वावे॥
निश्चैं करि यह जानि चिरैया ताहि निकासै।
मन इच्छा फल देय राखिये अपने पासै॥
जो मिलि जाय तो लाय अठन्नी गूगर खेवे।
धरै रुपैयन मांझ खर्चिये टूट न आवे॥

खर्च हुआ धन फिर आ जाय

रवि दिन यत्न करे जो कोई।
जाय जहां मेंढक तहां होई॥
मैथुन करता मेंढक पावे।
नरमासी दोउ न को लावे॥
प्रथम गूगर की धूनी देवे।
बहुरि यन्त्र ऐसा करि लेवे॥
नरमुख मांझ रुपैया मेले।
मादा के मुख धेली पेले॥
फिर दो उनको टीका कीजे।
हाथ जोड़ी दोउ न्यौता दीजे॥
बहुरू ताल होय जहां जावे।
दोउन को वहां हीं ले जावे॥
नर को पूरब ताल गाढ़िये।
मादा पश्चिम ताल गाढ़िये॥

दोहा

नगन होय तहां गाढ़िये दोउन को ले जाय।
पग छाया नर नारी की तहां न पड़ने पाय॥

चौपाई

विधि में चूक पड़न नहिं पावे।
आठ दिवस बीतें तब जावे॥
खोद ठौर इक २ को देखे।
चिन्ह दोऊ ठौरन के पेखे॥
जो उड़ि जाय दूसरे के कन।
खर्च कीजिये उसका ले धन॥
अपनी ठौर तजी जिन नाहीं।
तिसका धन रहै थैली माहीं॥
खरचा धन थैली में आवे।
थैली का धन कहीं ना जावे॥

दोहा

जब लौं धन थैली धरा रखै चौकसी संग।
तब लौ धन खर्चा करे कभी न होवे तंग॥

तथा

दोय पूंछ की छपकली ताकों पकड़ि तो लाय।
उसकी भी दो पूंछ में ऐसा ही गुण पाय॥

गुटका मारग चलै हार न माने

कारी तीतर पकड़ कर ऐसा जतन करावे।
तीन दिवस लों भूखा राखे चौथा दिन जब आवे॥

मासा चार मंगाय के पारा चोंच खोल मुख मेले।
चावल गऊ दूध में भेवे सो आमी धरि ठेले॥
खाकर बीट करे जो तीतर ताकों गुटका जाने।
मारग चलै हार नहिं माने रति में वीर्य न हाने॥

वस्तु बिक शत्रु दबे

बागल जिन रूखन पर पावे।
रवि दिन प्रात काल हो जावे॥
शनि दिन जाय न्यौत कर आवे।
हारी एक तोड़ कर लावे॥
पीछे फिर कर कभी न देखे।
घर पर जाकर आनन्द पेखे॥
मंत्र जपै सिद्ध कर लेवे।
बैठे पग तर डार दवावे॥
वस्तु बिंके अति आनन्द पावे॥
जो कोई पात धरे सिर माही।
दबे शत्रु चिंता चित जाहीं॥

मंत्र–अचिंमो चंड अलसुर स्वाहा एकोशतवार जपे सिद्धि।

पृथ्वी का गढ़ा धन दीखे

लाल पूंछ की बामनी ताको पकरि मंगाय।
तिहि कालोंही लीजिये और मैनसिल लाय॥
दोनों को मिलवाय के आंजे आंखिन माहिं।
धन दीखे भूखा धरा और गढ़ा तिहि नाहिं॥

तथा

काली मुर्गी ले इकरंगी जिहि का काला मांस।
जिहि की चर्बी नैनन में आंजे मूधन दीखे तास॥

तथा

काली गैया दूध लाय जिव्हा पर नावे।
अरु वाको घृत लाय दोऊ नैनन में लावे॥
जहां होय धन गढ़ा दबा दृष्टि में आवे।
तिथि नक्षत्र शुभ होय तवैं यह जतन करावे॥

पृथ्वी का गढ़ा धन जाने

जहां पृथ्वी को खोदिये वास कमल की आय।
तहां गढ़ा धन जानिये खोदी काढ़ि ले ताय॥

तथा

जहां काग मैथुन करे अरू बैठे सिंह आय।
निश्चैं ऐसी ठौर में दे धन गढ़ा बताय॥

तथा

जहां ज्येष्ट आषाढ़ में रूखन पर पत्र आय।
अन्य किसी ऋतु में नहीं तहां पात दृष्टि आय॥
तहां गढ़ा धन जानि के लावे मन विश्वास।
इन्द्रजाल यो कहत है करै परीक्षा तास॥

तथा

आस पास जिहि ठौर के जल का चिन्ह न होय।
और भान की तस में रहत आल निज होय॥
जा अग्नी बारें वहां प्रगट कभू ना होय।
तो निश्चें यह जानिये यहां गढ़ा धन होय॥
जहां भन तपता रहे हरी रहै नित घास।
चौपाए खाते रहें घटी न देंखे तास॥
नित खावे नित ऊपजे नित नवीन तरू होय।
तहां पृथ्वी के पेट में धन निश्चय कर जोय॥

परीक्षा

जहां गढ़ा धन जानिये मटका एक मंगाय।
गेंहू भर कर माढ़िये सात दिवस हो जाय॥
तब उरवारि देखे तिन्हैं गेंहू सब मरि जाय।
तो निश्चय यह जानिये गढ़ा माल तहां पाय॥

गड़ा हुआ धन देखने का सुरमा

कारा कांव मगाय के बिल अरू जीभ कराय कढ़ाय।
तेल नाहिं पिसवाय के पाथर पर पिसवाय॥
जो नर पायन सों भया तिहि के नैनन आंजि।
ऊपर पत्ता अंड़ का वांधि करे निज काज॥
गढ़ा धरा धन होय जहां तहां जो देखे आय।
निश्चैं बाकी दृष्टि में धन संपति सब आय॥
जब वह देखन को चले संग होयं न चार।
जासों बाकों भय न दें धन के चौकीदार॥

रसायन विधि

तब कीजे हरि ताल हर्दिया जहर मिलावे।
तीजा पारा लाय तोल प्रति पैसा लावे॥
चार घड़ी रस मांझ ग्वार के खरल करावे।
टिकिया गोल बनाय शिकोरे दो मंगवावे॥
दोनों के मुख रगड़ तरे ऊपर मिलवावें।
टिकिया भीतर धरे सीपका चूना लावे॥
छे पैसा भर तोल पीस मुख बंद करावे।
तिहि पर दे तहतीन मृति का खूब जमावे॥

मंगवा ढ़ाई सेर मृतिका मांझ धरावे।
जब ठंडी हो काढ़ि टिकिया को लाये॥
फिर तांबे का पत्र लाय कर ताहि तपावे।
थोड़ा लेकर चूर जरी टिकिया बुरकावे॥
चक्कर खाके बैठि जाय सुचरन हो जावे।
गुरू बताया भेद पुण्य करना शुभ होये॥

रसायन

जंगली सुअर कोई जावे।
ताका खवा कढ़ाय धरावे॥
डेढ़ सेर लै मास तुलावे।
जामें ले हर ताल पुरावे॥
तब की आध सेर वह हांइ।
पीसे कपड़े सों छनवाई॥
ढारे मांस मांझ मथवावे।
चार पहर लों खुला धरावे॥
चिल्ली बाद ताहि खुलवावे।
भरी हांड़ी में ताहि गढ़ावे॥
धूरे मांझ गढ़ाये धरावे।
कीड़ा एक रहे तिहि लावे॥

जिहि को सीमा मांझ धतावे।
खिचड़ी पर ताको रखावे॥
तप तपाय कीड़ा कै धनी।
धरे कहीं ढकि ताको आनी॥
ताम्र पत्र पर जमै लगावे।
अग्नि धरे सुवरण हो जावे॥

तथा

लाय बिजौरा एक और गंधक मंगवावे।
होय आय ला सार टंक भर ताहि तुलावे॥
बीस आठ ले पहर रखरख कर वावे ताही।
गोली कर नख वाय यति श्री शीशी माही॥
शीशी में भरवाय अग्नि पर ताहि जरावे।
काढ़े रोगन तासू ताम्र पतर पर लावे॥
वा अग्नि धरे लापत्र होय सब कारज पूरा।
सच्चा मानिपें बधन गुरू सन होवे पूरा॥

तथा

कहें रुद्रवंती जिसे रूप र्वण कहूं ताहि।
सब ठौरी तो होत हैं मिले भाग्य बिन नाहि॥
छता चपटा गोल हो जिमि रोटी मोटी होय।
पात चपां के पात से तरे चिक नई होय॥

चेंटी वहां लागी रहै जब देखे कोई जाय।
प्रात जीभ पर धरत ही मनों पार हो जाय॥
जाके हाथ लगे जही ताम्रपत्र भरवाय।
एक बूंद जो नाखये तो सुवरण हो जाय॥
जिन छोड़े पर बारहैं भजैं कृष्ण का नाम।
उनकी दृष्टि में रहै जहां बैठि लें नाम॥

जोड़ा बनावा की विधि

खाली सँखिया लाय के कड़वे तेल चढ़ाय।
लाय कजही लोह की तामें दुहुन धराय।
अग्नि बरावे जिहि तरे जवै जोश खा जाय।
सींक डारि देखे डली पके पार हो जाय।
तब उतारि बाको धरे नक छिकनी को लाय॥
रस कढ़ाय चूल्हे धरे मृति का कुल्हड़ा माहिं।
शोरा कल्मी नाखिये बहुरू रस के माहिं।
बोलन सूं चुप का रहै तवै उतारे ताहि॥
आठ २ आने भर लेवे चांदी ताना दोय।
प्रथम मरावे ताम्र को डार सुहागा कोय।
तांबा खावे चक्र जब चांदी नाखे लाय।
चांदी भर जावे जबै तब शोरा ले नखवाय॥

चांदी चक्कर खाय जब रति संखिया डार।
करतब में चूके नहीं देखे नैन पसार॥
बैठि जाय चांदी जबै तब उतारि धरि लेय।
अति चोखी चांदी बनै चाहे जिहि को देय।
जो अपनी लगत लगे दूनी चांदी होय।
याही सौ जोड़ा कहैं जानि लेउ सब कोय॥

जड़ी पर जो वस्तु धरे घटे नहीं

एक जड़ी वन में रहे ताकी यह पहचान।
जल में नांखे वह चले छोटी सर्प समान॥
नीलकंठ तिही लाय के खोले सुत की आंख।
तब बाके घर में मिले चतुर भरें यो सांख॥
चतुराई जिहि चित में सो पावे तिहि जाय।
वापर जिहि वस्तु को खर्च फिर भरि जाय॥

हीरा मोती बनाने की एक विधि

एक लकड़ी सों बांधिये गजभर मलमल जाय।
खेत चने काहो जहां तहां उसको ले जाये॥
चार घड़ी तक फेर खेत में छाया मांझ सुखाय।
बीत जाय चालीस दिन तब कई टूक कराय॥

जब बरसे ओले बरसा में धरे तिन्हैं उठवाय।
प्रति टूक एक ओला धरि ताका मुख बंधवाय॥
फिर अंडी का तेल मंगा के अग्नि पर चढ़वाय।
ओला पकें अग्नि के ऊपर बाँधि हीरा बनि जाय॥
जो कोई मोती करना चाहे तुरत छिद्र कर जाये।

मोती करन विधि

आंख बड़ी मछली की लावे।
जुदे २ लतन में नावे॥
भेड़ दूध को अग्नि चढ़ावे।
नेत्र वस्त्र पर हीरा लावे॥
उनको हांड़ी में लटकावें।
भिढ़न दूध सोंना हीं पावे॥
ज्यों २ जरि के दूध निचावें।
त्यों २ आंखिन को तरलावे॥
जब दोउ नेत्र नरम हो जावें।
तब निकारी के छिद्र करावे॥
धरके छाया मांझ सुखावे।
चांवल मैले साफ करावे॥

उज्ज्वल मोती से हो जावें।
कांसी के बर्तन में लावे॥
तिन्हैं जौंहरी को दिखरावे।
जांचि मोल तोल सब पावे॥

मूंगा बनाने की विधि

शिंगरफ शंख दोऊ सम लेके भेड़ दूध में नावे।
पांच पहर लों खरल कराके गोली बांधि धरावे॥
मूंगासी गोली बनवाकर ताम्र तार सौं छेदे।
केले के पत्ते पर रखें कर छाया मांझ सुखेदे॥
महु आतेल चढ़ा हांडी में चूल्हे अग्नि जरावे।
जब वह औटि जाय तब दाने ताम्र तार के लावे॥
हांडी में लटकावे माला भाप पाय पक जावे।
रहै तेलसौं ऊंची माला काढ़े जब पक जावें॥
अथवा गेहूं की दो रोटी तिनमें धरि पकवावे।
पकजावें जब जिला कराके चाहे जाहि दिखावे॥

मोती बनाने की विधि

जब ओले बरसैं वर्षा में तिन्हैं उठाय।
धरे कुल्हड़ा में तुर्त अलसी का तेल चढ़ावे॥

औटि जाय तब ओला नावें।
पकें तेल में अरू बंधि जावें॥
बिना विलम्ब छिद्र करवावे।
अति सुन्दर मोती बन जावे॥
परख जौहरी मोल बतावें।
कोई महुआ के तेल पकावें॥
जिहि विधि जो जाणो बतलावे।

तथा

दोऊ नेत्र रोहू मछली के कढ़वाकर जो लावे।
उर्द चून में गोली करके धूप मांझ सुखरावे॥
डेढ़ सेर फिर तेल मंगा के अलसी का औटावे।
तामें नेत्र नाखि पकवावे शुद्ध मोती बनजावे॥

परमाली करन विधि

शिंगरफ रूमी मस्तंगी अरू शंख मंगावे।
एक 2 पल तिंहू वस्तु कों ले यंत्र उपावे॥
दूध ऊंटनी लायकर सब वस्तु मिलावे।
खरल मांझ डरवाय पहर दशलों घुटवावे॥
फिर माला के दाने समदाने बनवावें।
बहूरि सुई सो छिद्र करि छाया सुखावे॥

नली बांस की लाय कर तिहि मांझ भरावे।
खीर मांझ पकवाय के तिहि काढ़ि धरावे॥
इक-इक दाना लेय कर मुहरा करवावे।
फिर घृत सो मलवाय जिला करवाय धरावे॥
इहि विधि पर माला बने अति सुन्दर होवे।
पहरि गरे के मांहि शोभा मन मोहे॥

पद्मराग करन विधि

लाख पीस लीजिये कूटि साफ करवाय।
अस्सी पल जल नांखिये नर्म आंच धरवाय॥
प्रति ढाई पल दूध सुहागा दोऊ दे नखवाय।
पगले देवे बूंद इक कागज़ पैड़लवाय॥
बूंदन फूटे कागज़ में तो सीसा मांझ भराय।
तामें ओला डोब दिला के महुआ तेल पकाय॥
पद्मराग हो जावे सुन्दर जो विधि चूके नाहिं।
बेच वाचके करले कौड़े जी चाहे मन माहिं॥

नीलम करन विधि

देकर जोश मजीठ को सासा में भरवाय।
ओले वर्षे गगन सों तबयों जतन कराय॥

तुरत कढ़ाही में चढ़ा महुआ तेल मंगाय।
ओटि जाय तब नाखियें ओला तिहि में लाय॥
पग जावे नीलम बने जो देखे ले मान।
बेच लाय बाजार में तिहि को सुन्दर जान॥

नीलमणि करन विधि

एक पल नीलम जीठ दो जल में नाखि धराय।
ओला बोरि निकासि फिर महुआ तेल भुनाय॥

मर्कट मणि

देकर जांश मजीठ को नाल हरि ताल मिलाय,
पूर्व मुक्ति करवाय कर मर्कट मणि बन जाय।

अथ घुग्घू कल्प विधि

रवि दिन जो अमावस्या हांवे।
अथवा पूरी चौदस होवे॥
घुग्घू पेट फाड़ि विष लीजें।
तिहि को काजर विधि सों कीजे॥
भूमि मसाण में काजर कीजे।
एक में ले विष को भरि दीजे॥
दूजो मांझ काजर ले कीजे।
नगन होय के काजर पाड़े॥

गूगर खे निज गृहे सिधारे।
अष्टोत्तर निज मंत्र जो जापे।
सिद्धि होय सब कारज आपै॥

॥ दोहा॥

तांबे के ताईत में काजर धरे भराय।
मुख में धरि जावे कहीं कोई न देखे ताय॥
धन पाताल दृष्टि में आवें।
धन पृथ्वी का धरा बतावे॥
जो काजर नैनन में लावें।
जोगिनियों से भेटा जावे॥
देवा देव सबन को देखे।
मंत्र जपे तब सिद्धि पेखे॥
जब गो मूत्र से आखें धोवे।
तब प्रकाश देहीं का होवे॥

मंत्र–ओं कुरू स्वाहा में हसरीय नेत्र कोय पाटेश वरी इति मंत्रा।

लोपाञ्जन

घुग्घू की चरबी मंगावे, ताको तेल कढ़ावे।
उसी तेल का काजर पाड़ें नैनन मांझ लगावे॥

होय अदृष्टि कोऊ ना देखे आप सबन को देखे।
गऊ मूत्र सों आखें धोवे सबकी दृष्टि पेखे॥

तथा

घुग्घू पग पिंडली जो लावे, तिहि का तेल कढ़ावे॥
ताबा टंक टंक ले, तेल सानि पिसवावे॥
जो नैनन में आंजे कोई, होय अदृष्टि सुनो वह लोई॥

तथा

घुग्घू नेत्र और मंझारी करि एकत्र पिसावे।
तेल लाय सरसों में घोंटे तन पर लेप करावे॥
होय अदृष्ट कोई ना देखे जहां चाहें तहां जावे।
बाजीगर जिहि को दवकावे महलों से बुलवावे॥

तथा

घुग्घू नेत्र तेल में पीसे मरघट में जा काजर पाड़े।
काजर को नैनन में आंजे होय अदृष्ट सत्तकर ताड़े॥

वशीकरन

घुग्घू मांस कढ़ाय मंगावे रवि दिन यन्त्र उपावे।
लाल चन्दन और केशर दोऊ टंक २ भर लावे॥
सबहन पीसि गोलियां बांधे गूगर धूप दिवावे।
पान मांझ जो मंत्रि के धरिये जिहि खावे बस पावे॥

मंत्र—ओंनमो महा पंखेस अमुकस्य मम वस्यं कुरू २ स्वाहा।

तथा

घुग्घू जीभ मगावे रवि दिन गूगर धूनी देवे।
मेल मिठाई मांझ मंत्र को जिहि खावे वश होये॥

तथा

घुग्घू तालू पान धरि जिहि नारी को देय।
सो वश होवे चित्तदे तन मन दोऊ देय॥

तथा

घुग्घू नेत्र अरू कुम कुम ले गोरोचन मंगवाय।
नाग केशर लाच के चारों कर एकत्र पिसाय॥
अष्टाविशत बार मंत्रि के माथे तिलक लगावे।
राजा देखत ही वश होकर करें जो तन मन भावे॥

तथा

घुग्घू की चोंच लाय जो कोई नांग केसर मंगवावे।
सोई केसर गोरोचन हूं लावे शोरां ले एकत्र पिसावे॥
माथे तिलक करे जो कोई। देखे सो निश्चय वश होई॥

तथा

घुग्घू को मंगवाय जो कोई।
काढ़ि कलेजा लावें सोई॥

मंसिल बच दोऊ जो लावे।
तीजी ले असगंध धरावे॥
चमगादड़ की विष्टा लावे।
अरू भैंसा का सींग मंगावे॥

कूट गऊ रोचन अरु केशर।
शिला जीत ले करे इक तर॥
गऊ मूत्र में गीसि धरावे।
तिलक काढ़ि राजा पै जावे॥

देखत ही वश होवे राजा।
सुधरें सब तेरे ही काजा।

तथा

घुग्घू नेत्र मंगाय अरु केशर।
गोरोचन ले करे इकत्तर॥
इनका पीस तिलक कर जावे।
तोरा जा तुरत निजवश पावे॥

तथा

घुग्घू की जीभ नीम के पत्ते करि एकत्र पिसावे।
अंजन करे नैनन में जो नर सब ही वश हो जावे॥

लाल चींटियों का इलाज

थोड़ा ग्रानशीज लेकर एक कोठरी वा अलमारी में रख दें भगवान चाहे तो सब चींटियां खो जावेंगी।

बसीकरन बुर्की

घुग्घू नेत्र गंझारी अरु पारा मंगवावे।
केशर अरु बछनाग रस अरु सरसों ले आवे॥
ले फिर केशर नाग को सम को सम तुलवाय।
कूट पीस भेली करे सो मरघट गढ़वाय॥
सात दिवस बीतें जवै फिर उखार कर लाय।
जिहि के सिर हर नाखि बिना बुलाये आय॥

तथा

ऊपर लिखी जो वस्तु हैं सातों न को मंगवाय।
वामें नस वछ नाग है या वछ नाग लिलाय॥
सबको ले एकत्र कर फिर यों करे उपाय।
घृत इकरंगी गाय का मटिया टीप भराय॥
नेत्र बराबर लीजिये वस्तु सवै तुलवाय।
बाती मांझ नखाय कें काजर ले परवाय॥
नन्दन वन की रूई ले वाती करे विचार।
मघा नछत्तर रात दिन अरु होवे रविवार॥

अर्द्ध रात्री मरघट विषें जाय गोहोली देय।
नगन होय वस्त्र काढ़ि के मनुष्य खोपड़ी लेय॥
अथवा काचा ठीकराले काजर पार धराय।
अष्टोत्तर शत मंत्र जप गूगर खेवे ताय॥
सिद्वि होय कारज कारज सही जिहि के वस्त्र लगाय।
सो वश होके यो मिले ज्यों नदि सिंधु समाय॥

मंत्र—ओं नमो महा पंखी अमृत कुरु-२ स्वाहा: कास रात्री सुधा नारी सिंहस्त महिषा चर चीन कलपाल मल टपरिरे आगच्छ २ भगवत आस नइतिं मंत्र सम्पूर्ण स्वाहा।

तथा

घुग्घू का गर्का वीट मंगावे पिसवाकर धरवावे।
जिहि के मस्तक पर तिहि डारे निश्चय वश हो जावे॥

तथा

घुग्घू का कढ़वाय करेजा गोरोचन मंगवावे।
सात बार मंतर जपि आंजे जिहि देखे वश पावे॥

मंत्र—ओं३म् नमो महा पंखे अमुकस्य मम वस्यकुरु २ स्वाहा: २८ बार जपे॥

मार्ग चले हारे नहीं

पग और चोंच घुग्घू की लावे।
दुहुन जराके राख करावे॥
वेल पत्र का चूरन करिये।
भस्मी मांझ मिलाकर धरिये॥
नींबू का रस माहि सनावे।
तरवा में लेप करावे॥
मंत्र जपे एकोशत वारे।
सौ योजन लों चले न हारे॥

संग्राम में जीते

घुग्घू को जो पकरि मंगावे।
बायें पंग की नली कढ़ावें॥
तामें भरि पारा धरवावे।
फिर ले ऐसा यन्त्र करावें॥
गंधक लाल अरू नीला थोथा।
इन दोउन में नली धवे था॥
मंत्र जपे राखे निज पासा।
जीते युद्ध पुरें सब आसा॥

बैरी के कलह होय

घुगघू की परलाय के मंत्र जपे जो कोय।
बैरी के घर गाढ़िये तो कलेश अति होय॥

उच्चाटन हो

घुग्घू को सिर लाय के जो चूरन करवाय।
बैरी मस्तक नाखिये उच्चाटन हो जाय॥

तथा

घुग्घू हाड़ मंगाय के जो नीबू काष्ट मंगाय।
मंझारी नख चामले रसधतूर कढ़वाय॥
अरुमसाण का हाड़ ले सब एकत्र कराय।
बैरी के घर नाखिये तो उच्चाटन हो जाय॥

स्त्री पुरुष में विग्रह होय

घुग्घू मस्तक कांग नख दुहुन एकत्र कराय।
पढ़ि २ मंत्र जो हो मिये निश्चय विरुद्ध कराय॥

मंत्र–ओ३म् नमो पंखेस अमुक। अमुकी मधे कलह कुरु कुरु स्वाहा:

दो मित्रन में वैर हो

घुग्घू नेत्र मंत्रि के लावे, दो मित्रन के बीच गिरावे।
दो उनके मन मैले होवें, मिटै मित्रता वैरस जोवें॥

मंत्र—ओ३म् नमो बीर हुंहुं नमः

तथा

घूग्घू नाक मंत्रि के लावे।
पूर्व विधि जो लिखी करावे॥

भूत प्रेत उतरि जायं

घुग्घू पकरि मंगावे कोई।
मांस खाल जा कांढ़ि है सोई॥
दोऊ पिसाय इक ही कीजे।
भूत जहां हो धूनी दीजें॥
भूत प्रेत फेर नहीं आवे।
सुख उपजे चिंता मिट जावें॥

सोता हुआ मन की बात कहे

घुग्घू का कटवाय करेजा अग्नि धरावे।
गूगर धूनी देय मंत्र को सिद्ध करावे॥
फिर जो सोता होय कोई तिहि के उर धारे।
कहे सो मन का भेद आपने मुख सों सारे॥

सर्व कामना पूर्ण विधि

कांई हाड़ पीठ घूग्घू की लावे।
घसि के माथे तिलक लगावे॥

अष्टोत्तर शत मंत्र जो जपिये।
सर्व कामना पूरण खपिये॥
तिलक देख राजा वश होवे।
गुप्त मनोरथ पूरण होवे॥

मंत्र–ओ३म् नमो महा पंखे सखरी आ गच्छ गच्छ अतुल वल पर। क्रमाय सर्व कामनी मम वंस्य कुरु: मंत्रेश्वरी औताट: फद् स्वाहा:

बैरी का बसीकरन

चोंच अरू पर घुग्घू ले राखे।
चूरन कर बैरी पर नाखे॥
अष्टोत्तर शत मंत्र जो जपिये।
तो निज शत्रु को वश करिये॥

रात्रि में दिन के समान उजारा हो

घुग्घू की शिख लीजिये अरु हरताल मंगाय।
तीजा मंसिल लाय के गोली कर अंजवाय॥
मंत्र आठ अरु सौ जपै वस्तु सिद्धि हो जाय।
रैनि समय दिन की तरह उजियारा दरसाय॥

लोपांजन

कारे विलाव को नित्य खबावे माखन गिरी जो दीजे।
फिर उलटा करवा के वाकी छेर करे सो लीजे॥
वाको दीपक मांझ डारि कें बाती रूई करावे।
काजर करि आंखिन में आंजे अलख होय सुख पावे॥

ऋद्धि सिद्धि

भरनी भादों मास की कृष्ण पक्ष में होय।
तामें चातक कीजिये जानत है सब कोय॥

चार कलस जल भरि धरे एकान्त घर माहिं दूजे दिन जा देखिये रीति होंय सोलाय, भरे कलस छिड़काय दे रीते अन्न भराय। एकान्तर धरिये तिसे नित उठि पूजे ताय, अन्न पूर्ण हो खुशी जब मांगे धन दान सो सब देगी पूर्ण यह निश्चय मन आना।

पारा का कटोरा बनाने की विधि

पाव सेर पारा मंगवा के, दूनी कलई मंगा के।
मोम मिलाय अग्नि में धरि के, सांचा वेग मंगा के॥
पारा कलई मिला दुहुन को तामें आंच लगावे।
सांचा भर के काढ़े उसको मन इच्छा फल पावे॥

नोंन का कटोरा

सांभर नोंन मंगाय के गाजर बीज मिलाय।
सांचे में थापै उसे बने कटोरा आय॥

देव दर्शन

चार सेर मौंठ बिन चुगी लावे।
घड़ा मांझ भरि ताहिं धरावे॥
जो भावे सो आप ही खावे।
खाते कंकर डाढ़ तर आवे॥
वा कोंले पनघट पर जावे।
पनिहारी जो जेहर भारे॥
वामें वा कंकर को डारे।
फूटै जेहर घिरगना लावे॥
बन में जाय गाय जहां आय।
घिरगन में से देखे जाय॥
सींग बैल पर भैरूं आय।
दर्शन करके इतना करे॥
बाहन कों कछु भोजन धरे।
प्रसन्न होय भैरुं बर मांगे॥
लै बरदान निज कारज लागे।

गांव की आपत्ति टरे

बानर का जो हाड़ मंगावे।
वाको पहिले धूप दिखावे॥
धूप दीप दे वाकों लावे।
गांव सींव पर ताहि गढ़ावे॥
गांव की आपत्ति सब टरि जावे।
सुखी रहैं सब और सुख पावें॥

भूत प्रेत दर्शन

वागल को लाय उसे पारापाणा।
पारा जो छेर करे सीसा भरणा॥
काजर करवाय उसका नैंनन आंजे।
भूत और प्रेत सबै दृष्टी आंजे॥
मतलब जो होय कछु मांगे भिक्षा।
पूरन कर देंय सारी माने शिक्षा॥
बात जो पूछे तो कहें साची सारी।
सौ कोस की बात जाण कह दे सारी॥

उतारा भूतादिक दोष मिटाने का

संध्या समय वार शनिवारी कुम्हार के घर जावे।
कूड़ा ऊपर चौंसठ दीवा उलटे चाक उतरावे॥

दीपक बाती धरि के सब में तेल पुरावे।
दूध भात का कूंडा भरि कें तामें शकर मिलावे॥
सांझ समय जो करे उतारा रोग दोष मिटि जावे।
भूत, प्रेत, डाकिनी स्यारी बाय अंग मिटि जावे॥

कड़ा भूत प्रेत का दोष मिटाने का

नदी किनारे नाव जो देखे तिसका कांटा लावे।
घोड़ा सुमका नाल मिला के ताका कड़ा बनावे॥
धूप दीप दें पहरे कर में रोग दोष मिटि जावे।
भूत, प्रेत, डाकिनी स्यारी बाय अंग मिटि जावे॥

बुद्धि और ज्ञान बढ़े

कार्तिक मास शुल्क पक्ष चौदस संखा हूली न्योते जी।
हस्ते नक्षत्तर आवे जा दिन बाकों डेरे लावे जी॥
वांटि कूटिकें रोगी बांधे सावन जब श्रवण आवे जी सो गोली ले नर को।

शुभाशुभ विचार

उत्तरा में दिशा गांव बाहरी जाय।
सुने शब्द विरिया मिलें वाकों सांची खाय॥

मांटी खाय, गुड़ का स्वाद आवे

पात चिर्मिठी सेत मंगावे।
अंधियारे में जिसे चबावे॥
फिर वाको जो माटी खवावे।
गुड़ जाने खाता न अघावे॥

शत्रु का घर उजड़े

हस्त नक्षत्र लीजिये सैंधा नमक मंगाय।
ताका जतन यह कीजिये बहुत ही मन सुख पाय॥
मूरत करे गणेश की नाम शत्रु धर तास।
ज्यों तन छीजे वाह का त्यों शत्रु का नाश॥

तथा

लील बड़ी ले हिरण मूत्र में ताकों रात्रि भिजोवे जी।
प्रातः समय तिहि बांटि कूटि के पाछें कपरा धोवे जी।
कपरा मसान में जावे ताका मंत्र जो करिये जी।
को इलाको से मूरत माड़े ताकों ले घर धरिये जी।
सुई सात धरवा के भीतर पुड़िया एक बनावे जी।
शत्रु के घर पीछे गाढ़े निश्चय वह पर उजड़े जी॥

बुर्की बसीकरन

नदी किनारे होय जो झाऊ ताका यन्त्र यह कीजे जी।
मूल का दिये नीचे सेती पुण्य नक्षत्र जब होवे जी॥
बांट कूटि के करल चूरन और कूड़ा छाल मिलावे जी।
सबको लेकर जा मसाण में चुटकी राख मिलावे जी॥
सिर पर डारे नर नारी के चाली साथ वह आपवे जी॥

तथा

होली के दिन होली न्यौते ताकी लकड़ी लावे।
धूप दीप दे करे तमाशा धोबी के घर जावे॥
भट्टी नीचे बारे ताकू धूरि ताहि घर लावें।
बांटि कूटि चूरन करि राखे हस्त नक्षत्र जब आवे॥
सिर तिरिया के डारे वाकूं निश्चे यह मन मानें।
सो तिरिया अपुन ही आकि तेरे वश में आनें॥

तथा

प्रथम रजस्वला होय जो नारी रक्त वस्त्र तिहि लावे।
बाती के अण्ड तेल में दीपक जोरि धरावे॥
काजर पार डिब्बी में भर लें जिह के राख लगावे।
सो नारी चितभ्रम होयके आपहुं आप चली आवे॥

तथा

बकरा और घुग्घू दो उन काले कर मांस मिले वै।
रती प्रमाण दीजिये जल में दास होय वह रहवे॥

तथा

रवि दिन मनुष्य खोपरी लावे।
तामें चावल नाख पकावे॥
बहुरि सुखाकर उनको राखे।
जिहि चाहे सेवक करि राखे॥
एक रति भर ताहि खवावे।
जीवे जब लौं दास रहावे॥

पशु स्तम्भन

ऊंट हाड़ की कील बनावे।
चारि दिशा में तिन्हें गढ़ावे॥
जो पशु वाके भीतर जावे।
सो बाहर निकसन नहीं पावे॥

तथा

ऊंट बार जिहि पशु पे डारे।
टरे नहीं कितना ही टारे।

नवका स्तम्भन

नक्षत्र भरनी जब आवे।
दूध के काष्ट की कील बनावे॥
पांच अंगुल की लम्बी सारे।
ताको नवका भीतर डारे॥
चले नहीं वहां ही थम जावे।
कील निकारो तो चलि पावे॥

कर्गिलास पक्षी के गुण

कर्गिलास नाम है जाका। काल और सेत रंग ताका।
लांबी चोंच रहे जल पासा। सुन्दर पंछी पूरे आसा॥

अदृष्टि होय

दोहा

कर्गिलास की पूंछ ले रवि दिन धूप जो देय।
धरी ताईत जो मुंह में लेय दिखलाई नहीं देय॥

आकर्षण विधि

कर्गिलास का लोही लावे।
बहुरुं ऐसा यत्न करावे॥

जो कामिनी मन को अति भावे।
जब देखे तब चित्त चुरावे॥
ताकी पतगर धूरि ले आवें।
लोहि में सानि धरावे॥
तिहि मांटी का चित्र बनावे।
चित्र सामने मूरत रहवे॥
दूर देश हो वह आपवे।
चित की चिन्ता आय मिटाय॥

पानी में डूबे नहीं

कर्गिलास का ओष्ट तरे का और गोरोचन लावे।
दोनों को एकत्र कराके आंखिन में अंजवावे॥
सिन्धु मांज जल में जो तैरे सबै वस्तु दृष्टि आपवे।
झोला भरि २ बाहर लावे। डूब नहीं पावे॥
ऐसा जतन करे जो कोई दीतवार को करिये।
गूगर धूनि नैवेद्य अरू दीपक आगे धारिये॥

स्तुति गुरुदेव

श्री गुरुदेव दयाल के चरण कमल चित धरि।
लिखूं भेद गुरू शक्ति ले निज मति के अनुसार॥

गुरु की शक्ति अपार है सिन्धु समान निहार।
जो जाने सोई करे तन मन धन बलिहार॥
जिहि पर गुरु कृपा करें पल में सिद्धि कराहिं।
जंत्र, मंत्र, तंत्र आदि सब तृण सम तिन्हैं दिखाहिं॥

प्रश्न– अर्द्ध रात्रि वन बूंटी लाना।
नगन होय के कारज करना॥
कारज कर जब घर कूं आवे।
फिर कर पीछे दृष्टि न लावे॥
कारज को न कहो यह भेवा।
मुनि बोले जब ही गुर देवा॥

उत्तर– अर्द्ध रात्रि को कोऊ न टोके।
नांगे को कोऊ भूत ने रोके॥
बन मरघट चौहट में ईस।
कारन पूरे विस्वावीस॥
जब वे करता के संग आवें।
पीछे देखत ही जावें॥
कारज होय न पूरा भाई।
रखे याद जो बात बनाई॥

गुरु शक्ति

जब कृपाल होवें गुरू देवा।
पल में पार करावें खेवा॥

जहां लिखी विधि अर्द्ध रात्रि की।
तहां लेय दोपहरी दिन की॥

जहां लिखा नंगा हो जाय।
वहां कांछ धोती खुलवावे॥

जहां खोपरी मानुष में काजल पारा जाय।
तहां खोपरा नारियल अर्द्ध काटि धरवाय॥

जहां विधि में चौराहा आवे।
घर चौका चौरस लिपवावे॥

तिसमें दो लकीर खिचवावे।
जाके मध्यम आसन विछवावे॥
एक पूर्व सों पश्चिम माहीं।
एक दक्षिण सो उत्तर मांहीं॥

जहां मरघट में बैठि के करन लिखा कछु जाय।
मरघट बिछाय के तहां जापिये जाप।

अथ शिक्षा

जहां मंत्र का जाप कहा हो।
तहां बैठिये अति पवित्र हो॥
धूप दीप नैवेद्य करावे।
पुष्प सुगंधादिक धरावे॥
चूके नहीं किसी विधि माहिं।
चित्त को कहुं डुलावे नहीं॥
रखे दृष्टि दीपक लव माहिं।
ध्यान रखे गुरु चरण न माहीं॥
गुरु के सन्मुख जो मन धारे।
गुरु कृपा सब काम सुधारे॥
गुरु आज्ञा ले कारज करिये।
बार बार लिखकर समझाऊं।
अपने मन की बात बताऊं॥
गुरु बिन श्रम करो मति कोई।
गुरु प्रताप देखो सब कोई॥
जो गुरु वचन धरि सिर लै हैं।
सोई अटल पदारथ पै हैं॥

इति कौतुक रत्न मंजूष
द्वितीय पाद समाप्तम्

अथ कौतुक रत्न मंजूष तृतीय पाद लिख्यते

श्री गुरु गणपति को सुमिरी धर सरस्वती ध्यान।
जो शिव गिरिजा सर कत्यो लिखूं मंत्र को व्यान॥
१. अक्षर हरि को रूप है हरि की शक्ति अपार।
जोग जुगति सों जानिये ताको कछु विस्तार॥
२. गुरु बिन ज्ञान मिलै नहीं हरि बिन मिले न ध्यान।
मुक्ति संग हरि भक्ति के हरि सेवा सुंजान॥
३. यंत्र, मंत्र अरु तंत्र जो विधि सों साध।
मनवांछित फल पाइ है गुरु सेवन सों बांध॥

मंत्र सर्व सुखदाता

राम मंत्र उत्तम महा जाने सब संसार।
लिख २ गोली बांध कर नदी मझारे डार॥
श्री आदि जी अन्त में लिखे प्रीति उरधार।
भोग मोक्ष दोऊ मिलें उत्तम मतौ विचार॥
केशर कस्तूरी विषें चन्दन रक्त मिलाय।
शाखा लाय अनार की सुन्दर कलम बनाय॥
लिखे दिना चालीस में सबू लाख परमान।
होमादिक हू कीजिये ब्रह्म भोज को दान॥

अथ सर्वोपर मंत्र तंत्र सिद्धि करन विधि

ओं परब्रह्म परमात्मने नमः जग दुत्पात्ति स्थिति मलय कराय ब्रह्म हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दत्तत्राय नमः तंत्रान सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

दीपक घृत कार का बार के धूप खेवे, चन्दन पुष्प नैवेद्य चढ़ाके १०८ बार मंत्र को जपे, सिद्धि मुहूर्त से २१ दिनों में सिद्धि होवे, फिर जो तन्त्र करे, इसी मंत्र से करे।

मंत्र–ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुक निदर्शय निदर्शच सिद्धि कुरु २ स्वाहाः।

प्रथम देह रक्षा को मंत्र

(इस मंत्र से इन्द्रजाल की विद्या को करे)

ॐ परमात्मने पर ब्रह्म मम शरीरे पाहि २ करु २ स्वाहा: १०८ बार जपेत सिद्धि।

रसायन मंत्र–कोई चाटक चेटक करे तो इस मंत्र का जाप २१ दिन प्रतिदिन १०८ बार करे तो मंत्र सिद्ध हो। प्रथम अपने शरीर की रक्षा करे।

ॐ नमो हरि हराय रासायन सिद्धि कुरु २ स्वाहा:

नाज की राशि उड़ावा को मंत्र

ॐ नमो हूंकालूं ६४ जोगिनी हुंकालूं ५२ वीर कार्तिक अर्जुन बीर बुलाऊं आगें ६४ वीर जल-बन्ध बलबन्ध आकाशबन्ध पौन बन्ध दीन देश की दिशा बन्ध, उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तिक बीर्य राजा असमान भो ५२ वीर गाजें नीचें तो ६४ जोगिनी विराजें परितो पासि चल्यावें छपन्या भैंरु राशि उड़ावें एक बंध आसमान में दूजा बंध राशि घर में ल्याया शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्तय नाम उप देश गुरु का।

विधि–दिवाली की रात्रि को बन में जाय, सुस्सा की मेंगनी लावे तिनको २१ बार मंत्र के राशि पर घर का आप घर जावे तो रास सब की सब चली आवे। (इति:)

मंत्र ऋद्धि सिद्धि का–ॐ नमो आदेश गुरु की गणपति वीर वसे मसान जो मांग सो २ आणा पांच लाड्डू सिर सिन्दूर हाटि की माटी मसाण की खेप ऋद्धि सिद्धि मेरे पास लावे शब्द सांचा, पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा।

विधि–ब्राह्मणो को भोजन करावे तो प्रथम पांच लड्डू लेकर उन पर सिन्दूर लगावें, कूप पर जाकर छोटे कलस में एक लड्डू धरके कूप में नाखे, जब कलस भरले तब लड्डू कूप में डालकर आवे, माल के कोठा में कलस को स्थापित कर पूजन करे, चढ़ा के ब्राह्मणों को अमवा बिरादरी को भोजन करावे तो माल टूटे नहीं।

पृथ्वी का धरा धन दीखने का मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वोषधि प्रणते नमो बिच्चे स्वाहा:।

विधि–करे कांग की जिह्वा को कारी, गाय के दूध में ओटा कर जमावे और घृत काढ़ १०८ बार अभिमन्त्रित कर नैत्र में आंजे अथवा काजर बना के जो मनुष्य पायन की तरफ से जन्मा होय उसके नैत्र में लगावे तो पृथ्वी का गढ़ा धरा धन दीखे, दूसरे पाद के ६५ वें सफे की १२ वीं सतर देखो।

अथ स्थान खोदने की विधि–बिनोले मूंग तिल गउ मूत्र में पूर्व मंत्र से लेकर पीसे, अंग में लगावे फिर जहां खोदे, चौका देकर बलिदान दे, यह मन्त्र पढ़देय।

ॐ नमो भगवति सुमेरु रुपायौ महाक्रांतायै कंकाल रुपायै फट स्वाहा:।

विधि–इस मंत्र से गेहूं तिल का होम करे चूर करे तो सर्पादिक का भय न होवे। दिन ७-७ नक्षत्र देखकर खोदे।

मारग चलै हारे नहीं मंत्र–ॐ नमो विचंडाय हनुमंत वीराय पवच पुत्राय हुं फट।

विधि–बंशलचोन श्वेत भांगरा बकरी का दूध सवको पुष्य नक्षत्र में सिद्धि करले नक्षत्र तक जाप करे जब कहीं जाय पावके तलवे में लावे जब सूख जाय तब चले तो हारे नहीं।

मंत्र देह रक्षा को–छोटी मोटी थमंत वार को बांधे पार को पार बाधं मराध मसाण बांधे जादू बीर बांधे टोना टम्बर बांधे दोउ मूंठ बांधे गोरी छार बांधे भिड़िया और बाघ बांधे लखूरी स्यार बांध से बीछू और सांप बांधे लाइलाह का कोट इल्लल्लाह की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।

विधि–जंगल या घर में सोवे जब ३ बार पढ़के मोड़ा पर हाथ मारे, जितनी पृथ्वी का

पृथ्वी का प्रबन्ध करे उतनी में घेरा खींच दे तो किसी प्रकार का भय न होवे।

मार्ग में साँप चोर नाहर का भय न हो

मंत्र—फरीद चले परदेश कों कुत्तक जी के भाव सापां चोरां नाहरां तीनों दांत बंधाव।
(जहां सोवे बैठे तीन बार मंत्र के ताल दे।)

मार्ग में बाघ का प्रबन्ध—मंत्रा बाघ बाधूं वधाई निबांधू बाघ के सातों बच्चा बांधूं राह बाट मैदान बांधू दुहाई वासुदेव की, दुहाई लोना चमांरी की।

विधि—सात मंगल इस मंत्र को ७ बार जपले मार्ग में बाघ किले तो इस मंत्र को पढ़कर ९ बार फूंक दे।

मंत्र आपत्ति डालने का

शेख फरीद की कामरी और अँधियारी निशि तीनों चीज बराइये आग ओला पानी विष।

विधि—मार्ग में पानी बरसे ओला पड़े आग लखे तो मंत्र तीन बार पढ़के ताल दे।

मंत्र दिग बंधन को—या हिसार ३ जिन्न देव परी जवर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द पसार विर्द वार्गिद मलायक असवार दाहें दस्त रखे जिब्राईल वायां दस्त रखे मीकाईल पीठ रखे, इसाफील पेट रखे इज्राईल दस्त चपहसन दस्त रास्त हुसैन पेश्वा मोहम्मदगिर्द वगिर्द अली लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बैठी मुम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि—सात बार पढ़ के चारों हाथ अपने फिराकर चुटकी बजावे अथवा अपने चारों लकीर काढ़कर बैठे सफर में जहां पढ़े मसाणादि में तो वहां भी ऐसा ही करें।

मंत्र मेघ स्तम्भन

ॐ नमो भगवते रुद्राय जलस्तंभय २ ठः स्वाहा:

विधि—मसाण के कोयला को सुलगा के इस मंत्र के इसके ऊपर और एक तले पर मार्ग में अथवा रोटी करते में मेघ वर्षे तो बन्द हो।

अथ मुसल्मानी मंत्र

राज प्राप्त होने का मन्त्र—रात्रि में एक बार पढ़े विस्मिल्ला हिर्रह मानुर्ररहीम फिर २१ बार

दरुद पढ़े–दरुद अस्त्र हुम्मासल्ले अला मुहम्मदिन व अल्लाल मुहम्मदिन सरकल स्तम या मफूरो।

विधि–एक सहस्त्र कर इस मंत्र को पढ़के २१ बार दरूद पढ़े तो २१ दिन के उपरांत लाभ की सूरत दृष्टि आवे।

दरिद्र नाश करने के मंत्र

या कबीयो या मनीयो या मलीयो या वकीयो।

विधि–प्रातःकाल बात करने से पहले हाथ मुंह धोके एक बार बिस्मिल्लाह पढ़ के एक हजार दो सौ बार मंत्र को पढ़े मंत्र के आदि अंत में २१ बार दरुद को पढ़े तो थोड़े ही दिन में दरिद्र का नाश हो।

मंत्र रोजी के लिये

या इश्राफील बहक्क या अल्ला हो।

विधि–सवा पाव उड़द के चून की खमीर करके अपने हाथ से रोटी बनाये। एक ओर दो तह करके सफेद रूमाल में रख के चौथाई रोटी की गोली जंगल में बेर के समान बनाये १०१ गोली बनाके ११ बार मंत्र के एक गोली को इसी प्रकार सब गोलियों को शेष रोटी समेत

जिस दरिया में मछली हों डाले तो ४० दिन में मनोर्थ पूरा हो।

रोजी प्राप्ति का मन्त्र—काली कंकाली महा काली मुख सुन्दर जिये ज्वाला बीर बीर भैंरू चौरासी बता तो पूजूं पान मिठाई अब लोलो काली की दुहाई।

विधि—नित्य प्रति स्नान कर इस मंत्र को ७ बार लगातार गह पूर्व मुख बैठकर पढ़े तो रोजी मिले।

किसी ने मूठ चलाई हो तो इस मन्त्र सों मूंठ को अपने पास बुलाय के उलटी भेज दे और यही मन्त्र वसीकरन का भी है। काला कलवा चैांसठ बीर मेरा कलवा मंगा तीर जहां को भेजूं वहां को जाइ मांस मच्छी को छुवन न जाय अपना मारा आपहि खाय चलत बाण मांरू उलट मूंठ मांरू मार मार कलवा तेरी आख चार चौमुखा दीया न बाती जा मांरू वाही की लात इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी मां का दूध पीया हराम

सिद्धि करण विधि—सत चाल प्रति दिन २१ बार पढ़े घीका दीपक रखे अग्नि पर गूगर

खेवे लोंग जोड़ा फूल मिठाई रखे सिद्ध हो फिर मूंठ आवे इस मंत्र से उलटी भेजे और आक्रमण बसी करन कू सुपारी की छाल पर २१ बार पढ़े पान में रखकर खिलावे।

रोगी की परीक्षा—काचा सूत रोगी के पांव से सिर तक पुर कर २१ मंत्र फूंकर डोरा कूं नापे बट जाय तो आसेव का खलल है पटे तो देह रोग है।

किया कराया के उतारने और देह से रोग निकालने का मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु को में ऊपर केश विकट भेष खंभ प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पांव देवी जंघा राखे कालिका मस्तक रखे महादेवजी कोई या पिंड प्रान को छोड़े छेड़े तो देव दाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गांड ताप तिजारी जूड़ी एक पहरूं दो पहरूं सांझ को संवारा को कीया को कराया को उलटा वाही के पिंड पर पड़े इस पिंड की रक्षा श्री नृसिंह जी करें शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—सात बार मंत्र के रोगी को झाड़ा दे गा भंडा करदे। श्री गुरु।

रक्षा मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को बजरी बजरी वज्र किवा बज्री पै बांधो दशों द्वार को

घाले यात उलट वेद वाही कों खात पहली चौकी भैंरू की चौथी चौकी रोम रोम की रक्षा करवे कों श्री नृसिंह देव आया शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम अदेस।

गुरु की विधि—इस मंत्र को शनि से २१ दिन तक प्रति दिन २१ जाप करे घृत का दीपक आये फूल मिठाई गूगर धूनी रखे सिद्ध होवे फिर अष्टमी को भोग दे रोगी सात बार मंत्र के पानी पिलावे तो कीया कराया का दोष जाय।

समस्त पीड़ा हरन का मंत्र—लश्कर फर ऊन दर रोदनी लगर्क शुद।

विधि—जहां कहीं दर्द हो पीली मांटी से मंत्र को तीन बार लिखे फिर मांटी के बराबर गुड़ तुलाके लड़कों को बांट दे।

सिर की पीड़ा का मंत्र—दो ताबीज लिखे एक को खारीं जमीन में गाढ़े एक को रोगी के सिर में बांधे ताबीज यह है।

६७६८

दांतों की पीड़ा का मंत्र—हे दंता तुम क्यों कुलता हमें तुमें संजाइना हमरा कसर तुम हो

वत्तीस हमरी तुमरी कौनसी रीति हम कमायं तुम बैठे खाऊ मृत्यु की बिरियां संग ही जाऊं।

विधि—मुंह धोवे तब हाथ में जल लेकर ७ बार मंत्र के कुल्ला करे पीड़ा जाती रहे हिलते दांत जमें।

डाढ़ पीड़ा का मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को नौ लाख कांबरू एक बार जायं बैंठे बघल बाल गंगा जमुना सरस्वती जहां बैठे गोरख मौसम सिखर परवत से आइ काम धेनु छत्तीस सेग टलें आधा दीया पृथ्वी आधा वायु भौंरा पाहीं रणया सिसपासु बटियाम दौड़ रक्षा करें श्री रामचन्द्र हनुमंत दाल भाव रोग दोष जायं पराई सीव गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—अक्षत पाणी २१ बार मंत्र के साथ निवास पर बैठे डाढ़ा काढ़ता जाय पानी के छींटे देता जाय इति।

डाढ़ के कीड़े का मंत्र—सवारी में सीसी सीसी में मीची मीची में कीड़ा कीड़ा में पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे शब्द सांचा। पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–लोहे की दो कील सों चांकजे एक को कूवा में डाले दूसरी को नींव से गाढ़े।

तथा–कांमरू देश कमष्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगा इस्माइल जोगो ने पाली गाय नित उढ चरवा वन में जाय वन में चरे भूखा गंभूर जो गाय गोबर चरे जामें निपजे कीड़ा सातसूत सुतला पूंछ सुंता तामंड़ पिंजर सहमुला भाल में मुड़ी करे लेदुख बेशख नाथ की दुहाई फिरे शब्द सांचापिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–इस मंत्र से लोहे की कील तीन बार सात २ मंत्र के काट में ठोके।

दस रोग का एक मंत्र

परबत ऊपर परबत पर वन ऊपर फटिक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत ने हला टेहला कांख की कख लाई पीछी की अदीठ कान की कनफेर रान की बद कंठ की कंठ माला घुटरने का डडरू हाड़ की हड़ सूल पेट की ताप तिल्ली फीया इन को दूर करे भस्वंत नातर तुझे अंजनी माता का दूध पीया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा सतनाम आदेस गुरु का।

विधि–शनिवार सौं २१ दिन हनूमान जी को पूजन विधि पूर्वक करे नित्य १०८ मंत्र जपे सिद्ध होय होनी बिजली में मंत्र जप लिया करे छहरू को आक से तापतिल्ली को छुरी से कखलाई, अदीठ कनफेर वद कंठ माला राख से डठशूल नीम की डार सात बार झाड़े।

मंत्र अदीठ का–ॐ नमो नस कटा बिष कटा भेद मज्जा बद फोड़ा फुनसी अदीठ दुबंल दुख न्यौंर त्यांवरीं घनवाद चौंसठ जोगिनी बावन बीर छप्पन भैरूं रक्षा करें जो आई।

विधि–विभूत की चुटकी ७ दिन ७ कर मंत्र के दीजे रोग जाता रहै।

अथवाय कान पीड़ा का मंत्र

ॐ नमो अदेस गुरु को बाल में बाल कपाल में भेजी-भेजी में कीड़ा कीड़ा में करन पीड़ा सोना का सिला का रुंप का हथौड़ा ईश्वर घडे मर्क्जा तोड़ें शब्द स्पंचा पिंड कांचा चलो मंत्र इश्वरों बाचा।

विधि–विभूतसों ५ बार चाकले अच्छा हो।

मंत्र कंठवेल का–ॐ कंठवेल लूडन दुमाजी सिरपर जड़ी लज्ञ की तालीमोर खराय जागता आया बढ़ती बेल कुंतुरत घटाया। घट

गयी बेल बढ़े नारोग पाचै फूंठा पीड़ा करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई फिरे।

विधि—विभूतसो चाकजे।

मंत्र काखलाई का—ॐ नमो काखलाई भरी तलाई जहं बैठे हनुमंता आई पचै नफूटै चलै न नाल दशा करे गुरु गोरख नाथ।

विधि—नीवकी डाली में झाड़ देवे।

आंख की फूली कटै—मंत्र। उतर कूल काछ सुन जोगी की बाछ इस्माईल जोगी की दो बेटी एक पाथे चूल्हा एक काटे फूली का काछ फुली का काछ फुली का माछा। छुरी से २१ बार जमीन में लकीर काढे ७ दिन में फुली कटै।

आंखों की रोशनी घटै नहीं

मंत्र—श्रजातश्च, सुकन्याश्च चवनम् शक्र भष्यक भोजनांते स्मरेतस्य तस्यनेत्रं न नश्यति।

भोजन के अन्त में याणी की चुल्लू पर ज्वार पढ़के नेत्रों में धोयें।

नेत्र दूखने का मंत्र—ॐ नमो झलमल जहर भरी तलाई, जहां बैठा हनुमंता आई फूटैन पालै न करै न पीड़ा, जती हनुमंत राखे हीड़ा विभूत से चाकले।

नेत्र रोग का मंत्र–ॐ नमो श्रीमान की धनी लछमन का बाण–आंख दर्द करे तो लछमन रुवर की आण, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेस गुरु का।

विधि–दिवाली को ५४४ बार जपै सिद्ध हो तो राख झाड़े रोग जाता रहे।

पेट की पीड़ा का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का श्याम गुरु पर्वत श्याम गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कूआ कूआ में तीन सूरवा कौन २ सूवा वाय सूवा जहर सूवा पीड़ सूवा भाज भाजबे जहर आइगा जती हनुमंत मार करेगा भस्मंत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सात बार पानी मंत्र के सात दिन पिलावे।

दाड़ की पीड़ा का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में व्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत कीड़ा मकुड़ा मा कुड़ा ये तीनों यस्मंत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–दिवाली को अथवा ग्रहण में सिद्ध करे नीव से आके रोग जाय।

अन्य प्रकार—ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में व्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त फूनी फुंसी गूमड़ी ये तीनों भस्मंत। पूर्व युक्ति सिद्ध को गूमडे पैहाव फेला जाय, वार मंत्र पढ़ें।

जानु वा पसली डमरु वाई तीनों का एक ही मन्त्र—ॐखंखारी खंखारा कहा जया सवा लाख परवतों गया सवा लाख परवतों जाय कहा करेगा सवा भार कोइला करेगा सवा भार कोइला कर कहा करेगा हनुमंत वीर का नवचन्द्र हांस खडग धड़ेगा नव चन्द्र हास खड़ग पड़ कहा करेगा जानुदा डमरु पसली वायु कूं काढ़ि काढ़ि खारी समुन्द्र में नाखेगा जगत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—तिली का तेल सिंदूर मिला के तिल में मंत्र के आंके।

ऊबा का मन्त्र

ॐ नमो खंखारी खंखारा कहां गया सवा लाख पर्वतों गया सवा लाख पर्वतों जाय कहा किया काई लाक राया कोईला कराय कहा किया छुरा घड़ाया छुरा घड़ाइ कहा किया ऊबा का

हांड़ गोड़ कूटि काटि लिया कामल में लपेट समुद्र पार बगाया शब्द सांचा पिंड काण फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—तीर का सांचा अंगुल ८ लीजे तासी मंत्र घोरुश में।

पीलिया का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु कों रामचन्द्र सिर साधा लछमन साधा बाण काला पीला राला लीला थोंथा पीला पीला पीला चारों झड़ जो रामचन्द्र जी थाके नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा।

विधि—सुई से पीतल की कठोरी में पाणी भर ७ दिन झाड़जे।

तथा

ॐ नमो बीर बेताल असराल नारसिंह देवपाता तुपाती तुपीलिया भेदतु नास्तु पीलिया नास्तु।

विधि—कड़ुवा तेल कटोरा में लीजे रोगी के माथे धरजे दूसरे मन्त्र जे तेल पीला हो तब उतार लीजे ३ दिन मन्त्र जपे।

सीया का मन्त्र

ॐ नमो कामरु देश कमख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी के तीन पुत्री एक तोंड़े एक पिछो हे एक तोते जरी तोड़े।

विधि–रोगी को खड़ा करे जहां ठंड लगे तहां हाथ से पकड़े २१ बार मन्त्र के फूके से सीया जाता रहे इति।

पसली डबिका का मन्त्र

समन्दर के किनारे सुरहमाय सुरहगाय के पेट में बच्चा के पेट में कलेजा कलेज के पेट में डब डब कटेस खड़े दुहाई लौना चमारी की।

विधि–होली दिवाली ग्रहण में १४८ बार मंत्र लोबान खेवे सिद्धि हो फिर रामेसर की लकड़ी और सींक कोरी सात २ अंगुल की काट कर उनसे ७ बार मंत्र के झाड़ा दे दोनों वस्तुसों झाड़े तो दोनों वस्तु बढ़ती जायेगी जब रोग मिट जाय तब ज्यों की त्यों ही जायेगी।

रींधन वाय का मन्त्र

कामरु देश की माया देवी जहां बसै इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक बिछोड़े एक रेधन वाय को तोड़े शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–मणिहार के मोगरा से झाड़ दीजिये।

गंडा देने का मन्त्र

बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध कीड़े और मकोड़े का बंध ताप और तिजारी का बंध जूड़ी और बुखार का बंध नजर और गुजर और गुजर का बंध दीठ और मूठ का बंध कीये और कराये का बंध भेजे और भिजाये का बंध नावत पर हाथन का बन्धन बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध राह और बाटका बंध जमीन और आससान का बंध घर और बाहर का बंध पवन और पाणी का बंधकू वांपनि हारी का बंध लौह कलम का बंध बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध।

विधि–रोगी की एड़ी से चोटी तक डोरा नापकर मंत्र से ७ गांठ दे सवा पाव मिठाई मंगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बालकों का बांट दे और गंडा को लोवान की धूनी देकर रोगी के कंठ में बांधे।

अन्न पचने का मन्त्र

अगस्तं कुम्भकरंण चश निंच बड़वा नलः आहार पाच नार्थाय स्मरते भी मंच पंचमम्।

विधि–रसोंई जैम कर इस मंत्र से पेट पर हाथ फेरे।

तथा

वज्र हाथ वज्र हाथ भस्म करे सब पेट का हाथ दुहाई हजरत शाह कुल्ल आलम पांडवा की।

विधि–बांए हाथ पर ११ बार मंत्र जप पेट पर हाथ फेरे जो अन्न खावे गिरानी मिटे।

आधा सीसी का मन्त्र

बन में जाई बांदरी जो आधा फल खाय खड़े मुहम्मद हांकदे आधा सीसी जाय।

विधि–शुल्क पक्ष में पहली बृहस्पति को १०८ बार मंत्र पढ़के सिद्ध करले फिर रोगी के सिर पर तीन बार मंत्र पढ़कर फूकें।

जहर उतारने का मन्त्र

गंगा गौरी दोऊ रानी टाकन मारि काड़ं विष पाणी गंगा बांटे गौरा खाय अठारा मार विष निर्विघ हो जाय गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—रविवार को ७ मत्र पढ़के तो सर्व विष जाता रहे।

सीसा की टूक गढ़े से कीड़ा पड़ें सो कहावे कीड़ा नगराता का मन्त्र

जा दिन गरते चाली रानी सहस कोटि लपच्यार वांट काली कावली सवै एक उनहार मंदिर माहीं घर करे प्रजा ने बहुत सतावे दुहाई हनुमंत जती की जो हमारी गैल में आवे लंका सो कोट समुन्द्र सी खाई जे कीड़ा नगरो रहें तो जती हनुमंत बीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि—काले तिल ७ बार मंत्र के कीड़ान पर नांखे दिन सात या १४।

बीच्छू का मन्त्र

ॐ नमो सरै गाय पर्वत जाय रै चरै सखो बंबल सल गाय गोबर कियो जिहि सों उपजा बीछू सात कालो कंकल वालो सांप सर्पनी वालो हरो लीली केलो उत्तरे तो उतारुं नहीं तो मारे कंठ को धरि हंकारुं शब्द सांचा पिंड कांचा।

विधि—जूती या नींव की डार से ७ बार झाड़े विष उतरे।

तथा—ओं नमो आदेस गुरु को कयोंकि बीछू नैं तो काठा गोंद गिरी मुख चाष्यों मैं काठा ने पानी पकाके काठयो उतर जाय उतरै तो उतारू चढ़ै तो घारूं नातर गरड़ मोर हंकारू लंका से कोट समुद्र कीर गई उतरे पीछू जती हनुमंत की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांच्न रुरो मंत्र इश्वरो।

विधि—सात बार पानी पद जमीन पर नांखे।

बाबरे कुत्ते का मन्त्र

अकट कूकरा विकट वान विष रूं कातूं वारूं वार कोरा करवा इबत नइया गोरो ढाले ईश्वर न्हाइ कुत्ता का विष उतर जाय दुहाई महादेव

पार्वती की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–कुम्हार के चाक की माटी लावे उसकी ७ गोलियां बनाय गोलीन सौ ७ बार आंक जे ३ गोली तो रोगी को दे ४ आप राखे गोली के टूक करके वखेर दीजे और गौरा पार्वती की दुहाई पढ़ता जाय दो पैसा और कुचला उसकी पाटी से बांधे।

तथा–ॐ नमो कामरु देस कामक्ष्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दस कारी दसकद बरी दस पीली दसलाल इसको विष हनुमान हरे रक्षा करे गुरु गोरख बाल शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–विभूति से ३ दिन मंत्र के आंक से चंगा होवे।

गाय भैंस के पीड़ा का मन्त्र

महंत पटवारी अरज गाती वया जिनके पायों कीड़ा गया।

विधि–चौराहा की सात काकरी तीन बार मंत्र के जिस जानवर के कीड़ा हों उसका नाम ले

उसके मालिक को कांकरी दे कहै कि कीड़ा गया फिर मालिक अपने जानवर के कांकरी मार के कहै कि कीड़ा गया ये शनिवार हिंकू करे।

सर्प खाया का मन्त्र

नृसिंह भरी के बचन: वैजी हो निरंतर तार।

विधि–चुल्लू पानी पढ़ पिलावे तीन टौना मांथे में देय निर्विष होवे।

सफर में आराम पाने का मन्त्र

गच्छ गौतम शीध्र त्वं ग्रामेषु नगरेषुच। आसनं बसनं शैया ताम्बू लंयज कल्पयेत्।

विधि–सफर में जब किसी ग्राम के समीप पहुंचे तब ७ बार मंत्र पढ़के दूब पर सब साथियों को देवे और कहै कि गौतम ऋषि का न्यौता है फिर उस दूब को पाम में रख के ग्राम में जाकर उतरे तो सब प्रकार का आराम मिले। इति।

पशु का कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो की डारे तू कुंडीला लाल पूछ तेरा मुंह काला मैं तोहे पूछूं कहां ते आया तोड़ मांस

तैं सब क्यों खाया अवतू जाय भस्म हो जाय गुरु गोरख नाथ के लांगू पाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—नीव की डाली से ७ बार झाड़ा देवे भला होवे।

पैर थंभवा का मन्त्र

टिमिटिमि अमुकी श्रोणित रखि २ धूर्तहि स्वाहा।

विधि—साल सूत के १४ तार कराय २१ गांठ मंत्र पढ़ २ देवे गूगर खेवे स्त्री की कटि पर बांधे पैर थंभै आरोग्यता होवे।

मन्त्र चोरी काढ़िबा का

उद्द मुद्द जल्ल जलाल पकर चोटी धर पछाड़ भेज कुदाल्या व मुद्दा या कहार या कहार।

विधि—इस मंत्र को नदी किनारे या कूप पर रात्रि समय १२१ बार पढ़कर सो रहे दिन सात माहीं सारा भेद मालूम हो जाय जहां माल धरा हो और जो चुराले गया हो सब स्वप्न के द्वारा प्रगट हो जाय।

तथा–ॐ नारसिंह वीर हरे कपड़ें ॐ नारसिंह बीर चांवल चुपड़े सरसों के फक फक करे शाह को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु को।

विधि–चौखुंटा रुपया जिसमें सूराख न हो मंगावे दूध सौं धोइ लोवान की धूनी दे सवा पा चावल मंगाय ३ बेर जल सों धोई गोमूत्र में भिजो कर सुखावे शनिवार प्रातः काल धरती लेंपै मांटी पर सफेद कपड़ा बिछवावे चावल धरे धूप खेवे लोवान और गूगर की धूनी दे सात बार मंत्र चावलों पर पढ़ के दम करे फिर रूपये बराबर चावल तोल सब को चबवावे तो चोर के मूंह मोती बधे।

अन्य रीति

ॐ सत्रह सै पीर चौंसठ से जोगिनी बावन से बीर बहत्तर सैं भैंरू तेरा से तंत्र चौदा सै मंत्र अठारा से पर्वत सत्रह सै पहाड़ नौसै नदी निन्यानवे सै नाला हनुमंत जती गोरख वाला कांसी की कटोरी अंगुल चार चौड़ी गिरनारी पर्वत सौं चलाई नारी पर्वत सौ चलाई अठारा

भार बनास पती चंचली लौना चमारी की वाचा फुरी कहां कहां फुरी चोर के जाय चांडाल के जाय कहा कहा लावे चोर को लावे गढ़ा धन जाय बतावे चालरे हनुमंत बीर जहां हो चले जहां हो रहै न चलै तो गंगा जमुना उलटी बहै शब्द सांचा पिंड कांचा मेरी भक्ति गरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश।

विधि–तीन पैसा भर कटोरी ४ अंगुल चौड़ी कांसी की दीप मालिका रात्रि को गढ़वावे इस मंत्र सौं उड़द पढ़के कटोरी की पूजा कर कटोरी को चौका में ले जहां चोरी का माल होवे तहां जाय बतावे उड़द मारता जाय।

अन्य विधि–ओं नमो नाहर सिंह बीर ज्यूं ज्यूं तू चाले पवन चाले पानी चले चोर का चित्त चालै चोर मुपन्नोही चालै। काया थमवै माया परा को वीर यानाथ की पूजा पाय टले गोरख नाथ की आज्ञा मेटे नौ नाथ चौरासी सिद्धि की आज्ञा मेटे।

विधि–१०८ बार चावल मंत्र के कटोरी दूध सौं धोवे चावल मंत्र के छिड़के कटोरी निराधार चले चोर के माथे जाय जमैं।

चोरी काढ़बा को मन्त्र

ॐ नमो किस्किन्ध पर्वत पर कदली वन को फल दड़तल कुंज देवी नून प्रसाद अगल पावली पाध बूंटी चोर तेरे कुंजन को देवी तनी आज्ञा फुरे।

विधि–जिन पर शुवा होइ उनका नाम लिखे आटे की गोली में बांध कर प्रति गोली २१ बार मंत्र के जल के घड़े में डाले तो चोर का नाम तिरे।

तथा–ॐ ह्मां चक्रेश्वरी चक्रधारणी चक्र वेगि कोटि भ्रामा भ्रामी चोर सहाणि स्वाहा।

विधि–इस मंत्र सों २१ बार चावल मंत्र के चबावे चोर के मुख से लोहो कढ़े।

तथा–ॐ इन्द्राग्नि बन्ध २ ओं स्वाहा:

विधि–रवि शनि को भोज पत्र पर नाम लिखे १०८ मंत्र जपै अग्नि में डाले चोर का नाम न जले और मंत्र को शनि रवि को लिखे श्वेत मुर्गे के गले में बांधे ऊपर टोकरा धरे लोगों का हाथ धरावे चोर के हाथ धरते ही मुर्गा बोले।

दो मित्र में बैर होई

ॐ नमो नारायणाय अमुंक अमुकेन सह विद्वेषं कुरु २ स्वाहा:

विधि—एक हाथ में काग की पर दूसरे में घुग्घू की पर ले दोनों को मंत्र के मिलाय कारे सूत में लपेटे उसे हाथ में ले जल किनारे जाय १०८ बार जये तर्पन करे।

दूसरी विधि—सिंह और हाथी का बाल लेके दोनों मित्रन के पगतर की मिट्टी लेवे तीनों की पोटरी बांध पृथ्वी में गाढ़ दे उस पर अग्नि जला के चमेली के पुष्प की १०८ आहुति दे।

तीसरी विधि—बिल्ली और कबूतर दोनों की विष्ठा मिलाय उन दोनों के पगतर की धूर में सान पुतला बनाके नील वस्त्र में लपेटे १०८ मंत्र पढ़के उस पर फूंके फिर मसाण में गाढ़दे।

चौथी विधि—नेवला का वाल सर्प का दांत चिता की भस्मी तीनों की गोली बनाय उजाड़ में गाढ़े।

दो मित्रन में बैर हो

मंत्र बारा सरसों तेरा राई पाट की मांठी मसाण की छाई पढ़कर मांरु कर दल वार अमुका कुढ़ैन देर वै अमुक का द्वार, मेरी भक्ति

गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेश गुरु का।

विधि—सरस्बौं राई मांटी मसाण की भस्मि सब को समान ले एकत्र कर आक ढ़ाक की लकड़ी जला १०८ बार मंत्र के आहुति दे मंगलवार के दिन फिर थोड़ी राख होम की लेकें जहां दो मित्र स्त्री पुरुष रहते सहते हों अथवा बैठते हों उस मकान के दरवाजे के आगे डाल दे तो दोनों में जुदाई हो, साय मिति।

अन्य विधि मन्त्र—सत्य नाम आदेश गुरु कों आक ढ़ाक दोनों बनराई अमुका अमुकी ऐसी करें जैसी कूकर और बिलाई।

विधि—शनिवार से ७ दिन आंक के पत्तों पै मंत्र लिख अर्द्ध रात्रि को एक २ पते पर सात २ मंत्र पढ़के ढ़ाक की लकड़ी के अगारों में जलावे तो निश्चय बैर हो।

मंत्र उच्चाटन का मंत्र

ॐ नमो: भगवते रुद्राय दंड करालाय अमुकं सपुत्र वांधवै सह हन २ दह शीघ्र उच्चादय २ हुं फट स्वाहा: ठ: ठ:

विधि १–गधा लोटन की धूरि वाया पग सौं लावै मंगल वार को दोपहरी में २०८ बार मंत्र को बैरी के घर में डाले।

विधि २–सरसौं और शिवनिर्माल्य १०८ बार मंत्र के बैरी के घर में गढ़वावे।

विधि ३–काग की पर रविवार को १०८ बार मंत्र के बैरी के घर में गाढ़े।

विधि ४–उल्लू की पर मंगलवार को १०८ बार मंत्र के बैरी घर में गाढ़े।

विधि ५–उल्लू की विष्टा सरसों का चून १०८ बार मंत्र के जिस पर डाले उसका उच्चाटन हो।

विधि ६–गूलर की कील अंगुल ४ मंत्र केले और १०८ बार मंत्र के जिसके घर में गाड़े उसका उच्चाटन होवे।

विधि ७–उल्लू और कांग दोनों जानवरों के पर धृत में सान कर १०८ बार मंत्र पढ़ पढ़ होमे।

विधि ८–मनुष्य के हाड़ की कील अगुंल ४ लेके १०८ बार मंत्र के वैरी के दरवाजे पर गाढ़ें। इति।

मारन का मन्त्र

ॐ हीं अमुकस्य हन हन स्वाहा:

विधि–कनेर के दस हजार फूल कड़ु के तेल में भिजो के बैरी का नाम मंत्र में ले २ हो में बैरी मरे।

तथा–ॐ नमो: हाथ फावड़ी कांधे कामरी भैंरू बीर मसाणे खड़ा लोह का धनी बज्र का बाण वेग ना मारे तो देवी का लंका का की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेस गुरु का।

विधि–दिवाली की रात्रि को चौका दे दीपक जराय। गूगर खेवे उड़द मंत्र के दीया की लौ पर मार ता जाय १०८ तथा १२१ फिर काले कुत्ते का लोही उड़दी परल भव सख तमला राखे डड़द मंत्र के बैरी के मारे।

अन्य प्रकार–ॐ नमो: काल रूहाय ममुर्क भस्म कुरू २ स्वाहा।

विधि १–मनुष्य का हाड़ ताम्बूल में रख के १०८ बार मंत्र के जिसको खवा वे वो मरे।

विधि २–मंगलवार को १५ को यंत्र विलोम करके चिता की भस्मी से १०८ बार मसान की भूभर ऊपर सौं ड़ारे तो शत्रु मृत्यु वश हो।

विधि ३–चिता का षृमंगल वार भरणी नक्षत्र में १०८ बार मन्त्र जिसके दर्वाजा पर गाढ़े सो मृत्यु वश हो। इति।

वैरी कू कष्ट देने का मन्त्र

ओं काल भैंरू झं काल का तीर मार तोड़ दुश्मन की छाति घोट चलै तो खरा जोगिनी का तीर छूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वांचा सत्त नाम अदेस गुरु का।

विधि–कनेर के २१ फूल २१ गोली गूगर की लेके प्रत्येक मंत्र के एक फूल १ गोली कई के तेल में सान के अग्नि में हो में ११ तथा २१ दिन।

मंत्र पीड़ाकरन

ॐ हीं श्रीं ल्कीं त्रपुर भैरूं त्रपुर बीर मम शत्रु अमुकस्य पीड़ा कुरु २ स्वाहा

विधि–शत्रु के दाहिने पगतर की मांट लावे ७ करेली में भर के ताकू में पिरो कर अग्नि में तपावे मंत्र जपै प्रत्येक करेली ७ मंत्र।

मंत्र पैर चलावा को

ॐ नमो आदेश गुरु को काला कलुवा सक्या बीर तलवा सिरसों चटै शरीर लट झाड़े मुंह मटका वेरक्ता कलुया पैर चलावे चलाय २ मसाणी कलुवा अमुकी ऊभें चाटे हमारा तलवा लगा के फूल तंरा की साखी अमुकी चलती को खड़ी कर राखी सत्त साहिब आदेस गुरु को

विधि–तांबा की सुई नील का तागा नीबू को हाथ में लेले दक्षिण मुख बैठे जल में राखै पांव धूप खेवे मंत्र पढ़ै स्त्री को लेले के जब तारा टूटे नीबू में ड़ोरा को पिरो करदीवला में रख कर मोरी में गाढ़े पैर चलै काढ़े जब थमैं।

मारन–ॐ काली कंकाली महा काली के पुत्र कंकाली भैरूं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काल करे मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधू दसो सुर बांधू नौ नारा बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजू फूल में जाय कोठे जी पड़े थरहर कांपे हल हल हले मेरा भेजा सवाघड़ी सवा पहर के बाद ला न करे तो माता काली की सिज्या पर धरे बाबा

चूके तो ऊबा सूके बाचा छोड़ कुवाचा करे तो महादेव की लटा टूटि भूमि में गिरे माता पार्वती का चीर पै चोट करे बिना हुकम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरू मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–लौंग जोड़ा बतासे पान सुपारी कलावाली बान धूप कपूर ठीकरा में सिंदूर के सात वैंदा लगावे त्रिशूल बनाके मंत्रित करके सब वस्तुओं को होम देना २१ बार मंत्र पढ़ कर होम करना।

अन्याई पुरुष को कष्ट देना

ॐ नमो: आदेश गुरु को लाल पलंग नौरंगी छाया काढ़ि कलेजा तूही चाख।

विधि–चौका देकर दीपक बारे तीन बार कहै आवो महावीर पहलवान हनुमान जी फिर तीन बार कहै अवों कलवा बीर रणधीर फिर गूगर खेवे भोग धरे ११ दिन तक १ सहस्र इस मंत्र को पढ़ै जाप के पीछे घृत में लोग सुपारी जाय फल गूगल मिश्री का चुरन मिलाय १२५ बार अग्नि में मंत्रि के डाले ११ दिन पीछे दो ब्राह्मणों

को भोजन करावे सिद्ध हो फिर काम पड़े जब पूर्व युक्ति से भोजन करके ११ दिन ताई नित्य १ माला जपै मनोर्थ सिद्ध हो।

जिह्वास्तंभन-मंत्र

अलफ ३ दुश्मन के मुंह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर।

विधि—शनिवार से ७ दिन रात्रि को घृत का दीपक नख फूल बतासा चढ़ाय १००० टूक कर पूर्वोक्त मंत्र पढ़ अग्नि में डाले तो सिद्ध हो हाकिम के सामने १०८ बार पढ़के बात करे और बैरी की ओर फूंक मारे तो बोलने न पावे अर्जी पर १०८ बार पढ़के फूंक मारे लोवान की धूनी देकर हाकिम के हाथ मेंदे मनोरथ सिद्ध हो।

तथा—ॐ नमोः यावली २ उसका चश्मा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुश्मन को जेर कर हमको शेर।

विधि—हनुमान का पूजन विधि पूर्वक करके १००० मंत्र जपै गूगल मंत्र के साथ अग्नि पर

डाले सिद्ध हो फिर ७ या २१ बार दुश्मन की तरफ दम करे बबर न करने पावे।

तथा—शाह आलम कुत्व आलम जेर करो दुश्मन दफै करेजा लिम।

विधि—उत्तम मास की शुक्ल पक्ष की पहली जुमेरात से ८ दिन नित्य प्रति ४० बार जपै रात्रि को दीपक धर फूल बतासा चढ़ाके लोबान खेवे रेवड़ी चढ़ाके सिद्ध हो आवश्यकता के समय बैरी पर दम करे।

शत्रु मुख बंधन

ॐ ह्रीं श्रीं खेतल बीर चौंसठ जोगनी प्रतिहार मम शत्रु अमुकस्य मुख बंधन कुरु २ स्वाहा:

विधि—घृत सहत की आहुती १ सहस्र दे फिर लोहा की मेख ४ अंगुल की मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्र पढ़े।

बैरी की बुद्धि स्तंभन का मंत्र

ॐ नमो भगवते शत्रुणां बुद्धिस्तं भनं कुरु २ स्वाहा।

विधि–ऊंट की लीद छाया में सुखा के सीसर पान में रखके १०८ बार मंत्र के खवावे तो बावला हो जाय।

आकर्षण का मंत्र

ॐ नमो आदि रुपाय अमुक आकर्षण कुरु २ स्वाहा।

विधि १–कारे धतूरे का पात रस और गोरे चन इनको मिलाय सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर लिखे खैर के अंगारों में तपावे १०० योजन चला गया हो तो आजाय।

विधि २–अनामिका के रस से भोज पत्र पर लिखे उसके नाम से १०८ बार मंत्र के ग्रहन में डाले तो गया हुआ आ जाये।

विधि ३–मनुष्य की खोपड़ी पर गोरोचन केशर से लिखे और त्रिकाल खैर के अंगारे से तपावे।

तथा–ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा प्रथम मंत्र। ॐ नमोः भगवतें रुद्राय रदृष्टि लंपि नाहरः स्वाहा दुहाई कसासुर की जूट २ फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—मंगलवार से छः अक्षरी मंत्र को दस हजार वार दूसरे का २१ वार दस मंगल अथवा १० दिन ग्यारवें मंगल अथवा दिन को दशांश होम तर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावे।

परीक्षा—सरकंडा को चीर के दोनों ओर से दो मनुष्य पकड़े चूहा की मांटी सरसों बिनोले तीनों को मन्त्र के सरकंडा पर डाले जाय तो दोनों टूक मिल जायं फिर जिसका आकर्षण चाहे वो परदेश में हो तो उसके वस्त्र पर चूर्ण को मंत्रि के मारे जितने दिन के मार्ग पर वो पुरुष हो उतने ही दिन में आजायेगा।

सर्व मोहिनी मंत्र

पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में पैसके मोहूं सगरा गाम राज करता राजा मोहूं फर्श बैठा पंच मोंहुपन घटकी पहिनार मोंहू इस नगरी में पैस के ३६ पवना मोहूं जे कोई मार मार मरता आवेताहि नारसिंह बीर बायां पग के अंगूठा तरे घेर २ लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

विधि–शनि रविवार को रात्रि के समय पूजन नाहर सिंह का विधि से कर धूप चन्दन पुष्प रोली चामर गूगर पान सुपारी लोगों सो १०८ मंत्र जपै हर एक मंत्र के साथ पान सुपारी शक्कर घृत गूगर सान के अग्नि में होमता जाय ब्रह्मचर्य से रहे मंत्र सिद्ध हो फिर नन्दन वन की रुई में ऊंगा की जड़ लपेट क बाती बनाकर काजल पाड़े उसका जल को ७ बार मंत्रि के आंजे तो सम्पूर्ण स्त्री पुरुष बालतरुण बृद्ध वश्य हों जिस ग्राम में जाया सब ग्राम वासी सेवा में स्थिति हों पण्डितों के लिये श्रेष्ठ है।

सर्व ग्राम मोहिनी मंत्र

जती हनुमंत कने मेरे घटपिंड का कोन है वौरी छत्तीस पवन मोही मोहि जोहि जोहि दह दह गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा सत्तनाम आदेश गुरु का।

विधि–प्रथम ७ शनिवार माहनुमान का पूजन धूप दीप नैवैद्य सों करके प्रति दिन १४४ जाप करे सिद्ध होई फिर चौराहा सों ७ कंकड़ लाके

पनघट कुआं में १४४ बार मन्त्र के नाखे सब ग्राम पानी पीयें वश हों।

सभा मोहिनी सुर्मा

कालूं मुख धांयें करुं सलाम मेरी आंखों में सुर्मा बसे जो देखो सो पायन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्त गीर की छ:३:।

विधि–सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े आटा पिसाई कड़ाही में घृत शकर मिलाय हलुवा करे गौसुल आजम दस्तगीर की नियाज दिला के हलुवे को आप ही भोग लगावे और दर्बार में जाय तो सारी सभा वश्य हो।

राजा की क्रोधाग्नि शीतल होई

हथेली तो हनुमंत बसै भैंरु बसै कपाल नाहरसिंह की मोहनी मोहा सब संसार माहनरे मोहंता बीर सब बीरन में तेरा सीर सब दरिष्टी बांधि दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिन्दूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया कौन लाया अंजनी का हनुमंत गौरी का गणेश कारा गोरा तोतला तीनों बसैं कपाल बिन्दा तेल

सिन्दूर का दुश्मन गया पाताल दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देखि शीतल हो जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेस गुरु का।

विधि–रविवार को नृसिंह का पूजन विधि सौं करे १२१ जाप करे इसी प्रकार ७ रविवार दीपक तेल लोवान लाहू रख के १२१ मन्त्र का जाप करे सिद्धि हो राजा के सामने सिंदूर मंत्रि के माथे पर लगाया जाय तो राजा का क्रोध मिटै प्रसन्नता प्राप्ति होई।

राजा के कामदार का बसीकरन मन्त्र

बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख तुम हो दाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना।

विधि–इकतालीस बिनौले लावे एक २ को इकत्तालीस २ बार मंत्रि के अर्द्ध रात्रि के समय अग्नि में डाले तीन दिन में मनोर्थ सिद्ध हो प्रथम २१ दिन तक २१ बिनोले पर इक्कीस २ बार पढ़के जलावे तो सिद्धि होई।

बसीकरन राजा मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का जल बांधूं जलहर बांधूं आणि बांधूं बार बार बांधूं शिव पूत प्रचंड बांधूं रूठारा जा काई करसी आसण छोड़ मंझाव सण देशी आपण टीको चंदन ललाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं सैई यालतें में बंध्यान गौरी पार्वती बंध्याते में बंध्या या गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—धूप दीप नैवेद्य धर क पार्वती का ध्यान करें शनिवार से २१ दिन १२१ जाप करें सिद्धि होइ पाछे कुंकुम, चंदन गोरोचन मिलाय गौ के दूध में तिलक करके राजा के सन्मुख जाय राजा वश्य हो।

सर्व बसीकरन मन्त्र

मंत्र दोन के आनस गुरु को राजा मोहूं प्रजा मोहूं ब्राह्मण बाणिया हनुमंत रूप में जगत मोहूं।। तो रामचन्द्र पर माणियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–प्रथम पूर्वोक्त श्री रामचन्द्र जी का ध्यान कर २१ दिन प्रति दिन १२१ बार जाप करे फिर गांव के चौराहे पर जाय धूल की चुटकी लीजे ७ बार मंत्रि के बिन्दी लगाने से सर्वजन वश्य हो।

राज्य बसीकरन मन्त्र

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक मही पते में वश्यं कुरू २ स्वाहा:

विधि–ऊंगा के पुष्प रविवार को ला राजा को खिलावे।

पति बसीकरन मन्त्र

ॐ नमों महायक्ष्णी पति मेव वश्यं कुरु कुरु स्वाहा:

विधि १–योनिरक्त केला का रस, गोरोचन का तिलक करे तो पति वश्य हो।

विधि २–मंगलवार को सुपारी निगले निकसे तब जल दूध गंगाजल में धायान रखवावे।

विधि ३–लोंग और जीभ का मैल खवावे तो पति वश्य हो।

स्त्री बसीकरन मन्त्र

ॐ नमों कमष्या देवी अमुकी नमे वशे कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—शनिवार को स्त्री के बाल और बायें मगतर की घूल लेके पुतली बनावे नीले वस्त्र में लपेट उसकी योनी में अपना वीर्य धरे सिन्दूर भग में लगावे उसके दर्वाजे की लम्बाई की ओर गाढ़े जब नाघे वश हो।

तथा—सोमवार मृगशिर नक्षत्र में वीर्य में सुपारी मिलाय पान में रख खिलावे।

तथा

मन्त्र—ॐ नमो काल भौंरु काली नात काला चोला आधी रात काला रेत बेरा वीर पर नारी के राखे सीर बेगी जा छाती धरलाव सूती होय तो जगाय लाव शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—होली दिवाली की रात्रि को लाल अरंड का पेड़ एक झटका से तोड़ लावे काजल करे मन्त्र २१ से स्त्री के लगावे वश्य हो।

अमल फूल बसीकरन

कामरु देश कामाख्या देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी फूल वीणे लौनाचमारी जो इस फुल की सूंघे बासतिस काजी वह हमारे पास घर छोड़े घर आंगन छोड़े लोक कुटुम्ब की लज्जा छोड़े दुहाई लौना चमारी की दुहाई घन्वन्तर।

विधि–शनिवार सौं २१ दिन प्रतिदिन १४४ जाप करे दीपक जलाके लोवान खेवे शराब का भोग दे सिद्धि हो फिर फूल पर ७ बार मंत्र के फूंक दें। जिसको सुंघावे वश्य हो।

बसीकरन अमल पान

कामरु देश की कामाख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी न दीन्हा बीड़ा पहला बीड़ा आती जाती दूजा बीड़ा दिखावे छाती तीजा बीड़ा अंग लिपटाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि–दिवाली की रात्रि को दीपक के सामने गूगर खेके मिठाई धरे १४४ बार मंत्र पढ़े

सिद्धि हो अथवा रविवार को प्रतिदिन २१ जाप २१ दिन करें सिद्धि हो फिर ३ पान बिना तराशों का बीड़ा बनावे मसालेदार ७ बार मंत्रि के जिसे खिलावे वश्य होवे।

तथा—हाथ पसारु मुख मलूं काचा मछली खाऊं आठ पहर चौंसठ घड़ी जग मोह घर आऊं।

विधि—दिवाली रात्रि को १०१ बार कागज पर लिखे और एक २ पीठ पर आशक माशूक और उनकी माता का नाम लिखे इस प्रकार अमुकी २ की बेटी अमुके अमुके के बेटे के पास आवे सिद्धि हो अथवा ७ शनिचर ऐतवार प्रतिदिन १०१ बार पढ़े दीपक धरे गूगर खेवे मिठाई फूल आगे धरे सिद्धि हो फिर पान के बीड़ा को ७ बार मंत्रि के खवावे सो वपूय हो अथवा हाथ की हथेली पर ७ बार मंत्र पढ़ मुख पर फेरे जाय तो सारी सभा वश्य हो।

मोहिनी

ॐ नमों आदेस गुरु को मोहनी जग मोहनी मोहनी मेरो नाम ऊंचे टीबेहूं बसूं मोहूं सगरो

गाम ठग मोहूं ठाकुर कोहूं बाटका बटोही मोहूं मोहूं कूवा की पनिहार मोहूं महलों बैठी राणी मोहूं जोई २ बाबा पगतरे देहु गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–पूर्व युक्ति सिद्ध कर फिर चौराहे में रात को ७ बार मंत्र पढ़ मस्तक पर बिन्दी लगा जाय गुड़ पर २१ बार मंत्र पढ़ के किसी के नाम सों कूप में डारे तो जल के पीते ही आकर्षण हो।

बुरकी–धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली चंवती जै जै कार इनरन चोंप भरे अमुकी छाती छार छारते न हटै देता घर बार मरे तो मसान लौटे जीवे तो पाव पलोटे वाचा बांध सूती होई तो जगाय लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि–रविवार को जो कोई मरा हो उसकी ३ मुट्ठी राख लावे प्रथम ७ दिन शनिवार से नित्य १४४ जाप करे धूप दीप नैवेद्य धरे मसाण की राख पर दीपक धरे उसी राख पर २१ बार मंत्र पढ़के जिसके ऊपर राखे वो निःसंदेह साथ चली आवे परिक्षा भैंस पर करले।

बसीकरन शैतानी अमल

इन्ना आत्वैना शैताना मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना उसे मेरे पास लाना तो तेरी बहन भानजी पर ३०३ तलाक।

विधि—खाट की पायती में नंगा होकर १२१ बार गुड़ पढ़ के गुड़ को खाट तले रख कर सोवे प्रातःकाल बालकों को बांट दे ७ दिन करे जरूर हाजिर हो।

तथा

बड़ पीपल का थान जहां बैठा अबाबील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बी अमुकी को जरा न राने तो अपनी बहन भौजी के सिरजान पग चलता अभी रान जो न राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं अपने काज को मेरा काम न हो गाती आन सीमें तेरा दामन गीर हूंगा।

विधि—शनिवार सों २१ दिन अर्द्ध रात्रि के समय नंगा होके ११ रपाई ले हर एक पर ११ मंत्र पढ़के आग में डालै।

अमल शैतानी

अलफ गुरु गुफार रहमान जाग आगरे अलहा दो बशै तान सात बार अमुकी को जरान जो न तराने तो तेरी माकी तलाक वहन की तीन तलाक।

विधि–बेसन का चौमुखा दीपक बनावे चारों कोणों पर चींटा का लोही और दाहिने हाथ को अनमिका का लोही लगाके चार बाती तेल में जरावे नंगा होके दक्षिण मुख बैठे दीपक जलावे लोबान खेवे चने और जौ भुने हुए भोज में धरे १६० बार मंत्र जपै दीपक जलता रहे नंगा ही सो जाय जाके नाम पर करे बाये रात्रि भर में ७ बार करे व्याकुल हो पायन पढ़े।

तथा

अलफ अलोफ एक रहमान सन शैतान मेरी शकल बन फलानी को जरान नरानै तो तेरी मा बहन की ३०३ तलाका।

विधि–पूर्व युक्ति खावा दीपक वेसन का।

मोंहनी

अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार रस का नाम मोहनी मोहे जग संसार मुझे करे मार

२ उसे मेरे बायें कदम तरे डार जो न माने मुहम्मद की आण उस पर पड़े बज्र का बाण वहा लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।

विधि–शनिवार से घृत के दीपक के आगे मिठाई धर के लोबान खेवे १०१ मंत्र जपे दूसरे शनिचर तक फिर स्त्री के पग सने की माटी ७ बार पढ़कर जिस पर डाले सो वश हो।

फूल मोहनी

ॐ नमो आदेस गुरु कों एक फूल फूल भर दौना चौंसठ जोगिनी ने मिल मिया दोना फूल २ दह फूल न जानी हनुमंत बैठि घेर २ दे आनी जो सूंघे इस फूल वास उसका जो प्रथम प्रयोग कर सके पास सूती होइ तो जगा लाइ बैठी होय तो उठा लाइ और देखे जरं बरै मोह देख मेरे पायन परे पेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा वाचा से टरे कुंभी नरक में पड़े।

विधि–शनिवार सो २१ दिन विधि युक्ति दीपक का पूजन कर १४४ बार जपै सिद्धि होइ फिर सोमवार को ११ बार फूल पढ़कर सुंघावे जी प्राण से वश होवे।

फूल मोहिनी

कामरु देश कामाख्या देवी जहां बसैं इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी ने वोई बाडी फूल उतारे लोना चमारी एक फूल हंसै दूजा विहंसे तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहर सिंह बसै जो सूंधे इस वास वो आवे हमारे पास और के पास जाय हीयो फाटि मरि जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–रविवार को स्नान कर लोंग सुपारी पान फूल मिठाई ले दीपक जराइके सुगंधि के पुष्प को घृत में सान के १०८ मंत्र के अग्नि में होगें तो २१ दिन में सिद्ध होवे। ब्रह्मचारी सों रहै २२ वें ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा दे फिर सुगंधित पुष्प को ७ बार मंत्रि के सुंघा दे सो आवे।

कनेर का फूल

ओंगूठी माता गूठी राती गूठा लगावे आग अमुका के चटक चनावे बे धड़क कलह मचावे मुखन न बोले सुख न सोवे कहत मंत्र उठाई मारियो उरझिर्ज्यो काचा सूत की आटी उरझे अब

देखूं नाहर सिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–शनिवार को लाल कनेर की डाली के लाल डोरा बांधे और न्यौता आवे रविवार को प्रात:काल बाड़ी डाली को तोड़ लावे रात्रि को विधि युक्त दीपक के आगे १२१ मंत्र जपै २१ दिन में सिद्धि हो फिर लाल कनेर का फूल २१ बार मंत्रि के जिसको दे निश्चय आवे।

मोहिनी फूल चम्पा

कामरु देस कामख्या देवी जहां वसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई बारी कूल चुनै लौना चमारी फूल राता फूल माता फूल हंसा फूल बिहंसा तहां बसै चंपा का पेड़ चंपा के पेड़ में रहै काला भैरूं भूतप्रेत ये मरें मसान ये आवें किस के काम पे आवें टौना गमन के काम भेजूं काला भैरूं कुंलावे मुश्कें बांध बैठी हो तो वेगी लाव सूती हो तो उठा लाव वह सोवे राजा के महलों प्रजा के महलों मुझ से होनी रानी फूल दूं उसी के हाथ वह उठा लागे भेरे साथ हम को छा-ड़िपर धर

जाय छाती फाटि वहीं मरजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मुत्र ईश्वरो वाचा चूके उमाह सूखे लोना चमारी बहरे जोगी के कुंड में पढ़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नार खरवार में पड़े।

विधि—शनिवार को चंपा के पेड़ को तोंते और लाल कलावे के डोरा सो बांध आवे रविवार को वही डारी ७ मंत्र जप के गूगर खेवे धूप दे कर तोड़ लावे रात्रि को दीपक धर डोरी के आगे भेरूं का पूजन करे प्रतिदिन २१ बार जपै २१ दिन में सिद्धि हो भोग में शराब और उड़द के बड़े तेल गुड़ दही धरे चंपा के फूल पर ७ बार मंत्र जप कर जिसे सुंघावे उस को भैंरू लाय हाजिर करे।

मोहनी पुतली बसीकरन मन्त्र

बांधूं इन्द्रक बाधू तारा बांधू बिंद लोही की धारा उठे इन्द्र न घाले घाव खूब साख पूणी हो जाय। बण ऊपर लोकां कदी हीया ऊपर लौ सूत मैं तो बंधन बांधियो रूई सुसर जाया पूत मन बांधूं विद्या दे सूंसाथ चार खूंट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।

विधि–शनिवार से २१ दिन रात्रि के समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होके एक पुतली बना के उसका पूजन विधि पूर्वक करे दीपक धर गूगर खेवे २१ मंत्र जपै सिद्धि हो शनीचर के शनीचर के सवा पा लाप सी भोग धरे ५ वतासा भोग धरे।



वशीकरन विधि–शनिवार को एक पुतली बना उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे १०८ बार

मंत्र बनाई हुई पुतली पर दम करके जिस स्त्री की चाह ना हो उसको दिखावे पुतली को छाती से लगा रखे वह स्त्री बेचैन होके हाजिर होवे।

सुपारी मोहनी मंत्र—खरी सुपारी टामन गारी राजा पर जाखरी पियारी मंत्र पढ़ लगाऊं तो रहिया कलेजा दोड़ जीवत चाटै पग तली गूवें सेव मसान या शब्द की भारी न लावे तो जती हनुमन्त की आन शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—सुपारी २१ दिन में सिद्ध करके अथवा सूर्य

ग्रहण में ११८ बार मंत्र के मंत्रि के विसे खिलावेवश्यहो।

सुपारी मोहनी मन्त्र—ॐ दिव नमोः हरये ठः ठः स्वाहा।

विधि—१०८ बार मंत्रि के खिलावे तो वश्य हो।

तथा—मंत्र परि में नाथ पीर तू नाथ जिस को खिलाऊं तिसको वश करना फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—ग्रहण में नाभी समान जल में सोवा सुपारी ७ बार मंत्रि के निगल जाय जब पेट में से निकलै तब सों धोवे गोठे दूध सों धोइ ७ बार मंत्रि के गूगर धूनी दे जिसे खिलावे परल सुपारी सो वश हो नर और क्या नारी।

लौंग बसीकरन मंत्र—ॐ जल की जोगिनी पाताल का नाग जिस पै भेजूं तिसके लाग सोते सुखन बैठे सुख फिर फिर देखे मेरा मुख मेरी बांधी छूटे तो बाबा नाहर सिंह की जन टूटे।

विधि—चार लौंग पीस पत्ता में रख गूगर धूनी दे फिर ओएके तले रख पानी में गोता लगावे गोता में ७ बार मंत्र को पढ़े फिर पानी से निकल कर मुंह से पत्ता निकाल के लोंग थूरगूगर की धूनी दे कर जिसे खिलावे सो आवे।

लोंग मोहनी—सत्त नाम आदेस गुरु को लोंगा मेरा भाई इन्ही लौंग ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवन माता तीजी लौंग अंग मरोड़े चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े चारों लौंग

जो मेरी खाय फलाने के पास सो फलानी कने आजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–रविवार से रात्रि दीपक का पूजन कर प्रतिदिन २१ बार २१ दिन तक पढ़े सिद्धि हो ४ लौंग सात बार मंत्रि के खिलावे हाजिर हो सत्य ३।

बसी करन इलायची का मंत्र–ॐ नमो काला कलवा काली रात जिसकी पुतली माँझि रात काला घाट वाट सूती कों जमाइ लाव बैठी को उठाइ लाय खड़ी को चलालाव वेगी धरया लाव मोहनी जोहनी चल राजा की ठांऊ अमुकी के तन में चटपटी लगाव जी याले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोड़े हमारा साथ घर कों तजे बाहर को तजे घर के माई कों तजे हमें तज और कनें जाइ तो छाती फाट तुरत मर जाय सत्य गुरु आदेस गुरु गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ईश्वर महादेव की वाचा वाचा से टरे तो कुंभी नर्क में पड़े।

विधि—२१ दिन में सिद्ध करके इलायची पर ११ बार सत्य ३ पढ़ के मंत्रि दे तो वश्य हो।

तेल मोहनी—ॐ मोहनाराणी मोहनाराणी चलै सैर को सिर पर धर तेल की दोहनी जल मोहूं थल मोहूं सब संसार मोहनाराणी पलंग चढ़ बैठी मोहर हादर बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंग बली की।

विधि—अतर फूल मिठाई दीपक लोंवान ले दिवाली की रात्रि को २२ माला जपे सिद्धि हो फिर तेल का बिंदा मस्तक पर लगाके दर्बार में जाय और तिलक को सात बार मंत्रि के स्त्री के अंगसे लगावे तो आवे।

पुतली सर्व बसीकरन मंत्र—ॐ ही क्रीं जहिये अमुकी आकर्षय आकर्षय ममवश्यं कुरु कुरु दोहं कुरु स्वाहा।

विधि—प्रथम पुतली को जो अगले सफे में लिखी है केसर कुमकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिख शुभ घड़ी में पूजन करे प्रार्थना करे अपने

कार्य की प्राप्ति को फिर अरंड, की नाली में रख के खैर के अंगारों से तपावे १०८ मन्त्र जप गूगर की गोली लाल कनेर का फूल घृत में सान अग्नि में डाले १०८ दिन में काम सिद्धि हो इस पुतली से नभि राजा प्रजा सब वश्य हों।



वस्तु मंगाने का मन्त्र

ॐ नमो देय लोक देव, स्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी छप्पन भैरूं हनुमंत वीर भूत प्रेत

दैंत्य कूं सारा मगाये पराई माया लावे लड्डू, पेड़ा, बरफी, सेव, सिंघाड़ा, पाक, पतासा, मिश्री, घेवर, लोंग, जोड़ा इलाइची, दाणा, तले देवी किलकिले ऊपर हनुमंत माजें इतनी वस्तु में चाही वस्तुन लावे तो तेतीस कोटी देवता लाजें मिर्च जावित्री, जायफल, हड़, जवाहड़, बादाम, छुहारा, मुफुर्रे रामबीर तो बतावें वस्त्रां लछमन बीर पकड़ावे हाथ भूत-प्रेत को चलावे साधि हनुमंत वीर लंका को धाइ भूत-प्रेत को संग चलाया चाही वस्तु चली आवे हनुमंत वीर को सब कोई गाये सौ कोसों को बस्तां न लावे तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लजावे।

विधि—मांस के बाहर केरा कूप हो तहां आप कूप में बैठें हनुमान की मूर्ति भाड़े मूर्ति के मुख आगे के मन्त्र घरे पाप खेकर मंत्र जपें सात दिन ताईया खरोट ११ और सवाया खरोट खांड़ सहित भोग धरे पाछें वाकों आप ही खाय जब आकाश वाणी होई तब वर मांगे सो पावे।

मोहनी मंत्र तेल—ॐ नमो मोहनी राणी पलंग चढ़ बैठी मोड रहा दरबार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंग बली की।

विधि—अतर मिठाई फूल दीपक लोवान दिवाली की रात्रि को २२ माला जपे तेल पर सिद्धि हो। फिर तेल को मस्तक पर बिन्दा लगाके दरबार में जाय और जिसके अंग से तेल लगावे सो वश्य हो।

मंत्र बसीकरन—धूली-धूली विकट चंदनी पट मारूं धूली फिरे दिवानी घर घर तजे बाहर तजे ठाड़ा भरतार सजे देवी दिवाली एक सठी कलवा न तू बाहर सिंह वीर अमुकी ने उठाई ल्याय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—शनिवार को स्त्री मरे उसके पगतर का अंमार में कोरी ड़ाबी में रख ७ बार मंत्र के लगा जेसो लाभ हो।

मंत्र बसीकरन—ओं ह्रीं रक्ते चागुंडे अमुकस्य मंत्र वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि—सहस्त्र जपेत कुमकुम चंदन गोरोचन गौ का दूध मिलाय तिलक करे राजा वश्य हो।

मिठाई मोहनी—जल मोंह थल मोंहूँ जंगल की हिरणी मोंहूं बाट चलंता बटो ही मोहूं कच हरी बैठा राजा मोंहूं पीढ़ा बैठी राणी मोहूं मोहनी मेरा नाम मोहू जग संसार तरा तरीला तोतला तीनों बसें

कपाल मस्तक बैठी मात के दुश्मन करूं या मोल मेरी भक्ति की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–शनिवार से २१ दिन १४४ बार पढ़े अग्नि पर गूगर मंत्र पढ़-पढ़ होंगे दीपक पर फूल पतासे चढ़ावे सिद्धि हो फिर मिठाई पर २१ बार मंत्रि के दे।

संखहूली सभा मोहनी–ओं संखाहूली वन में फूली ईश्वर देख मवर्जा भूली जो या कों सिर पर धरे राजा परजा वाके चरणों पड़े मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।

विधि–शनिवार वन में जाय चावल शक्कर संखाहूली पर चढ़ाइ धूप दे नोंत आवे रविवार को प्रातःकाल जाय जलसों स्नान कराई रोली चंदन चढ़ाई धूप दे फूल चढ़ावे घृत का दीपक वार गुड़ भोग धरे १२१ बार मंत्र पढ़ मूल मूल समेत उखाड़ लावे गोरोचन सांप की कांचली संखाहूली तीनों को पीस २१ दिन रात्रि को १२१ प्रतिदिन जाप करे सिद्ध होई पगड़ी में राखे राजा और सारी सभा वश्य हो।

सर्व मोहनी मंत्र–ॐ संखाहूली वन में फूली बैठी करे सिंगार राजा मोहें प्रजा मोहे सबने करे

सिंगार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो विधि पूर्व युक्ति करे।

सर्वोपरि सभा मोहनी मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरु कों ओं संखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवर्जा भूली आवभाव राजा प्रजा पांव पडाय मंगल मोहन बस करन मोहन मेरो नाम वे मोहन फलाना के अंत शबसों संग महेसुर गांव चल मोहनी राऊल चल जलती आग बुझावत चलती न खेत आगें मोह तीन खेत पाछें मोह तीन खेत उत्तर मोह तीन खेत दक्षिण मोहे आवने की दृष्टि मोह पट्टा बैठा राजा मोहे शैय्या बैठी राणी मोहदर मोह दीवार मोह गांव का मुकद्दमा मोह काजी मोह काजी की कुरान मोहते तू नाहरसिंह वीर हमरा कारज ना करे तो आप की माता का दूध पिया हराम करे ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—पूर्व युक्ति शनिवार को न्यौते रविवार को पूजन करे २१ मंत्र पढ़कर लावे रात्रि को दीपक घर नृसिंह का आवाहन करे दो पेड़ा, पान का बीड़ा भोग धरे चावल घृत शक्कर १२२ बार मंत्र पढ़-पढ़ अग्नि पर डाल के कपूर की आरती उतारे ७ इतवार

प्रतिदिन ऐसा करें सिद्धि हो इतवार का वृत रखे फिर संखाहूली की पूर्व विधि गोली बांधकर पाग में रखे राजा-प्रजा अति प्रसन्न रहें सारी सभा पिता के समान जाने स्त्री को मिठाई पर पढ़कर खिलावे दूसरे मनुष्य को किसी के काम होइ तो गोली को जल में घिस उसके मस्तक पर बिन्दी लगावें मनोरथ पूरा हो।

गुड़ मोहनी मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरु को गूगल धूप की धुआँ धार देखूं पलमा तेरी शक्ति तरस रात्रि को टूटा तार ऐसा टूटा भैरूं बाबा काम नगारा गुड़ मंत्र पढ़ उसको दे घर में चक न बाहर चक बाहर चक बाहर चक फिर २ देखे हमारा मुक्त जीवन सेवे जीव कों मुक्त सेवे मसाण हमसे आकुल व्याकुल जती हनुमंत की आण हमें छोड़ और पास जाय पेट फाट तुरंत मर जाय सत्यनाम आदेश गुरु का।

विधि—सात शनिचर प्रतिदिन १२१ बार जप भोग शराब लापखी कलेजी धरे सिद्ध हो पाछे गुड़ मंत्रि के खिलावे हाजिर हों।

तथा—ॐ नमो आदेश गुरु को या गुड़ राता या गुड़ माटी या गुड़ आवे पाया पड़ती जो मागूं प्रयोजन

पाऊं सोती तिर्या जगाकर लाऊं चल-चल आगिया बेताल फलानी के पेट चलावे कालरात्रि को चैतन दिन कों सुख फिर जोवे हमारा मुख जैमकड़ी मकड़ी से टले सीस फाट दोहूक हो पड़े काला कलवा काली रात कलवा चाला आधी रात चाल-चाल रे काला कलवा साधन चाटे हमारा तलवा आक के पान कवारी बसे धन जोबन सों खरी पियारी रेतरगत गुड़ करे गिरास अमुकी आवे फलाना पास हनुमंत जी की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—गुड़ दो टंक को चटली उंगली के रुधिर में २१ बार मंत्रि के स्त्री को खवावे वश हो नहीं तो कूप में डाले।

सुई छेदवा का मंत्र—ॐ नमों चंड पचूना लोहा सार लोहा का पत्र गढ़े लुहार मोड़ि माड़ि कर कीया पानी जारे लोहा भस्म हुलारी रामबीर तो लावे मांटी लछमन मूंदे घाव पाचे फूटे पीड़ा करे तो महाबीर रक्षा करे शब्द सांचा पिण्ड कांचा।

विधि—विभूति सों सुई को ७ बार मंत्रि के गोली में छेदे।

तथा—धार धार महाधार बांधू सात बार आणी बांधू तीर बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की छू।

विधि—सुई सात बार मंत्रि के गोली में छेदे।

पूंगी बाधिवा का मंत्र—ॐ वादी आया वाद न करता बैठा बड़ पीपर की छाया रहे बादी बाद न कीजे बांधू तेरा कंठ और काया बांधूं पूंगी अरु नाद बांधूं योगी और साध बांधूं कंठ की पूंगी बाजे और मसान की बानी अब तरोर पूंगी सी जाने तले बांधे नाहरसिंह ऊपर हनुमंत गाजे मेरी बांधी पूंगी बजे तो गुरु गोरखनाथ लावे।

विधि—कांकरी तीन बार मंत्रि के पूंगी पर मारे।

पूंगी खोलवा का मंत्र—ॐ गुरु को शब्द आनन्द नाद खुल गई पूंगी भयौ अवाज शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—धूरि मंत्रि के मोर।

ढाल रोपवा का मंत्र—ॐ चौंसठ जोगिनी बावन वीर छप्पन भैरूं सत्तर पीर आया बैठ ढ़ाल के तीर हाली हलै न चाली चलै बादी बाद शत्रु सों मेले या

ढ़ाल ले चले तो जाहर पीर की दुहाई फिरे शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—कांकरी पढ़कर मारे।

ढ़ाल को मंत्रि के पैसा पर मेलै मंत्र पैसा का—ॐ काली देवी किल किला भैरूं चौंसठ जोगिनी बावन बीर तांबे का पैसा बज्र की लाठी मेरा कीला चले न साथी ऊपर हनुमंत वीर गाजे मेरा कीला पैसा चलै तो गुरु गोरखनाथ लाजे शब्द सांचा पिण्ड कांचा।

पैसा उड़ावा का मंत्र—ॐहनुमंत वीर हुलासा चलरे पैसा रूखा बीर खा तेरा बासा सब की दृष्टि बांधी दे जोहि मेरा मुख जो बे सब कोई बाद करता वादी सेवे भरी सभा में मोहि विगोवे शब्द सांचा।

विधि—धूर मंत्रि के पैसा पर मारे उड़ जाय।

नाक की नकसीर थामवा को मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु कों सार सार महासागर बांधूं सात बार आणी बांधूं तीन बार लोही की सार बांधूं हनुमंत वीर पाके न फूटे तुरन्त सुखे शब्द सांचा।

विधि—विभूति सो सांच वार चांकजे।

भान मती तमाशे नजर बंदी का मन्त्र—ॐ नमो भगवते वासु की नागर जाय गोप कुंडली चलना निनी स्वाहा।

विधि–रविवार को अंकोल की लकड़ी ले गोल चौका दे के धूप-दीप नेवैद्य काष्ट को दे फिर १०८ मंत्र जपै सिद्धि हो जाय तब तमाशा करे और वा लकड़ी को मंत्र पढ़ फिरावे तो जिसकी दृष्टि उस पर पड़े उसकी दृष्टि बन्द हो।

तथा–ॐ नमो वटुकी चामुंडी ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि–पद्मनाल पर कन्या काता सूत लपेटे १०८ मंत्र पढ़े तमाशा करे तहां फिरे जिनकी दृष्टि पड़े उनकी नजर बंधे।

तमाशा अन्य प्रकार–ॐ नमो भगवते वासु की नाम पूर्ण।

विधि–अंगूर की शाखा १ शशा की बीट २ थूहर के पात ३ बहेडे की छाल ४ पटोल ५ इन पांचों को भेड़ी के दूध में बांटि गोली बांधे गूगर खेवे, दीपक, वारे, दूध, बूरा, मिलाई भोग धरे पुष्प चढ़ावे १०८ बार पूरा मंत्र जपे गोली सिद्धि होई फिर गोली को छाया में सुखाय रख छोड़े खेल करे तब प्रथम इस रक्षा मंत्र से ७ बार विभूति पढ़।

मस्तक पर लगावे रक्षा मन्त्र–ॐ पानी स्वाहा:

विधि–१ फिर उक्त गोली को मेहंदी की तरह हाथ पर लगा के कहे फलाने आव तो उसी को देखे।

विधि–२ गोली को मले में लगावे तो रुंड़ दीखे।

विधि–३ गोली की काम की पर में लगावे काग दृष्टि आवे।

विधि–४ गोली को कमर में नाल में मल के ऊंचा वारे तो ऊंचा दीखे।

विधि–५ और नीचा रखे तो ऊंचा दीखे।

विधि–६ गोली को नीबू के पात में रखे तो बीछू दृष्टि पड़ें।

विधि–७ गोली और हरताल दोनों को मिलाय उंगली में लगावे तो लोवा दीखे।

विधि–८ मुर्गा की परपे गोली को मल कर हाथ में ले तो मुर्गा दीखे।

विधि–९ अन्न पर मले तो रत्न दृष्टि आवें।

विधि–१० अन्न को बोवे तो तुर्त फूले फले।

विधि–११ गोली को करंज बीच पर मलके मुंह में रखै तो पेट में पानी भरे निकारें तो सुख हो।

विधि–१२ गोली के हाथ पर मले तो लोप होके भीड़ में से निकल जाय।

विधि–१३ गोली को सारे अंग में लगावे तो सब हाथ पांव आदि टूटे हुए दिखाई दें धोवे जब जुड़े दीखें इति १३ विधि।

अन्य खेल भानमती–गोंद तीह रताल १. आंवला २. केला की जड़ ३. मंग मींगी का अंगूर ४. सोलहपर्ण ५. श्रङ्ग शाख ६. इनछ हो को समान लेके भेड़ी के मूत्र में गोली बांधे और ऊपर लिखे हुए मंत्र ॐ नमो भगवते। पूरे को २१ बार पूर्व युक्ति पढ़के गोली छाया में सुखा धरे।

अथ सिद्धि करन विधि

गुण १–गोली को घिसकर कांसी के पात्र लगावे तो पाताल देवी दीखें।

गुण २–गोली और सरसों को गो मूत्र में पीस शरीर में लगावे तो बड़े से छोटा दीखे।

गुण ३–गोली जार सरसों को छेरी के मूत्र में पीस के शरीर में मलै तो बड़ा दीखे।

गुण ४–गोली धतूरा का बीज दूध में पीसकर उंगली पर मले तो जिसे दिखाये नंगा हो जावे।

पत्थर वर्षा-वे को मन्त्र–ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनी देवी महा पिशाचिनी क्रीड़ा ठः स्वाहा।

विधि—शनिवार को जहां मुर्दा जलै उसकी चिता में ७ कांकर मंत्रि के नाख आवे ३ घड़ी पीछे काढ़ि लावे जिसके घर में कांकर गाढ़ै पत्थर वर्षे काढ़े तब बंद होवे।

शुभाशुभ कथन—ॐ ह्रीं श्रीं वाली लंवा हुली क्षां क्षीं क्षुक्षें क्षः फट स्वाहा।

विधि—पूर्व मुख बैठ १ सहस्त्र मंत्र जपै भूपर सोये ब्रह्मचर्य सों रहे १ बार भोजन करे शुभाशुभ कहै।

तथा—ॐ स्वप्रावलोकिनी सिद्धि लोचनी स्वप्रेक कथन स्वाहा।

विधि—एको विंशतिवार जपेत्।

टीढ़ी भगाने का मन्त्र—ॐ नमो पश्चिम देश में अस्तावल तल हुआ जहां अजैपाल ने खुदाया कुआ व कुआ में निकला नीर जहां भेला हुआ बावन वीर जाने मिलकर भता उपाया हाथ पकड़ टीढ़ी की जाया सुनिरे टीढ़ी बांधूं डाढ़जमीन आसमान बीच रहस्यों गाढ़ उतरे तो तेरी पर ले बांधूं चढ़े आसमान तो सर जे सांधू तीजे तेरा जाया पाऊं बारा कोस में काम कराऊं इहि विधि विचरे बावन बीर जा हारा समुद्र के तीर मेरी भोम पर हनुमंत गाजें

किसी को चलाई नें चले मेरा डंका चारों खूंट में बजे इहि विधि चलाईन चलेगी तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगंबर लाजें शब्द सांचां पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–एक ठीकराने ३ बार मंत्र पढ़के चटली उंगली का लोंही दीजे फिर या प्यादा च्लै या घोड़े पर चलै एक मास में दौड़े जही टौकस घरे तहा टीढी का पड़ाव पड़े।

टीढ़ी उड़ावा का मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरु को आकाश की जोगिनी पाताल का देव आदि शक्ति माई पश्चिम देश सों आई गोरखनाथ आकाश को चलाई पश्चिम देश मांझ में कुआ जहां भवानो जन्म तेरा हुआ टीढ़ी उपजी स्वर्ग समाई जब टीढ़ी गोरख ने बुलाई एक जाइ तांबा वैसी एक जाइ रूपा वैसी वैसी एक जाई सौना वैसी एक जाइ घोई घड़नी वकरा दन्त मैंड़क दन्त सर्पादन्त दिदन्त अब छोड़ वन को खाव धूल छोड़ आकाश लग जाव खेत कूकड़ो मध की धार टीढ़ी चली समंदर पार हुंकारे हनुमंत बुलावे भीम जा टीढ़ी पैलाका सींव नीचे भैरूं किलकिले ऊपर हनुमंत गाजे मेरी सींव में

अन्न पाणी खाइ तो गुरु गोरख नाथ लाजे मानो भव भवानी का धड़ कूजे जो मेरी सींव में अन्न पाणी भखैगी तो दुहाई जैपाल चक्क वैं की फिरैगी।

विधि—श्वेत मुर्गा और शराब ७ बार मंत्रि के अपनी सींव के बाहर छोड़ें।

टीढ़ी की डाढ़ बाधिवा का मन्त्र—ॐ आदेश गुरु को अंजर बांधूं बजर बांधूं बांधूं दसों द्वारा लोह का कोड़ा हनुमंत ठो क्या पड़ै धरती घाले घाव तेरी टीढ़ी भस्मंत हो जाव की लू टीढ़ी कीलू नाला ऊपर ठौकूं वज्र का ताला नीचे भैरूं किलकिले ऊपर हनुमंत गाजे हमारी सींव में अन्न पाणी भखै तो गुरु गोरखनाथ लाजे।

धरती में टीढ़ी बैठे—ॐ नमों आदेश गुरु को अजर कीलनी बजर कीलनी की लूंटीढ़ी धरूं मसान धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पाख धरती में गाढ़े उहर मुहम्मद बीर की चौकी चढ़ै थम धरती चाटे खाय, बायें हाथ मेल्हे हाथ में उठाय मेरा गुरु ठठाये तो उठजे और चक्र सों उठै तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।

कागज की कढ़ाई में पुआ उतारने का मंत्र–ॐ नमो घानी का तेल कागज की कढ़ाई शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–चलती घानी का तेल मंगावे कागज की कढ़ाई में नाखजे २७ बार मंत्र कढ़ाई पर फूंकजे अग्नि पर यूढ़ाई पुवा उतारे।

कढ़ाई बांधने का मन्त्र–ॐ नमो जल बांधूं जल वाई-वाई बांधूं बांधूं तूंबा ताई नौ से गांव का वीर बुलाऊं रहो २ रे कढ़ाई जती हनुमंत की दुहाई।

विधि–सात कांकरी २१ बार मंत्रि के कढ़ाई पर मारे कढ़ाई बंध जाय उतारे तो।

हांड़ी में आग न लगे–मंत्र काची हांड़ी काची पाली ऊपर वज्र की थाली नीचे भैरूं किल कलाय ऊपर नृसिंह गाजे जो इस हांड़ी के आंच लगै तो अंजनी पुत्र लाजे दुहाई हनुमंत जती की दुहाई अंजनी पुत्र की शब्द सांचा पिंड काचा।

विधि–नमक अथवा ठीकरा पर ७ बार मंत्रि के चूल्ला में डारे हांड़ी न पके।

तुपक बांधने का मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को जल बांधू जलवाई बांधूं बांधूं खाती ताई सवा लाख अहेड़ी बांधूं गोली चलै तो हनुमंत जती को दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—एक बरनी गया का दूध मंत्रि के बन्दूक की की मुहतवर मारे तो गोली चले नहीं।

तलवार बाँधने का मन्त्र—ॐ धार धार अधर बांधू सात बार कठै न रोम ना भीजै चीर खांड़ा की धार ले गयो हनुमंत वीर शब्द।

विधि—मारग का धूर मंत्रि के तलवार पर मारो बंधे।

मन्त्र धार बंध—धार धार खंड धार बांधूं तीन बार उड़े लोह ना लागे घाव सीर रखै श्री गोरखनाथ राव लोह का कहा मूंज का बाण हनुमंत मेल्ही लाल यह पिंडलागे न पैनी धार शब्द।

विधि—मृतिका मंत्रि के अंग पर लगा के हथियारन से खेले लड़े तो घाव न लगे।

घाव पुरवा का मंत्र—सार सार विजैसार बांधूं, सात बार फूटे अनन उपजे घाव सीर रखै श्री गोरखनाथ।

विधि–सात बार घाव पै फूंकै पीड़ा न हो।

मन्त्र अनी बंध–बंदर ऊंरकत बंमसर होई निविष आमंत भोनाथ होइ यह निर्विष।

विधि–३ बार मन्त्र पढ़ लोहा पर फूके अणी न फूटे ३ बार मांटी मंत्रि के अंग पर लगावे अणी न लगे।

अथ भानमती के सूक्ष्म खेल तमाशे लाय आग थामने का मन्त्र–ओं नमो कोरा कर वाले गौरा के सिर पर धरिये पर धरिया ईश्वर ढोले गौरजा हाइ जलती आग सीतल हो जाई शब्द।

विधि–कोरा केर वाले के जल भरे ७ बार मन्त्रि के जेती दूर में छोटा मारे उतनी दूर में लाय न लगे।

अग्नि बुझाने का मन्त्र–हिमालस्योत्तरे पार्श्वे मरीचो नाम राक्षसः तस्य मूत्र पुरीषाभ्यांहुताशस्त भयामि स्वाहा।

विधि–इस मन्त्र से ७ बार २ जल मंत्रि के डाले तो अग्नि बुझे।

लोपांजन मन्त्र–ॐ नमो भगवते रुद्रेश्वराय नमोरुद्राय व्याघ्र चर्म परी धानाय डमरू चंद्रक कलाली स्वाहा।

विधि १– काला कूकर भूखा राखे काले तिल दूध में मन्त्रि के खिलावे विष्टा के तिल ले तेल कढ़ावे उस तेल का काजल पाड़े नेत्र में आंजे तो लोप हो।

विधि २–अंकोल के तेल में बच भिगावे ७ दिन पूर्व मंत्र से मंत्रिक धरे मुख में राखे गायब हो।

विधि ३– अंकोल का तेल कबूतर की बीट इन दोनों को पूर्व मंत्र से मंत्रि के तिलक लगावे लोप हो।

भूत वसीकरन मंत्र– ओं श्रीं वंबं मुं भूतेश्वरी मम वश्य कुरु २ स्वाहा।

विधि– चौका बचा जल मूल नक्षत्र में बबूल मूल में डाल के ४० दिन तक १०८ मंत्र नित्य जपे ४१वें दिन जल न डाले तो भूत सन्मुख आके जल मांगे ३ वचन ले जो याद किये पर आके काम पड़े सो करे फिर जब जय लों जले दे भूत सेवा में रहै।

हाजिरात का मन्त्र–विस्मिल्लाहिर्रहमानि रहीम खुदाई बड़ी तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दुंना तेरा साढ़ात फुरो बाद ना मुरादी बेबुनियादी तुर्क नापीर ताइयासिलार देखूं तेरी शक्ति बेगि बांधि ल्याव नौ

नाहरसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारसै शाकिनी कामन दुसमन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर आगिय बेताल बेगी बांधिल्याव जो न बांधिल्यावे तो दुहाई।

सुलैमान पैगम्बर की विधि—शुक्र के शुक्र तेल फुलेल लोंग धूप मिठाई से पूजन करे १२ मन्त्र जपै ४० दिन में सिद्धि हो जब हाजिरी करनी हो तब प्रथम मृतिका से जमीन लीप कर चावल की मसजिद बनावे कपास की बाती बनावे पट्टा पर त्रिशूल लिख क्वारी कन्या को स्नान कराय स्वच्छ वस्त्र पहराय बैठावे चावल मंत्रि के कन्या पर मारे उसके मस्तक दीपक धरे फिर जो पूछना हो पूछे सत्य कहेगी।

प्रत्यक्ष हाजिरात कामाख्या—ॐ नमो कामाक्षायै सर्व सिद्धि दायै अमुक कर्न कुरु २ स्वाहा।

संकल्प—यस्य मंत्रस्य बान्हक ऋषो जगती छन्दः कामाख्या देवता प्रणव शक्ति अव्यक्ति कीलक अमुक कर्माणि जपै बिनि योग।

अथ न्यास—ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यांनमः कामा ख्यायै तर्जनीभ्यांनमः स्वाहा सर्व सिद्धि दाये मध्यामाभ्यां बौषट् अमुक कर्म अनामिकाभ्यां नमः हुंकुरु कुरु कनिष्टकाम्भां बौमट् स्वाहा करतल

करपृष्टाभ्यां अस्त्राय फट् ओं नमो हृदयाम कामाख्याय शिरसे स्वाहा सर्व सिद्धि दाये शिखायै वषट् अमुक कर्म कवचाय हुं कुरु नेत्र त्रयाय वौषट स्वाहा अस्त्राय फट॥

ध्यान–योनि मात्र शरीराया कंगु वासिनिका मंदारजास्वला महा तेजा कामाक्षी ध्येयतांसदा।

सिद्धि करन विधि–दस सहस्त्र मंत्र जप गुड़ हलके पत्तों की एक सहस्त्र आहुति दे तर्पण मार्जन कर ब्राह्मण भोजन करावे तो मन्त्र सिद्धि हो मन्त्र जप के संकल्प का जल मेढ़ले के फूलों पर डालै।

हाजिरात करे तब यह जंत्र लिखे–रुई में मेटल की राख मिलाके बाती बनावे तेल दीपक में रख पूजन कर उसके आगे आठ या दस वर्ष की कन्या या बालक जो उच्च वंश का देवता गण हो बैठा के

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	९	२	क
७	४	५	४	सी

दीपक आगे यन्त्र को रख के पूजन करे फिर जंत्र को बालक देखे और बालक की हथेली में मेंढुक की राख तेल में सान लगावे फिर उससे पूंछे जो चाहे सो सारी बात सत्य-सत्य बतावेगा।

चौकी चढ़ावा का मन्त्र– ॐ नमो आहांकंत जुगराज फटंत कार्य जिस कारण जुगराज में तोकूं ध्याया हांक मारता जुगराज आया गाजंत आया धोरंत आया सिरस के फूल लेता उड़ाता आया और की चौकी उठाता आया आपकी चौकी बैठाता आया और का किवाड़ तोड़ता आया अपना किवाड़ मारता आया अपना किवाड़ मारता आया बांध-बांध किल्या बांध भूत को बांध प्रेत को बांध उड़त को बांध गड़ंत को बांध जोगिनी को बांध देव को बांध दांत बर्र के बांध ६३ कला को बांध ६४ जोगिनी को बांध आकाश की परी को बांध धरती को बांध डाकिनी को बांध खेचरी को बांध नाटक को बांध चेटक को बांध छल को बांध छिद्र को बांध कीया को बांध कराया को बांध ऊपरी को बांध पराई को बांध मैली को बांध कुचेली को बांध स्याह को बांध सफेद को बांध काली को बांध पीली को बांध रेगढ़ गजनी का मुहम्मद बीर बिसर जाय तेरा तीसों रोजा हलाल उलटिमार पटिक पछार कब्जा चढ़ाई मुख बुलाय शशिखाय शब्द सांचा०।

भूतादिक बकाबा का मन्त्र—ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल तरवाइ सद्रदंष्ट्र कराल वक्ताय त्रिनैन भूषिताद धग धग तपश्टंग ललाट नेत्राय तीव्र को पान लाय मिते तजपात शूल खड़ांग डमरूक धनुर्बाणा मुद्रर भूपदंड त्रास मुद्रा वेगदश दौर दण्ड मंडि तायकपिल जटाजूट कूटार्द्ध चन्द्र धारणे भस्मराग रंजित विगहाथ उग्र फणपति घटा टोप मंडितकंठ देशाय जय जय भूत डामरस आतम रुपं दर्शे २ सर २ चलसाशोन बंध २ हुंकारेन त्रासय २ बज्र दंडेन हन २ निशितिखडेन छिद २ शूला ग्रेण भिंध मुग्दरेण चूर्णय २ सर्वग्रहाणां आवेशय २ ॥

विधि— इस मंत्र को पूर्व युक्त से सिद्ध करें गाय के घी में गूगर नीम की पत्ती सांप की कांचली मिला कर मंत्र पढ़ बहुत सी धूप दें और मंत्र उड़द पर पढ़ पढ़ रोगी पर मारे तो भूत बकरे फिर नृसिंह के मंत्र से वाकों काढ़े ॥

तथा— ॐ नमो आदेश गुरु को नारी जाया नार सिंह अंजनी जाया हनुमंत वाने जारी बीज भवंताबा तोड़ी कढ़लंक तेरी पाखरी कोन भरे नाहर सिंह बलवंत बन में फिरे अकेलड़ा भंवर खिलाये के

खारा माटी मर्द की पीवे बारा बकरा खाय न धापे तोतू नाहर सिंह दौड़ि मसाण जाय सात पांच ने मारि खाय सात पांच ने चरब खाय देखूं नाहरसिंह बीर तेरे मंत्र की शक्ति हाड़ २ में सूं चाम २ में सूं नख २ में सूं रोम २ में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर कोठा में सूं पेद का पकड़ आन हाजिर ना करे तो माता नाहरी का चूंखा दूध हरामकरे राजा रामचन्द्र की पीढ़ी फाट भंपड़े शब्द सांचा पिंड कांचा॥

विधि– मंत्र सिद्ध कर काली मिरच सात बार मंत्रि के खिलावे तो बकारे।

भूतादिक के उतारिवा का मन्त्र– ॐ नमो उंहां हींहूं नमो भूत नायक समस्त भुकाभूतानिसाध्य २ व्हे ३॥

विधि– शनिवार से नित्य २१ दिन तक १४४ जाप करे दीपक आगे गूगर खेफूल पतासा चढ़ावे सिद्धि हो मोर पांख सूं माड़जे।

तथा–ॐ नमो नारसिंह नारी का जाया याद किया सो जल्दी आया पांच पान का बीड़ा मध की धार चाल २ नाहर सिंह कहां लगाई राती बार देसूं केसर कूं मुर्गा की ताज कड़ो देसूं मंद की धार

अरोधां आयो नहीं कहां लगाई एतीवार देखूं नाहर सिंह तो तेरा कीया अमुकी घट पिंड बांध मेरे हाथ दिया मारता का हाथ बांध बोलता की जीभ बांध झांकता का नैन बांध हीया बूका बकड़ों बांध बोटी २ बांध पकड़ लटी पछाड़ मार मेरा पग तले लापछाड़ चढ़ता देसूं केसर कूकड़ों उतर ता देसूं मध की धार इतना दे जब उतर जो खेल जो धोरं धार हमारा उतारा उतर जो और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिंडाल शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि– मुर्गा का केस चना बराबर गूगर मध मिला के गोली बांध पूजन के समय आग पर धरे पतासा ५ पान का बीड़ा खोपरा लोंग इलायची सुपारी भोग धर दीपक आगे १०८ जाप करे ७ दिन में सिद्धि हो होली दिवाली ग्रहण में जाप किया करे।

भूतादिक के मारने का मंत्र– ॐ नमो आदेश गुरु को हनुमंत बीर बजरंगी बज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्द खईस को ठीक २ मार २ नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई।

विधि– शनिवार से २१ दिन हनुमान जी का पूजन करे विधि युक्त नित्य १२१ मन्त्र जो सिद्ध हो फिर चौराहा की कांकरी अथवा उड़द को मंत्रि के रोगी पर मारे।

भूतादिक के कैद करने का मंत्र– बंध बंध शिव बंध शिव बंध शिव।

विधि–उड़द पढ़कर रोगी पर मारे।

छोड़ने का मंत्र– या खालिसा या मुखल्लिस या खल्लास खाजेखिज महतर लयास विधि युक्त।

डाकिनी शाकिनी के उतारवा का मंत्र– ॐ नमो हनुमान जी आया कोई कोई डाकिनी शाकिनी आन २ कुरु स्वाहा।

विधि– प्रथम मंत्र को सिद्धि करले फिर उलटी चाकी का पिसा सतनजा जोगी की माता का पिसा तिसका पुतला बनावे दूसरा पुतला रोगी की माता के लंहगा की लामन का बनावे उसे तिली के सवा पा तेल में भिगोकर ताकू में पिरोवे रोगी पर सात बार झाड़ के जलावे सिर की ओर सों ३ मंत्र पढ़के उड़द जलते पूतला पर मारता जाय सवा पा उड़द मंगा राखे फिर सतनजा के पूतला को थाली में

खड़ा करे थाली में पाणी भरे ताके डाकिणी जाणे पाणी के बीच में रुकी हुई कढ़नस के उस जलते पूतला पर तेल पड़े तो डाकिनी की देही दहै जल्दी जल्दी तेल की बंद पड़े तो डाकिनी हाजिर हो रोगी का रोग कढ़ जाय परन्तु जब ऐसा काम करे तब अपना प्रबंध डाकिनी की चोट से कर ले देह रक्षा का मंत्र अपने ऊपर दम करे।

मसान जगावा का मन्त्र—ॐ नमो आठ काठ की लकड़ी मंज बनी का बान मूवा मुर्दा बोलै नहीं तो माया महाबीर की आन शब्द सांचा पिंड कांचा।

विधि—पीवा की दारु एक सेर चंबेली का फूल एक लोबान की धूप छाड़ छबीला कपूर कचरी इतर सुगंधि लेकर मसाण में जाय बैठे ताल की धारा दे मसाण के मुर्दे की देख न धूप टीजे फूल बखेर जे दूर आकर मंत्र पढ़जे मंच की धार दीजे मसाण जागे हाहा कार मचै सिद्धि हो इस ही।

जंत्र तंत्र मन्त्र तीनों के दूर करिवा को मन्त्र—उलटंत वेद पलटंत काया उतर आव बच्चा गुरु ने वेग सत्तनाम आदेस गुरु को।

विधि–चौराहा में पतासा धर शराब डाले मंत्र पढ़ के चला आवे आवश्यकता के समय चौराहा की ७ कांकरी २१ बार मंत्रि के ४ तो चारों दिशा में फेंके और ३ अपने पास रखे जिस की देह में करतव करना हो उस की देह में एक दो कांकरी इस मंत्र से मारे।

रोजी मिलै धन की वृद्धि होई का मंत्र–ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी सर्व कार्य करनी मम बिकल संकट हरणी भय मनोरथ पूणीमम चिन्ता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।

विधि–त्रिकाल एक एक माला जपै तो धन की वृद्धि ही और २५ का एक मंत्र लिख के धूप दीप से पूजन कर के उसको सामने रख के मंत्र जपै तो शीघ्र ही कार्य सिद्धि हो रोजी मिले।

रोजी मिले धन बढ़े–ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ही ॐ पूर्वाप दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय आण पूरय सर्वजन वश्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि–प्रातःकाल बात करने से पहिले १०८ बार मंत्र पढ़के चारों कोणों में दशा २ बार मंत्र पढ़ के फूंके तो चारों दिशा से लाभ हो।

ऋद्धि करन मन्त्र—ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी बांछा भूत-प्रेत निग्रहणी सर्वशत्रु संहाणी दुर्जन मोहनी, ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यैनमः।

विधि—गुलाल गोरोचन छार छबीला कपूर कचरी इनकी चणे बराबर गोलियां करे १०८ शनि की रात तथा रवि दिन लाल वस्त्र पहर लाल कोथली पर लाल पुष्प चढ़ाये १०८ बार नित्य करे मंत्र के साथ गोली अग्नि पर धरे एक मास में लक्ष्मी प्रसन्न हो फिर नित्य प्रति २१ गोली मंत्रि के अग्नि पर चढ़ाय करे तो ऋद्धि सिद्ध हो सही।

मन्त्र लक्ष्मी—ॐ पद्मावती पद्म कुशी बज्र बज्रां कुशी प्रत्यक्ष भवंति भवंति।

विधि—अर्द्ध रात्रि को मृत्तिका का दीपक बार के जौ पर धरे मृत्तिका की माला से १०८ मंत्र जपै २१ दिन में दर्शन पावे।

मन्त्र करालिनी सर्व कार्य सिद्ध करनी—ओं हूं करि कराल नीक्षं क्षां फट्।

विधि—एक पांव से खड़ा होकर १०८ बार मंत्र जप बकरी का मास नोग धर लाल फूल चढ़ावे छः

मास में देवी सिद्धि हो जो बर मांगे सोदे और सर्वदा प्रसन्न रहै।

मन्त्र कामाख्या देवी—ओं ल्कीं नमः। योन्हां देवीं ज्ञात्वा जापं समाचरेत् बर वस्त्री व्रतां देवा चालियंत्रदशा।

कुवेर का मन्त्र धनदा—यक्षाय कुवराय बै श्रवणाय धन धान्याधिपतये धन धान्य समृद्धिं में देहि दापयस्वाहा।

संकल्प—अस्यवर्ण रामाक्षर मंत्रस्यविश्रवा सुनिः वृहती छन्दः शिवनिधनोवरो देवता ममोपरि प्रसन्नार्थ जपे विनिः।

न्यास—ॐ यक्षाय अंगुष्टायम्यांनमः कुवेराय तर्जनी भ्यांनमः जेश्र वणाय मध्यमाभ्यांनमः धन धान्याधि पतये अनामिका अभ्यांनमः धन धान्य समृद्धि में कनिष्ठ का भ्यांनमः दोही दापय स्वाहा करतल कर पृष्टा भ्यांनमः॥

षड़ग न्यास— यक्षाय हृदयाय नमः कुवेरायशिर से नमः स्वाहा वैश्रवणायनमः शिरवायै वषट्धन धान्याधिपतये कव चायनमः हुंधनधान्य समृद्धि में नेवत्राय नमः वौषट् देहिदायम स्वाहा अस्त्राय नमाः फट्।

ध्यान– मतुवाम विमान वरस्यितं गरुड़ रघतीननि छेमाव के शिनशैय्या इत्यादि विभूषितं वर भव दां धजं नम हुनिरः।

अस्यपुरयरसा–लक्षमेक तदशांश जुहुया त्तिलै।

मन्सा सिद्धि करन मंत्र– ओं आं अं स्वाहा॥

विधि–इस मन्त्र को नित्यप्रति १ सहस्त्र बार जपै ब्रह्मचर्य से रहे हलका भोजन करे धन बढ़े रोजी मिलै सवा लक्ष प्रयोग तदनन्तर दशांश होमादि करे॥

व्यापार द्वारा धन लाभ का मन्त्र– ओं ह्रीं श्री क्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम ग्रहे धन पूरय २ चिंताय दूरय २ स्वाहा।

विधि– प्रात:काल दंतधावन करके १०८ बार मंत्र जपै धन लाभ हो सत्य ३॥

उपद्रव नाशन मंत्र घंटा करिणी– ओं घंटा कारिणी महावीरी (देवदत्त) सर्व उपद्रव नाशन कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–पूर्वमुख बैठ धूप दीप नैवेद्य कर्पूर से पूजन करे। ३५०० बार मन्त्र का जाप करे फिर पश्चिम मुख हो के गूगर की एक सहस्त्र गोली मन्त्र के अग्नि में डालें। इसी प्रकार ३ दिन करें सर्वोपद्रव दूर हों॥

अन्य मन्त्र– ओं आकर्षय

विधि– इस मन्त्र कोअर्द्ध रात्रि के समय आकाश के तले एकांत में खड़ा होके १२०० बार जपै स्त्री का ३ दिन में आकर्षण हो॥

सहदेई कल्प–ॐनमो भगवती मातंगी सर्व व्रतश्वरी सर्व मनहरणी सर्वलोक वशी करणी सर्वसुख रंजनी महामाये लघु २ वश्यं कुर २ स्वाहा।

विधि–कृष्णाष्टमी का व्रत रखे सहदेई को न्यौंत ९ को प्रभात जाय उखाड़ लावे ईशान दिशा में बैठ २३ बार मन्त्र पढ़के इसी प्रकार ६ रात्रि मंत्र पढ़े १४ तक सिद्ध हो फिर सहदेई का चून करके जिसके माथे पर नाखे वश्य हो अथवा पान में खवावे वा गोरोचन मिलाके तिलक कर जिसे देखे वश्य हो। वा चूरन में मैनसिल मिलाय नेत्र में आंजे जिस पर दृष्टि डाले वश्य में हो चूरन को सिर में घालके रण में जाय जय हो। ऋतु समय बंध्या स्त्री ने चूरन खवावे तो गर्भ रहे। बालक के माथ में बांधे तो अत्तीसार नाश ही यग्रह पीड़ा न हो सहदेई की जड़पल्ला में बांधे तो सर्व रोग मिटैं। जड़ मुख में रख जिस को बोले वश्य में हो।

विद्या मन्त्र–ॐ ह्रीं श्री अहंवद २ बार वादिनी भगवती सरस्वती ऐं नमः स्वाविद्या देहि मम हीं सरस्वती स्वाहाः।

विधि–ग्रहण में १४४ बार मन्त्र जपै फिर २१ दिन में विधि युक्त त्रिकाल एक सौ आठ २ जाप करे और नित्य १ माला जपै तो दिन २ विद्या बढ़ै॥

पढ़ी हुई विद्या न भूलै–ॐ नमो भगवती सरस्वती परमेश्वरी वाग्वादिनी मम विद्या देहि भगवती हंस वाहिनी समारू का बुद्धि देहि प्राज्ञादेहि २ विद्यां देहि २ परमेश्वरी सरस्वती स्वाहाः।

विधि–रविवार से २१ दिन १०८ बार पढ़ै ब्रह्मचर्य से रहे एक बार भोजन करे तो जो पढ़ै वो कंठ से भूले नहीं।

अन्य मन्त्र–ॐ नमोॐहीं श्रीं क्लीं वद २ वाग्वा दिनी बुद्धि वर्द्ध भों हीं नमः स्वाहाः।

विधि– ग्रहण में जाप करके नित्य १ माला जपै तो विद्या बढ़ै॥

मन्त्र उच्छिष्ट गणपति– ॐ क्षां श्रीं हीं हुं हं हः उच्छिष्टाय स्वाहाः।

न्यास– ॐअंगुष्टा भ्यांनमः ओंतर्जनीभ्यां नमः ओं हीं मध्यमाःभ्यांनमः ओं हेंकनिष्ट का भ्यांनमः ओं हु अनामिका भ्यांनमः ओंहः उच्छिष्टाय स्वाहाः करतल करपृष्ठाभ्यांनमः ओं क्षां हूं दयायनमः ओं क्षीं शिर से स्वाहा ओंहीं शिर बाये वषट् ओंहुं कवचा यहुं ओंहु ने क्वयाय बौषट् ओंही उच्छिष्टाय स्वाहा अस्वाय फट्।

विधि–तिथि वारोननक्षत्रं नोपवासो विधियते। नक्षत्रोभ्दवं काष्टां क्रीयते।

विधि मुतभगा– अंयुष्ट प्रमाण गणेश मूर्ती कृत्या एकांत स्थानो यस्त्रीयं नामोच्चारणं अग्रे उपवेश्य मंत्रे जपित्वास्त्री आकृषण भवति मध्यस्थापिअष्टा विशति २८ बार जयेत राजा वश्य भवति प्रसन्न भवेत कृष्णाष्टमी गीतारम्यः १४ पर्यंत १०८ मंत्र जपित्वासिद्धि भवति। इति॥

स्वप्न में प्रश्नोत्तर मिलने का मन्त्र–ॐ नमो माणि भद्रा चेट काय सर्वार्थ सिद्धि कर जापम स्वप्ने दर्शनाय कुरु २ स्वाहा।

विधि– कनेर का रक्त पुष्पला १०८ मंत्रि के सिरहाने रख सोवे ६ या ७ दिन इसी प्रकार करे होनहार हो सो स्वप्न में कह जाय।

अन्य मन्त्र–ॐ स्वप्नावली किनी सिद्धि लोचनी स्वप्नेक कथत स्वभाव एक विंश्नति बार जपे सिद्धि।

तथा–ॐ नमो जायत्रि नेत्राय पिंगलाय महात्मने कमाय विष्णु मुख्याय स्वप्नाधिपतये नमः स्वप्ने कथयमेतथ्यं सर्वा कार्याय षोषतः क्रिया सिद्धि सविधास्यामि त्वत्प्रसावात गणेश्वरे।

विधि–एवं मत्रैः शिवप्राध्र्यनिद्रा कुर्यात् निराकुलः स्वप्नं दृष्टे निशिप्रातर्गुरु वे विनिवेदयत्।

चोरी काढ़िवा का मन्त्र–ओं नमो इन्द्र अग्नि मुख बंधु उसारा अग्नि मुख बंधु स्वाहा।

विधि–जिन पर शुवा हो उनके नाम लिख २१ बार मन्त्र पढ़ २ नामो पर दम करे फिर अग्नि में नाखे चोर का गाम जलेगा। फिर मन्त्र को प्रथम रविवार से २१ दिन तक १४४ बार नित्य पढ़ गूगर धूनी दे मिठाई चढ़ाय के सिद्ध कर लेवे।

कटोरी चलावा का मन्त्र–ॐ मलि मन्त्र चलता चले सेत भयंकर चले पण नायक चले पिदर माढर

चलै कोण की शक्ति चलै जती हनुमंत की शक्ति चलै क्यों बंद्या चलै अरड़ती चलै मरड़ती चलै द्यौरती चलै की लाउ कीलती चलै गाड़रय उखलती चलै चलि २ हो भद्रनाम ऋषीश्वर तोस्यों मस्तक टूटे धरणी चुवे श्री महादेव की आज्ञा फुरे फणिंद्र स्वाहा:।

विधि–अलिगांव को गिहली दीजे ऊपर कटोरी धरि जे उड़द और बांया पग कालो हीका छींटा दीजे १९८ मन्त्र जाप कर उड़दों को मन्त्रि के कटोरी पर मारता जाये कटोरी चलै मनोरथ सिद्धि हो। इति॥

चोरी काढ़िवा के चावल– ओं नमो काल भैंरू खेचरा भैंरू ऊंचरा भैंरू आदि भैंरू जुगादि भैंरू थल भैंरू अवलावला सर्व जोता रण भैंरू एक गुगुल धूप धार भैंरू आयंत्रिपुरा देवी ऋद्धि सिद्धि लेती आई चोर का मुख सोखंत आई साह का मुख सोखंत आई देखूं भैंरू जी तेरी शक्ति।

विधि–प्रथम मन्त्र को सिद्धि करे फिर २७ बार चावल मन्त्रि के चववावे।

कटोरी चलावा का मन्त्र–ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्र वेदीनी चक्र वेगेन शंख भ्रमय स्वाहा:।

विधि–प्रथम १०००० बार मंत्र सिद्धार्थ जपे फिर चावल १०८ बार मन्त्र कटोरी पर मारे तो चलै।

लड़किनी सासरा में रहै रूठ कर न जाय–ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूप उतइत धरइ जो २ दीखे मार करे तासो २ दीसें पाय परंता ओं नमो ठः ठः स्वाहा।

विधि– सांभर लोण की १०८ कांकरी मंत्रि के देतो सासरा में सुख सों रहे।

कुश्ती जीतवा का मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरु कों अंगा पहरूं भुजंगा पहरूं पहरूं लोहासार आते के हाथ तोडूं पैर तोडूं मैं हनुमंत बीर उठ २ नाहरसिंह बीर तूजा उठ सोला सो सिंगार मेरी पीठ लगै माटी हनुमंत बीर लजावे तोहि पान सुपारी नारियल अपनी पूजा लेहू आप नासा बल मोहि पर देहु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो०।

विधि–गेरू का चौका लगाय लुंगी का लंगोट बांध धूप दीप कर हनुमान जी की पूजा कर मंगलवार से ४० दिन तक नित्य १०८ मंत्र जपै मंगलवार को पान सुपारी खोपरा भोग धरा करे नित्य लाडू सिद्धि हो फिर कुश्ती करे जब हनुमान जी की दंडवत्

करिके ७ बार मंत्र को अपने ऊपर दम कर कुश्ती लड़े तो बैरी को पछाड़े।

बैरी के जेर करिवा का मंत्र– ॐ नमो हनुमंत बलवन्त माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ। चढ़ंत आओ गढ़ किल्ला तोरंत आओ लंका जाल बाल भस्म करि आओ ले। लांगू लंगूर ते लपटाय सुमरिते पट काओ चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिल गावें मंगल चार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ जी तुम आओ। सात पान का बीड़ा चावत मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ आओ मन्दोदरी के सिंहासन डुलंता आओ यहां आओ हनुमान माया जागतें। नृसिंह माया आगे भैंरू किल्किलाय ऊपर हनुमंत गाजे दुर्जन को डार दुष्ट को मार संहार राजा। हमारे सतगुरु हम सतगुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि– प्रथम मंत्र के सिद्धार्थ १०००० मंत्र जपै ४१ या २१ दिनों में ७ पान का बीड़ा ७ लड्डू मंगल को भांग धरे अन्य बार १ बीड़ा ७ बतासा नित्य विधि युक्ति धूप दीप नैवेद्य से हनुमान जी का

पूजन करे अन्त में सिंदूर को सान के चढ़ावे तो सिद्धि हो।

विधि १– वैरी की मूरत लिखे के छाती में नाम के सिर पर जूता मारे सेवे हंसे बावरा होवै।



विधि २– धरती में जहां तहां बीज लिख लिखे मंत्र पढ़के उस तो वैरी का सिर फूटै बुद्धि जाती रहै सत्य ३।

विधि ३– मोम का पूतला तसबीर के माफिक बनाके जहां २ बीज लिखा है पूतला में लिखे पूर्व को मुखकर बीज लिखे छाती पर बैरी का नाम लिखे। मुर्दे के हाड़ की कील छाती में ठोके पूतला कोय स्थन भूमि में गाढ़ मुर्दा के हाड़ की भस्मी से ढ़कै तो बैरी बावला हो उठ भागे चलने से रुक जाय बीमार हो जब तक पूतला उखाड़ा न जाय हजारों आपत्ति बैरी के सिर पर रहें। उखड़ने पर आपत्ति टरे नहीं तो मर जाय और इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि जो कुछ करे सो मन्त्र

पढ़कर करे लोहे की ४ कीला बैरी के घर की चारों दिशा में गाढ़े तो स्तम्भन होइ और जब पूतला पृथ्वी पर बनावे सो मोम का स्तंभन की कील गाड़े तो खीर का भोजन हनुमान जी को भोग दे।

मन्त्र अन्नपूर्णा– ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्न पूरे घृत पूरे गणेश देवता पाणी पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवता मेरी भक्ति गुरु की शक्ति गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरै।

विधि –सिद्धार्थ एक लाख मन्त्र जपै फिर ब्राह्मण को भोजन कराये तब जो सामग्री होइ उसमें अछूती निकालकर अन्नपूर्णा को भोग दे। और एक भाग कुवां में नाख के एक हाथ से जल का लोटा भर लावे फिर दीपक जलाके कोठा में अन्नपूर्णा और वरुण दोनों का पूजन करके एक माला मन्त्र की जप के ब्राह्मण भोजन करावे। गाल में घटि न आवे।

मन्त्र कार्त्त वीर्य– श्री गणेशाय नमः कार्त्तवीर्य खल द्वेषी क्रतवीर्य भूतो बली सहस्त्र बाहु ,शत्रुओं रक्त वासा धनुर्धरा ॥ १ ॥ रक्त गंधो रक्त माल्यो राजा स्मर्त्तुर भी वृद्धः। द्वादशैतानि नामानि कार्त्तवीर्य स्यय: पठेत ॥ २ ॥ अनष्ट द्रव्यतातस्य नष्टस्यपुनरायनः।

संपदस्तस्य जायंते जनास्यस्य बसे सदा॥ ३ ॥ इति कार्त्तवीर्य द्वादश नामानि॥

विधि– जिसका धन चोरी डांड़ द्वारा नष्ट हुआ हो सो कार्त्तवीर्य के इन बारह नामो को २१ बार नित्य पढ़े तो गया धन आ जाय और पढ़ने वाले का माल नष्ट न हो। प्रतिदिन धन की वृद्धि हो और लोग उसके वश हो जाये। इसलिये इन नामों को नित्य २१ बार पढ़ना चाहिये।

रुद्र मंत्र– ॐ नमो भगवते रुद्रायहुं फट् स्वाहा।

विधि – धतूरा घृत कसूम तीनों को मिलाकर १० सहस्त्र होम करे। रुद्र प्रसन्न हो वर दे तो १ लक्ष होम करे निःसन्देह वर मिले सत्य ३॥

मंत्र भगवती–ॐ नमो भगवती को रक्त पींठ नमः इस मन्त्र को रक्त वस्त्र पर एक सहस्त्र वार जपै दिन सात मध्ये हृदयस्थ लगतो भवंति।

मंत्र कर्ण पिशाचिनी – ओं हं हन २ स्वाहा प्रगट हो कि सब मंत्र महादेव जी ने कील दिये हैं। जब मंत्र का उत्कीलन किया जाय तब मंत्र सिद्धि हो इसलिए उसकी विधि भी लिखी जाती है जो लोग इसके ऊपर अमल करेंगे उनका मंत्र सिद्धि

होगा। इस मंत्र को जपै तो कर्ण पिशाचिनी सिद्धि होइ।

मंत्र उत्कीलन की विधि भूत डामर से लिखी जाती है पहली विधि–जिस मंत्र को जपै उसे भोजपत्र अष्ट गन्ध से १०८ बार धूप, दीप, नैवेद्य सौं पूजन करके ब्रह्म भोज करावे फिर ताम्रपत्र में पानी भरके भोजपत्र के मन्त्र को डालता जाय अथवा नदी की धारा में डाले तो उत्कीलन हो जाय।

अष्ट गंध की वस्तु – गोरोचन १, कपूर २, हाथी का मद ३, अगर ४, कस्तूरी ५, केशर ६, रक्त चंदन ७, श्वेत चंदन ८, इति।

दूसरी विधि– इष्टदेव की मृतिका की प्रतिमा बनावे पुरुषाकार उसकी प्राण प्रतिष्ठा करे फिर भोज पत्र पर १ मन्त्र शुभ तिथि शुभ घड़ी में लिखकर प्रतिमा की छाती में लगावे उसका १ महीना तक धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करे। फिर गुरु से आज्ञा ले मन्त्र को जप प्रतिमा को नदी में नहावे ब्रह्म भोज करावे फिर मंत्र का जाप करे सिद्ध होवे।

तीसरी विधि १० संस्कार– संस्कार जन्म १ जीवन २, ताड़न ३, बोधन ४, अवशेष ५

विमलीकरण ६, आप्यावन ७, तर्पण ८, दीपन ९ और मोपन १०।

प्रथम संस्कार–मात्रा वर्ण का पुट लगाय मंत्र को जपै १०८ उदाहरण मन्त्र। ओं नमो नारायणाय और १६ स्वरों में ८ जोड़ हैं अ आ इ ई से अं अः तक एक २ जोड़ का पुट इस प्रकार लगावे ओं नमो नारायणाय आं इसी प्रकार आठों जोड़ का पुट लगाकर पढ़ै।

दूसरा संस्कार–मंत्र में प्रवाण का पुट देकर १०८ बार जपे।

तीसरा संस्कार– मंत्र के अक्षर भोजपत्र पर लिखकर चंदन घी में कपूर मेल कर पानी तैयार करे। फूल लेकर वायु से जल को मंत्र पर १०८ बार छिड़के।

चौथा संस्कार– ताम्र पत्र पर मन्त्र को लिखे मंत्र के जितने अक्षर हों उतने कनेर के पुष्प लेके हवन करे। इस मंत्र से ओं फट् अर्थात् १०८ बार इस मंत्र से फूलों को मंत्र पर लगावे बोंधन हो जाय।

पांचवाँ संस्कार – मंत्र के जितने अक्षर हों उतने पीपल के पत्ते ले ताम्र पत्र पर मंत्र लिखकर

सब पत्तों को इकट्ठा कर उनसे जल ले मूल मंत्र पर चढ़ावे।

छटा संस्कार–मन ही मन में मंत्र का ध्यान कर १०८ बार हुंफट् कहे।

सातवाँ संस्कार– प्रणव और आकाश बीज और अग्नि बीज तीनों बीजों पर गर्म जल को कुशा से प्रत्येक अक्षर पर जो तामा पत्र पर हैं चढ़ावे।

आठवाँ संस्कार – ताम्र पत्र पर मंत्र लिखकर १०८ बार मूल मंत्र से तर्पण करे।

नवाँ संस्कार– प्रणव माया बीज लक्ष्मी बीज तीनों का संपुट मंत्र से लगाकर १०८ बार जपे।

दसवाँ संस्कार गोपन– मंत्र को इस प्रकार जपै जो कोई न जाने यही गोपन है।

इसी प्रकार १०८ बार करे तो मन्त्र का चमत्कार बहुत शीघ्र दृष्टि आवे।

मन्त्र बटुक–ॐ ह्रीं बटुकाय अष्टद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा।

न्यास:– ओं ह्रीं अगुष्टाभ्या नमः ओं ह्रीं तर्जनी भ्यां स्वाहा। ओंह्रीं मध्यमाभियां वषट् ओं हें अनामिकाभ्यां वषट् ओं हें कनिष्टकाभ्यां हुम ओं

हूं: करतल करप्टष्टाभ्यां फाट् ओं ह्रां ह्रदयाय नमः ओं ह्रीं शिरसै स्वाहा। ओं ह्रीं कब चाय हुं ओं ह्रूं नेत्र त्रायाय पौषट् ओं ह्रों कव चाय हुं ओं हः स्त्रायफट।

ध्यान– कर कलित कपालः कुंडली दंड पाणिस्त रुणतिमिरनी लो व्याल यज्ञोपवीतः कृत समय सपर्य्या विघ्नविच्छेद हेतु जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साध का नाम।

विधि – सिंदूर का चौका देकर उसमें त्रिकोण यंत्र बनावे, यंत्र में ह्रीं के ऊपर दीपक धरे संकल्प न्यास ध्यान करके आवह्नादि शोड़ष प्रकार से



पूजन करे यंत्र के और पास तेल के पके उड़द के बड़े रख उनके पास दही उसके पास गुड़ धरे और थोड़ी सामग्री अछूती अलग रखे भोग में बड़े दही और गुड़ मिला के रखे बटुकं के भोग ५ हैं। बड़े १ दही २, गुड़ ३, शराब ४, छोटी मछली अग्नि की भुनी हुई नित्य प्रति १ सहस्त्र मंत्र जप १०० आहुति

देकर घृत शहद की ११ दिन पहिले प्रयोग में कार्य सिद्धि हो, दूसरे या तीसरे प्रयोग में कैसा ही कठिन मनोरथ हो नि:संदेह पूरा हो, इति बटुक मंत्र विधि।

मंत्र सरस्वती–ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः

विधि– सिद्धार्थ दस सहस्त्र मंत्र जपके हवन करे फिर गाय का घृत १ सेर बकरी के ४ सेर दूध में डाल के एक एक टक सहजना की जड़ सैंधा नमक धावद्य के फूल और लोध उसमें मिलाकर नर्म आग पर चढ़ावे दूध और जल जाय तब घृत को उतार धरे मंत्र से विधि पूर्वक सेवन करे तो गूंगापन गिनगिना पन, बकाई खाय तो जाते रहैं। और बुद्धि इतनी बढ़ें जो एक सहस्त्र श्लोक नित्य कंठ याद करे कदाचित घृत न बना सके तो माल कंग़नी का तेल खाय। इति:

जुबॉबन्दी को सर्वोपरि सिद्ध मंत्र

बंगला मुखी संकल्प – ॐ अस्य श्री बंगला मुखी महामाया मंत्र स्यनारद ऋषि: अनुष्टुप छन्द: श्री बंगलामुखी देवी लंबी जंही शक्ति कीलकं झाटि तिमम शत्रूणानाशार्षे जपे निवियोय:।

अथन्यास–ओं ल्हां अंगुष्ठाभ्यानमः ओं ह्रीं तर्जनाभ्यांनमः वौषट् ओं ल्हें कनिष्टकाभ्यांनमः ओं हः करतल करपृषटाभ्यां फट ओं ल्हाह्र दयाय नमः ओं ल्हीं शिर से स्वाहा। ओं ल्हूं शिखायै बषट् ओं ल्हें कब चायहुं ओंल्ही नेव वयाय वौषट ओंल्हा अस्त्राय फट।

अथध्यानम–वादी मूकतिरंकतिक्षितिपति वैश्वानरः शीततिक्रोधी शन्यति दुर्ज्जानः स्वजनतिणिप्रानुगः खंजति गर्वी खर्वतिसर्व विज्जड़यतित्वन् मंत्र नायंत्रिते श्रीनित्ये बंगला मुखी प्रतिदिनंकल्याणितुभ्यंनमः।

मन्त्री–ओं ल्हीं बगंला मुखी सर्वदुष्टानांवाचां मुखंपदंस्तंमय जिव्हां की लय बुद्धि विनाशय ल्हीं ओं स्वाहा।

विधि–यह मंत्र बैरी के चुप करने और उसकी बुद्धि बिगाड़ने में और चलते बैरी को रोक रखने में सर्वोपर है और जो हाकिम या अफसर गाली देकर बोलें, उनके मुख बन्द करने को इक्का है। केवल मंत्र को ७ बार पढ़ कर हाकिम या बैरी की तरफ फूंक देना चाहिये। परन्तु प्रथम मंत्र को सिद्ध कर

लेना चाहिये। ४१ दिन में सवा लख मंत्र जपै, मंत्र का पूजन आवाहनादि षोड़श प्रकार से करे और हल्दी का चौका लगाकर पीले पुष्प चढ़ावे केशर से पूजन कर पीले अक्षर चढ़ावे। पीले लड्डू का भोग धरे पीताम्बर पहन कर पीला आसन बिछाकर उस पर बैठ कर दीपक घृत से भर एक थाली में हल्दी सट् कर कोण में यंत्र बनावे, मध्य में ह्रीं लिखकर छहों कोणों ओं लिखे उसका पूजन करे सवा लाख का एक प्रयोग न हो सके तो ३६ दिनों में ३६ हजार मंत्र जप ददांश होम तर्पण ब्राह्मण भोजन करावे तो मंत्र अपना चमत्कार दिखावे परन्तु पूरा प्रयोग सवा लाख का है। मंत्र बड़ा चमत्कारी है और परीक्षण है। सत्य ३।

षट कोण यन्त्र



दूसरा यंत्र अष्टदल है, बहुधा पंडितों से मिलता है और उसके पूजन की विधि भी पंडित बता सकता है। जब इस मंत्र का पूजन किया जाय तो इस यंत्र पर दीपक धरा जाय जो कि इस यंत्र का पूजन सुगम है। और सब कर सकता हैं। इसलिये यही लिखा गया है।

मंत्र ज्वालामुखी—श्री गणेशाय नमः ओं ह्रीं श्री क्लीं सिंहेश्वरी ज्वालामुखी ज्रंभनी स्थंभिनी मोहनी वशीकरणी पर मन शोभिनी सर्व शत्रु निवारणी ओं आं क्रों ह्रीं चाहि २ अक्षो भय २ सर्व जनं अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—प्रथम सिद्धार्थ २५००मंत्र जप एक सहस्त्र आहुति दे दो ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर नित्य १०८ मंत्र जपै काम पड़ै। जब तीन अथवा सात दिन मंत्र जपै अर्द्ध रात्रि के समय एक पांव से खड़ा हो के आकाश के तले निःसंदेह कार्य सिद्धि हो।

महालक्ष्मी मंत्र—श्री गणेशाय नमः ओं ह्रीं श्री क्लीं महालक्ष्मी श्री पदमा वत्यै नमः महालक्ष्मी महाकाली महादेवी महेश्वरी महा मूर्ति महामाया मह धर्मेश्वरी आहिं १ मुक्ता माला धरा माया महामेधा महोदरी महा जननी जगन्माता महा मुद्योतिनी अहिं।२।

विधि—एष षोडष नामानि स्नात्वाशुचिर्ज पेन्नरः लाभंधनोयशो पुत्रं महालक्ष्म्यै नमोस्तुतेः इति महा लक्ष्मी स्तोत्र सं०।

सिद्ध मंत्र महालक्ष्मी—श्री शुक्ले महा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत्त की सवाई आओ चेतो करो भलाई ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई ऋद्धि सिद्धि खगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

विधि—दुकानदार दुकान खोले तब महादेव के थड़े अर्थात दुकान की गद्दी पर बैठके इस मंत्र की प्रथम एक माला जपले फिर लैन दैन करै तो लाभ हो धन की वृद्धि हो।

कर्ज उतारिवा का सिद्धि स्तोत्र मंत्र

संकल्प– ओं अस्य श्री मंगल स्तोत्र मत्रस्य विरुपाक्षऋषि। रनुष्टुप छन्दः ऋण हर्ता स्कन्दो देवता धन प्रदो मंगलाधि देवतामं बीजं गंशक्ति लं कीलकं ममा भीष्ट सिद्धयर्थे जपैविनी योगः।

ध्यान—रक्त माल्यांबर धरो शक्ति शूल गदाधरः चतुर्भुजो वृष गमो वर दश्च धरा सुतः। १। देहोहि भगवान् भौमः काल कान्त हर प्रभो त्वयिसर्ब मिदं प्रोक्तं त्रैलोक्य सचराचरः।

मंत्र–ओं क्रीं क्रीं क्रांस मंगलाय नमः नमामि मंगलो भूनिपुत्रश्च ऋण हर्ता धन प्रदः स्थिरासनो महाकाय सर्व कर्मा बरोधक:लोहितो लोहि ताक्षश्च सामगाना कृपा करः धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः अंगार को यमश्चैव सर्व रोगापहारकः वृष्टि कर्तापहर्ताच सर्व काम फलप्रदः इति एक विशति मंगल नामानि।

विधि–ताम्र पत्र पर त्रिकोण यंत्र मंगल का लिख बनवा के लाल चन्दन लाल फूल कनेर से यंत्र का पूजन करे फिर २१ नामों को २१ बार जपै प्रत्येक नाम पर इस प्रकार मंत्र का संपुट लगावे:-ओं क्रां क्रीं क्रौंसः मंगलाय नम ओं क्रां क्रीं क्रौंसः। जुदे जुदे २१ नाम। मंगलाय १ भूमि पुत्राय २ ऋण हर्त्ताय ३ धन प्रदान ४ स्थि रास नाय ५ महाकायाय ६ सर्व कर्मो वरोध काय ७ लोहिताय ८ लोहिताक्षाय ९ साम गानां कृपा कराय १० धरात्मजाय ११ कुजाय १२ भोमाय १३ भूतिदाय १४ भूमिनन्दनाय १५ अंगार काय १६ यमाय १७ सर्व रोगाय हार काय १८ वृष्टि कराय १९ तापहत्तीय २० सर्व काम फल प्रदाय २१ इन नामों को अंत में नमः लगाकर बीज मंत्र को

आदि अंत में लगा के २१ नामों को २१ बार जपै मंत्र आपके पीछे खैर की लड़की से बाईं ओर ३ लकीर खींच कर इस मंत्र को दुख दुर्भाग्य नाशाय धन सन्तान हे तवे कुतरे खात्रय बामे बाम पाद तले नुतः पढ़के बाएं पांव से मिटा दे और नामों जाप के बाद एक माला गायत्री की जपै ओं अंगार काय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौम: प्रचोदयात् फिर रेखा मिटाने के पीछे यह ध्यान पढ़के हाथ जोड़े ध्यान अस्टेंज मरुणवणी रक्त माल्या वरांगं के नक २ माला ललितं कमभ्यांन्त्रिभ्रतं शक्ति शूले भजति धरणि सूनूं मंगलं मंगला नां फिर अर्ध देकर पूजा समाप्ति करे।

अर्घ मंत्र–भूमि पुत्र महातेज स्तादोम्दवपि नाकिन: धनार्थीत्वां प्रत्यनेस्मिन ग्रहाणार्धनमो स्तुते इति मंगल पूजा विधि समाप्तम् शुभम्।

मुसलमानी मंत्र प्रथम ६ कुफल का वृताँत –जो कोई इन छ: कुफ्लों को कागज पर लिखकर हाथ में बांधे, भूत, प्रेत, जिन्न, शैतान, सांप, बिच्छू, वावरे कूकर का विष मसाणादि दोष का भय न हो कष्टित स्त्री को मिठाई पर ७ बार पढ़कर दे तो

शीघ्र ही खल्लास हो, किसी का पुत्र या सेवक या बांदी भाग जाय तो ७ कांकर पर ७ बार छहों कुफल पढ़के अग्नि में डारे तो उसी समय फिर कर घर चला आवे, और किसी का घोड़ा ऊंट बैल आदि जाता रहा हो तो पानी पर ७ बार पढ़के नदी अथवा कुआं में डाले तो ५ दिन के भीतर गई हुई वस्तु आ जावे, किसी को मिरगी आती हो या बावला हो गया हो तो ७ बार उसके कान में उच्च शब्द से सुनावे अच्छा हो, और जो कोई पढ़कर भूल जावे उसको धोकर ७ दिन पिलावे तो फिर नहीं भूले, पढ़ै सो कंठ याद हो इतिः।

पहला कुफल– बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीईल बसीरिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन हुवा, बेकुल्ले शईइन हकीम बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन, सल्लल्ला हो अला मुहम्मदिन व अला आलेही व अस्हाबेही अजमईन।

दूसरा कुफल– बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिलखालेकिल अजीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल फत्ताहुल अलीम बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन।

तीसरा कुफल–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन हुवल गनी इलकदीरो बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन।

चौथा कुफल–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अजीजिल करीम बिरहमते काया अरहमरीहिमीन।

पांचवाँ कुफल–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अलीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अलीमिल खबीर बिरहमतेका या अरहमरीहिमीन।

छठा कुफल– बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजीजिर्र हीमिल्लजी लैसा कमिस्लेही शईइन व हुवल अजीजुल गफूर वल्लाहों खैरुन हाफेजाव हुवा अरहमरीहिमीन।

फारसी में २८ अक्षर हैं–इनके सिद्ध करने से सारे मनोरथ सिद्ध होते हैं। जो मनुष्य इनको सिद्ध करना चाहें। प्रथम ४१ दिन तक सब अक्षरों को नित्य प्रति एक सहस्त्र बार पढ़े और यंत्र को सामने सफेद

कपड़े पर रख दीपक धरकर लोबान अग्नि पर खेवे। यंत्र पर सुगंधित पुष्प इत्र मिठाई चढ़ाके पढ़ने को आरम्भ करे और यंत्र पर दृष्टि रख ,स्र बार कहे, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम फिर ११ दरुद पढ़े।

दरुद–अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आलेही मुहम्मदिन व बारिक व सल्लम। **फिर इन अक्षरों को हजार बार पढ़े:-** अलिफ वे ते से जीम है खै दाल जाल रे जे सीन शीन स्वाद द्वाद तोय जोय एन गैन फे काफ काफ लाम मीम नून वाव हे ये।

इन अक्षरों को पढ़ ११ बार ऊपर लिखी दरुद पढ़े फिर एक बार यह अजमत पढ़े–

७८६

८ २००२	१ १९९४	६ १९९४
३ १९९६	५ १९९८	७ २००१
४ १९९७	९ २००३	२ १९९५

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहुम्मा इन्नी असअलीका बिहक्क इस्माईकल व सिफातिकल उलया या रज्जाको या समीओ अनतकदांहाजतो अकसमतो अलैयकुम या अग्योहल मलायकतिल मयक्किलत अल्हाजिल हुरु फ़ित्तामाति ताहिरात या दरदाईलो या किकाईलो बिहक्के सईयदि कुमूवा अमीनिकुम अल अजीमत नहायू सो मंग यूसोइन्नमा अमरूह इजा आरादा शैयन अनयकू लोलहू कुनन यफ कुनफ सुबहान ल्लजी बे यद्दहिन कुतो कुल्लश अइन अखै है तुर्जऊन ४१ दिन उपरान्त २८ अक्षरों को नित्य प्रति २८ बार पढ़ लिया करे आदि अन्त में पांच २ बार दरूद पढ़ा करे और जब किसी कार्य प्रीति या बैर आदि का प्रयोग किया चाहे तो यन्त्र लिख के उसके तले अपना मनोरथ लिखे फिर बत्ती बनाके दीपक में जलाये तो ७ दिन में सिद्ध हो जो मनुष्य इन सब अक्षरों को जकात दिया चाहे तो प्रथम अलिफ को इस प्रकार अस्सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो पढ़ै नौ चन्दी जुमेरात को ११ बार निसाब को १००१ बार जकात अर्थात् ईष्ट की सिद्धि को ३०१ बार

असर अर्थात् होम को २५० बार निफूल अर्थात् तपस्या को १०१ बार दौरे गोल अर्थात् मार्जन को ५२ कर बस ब्रह्मभोज को ११९८ बार पढ़े और अंत में ग्यारह २ बार दरूद पढ़ै फिर कार्य की सिद्धि को बुद्ध से मंगल तक नित्य १०१ बार और प्रति दिन ४१ बार निसाब को ५० बार जवात को २५ बार और असर को १३ बार फल को १४ बार बज्ल को सम्पूर्ण १४५ बार पढ़ै और १०१ मतलब को पढ़ै और उचित दो यह है कि इन २८ अक्षरों में से प्रत्येक को ४४४४ बार एक २ दिन पढ़ै ऐसे २८ दिन में अमलया प्रयोग को पूरा करे और इस बात का भी ध्यान रक्खे कि प्रत्येक अक्षर के एक मवक्किल और एक नाम खुदा का मिलाकर ३ रीति से पढ़ते हैं, जैसे अक्षर अलिफ का मवक्किल इस्त्राफील और नाम खुदा अलिफ पर अल्लाह है इनको मिलाकर नीचे लिखी ३ रीतियों में से जिसमें चित्त लगे उसको पढ़ै रीति यह हैं।

पहली रीति– अलिफ या अल्लाह या इस्राफील।

दूसरी रीति– या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।

तीसरी रीति—या सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो। २८ दिन पीछे सब अक्षरों को नित्य प्रति २८ बार या ३ बार या १ बार पढ़ लिया करे कभी नागा न हो तो अमल कासर बना रहे।

न्यारे २ अक्षरों के गुण और जाप और विधि का वृत्तान्त

अलिफ के पढ़ने की विधि— जो मनुष्य धन की वृद्धि चाहे सो सूर्योदय पहिले एक बार पूरी

या इज़राईल	या अल्लाह	या अल्लाह	या अल्लाह	या कुद्दूस
या जिब्राईल	६ २७	१ ५	८ ३४	या इस्राफ़ील
या जिब्राईल	७ ३१	४ २२	३ १४	या इस्राफ़ील
या जिब्राईल	२ १०	९ ३९	७ २७	या इस्राफ़ील
या [illegible]	या अलिफ	या अलिफ	या अलिफ	या कुद्दूस

बिस्मिल्लाह पढ़के ११ बार दरूद पढ़े १४१ बार निसाव आदि को इस प्रकार पढ़ै।

या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो। फिर एक हजार बार या अलिफ पढ़ै। परन्तु हर सैकड़े के बाद १० बार पढ़ै आजिबो या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला होको १९ बार पढ़ै अस्सालमअलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफि या अवल्ला हो बिस्मिल्लाह अलाखैर खिल कही मुहब्म दिन व आल ही अजमईल॥

इसी प्रकार हजार बार नित्य पढ़ै तो थोड़े ही दिन में धन में वृद्धि हो और इस यंत्र का पूजन करे पढ़ने के समय यंत्र पर अपनी दृष्टि राखे या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो मुझे धन और दौलत दे या बुद्दूह।

विधि—१००० अलिफ इस प्रकार (१) लिखके गोली बांध दरिया में बहाबे कार्य सिद्ध हो।

बेके पढ़ने की विधि

मंत्र—आजिबो या जिब्राईल बहक्क या बासितो।

विधि– सूर्योदय पहले एक यंत्र लिखनाभि समान जल में ३३३३ बार मंत्र पढ़े तो ७२ दिन में मंत्र सिद्ध हो रोजी गैब से प्राप्ति हो ७२ दिन में ब्रह्मचर्य से रहे पृथ्वी में सोबे जल से निकल स्वच्छ स्थान में जल।

यंत्रः-

७८६

१८	४८	६
१२	२४	३६
४२		३०

घट आगे यंत्र को सफेद वस्त्र पर रख दीपक लोबान खेवे और सुगंधि के पुष्प इस मिठाई यंत्र पर चढ़ा के ७००० केवल या वासितो पड़े तो ७२ दिन बाद गैय से ७२ टके चलन बाजार नित्य मिलें यंत्र के आदि अन्त में ग्यारह २ दरूद पढ़ें और आज के यंत्र को दूसरे दिन आटे में गोली बनाय बूरा में खाय दरिया में बहावे।

तेके बढ़ने की विधि–या ग्राईल बहक्क या ते या तव्वावो॥ बड़ाई मिलवे को नित्य पढ़े।

७८६

८	११	३८९	२
३८८	२	७	१२
३	३११	९	६
१०	५	४	३९०

तेके पढ़ने की विधि–या मीकाईल बहक्क या से या साबितो। इस मंत्र को नित्य ९०३ बार पढ़े तो किसी का मुहताज न हो।

जीमके पढ़ने की विधि– या किलकाईल बहक्क या जीम या जव्वादी। इस मंत्र को ७ रात्रि तक नित्य तीन हजार बार पढ़े तो पैगम्बर साहब को स्वप्न में देखे केवल १ सहस्र कांसी की थाली पर लिखकर मीठे जल सों धोके नामर्द पुरुष को पिलावे तो उसका कामदेव जाग उठे।

हेके लिखने की विधि–या तनका फील बहक्क या हे याहमी दो। इस मंत्र को ६२ बार नित्य पढ़े तो बैरी जाता रहे।

खेके लिखने की विधि—या महकाईल बहक्क या खे याख लिको सोने के समय आकाश के तले खड़ा होकर अर्द्ध रात्रि के समय १००० हजार बार पढ़े और गये हुए मनुष्य की तरफ फूक मारे तो चलती आवे और ६०० खे लिख के ताकिया तले रख सोवे तो गये हुए मनुष्य को स्वप्न में देखे सब हाल मालूम करे अन्त में (या खलीरो) बढ़ा ले तो अधिक हाल मालूम हो।

दाल का मंत्र—या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो। सूर्योदय पहले एक सहस्र बार मंत्र पढ़े तो रोजी मिले धन की बृद्धि हो और उसी समय ७० बार पढ़के बैरी के घर की ओर फूंक दे तो बेग खराब हो।

जाल का मंत्र—या जुहराईल बहक्क या लाल या जुल जलाल बलइक्राम। हाकिम की मिहर्बानी या धन की वृद्धि को प्रात:काल ११०० बार पढ़े और ७०० बार मिठाई पर दम करके जिसको खिलावे तो वश हो।

रे का मंत्र—या असवा कील बहक्क या रे या रहीम।

विधि–पृथ्वी का धन प्राप्त होने को प्रतिदिन प्रातःकाल एक सहस्र बार पढ़ा करे और श्वेत मुर्ग के कान में ८०० बार (यारे) इस प्रकार कहे और छोड़ दे जहां धन गढ़ा हों चौंच मारे और ६०० रे मृत्तिका की कोरी रकाबी में लिखकर उन पर लौण बिछा कर रख दे। जिसमें अक्षर दीखे नहीं फिर सिरहाने धर कर सो जाय तो स्वप्न में धन की ठौर दृष्टि आवे अथवा ८०० के क़ागज पर लिखके उस कागज को अपने कान में रखै तो एक घड़ी उपरोक्त काढ़ के कांसी की थाली या कलई दार रकाबी में रखकर ऊपर लौण बिछावे जिससे अक्षर ढ़क जायं फिर उसको अपने सिर के तले रखकर ८०० बार मंत्र पढ़कर सो जाय तो स्वप्न में धरा हुआ। धन दृष्टि आवे।

जे के लिखने का मंत्र–या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियों।

विधि–बैरी का भय दूर करने को ५०० बार पढ़ा करे।

शीन का मन्त्र– या हमरा कील बहक्क या सीन समीओ।

विधि– दोपहर के दो बजे पर पढ़ा करे तो अनुभव हो।

शीन का मन्त्र–या इजराईल बहक्क या शीन या शहीदो।

विधि– बैरी की जीभ बन्द करिबे को ४० कागज के टुकड़ों पर ४० शीन लिखकर ४० रोटी की तह में रखके पकावे एक २ रोटी कूकरा को खिलावें तो बैरी का मुख बन्द हो और ३०० बार मंत्र पढ़के सो रहै तो गर्भवती स्त्री के पेट का हाल मालूम हो जाय कि बेटा है या बेटी।

स्वाद का मन्त्र–या अजमाईल बहक्क या स्वाद या समदो।

विधि–८०० बार नित्य पढ़ै पानी का मटका आगे रख उस पर दृष्टि रखे ४० दिन मैं बैरी मित्र हो जाय और मारग चलता ५०० बार पढ़ै तो हार न व्यापे।

ज्वाद का मन्त्र–या इतराइल बहक्क या ज्वाद या जार्रो।

विधि–नित्य एक सहस्त्र बार पढ़ै तो दिल की सुस्ती जाती रहै और हजार बार बैरी पर दम करै तो उसकी जुबांन बंद हो।

तोय का मन्त्र—या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो।

विधि—किसी मंत्र के सिद्ध करने को ९ तोय लिखके गोली बांध दर्या में बहावे और उन पर ७०० बार दम करे तो ७ दिन में कार्य सिद्धि हो और वसीकरन को ७०० लिखके उनके तले लिखे या इस्माईल अमुका को अमुका के वश्य करो बहक्क या तोय या सहिरो फिर उसका फलीता बनाय सुगंधि के तेल में जलावे और इत्र पुष्प दीपक आगे रख लोबान खेवें ऐसे ९ दिन करे तो वह मनुष्य या स्त्री वश्य हो परन्तु दीपक मुख माशूक के घर की ओर रखे।

जोय का मन्त्र—या लौजाईल बहक्क या जोय या जाहिरो।

विधि—बैरा का भय हो तो प्रात:काल ४० बार नित्य पढ़े ९ दिन में भय जाता रहे।

एन का मन्त्र—या लौमाईल बहक्क या ऐन या अजीमो।

विधि—७ एन कस्तूरी केशरा से लिखके उन पर ७० बार मंत्र फूंक जिसे मिठाई में खिलावे या पानी में घोलकर पिलावे तो वो आज्ञाकारी हो जावें।

गैन का मन्त्र—या लौखाईल बहक्क या गैन या गुफूरो।

विधि—७० गहुवा पर लिख उन पर १२८६ बार मंत्र दम करे बैरी के घर में गाढ़े तो बैरी का घर गिर पड़े और बैरी का नाम मिटै।

फे का मंत्र—या सरहमा कील बहक्क या फे या फत्ता हो।

विधि—एक सहस्र लिख उसके तले जिसको वश किया चाहे उसका और उसकी मां का नाम और अपना और अपनी मां का नाम लिखे इसी प्रकार या सरहना कील अमुका अमुकी का बेटा मुझ अमुका अमुकी के बेटे के वश हो बहक्क या फे या फत्ता हो फिर उस काफलीता बनाके जलावे। इस पुष्प की मिठाई चढ़ावे १०८ बार मंत्र को पढ़े। इस प्रकार करे तो हजार कोस से आकर हाजिर हो और मंगलवार को एक सांस में ८० फे मनुष्य की खोपरी पर लिखके बैरी के घर की नीव में गाढ़े तो उस घर में नित नई आपत्ति बनी रहै।

काफ का मन्त्र—या इतराईल बहक्क या काफ या काफियो।

विधि–४०० लिखके उसके तले या इतराईल लिखे अमुका अमुको के बेटे की नींद बन्द करो बहक्क या काफ या कुद्दू सो फिर उस पर ४०० बार मंत्र दम कर भारी पत्थर के तले दावे तो उसकी नींद बंध जाय।

काफ का मंत्र–या हुरुजाइल बहक्क या काफ या काफियो।

विधि–२००० लिखके जिसकी भुजा पर बांधे उसे विद्या बहुत सी आवे।

लाभ का मंत्र–या त्वात्वाईल बहक्क या लाभ या लतीफो।

विधि–नित्य ,क सहस्र बार पढ़के अपने ऊपर दम करे तो सब का प्यारा हो।

भीम का मंत्र–या रोमाईल बहक्क या भीम या महमनो।

विधि–९०० लिख के भारी पत्थर तले दावे तो सबका प्यारा हो।

नून का मंत्र–या लोलाईल या नून या नूरो।

विधि–शुक्र की राति या जिस राति के आगे शुक्र आवे २०० बार पढ़के सोवे तो स्वप्न में प्रष्टा का उत्तर मिले और ४० दिन नित्य हजार बार पढ़ै तो उसको विद्या अनुभव होने लगे।

वाव का मन्त्र–या रक्ता माईल बहक्क या वाव या बहावो।

विधि– इस मन्त्र को पढ़ता हुआ जहां चाहे चला जाय कोई रोके टोके नहीं कोई रोके तो उसके सामने ७० बार पढ़के फूंक दे।

हे का मन्त्र– या दौराईल बहक्क या हे या हादियो।

विधि– ७० ईंट पर लिखके बेर की नींव में रखे अथवा ४ ठीकरी पर लिखके मकान में गाढ़ दे तो वह मकान बहुत वर्षों तक टूटे फूटे नहीं।

ये का मन्त्र–या सराकी ताईल बहक्क ये यहियो।

विधि– १६० बार नित्य पढ़ै तो उसके सामने किसी और की जीभ न चलै सबकी जीभ बंद रहे।

इति २८ अक्षर वृत्तान्त मौलवी मुहम्मद अली खलीफा शाह अब्दुल रहमान कृत।

समाप्तम्।

प्रगट हो कि–जितने मंत्र फारसी के लिखे हैं उनको पढ़े तब प्रथम एक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ़ के मंत्र के आदि अंत में साक्र२ या ग्यारह २ या इक्कीस २ बार दरूद पढ़ लिया करे तो मंत्र का चमत्कार शीघ्र दीखे। इति।

वैरी के जूता मारिवा का मंत्र यंत्र

द	स	म	म	म	ल	ब	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	व	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	नाम वैरी न	अ	य	न	ग़
अ	अ	म	ब	त	ब	व	ह	ल
य	ब	अ	अ	द	य	त	व	त

विधि—इस मंत्र को निकृष्ट मास के अन्त में मंगलवार कौ फौलाद की छुरी से कच्ची ईंट पर लिखे दूसरी ओर बैरी का नाम लिख अर्द्ध रात्रि के समय घृत का दीपक रख के फूल इत्र चढ़ा के एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़के ४१ बार दरूद पड़े फिर एक हजार बार (या कहहारो) परन्तु हर सैकड़े पीछे ५ जूती बैरी के नाम पर मारकर १० या १२ मंत्र पढ़ै। इति।

या कहहारो या इत राइलो या दौराइलो या अमवाकिलो अमुके की समस्त देह और मुंह को मेरी जूती की चोंटों से घायल करो बहक्क या कहहारो और अंत में इकतालीस २ बार दरूद पढ़ मंत्र के सिद्धि करने को केवल (या कहहारो) नित्य १० सहस्त्र १० दिन तक पढ़के दशांश होमादिक करें।

बैरी का मारण—मोम का पूतला बनाकर शनिवार की पहली घड़ी में उस पर इस मंत्र को १०१ बार दम करे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम १ बार या कहहारो या कहर नायिल कहर्को कहर २ काया कहहारो १०१ बार और मंत्र के आदि अंत में ग्यारह

२ बार दरूद पढ़े फिर झाड़ू की सींक का तीर कमान बनाके उन पर ५०० बार इस मंत्र को पढ़ के दम करें।

मन्त्र–बिस्मिल्लाह पूरी ,क बार या हूशियन लाइलाहइल्ला अंता सुवहानिकाइन्ना कुन्तों मिनज्जालमीन फिर तीर को कमान परूब ३ बार यह मंत्र पढ़े बिस्मिल्ला १ या कहहारो या इतराइलो या टौराइलो या अमवाकिलो अमुके की छाती और कलेजे को मेरे तीर की जर्ब से घायल करो बहक्क या कहहारो।

विधि–फिर तीर को पूतला की छाती या कलेजे पर मारे।

वसीकरण मन्त्र– अल्लाहुस्समद।

विधि–एक बार बिस्मिल्ला पढके हजार बार मंत्र को पढ़े आदि अंत में ग्यारह २ दरूद पढ़ें फिर दोनों हाथ की हथेली पर ११ बार मंत्र दम कर दोनों हाथों से बड़े जोर से पृथ्वी पर मारकर कहे या अल्लाह अमुके कूं मेरे वशतर।

तथा–लाइलाहइल्लिल्लाह धरती से आसमान तक लाइलाह इल्लिल्लाह अर्श से कुर्सी तक

लाइलाल्लिल्लाह लौह से कलम तक लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह अमुके अमुकी के बेटे को मेरे वश्य कर।

विधि–इस मंत्र को २१ दिन प्रतिदिन १४४ बार पढ़ सिद्धि करे फिर मिठाई या जल पर ११ बार पढ़ जिसे खिलावे वश हो।

राज सभा मोहिनी– बिस्मिल्लाह १ बार पढ़के ७ बार यह मंत्र सलामुन कौ लुज मिनरर्विर्रहीम तनजी लुल अजीजुरहीम। दोनों हाथों की हथेली पर पढ़ फिर हाथों को मुंह पर फेर कर चला जाय। राजदरबार में जो मिले वही प्रसन्न हो।

सम्पूर्ण मनोरथ की सिद्धि का मंत्र

शुक्रवार को	या अल्लाहो	या वाहिदो
शनिवार को	या रहमानो	या रहीमो
रविवार को	या वाहिदो	या अहदो
चन्द्रवार को	या समदो	या फरदो
मंगलवार को	या हयियो	या कयियूमो
बुधवार को	या हन्नानो	या सन्नानो
बृहस्पति को	या जुल जलाल	बल इकराम

विधि–स्वच्छ स्थान में नया दीपक रखे उसमें सुगंधित तेल या घृत लावे इमामहसन और इमाम हुसैन का आवाहन करे सुगंधी पुष्प इत्र मिठाई चढ़ाके लोवान खेवे मंत्र को हजार बार पढ़ै आदि में एक बार बिस्मिल्लाहतीन बार दरूद फिर अंत में ३ बार दरूद इस प्रकार सात दिन में प्रयोग पूरा करै ७ दिन ब्रह्मचर्य सों रहे पृथ्वी में सोवे ३ बार हल्का भोजन करे मनोर्थ सिद्धि हो।

रोजी मिलवा का मन्त्र– बिस्मिल्लाह पूरी। या बुद्दूह या हथियों या कायियूनो या अल्ला हो या फरले या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहदों या लगय लिदो बलम यू लद बलम यकुन लुहू कु फूवन अहदा इति मंत्रः।

विधि– इस मंत्र को प्रति दिन १०० बार ७ दिन तक पढ़ें आदि अंत में तीन २ बार दरूद पढ़ें तो रोजी मिलैं।

तथा–या इस्राफील बहक्क या अल्ला हो।

विधि– उड़द के सवाया आटे की रोटी बना स्वच्छ वस्त्र में चौथाई रोटी की जंगली बेर के समान गोलियां बांध हर एक गोली पर मंत्र दम कर

वाको गोली समेत नदी की मछलियों को हाले और इस प्रकार 40 दिन में मनोर्थ सिद्ध हो।

इति फारसी मन्त्र

नजर का मंत्र—ओं नमो भगवते श्री पार्श्व नाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्म चक्षु प्रेत चक्षु पिशाच चक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय २ त्रासाय त्रासाय ह्रीं नाथाय स्वाहा।

विधि—७ बार पानी मंत्रि के पिलावे नजर छाया सब दूर हों।

मूंठ थमने का मंत्र—ओं नमो आदेश गुरु के चंडी चड़ी तो ऊपर चंडी आवत मूंठ करे नवखंड़ी चकर ऊपर चकर धरूं चार चकर ले कहा करूं श्री नृसिंह का मुंह आगे धरूं मदमांस की करूं अग्यारी माकों चाचि मेरे साथ काकों चाचि तौ मूंठ फिराऊं तीन सौ साठ मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—मूंठ आवे तो मास का भोग देकर कहे जिसने भेजी है उसे जा मारि मारि मारि।

भूतादिक दोष निवारण मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को हरि बायें हरि दाहिने हरिहावों विस्तार

आगे पीछे हरि खड़े राखे सिर जजन हार चमकंत बिजुली बाजत श्री नृसिंह फटत खंभ आवता काल राखि-राखि च्यार चक्र ले श्री नृसिंह के आगें मेलूं इतना सूं दूरि जाय पड़े प्रात काल कंटक छलछिद्र खेचरी भूचरा भूत दाना नाटक चेटन मारी मारी लंडी का तीन सौ साठ उलटत नृसिंह पल टंत काया भक्ति हेतु श्री नृसिंहवली सदा सहाय श्री गुरु गोविन्द के चर्णा बिन्द नमस्ते मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–मोर पांख खौ ७ बार झाड़े।

देह रक्षा–कचहरी या गांव में जहां कहीं जाय इस मंत्र को ७ बार अपने ऊपर फूंक कर जाय।

मंत्र–ओं नमो आदेस गुरु को बज्र लोह मय कोठा जिसमें मेरा जीव बैठा बाहर श्री हनुमंत बीर गदा लिए खड़ा अेजे आवें मार करंताने सब जाय पाय लगता मेरी भक्ति गुरु की श्क्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि–सात कांकर १०८ बार मंत्रि के गांव की नाखे फिर गांव में प्रवेश करे।

गंडा बनाने का मन्त्र–ॐनमो आदेश गुरु कों लड़गढ़ी सों मुहम्मद पटाण चढ्या स्वेत घोड़ा स्वेत पलाण भूत बांधि प्रेत बांधि काचि या मसाण बांधि चौंसठ जोगिनी बांधि अड़सठ म्याना बांधि बांधि रे चोखी तुर किनी का पूत बेगि बांधि जो तन बांधे तो अपने माता की सैया पर पांव धरे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा।

विधि– सवा पैसा की मिठाई दीपक आगे रख लोबान खेवे लाल रेशम रोगी की चोटी से एड़ी तक नाप सतबला डोरा बना इस मंत्र से २१ गांठ दे रोगी के गले में बांधे।

परियों का खलल दूर करिवा का मंत्र–ॐ मह कूब कुवमह विमलमह बड़ी नदी में चार देव कौण २ अंहकार मंहकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊं खाजे मुअय्युद्दीन तुम्हारी खुशवोई में चढ़ी कमाण सुलैमान परी लंक परी को हुक्म कीजे कौन २ परी स्यह परी सबज परी हूर परी अर्श कुर्स की लाडली बीबी फातमा कोली झीली आयना पाना

फल आय लेना सवा रेस शर्वत का प्याला आय ले आय हाजिर होना मीर मुहीयुद्दीन मख दूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाण आय हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामन गीर हूगां।

विधि–१५ बार झाड़ चून का चौमुखा दिया सन्मुख जलावे आठ पान का बीड़ा ले शर्बत का कच्चा प्याला भरे रोगी पर चौराहा में उतार कूप की मैंड पै रक्खे आती जाती बार बोले नहीं।

कीये कराये की रक्षा का मंत्र– ॐ नमो आदेस गुरु कों नूना चमारी जगत की बीजुरी मोती हेल चमके अमुके के पिंड में ज्यान करे बिज्यान करे तो उस लंड़ी के ऊपर पारो दुहाई तल सुलैमान पैगम्बर की मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि– मोर पंख से ७ या २१ बार झाड़जे।

भूतादिक दोष निवारण मंत्र–ॐ नमो आदेस गुरु कों हनुमंत वीर वीरन के वीर तिहारे तरकस में नोलख तीर क्षण बायें क्षण दाहिने कबहूं आमें होय धनी गुसांई सबता अमुके की काया भंग न होय इन्द्रासन दो लोक में बाहर देखे मसान हमारी या अमुकी की देही छल छिद्र व्यापै तो जती हनुमंत की

आन मेरे भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा।

विधि–मोर पंख से ७ बार झाड़े तो भूत प्रेत खसई जिंद मसानादिक दोष जाय बालक के गले में मंत्र को पीपल के पान में लिख के बांधे।

नकसीर रोकने का मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरु कों च्यार आटि च्यार घाटि निख निख है चौरासी वाटि बहै नीर भाजे चीर नाथ पै थांभि हौ श्री नृसिंह बीर नथांभे तो अपनी माता का दूध पिया हराम करै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–रुई का फोहा मंत्र से चाक के लगावे त्योही रुके।

नेत्र पीड़ा का मंत्र–ॐ नमो समुद्र समुद्र में खाई रस मरद की आंख आई पाके न फूटै न पीड़ा करै गोरख जती की आज्ञा फुरै शब्द सांचा पिंड काचा फुरों मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–लोण को ७ कीकरी से चाकजे।

आंख दुखवा को मंत्र–ॐ क्षां क्षं क्षः क्षेत्र पालायनमः स्वाहा २१ बार विभूति मंत्र के लगावे।

सर्प खाया का मंत्र—न्हां न्हंडिया तें काई खां धोर वांधोझियो मारि जासी अणर बांधाने पाणी प्यावे खाधो उतरि जासी।

विधि—जो कोई आदमी खबर लावे उसे पाणी मंत्र के पिलावे।

मृगी का मंत्र—ॐ नमो श्रीराम उठि २ धनुष चढ़ाव मृगामार २ ओंठः ठः स्वाहा। २१ बार तीर सौं झाड़े।

बावरे कुकर का मन्त्र—ओं गंगाधारी स्वाहाः। २१ बार विभूति मंत्रि के लगावे।

दांत किड़किड़ाने का मन्त्र—ओंहरः २ भ्रमरः २ रक्षां स्वाहा।

विधि—रविवार को सुपारी की २१ फाल बांट दीजे खाय दांत न किड़किड़ावे भाड़ का रेत मुख में डालै।

आधा सीसी का मंत्र—ॐ अचल गुसाईं बन खंडे राय चोरन झंके वाघन कच्चे बनफल खाय, हांक मारी हनुमंत ने इस पिडं आधा सीसी उतर जाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—बार झाड़जे रोगी दर्द स्थान को पकड़े तो रोग जाय।

रक्षा मंत्र वनवासी का—ॐ अचल गुसाईं बन खंडे राय चोरन झंके वाघ न लाय सूते सर्प न घाले घृत खिणवायां खिमदा हिना फिर २ वायां होय अबल गुसाईं समर्ता मेरी काया नाश न होय के शोराय सदा सहाय तीन लोक को माखन खाय कीड़ा कांटा दिया बहाय अलेख २ बजरंगी सदा सत्त संगी। ओं स्वाहा।

विधि—भैसा गुगर की २१ गोली मंत्रि के अग्नि में हो में ७ शनिवार फिर ३ बार मंत्र पढ़ अपने ऊपर दम करे तो चोर वाघ सर्प आदि का भय न हो।

जादू दूर करिवा को मंत्र—ॐ वज्र में कोटा वज्र में ताला बज्रा में बंध्या दसौं द्वारा जहां सूं आयौ जहां हीं जाय जाने भेजा जाही कूं खाय चटपंटति असधान खखितिः तत्र इस पिण्ड की मूठि टोणा चामण बीर बेताल ज्ञान परि ज्ञान जे इस पिंड कूं कुछ करें तो ईश्वर महादेव की आज्ञा फुरे श्री गोरख नाथ की आज्ञा फुरै।

विधि–वृक्ष की पाती २१ कूप का पानी तिराहा की धूल, काची, घाणी को तेल सण का चून कोरा, घड़ा में पानी ओर जल घालै माल घिट कंठ से बांधे रात्रि को हवन करै प्रात छान की चैतन नीचे स्नान करावे तेल धूर चून मेल के औटावे १०८ बार मन्त्रि के सिर पर घाले बाको नाम लेके कामादि दोष टलैं शरीर निर्मल हो।

कामनादि दोष जानने का मन्त्र–ॐ नमो दुग्ध २ घवलेश्वरी आदि मूल परमेश्वरी तोहि देखि बालक कंपै तख्त बैठा राजा कंपै न रन को करे जा कंपै आप चक्र फेरि पर चक्र स्थिर रक्ष २ गोरखनाथ डाकिनी शकिनी कुल देवका मणादे प्रगास आइ इह हंसे प्रकाश दें स्वाहा।

विधि–१६ दीपक तेल के बाल उनके तले १६ नाम जुदे २ लिखकर रखै डाकिणी १ शाकिणी २ भूतनी ३ प्रेतनी ४ जड़ली ५ अऊत ६ पितल ७ नाहरसिंह ८ कामण ९ कुलदेवी १० जलदेवी ११ क्षेत्रपाल १२ काली क्षेत्रपाली १३ कर्म रोग १४ शीत दोष १५ मुंडी १६ ये सब दीपक पर कोरा

विधि—बार झाड़जे रोगी दर्द स्थान को पकड़े तो रोग जाय।

रक्षा मंत्र वनवासी का—ॐ अचल गुसाईं बन खंडे राय चोरन झंके वाघ न लाय सूते सर्प न घाले घृत खिणवायां खिमदा हिना फिर २ वायां होय अबल गुसाईं समर्ता मेरी काया नाश न होय के शोराय सदा सहाय तीन लोक को माखन खाय कीड़ा कांटा दिया बहाय अलेख २ बजरंगी सदां सस संगी। ओं स्वाहा।

विधि—भैसा गुगर की २१ गोली मंत्रि के अग्नि में हो में ७ शनिवार फिर ३ बार मंत्र पढ़ अपने ऊपर दम करे तो चोर वाघ सर्प आदि का भय न हो।

जादू दूर करिवा को मंत्र—ॐ वज्र में कोटा वज्र में ताला बज्रा में बंध्या दसौं द्वारा जहां सूं आयौ जहां हीं जाय जाने भेजा जाही कूं खाय चटपंटति असधान खखितिः तत्र इस पिण्ड की मूठि टोणा चामण बीर बेताल ज्ञान परि ज्ञान जे इस पिंड कूं कुछ करें तो ईश्वर महादेव की आज्ञा फुरे श्री गोरख नाथ की आज्ञा फुरै।

विधि—वृक्ष की पाती २१ कूप का पानी तिराहा की धूल, काची, घाणी को तेल सण का चून कोरा, घड़ा में पानी ओर जल घालै माल घिट कंठ से बांधे रात्रि को हवन करै प्रात छान की चैतन नीचे स्नान करावे तेल धूर चून मेल के औटावे १०८ बार मन्त्रि के सिर पर घाले बाको नाम लेके कामादि दोष टलैं शरीर निर्मल हो।

कामनादि दोष जानने का मन्त्र—ॐ नमो दुग्ध २ घवलेश्वरी आदि मूल परमेश्वरी तोहि देखि बालक कंपै तख्त बैठा राजा कंपै न रन को करे जा कंपै आप चक्र फेरि पर चक्र स्थिर रक्ष २ गोरखनाथ डाकिनी शकिनी कुल देवका मणादे प्रगास आइ इह हंसे प्रकाश दे स्वाहा।

विधि—१६ दीपक तेल के बाल उनके तले १६ नाम जुदे २ लिखकर रखै डाकिणी १ शाकिणी २ भूतनी ३ प्रेतनी ४ जड़ली ५ अऊत ६ पितल ७ नाहरसिंह ८ कामण ९ कुलदेवी १० जलदेवी ११ क्षेत्रपाल १२ काली क्षेत्रपाली १३ कर्म रोग १४ शीत दोष १५ मुंडी १६ ये सब दीपक पर कोरा

कूंड़ा उलड़ा धरे मंत्र पढ़ २ उड़द मारे रविवार को जिसका दोष हो उसका दीपक रहै अन्य दीपक बुझ जायं इस प्रकार कामणादि दोष जाणा जाय।

स्त्री बसीकरन—मोहिनी मोहिनी कहां चली वरा खुदाई मका को चली और देखें जले वलें मेरे देखे मेरे पायन पड़ें छूमत काया वाचा गुरु का सेवक सब सांचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

विधि—रविवार प्रातः काल गुड़का शर्वत बनाके पीवे दिन भर व्रत राखे रात्रि को ज्योति कर गूगर खेवे पैड़ा पान भोग धरे लौंग इलायची सुपारी तीनों का चूरन करे उस पर १४४ बार मंत्र दम करे फिर वृत खोल के पेड़ापान खाय फिर जिस स्त्री पर मन चले उसके वायें पगतर की धूर में थोड़ा चूरन मिलाकर २१ बार मंत्रि के उस पर डाले तो आवे।

अबीर बसीकरन—आकाश की जोगिनी पाताल का नाग उड़ जा अबीर तू फलानी के लाग सूते सुख न बैठे सुख फिर-२ देखे मेरा मुख हम कूं छांड़ि दूसरा कने जाय तो काढ़ि कलेजा नाहरसिंह वीर खाय फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–अबीर को गूगर की धूनी देके पत्ता में रख मुंह में रखै जल में गोता लगाय ७ मंत्र जप के बाहर निकल अबीर को गूगर की धूनी लगाके जिसके मुंह पर लगावे वह हाज़िर हो।

मारन मन्त्र–जल की जोगिनी पाताल का नाग उठ अवीर जहां लगाऊँ तहां दौड़ के मार दौड़कर मार दुहाई मुहम्मदावीर की तुर्कनी के पूत की दुहाई भोला चक्रवी को फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–पूर्व विधि उक्त जल में गोता लगाक ७ वार मंत्र पढ़ सिद्ध कर शत्रु के मुख पर डाले।

मारण–ॐ नमो काल रूपाय उमुकं भस्मि कुरु २

स्वाहा।

विधि– प्रथम सिद्धार्थ २१ सहस्त्र जपैं फिर भांग लौन दोनों का चुरन नाक दीपक की लौ पर १०८ बार मंत्र से बैरी पर डारे तो मरै।

विधि २– मंगलवार को १५ का यंत्र विलोम करके चिता की भस्मी सों लिखें १०८ बार मंत्रि के मसाण की भूयर ऊपर सों डारे।

उच्चाटन मंत्र– ॐ नमो भगवते रुद्राय दंडक रालाय अमुक सपुत्र बाधवैं सहहन २ दह २ शीघ्र उच्चाटय २ हूं फट् स्वाहा ठः ठः।

विधि–ब्रह्म दंडी और चिता की भस्मी दोनों को पीस कर महादेव के लिंग पर लेप कर १०८ बार मंत्र जपै फिर १०८ काली सरसों १०८ बार मंत्रि के शत्रु के घर में नाखे उच्चाटन हो।

इति श्री तृतीय पाद कौतुक रत्न मंजूष समाप्तम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणपति को सुमिर के लिखूं यंत्र के भेद।
जासों कारज सिद्धि हों मिटें चित्त के भेद॥

जो मनुष्य यंत्र लिखने का प्रारम्भ करे उसको चाहिये स्नान कर पवित्र जगह में एक वस्त्र बिना सिला देह में धारण कर अकेला बैठे। कार्य के अनुसार मुहूर्त विचार के कूर्म्म चक्र और बैठने की विधि अनुसार जो इस ग्रन्थ के प्रथम पाद में लिखी है आसन बिछाकर बैठे जितने दिन तक लिखे ब्रह्मचर्य से रहे पृथ्वी पर सोवे स्त्री के पास न जाय हल्का भोजन करे नित्य एक समय पर लिखे और इस बात पर ध्यान दे कि यंत्र को रात्रि में लिखे या दिन में। यंत्र को दीपक के सामने लिखे, धूप देवे, जल कुंभ स्थापित करें या गंगासागर आदि किसी पात्र में जल भरके सामने रख लेवे और अन्त के यंत्र का पूजन नैवेद्य पुष्पादि युक्त करे।

मित्रता के लिये यंत्र लिखे तो मिश्री या गाय घृत मुख में रख के लिखे और अगर, तगर, चन्दन, चूरा, गुग्गल, मिश्री गाय घृत,शहद कपूर या चीनी जायफल मेवा को एकत्र कर धूप देवे।

मारण उच्चाटन को लिखे तो सेंधा लोन, नीम का पत्ता मुख में रखे इसी की धूप दे जिह्वा बन्द करने को लिखे तो मोम मुख में रखे इसी की धूनी दे स्वप्न बन्द करने को लिखे तो मुख में रखे और इसी की धूनी दे।

यंत्र लिखने वाले की राशि आवी जिससे मनोरथ हो उसकी आत्शी हो तो यंत्र आवी लिखें क्योंकि जल अग्नि से प्रबल है।

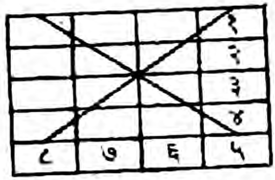
इसी प्रकार कर्त्ता की राशि वादी और दूसरे की खाकी हो तो यंत्र वादी लिखे। इसी प्रकार विचार कर ले यन्त्र ४ प्रकार के इनके रूप गुण पृष्ठ ३५१ के चक्र से विदित होंगे।

यंत्र के ९ कोठों के नाम– प्रथम का शैल पुत्री २ का ब्रह्मचारिणी ३ का क्षुद्र घंटी ४ का कूष्मांड़ी ५ का स्कंद माता ६ का कात्यायनी ७ का काल रात्रि ८ का महागौरी ९ का सिद्धि दाता। यह भी जानने की बात है कि ९ कोठों के यंत्र के ८ जर्ब में उतना ही अंक आवे तो यंत्र शुद्ध है ८ जर्ब की सूरत यह है और पहला अंक बाहर के ८ घरों में से किसी घर में रखा जाय। उसी से यंत्र की प्रकृति

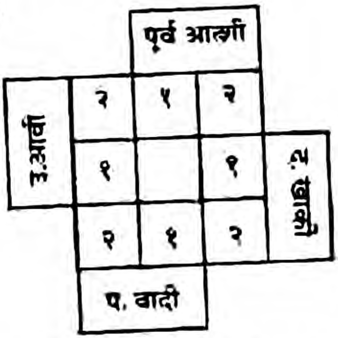
यंत्र

नाम यंत्र	राशि यंत्र	राशि का मुवक्किल	लिखना	यंत्र का क्या करें	दिशा गुण राशि	पूर्व		
	वृष	इज्राईल	अष्ट	पृथ्वी	दक्षिण	४	३	८
खाकी	कन्या	जिब्राईल	गंध	में	स्थिर	९	५	१
	मकर	सरकाईल	से	गाड़ें	कार्य	२	७	६
	मिथुन	इस्राफील	सिर्वाह	पश्चिम	पत्थर तले	प		
वादी	तुला	इस्राईल	रक्त	उच्चा	गाड़ो या	४	९	२
	कुम्भ	माहिकाईल	चंदन	मारपा	द्वार पर	३	५	७
					लटकावें	८	१	६
	कर्क	बहकाईल	ताम्बा	उत्तर	बहते	८	३	४
आवी	मीन	बकवाईल	स्या	चर	जल में	१	५	९
	वृश्च	सरसाईल	ही	कार्य	बहावे	६	७	२
	मेष	इस्राफील	नीलक	पूर्व	अग्नि	६	१	८
आतशी	सिंह	जहराईल	पुरमीगी	वैर	में जरावें	७	५	४
	धन	सरताईल	स्याही	भाव		२	९	३

वादी आवी आदि ४ प्रकार की जानी जाती है। यंत्र में ४ दिशा होती हैं और ४ विदिशा अर्थात् कोने (कोणे) और दिशा का बायां कोना दिशा में शामिल गिना जाता है। जैसे पूर्व दिशा का बायां अग्नि कोण पूर्व दिशा में शामिल है।



ईशान	पूर्व	अग्निय
उत्तर		दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य



इसी रीति से प्रत्येक दिशा के दो घर हुये ४ प्रकार के यंत्रों की घर की यह सूरत हुई।

१६ कोठों का यंत्र जो किसी के नाम का मारन वशीकरन आदि कामों को बनाते हैं जो जिस नाम का यंत्र बनाया जाय उस नाम के अक्षरों के अंकों को जोड़ के उनमें से ३० घटा के शेष अंक जो रहें

उसकी चौथाई में पूरा अंक आवे अर्थात् आधा चौथाई न आवे तो उस अंक को पहले कोठे में रख के शेष १५ कोठे में एक २ अंक बढ़ा के रक्खे यंत्र के कोठे इस चाल से भरे।

८	११	१४	पहला
१३	२	७	२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

उदाहरण—रामचन्द्र के अंक २९८ हैं के २०० रा के, १ म के, ४० च के, ३ न के, ५० द के, ४३० घटाने से २६८ रह चौथाई का अंक ६७ है तो यंत्र इस प्रकार भरा यह यंत्र २९८ का हो गया कदाचित् नाम के अंकों ३० घटाने से शेष ऐसा अंक बचे जिसकी चौथाई में पूरा अंक न आवे आधा चौथाई आवे तो समस्त अंक में २१ घटावे शेष बचे उनको १३ वें कोठे में रखे फिर एक-एक अंक बढ़ाकर ३ कोठे १५ ।१५ ।१६ को भरे और आदि के १२ कोठों में १ से १२ तक अंक रखे।

७४	७७	८०	६७
७९	६८	७३	७८
६९	८२	७५	७२
७६	७१	७०	८१

५	११	५७७	१
४७६	२	७	१२
३	५७९	९	६
१०	५	४	५७८

उदाहरण—किशोरी लाल के अंक ५९७ में हैं क २० श ३००

ओ ६ र २०० ई १० ल ३० ल ३० तो घटाने से शेष ५६७ रहे इनके चौथाई १४१ पूरा अंक नहीं आया तो ५९७ में से २१ घटा कर शेष रहे ५७६ इनको १३ वें घर में रक्खा तो ५९७ हो गया। अब फारसी नागरी अक्षरों के अंकों का हिसाब भी लिखना आवश्यक हुआ इससे लिखता हूं। अंक यंत्र से नागरी अक्षरों के अंक इस प्रकार हैं:-

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	क	ख	ग	घ	ङ											
		च	छ	ज	झ	ञ										
			ट	ठ	ड	ढ	ण									
				त	थ	द	ध	न								
					प	फ	ब	भ	म							
						य	र	ल	व							
							श	ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ			
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
१					अ	क	र	आ	क	३						

फारसी अक्षरों के अंक जिनसे यंत्र बनाये जायं

अलिफ बे ते से जीम हे खे ढाल जाल
१ २४००५०० ३ ८ ६०० ४ ७००

रे जे सीन शीन स्वाद ज्वाद तो जो ऐन गैन
२०० ७ १० ३०० ९० ८०० ९ ६०० ७० १०००

फे काफ काफ गाफ लाम मीम नून वाव हे ये।
८० १०० २० २० ३० ४० ५० ६ ५ ११

२०का यन्त्र लिखने की विधि– २० के यंत्र कई प्रकार के हैं न्यारे-न्यारे भेद लिखे जाते हैं। यंत्र के ४ प्रंकार के आवी आदिक में किसी प्रकार का होवे अंगुली से पृथ्वी पर पीली मिट्टी बिछाय लिख के मिटावे जब लिखने की संख्या पूरी हो जावे तब अन्त के यंत्र का पूजन फल मिठाई धूप दीप से करके मंत्र जप करे पीछे उसको मिटा के पृथ्वी पर पानी डाले या बाकी मिट्टी को उठाकर नदी में डाले प्रथम मंत्र को सिद्ध कर ले फिर जिस मनोरथ को लिखे वह मनोरथ पूरी होवे।



इस यंत्र को लिखे तो शाह फरीद जालंधर की आज्ञा चित्त से लेके ४० दिन तक नित्य प्रति २० यंत्र लिखे दीपक के आगे लोबान खेवे २० वें को कागज पर लिख के पूजन कर मंत्र जपे प्रथम एक बार बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम पढ़ के ४० बार बड़ा मंत्र या तनका फील वह कक्या बुद्दूह पढ़ के दो सहस्र बार छोटा मंत्र पढ़ के या बुद्दूह पढ़ के फिर ४० बार पहला मंत्र पढ़े और चार घड़ी दिन

रहे तब चार सौ बार बड़ा मंत्र पढ़ लिया करे यंत्र के सामने संध्या को यंत्र की गोली बांध नदी में बहावें तो सिद्ध होवे फिर नित्य एक यंत्र लिख के १२ बार बड़ा मंत्र पढ़ लिया करे। मनोरथ सिद्धि को यंत्र लिखे तो पूर्वोक्त पूजन कर २० सहस्र या बुद्दूह पढ़े अन्त में १ बार बिस्मिल्लाह और मंत्र के आदि अन्त में चालीस-२ बार बड़ा मंत्र मुवक्किल सहित पढ़े और मंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिखे।

२ यंत्र १० चर्वा (चुल्हा में गाढ़ देवे या सिले तले दाब देवे) इस यंत्र को लिख-२ दरिया में बहावे

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	१	२
७	४	५	४

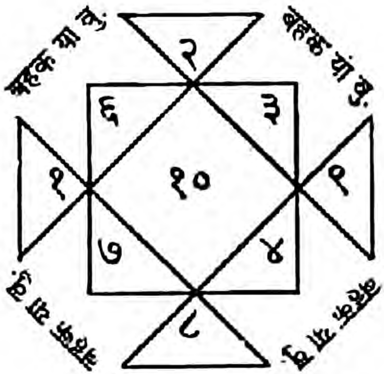
८	२	१०
१	७	४
३	११	६

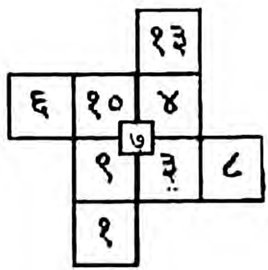
मंत्र वही है जो ऊपर लिखा है। यंत्र ८ ज़र्वा इस मंत्र को पीपल के पात पर रात्रि को अगणित लिखा करे

तो निःसन्देह किसी दिन यंत्र की अशुद्धता निकल जायगी चार मुवक्किल हाजिर होंगे यंत्र लिखते समय बड़ा मंत्र जपता जाय अंत के यंत्र को नित्य लोबान की धूनी दे एक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ़ दो सहस्र बार या बुद्दूह पढ़ लिया करे और मंत्र के आदि अन्त में चालीस २ बार बड़ा मंत्र पढ़ें।

नीचे के दोनों यंत्रों के लिखने और पढ़ने की वही रीति है जो पहले यंत्र में लिखी गयी है। जितने मुसलमानी मंत्र है उनके आदि अन्त में २१ या ११

चौथा यंत्र ४ जर्बा





बार दरूद अवश्य पढ़ ले व दरूद पढ़ने से पैगम्बर साहब की मदद पहुंचती है।

दरूद– अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन व वारिक व सल्लम्।

यंत्र या बुद्दुह रोजी मिलने का–इस मंत्र को उत्तम मास की पहिली बृहस्पति या ग्रहण या दिवाली की रात्रि को चमेली के तेल का दीपक रख सवाया मिठाई सुगंध के फूल इत्र मंगवा के लोबान अग्नि पर खेवे १९ यंत्र को पृथ्वी पर उंगली से लिख-लिख कर

या बुद्दुह	या बुद्दुह	या बुद्दुह	या बुद्दुह
या बुद्दुह	६२ ल	६४ ल	या बुद्दुह
७८६	६४ ल	६२ ल	या बुद्दुह
या बुद्दुह	या बुद्दुह	या बुद्दुह	७८६

एक-एक बतासा फूल चढ़ा कर मिटाता जाय और लिखते समय बढ़ा मंत्र या बुद्दूह पढ़ता जाय बीसवां यंत्र कागज पर लिख कर बची हुई मिठाई फूल इत्र सब उस पर चढ़ा के दीपक के सिर की आग यंत्र को रक्खे दीपक के आगे अग्नि पर लोबान खेवे फिर एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़ के २१ बार दरूद और ४० बार बड़ा मंत्र फिर २० सहस्र बार छोटा मंत्र फिर ४० बार बड़ा मंत्र और २१ बार दरूद पढ़ के यंत्र को सोने या चांदी के ताबीज में रख दाहिने हाथ पर बांधे

फिर नित्य यंत्र को लोबान की धूनी देके दो सहस्र बार या बुद्दूह पढ़ लिया करे तो रोजी निस्सन्देह मिले।

उदर पूर्ण के लिए– नित्य प्रति १ यंत्र लिख धूप दीप नैवेद्य पुष्प से पूजन कर उस पर दृष्टि रख के १ सहस्र और १ बार जल के घट आगे मंत्र जपे रोजी खुले।

यंत्र ७८६– यह अंक बिस्मिल्लाह यंत्र के सिर पर लिखते हैं।

१९८	२०२	२०५	१९१
२०४	१९२	१९७	२०३
१९३	२०७	२००	१९६
२०१	१९५	२९४	२०६

मंत्र–एक बार पूरी बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम पढ़े। फिर १००१ बार या अल्ला हो या रहमानो या रहीमो या हैयो कैं यू मो और मंत्र के आदि अन्त में ग्यारह-२ बार दरूद पढ़े।

१५ के यन्त्र की विधि–प्रथम शुभ मुहूर्त देख के ये वस्तु अपने पास रख ले सवा पाव लापसी १० पूरी फराम का पका अनार की कलम रोली गूगल फूल खोपरा के शटूक पान फाल सुपारी २१ दिन फिर विधि युक्त घट स्थापन कर पट्टा पर रोली बिछावे पट्टे के सिर की ओर खड़ी बाती का दीपक

घृत भर जलावे पांव की ओर गूगल खेवे को अग्नि धरे लापसी पूरी अर्द्ध भाग पट्टा के दायें बायें रखे फिर पट्टा पर अनार की कलम से एक यंत्र लिखे लिखते समय यह मंत्र पढ़े।

मन्त्र–ओं नमों चामुंडा माई आई धाई मूवा मरा लिया उठाई बाल रखे बालनी कृपाल राखे दाहीं भुजा नृसिंह वीर वायीं हनुमंत वीर राखै वीरों को वीर खेलता आवता वीर लगावे पाय जो यह घटपिंड की रक्षा करे न कर तो उलट वेद वाही पर पड़ चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

फिर यंत्र का पूजन कर रोली चावल फूल खोपरा का एक २ टूक पान सुपारी चढ़ा के गुगर खेवे यह खेवे यह मंत्र पढ़ एक बार ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुंड़ा यै विच्चे फिर यंत्र को मिटा के दूसरा यंत्र लिखके इसी प्रकार पूजन करे और एसे ही २१ यंत्र लिखके सबका पूजन करें २१ वें यंत्र के आगे न वाक्षर मंत्र का जाप ६ सहस्र करे २१ दिन में यंत्र सिद्ध होगा मंत्र भी सवा लाख हो जायेंगे तिसका दशांश होम तस्य दशांश मार्जन तस्य दशांश तर्पण तस्य दशांश

ब्राह्मण भोजन करावे फिर नित्य प्रति एक यंत्र लिखकर एक माला मंत्र जप लिया करे।

आरम्भ करन विधि–जब किसी कार्य के सिद्ध करने को यंत्र लिखे तो शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में और अशुभ के लिये कृष्ण पक्ष में आरम्भ करे। यंत्र का प्रमाण लक्ष्मी १ सरस्वती २ प्रसन्नता को परदेश के बुलाने को ३ सभा वश करने को ४ पंथ की सिद्धि को ५ औषधि की सिद्धि ६ दो-दो सहस्त्र यंत्र लिखें बैखी के नाश करने को ७ मनुष्य वश करने को ८ मित्र से मिलने को तीन २ सहस्र लिखे रोग खोने को १० कैद से छूटने को ११ छः सहस्त्र लिखे ईश्वर की प्रसन्नता को १२ राजा के प्रसन्न करने को १३ चार सहस्त्र लिखे खेती भली होने को १४ बांझ के पुत्र होने को १५ पांच सहस्त्र लिखे मन इच्छा पूर्ण होने को सहस्र लिखे।

प्रयोग बैरी के नाश करने की विधि–१५ दिन में १५०० यंत्र आक के पत्ते पर लिख अग्नि में जलावे उसमें अपना मनोरथ भी लिखे बैरी की मृत्यु चाहे तो मसान में गाढ़े।

चोर के बुलावे का मन्त्र– यंत्र लिख के चरखे में बांध उलटा फेरे।

बाचा सिद्धि के अर्थ– अष्ट गंध के कागज पर १० हजार लिख मंत्र संयुक्त होम करे तो नाथ की सी बाचा सिद्धि होवे।

दरिद्र नाश करने का मंत्र–पीपल की कलम से पीपल के नीचे दो हजार कृष्ण पक्ष की १४ से लिखे।

किसी मनोर्थ की प्राप्ति का मन्त्र–अनार की कलम से बरगद के पेड़ तले ४००० लिखे।

यंत्र के अंक रखने की विधि–

१	५	९
८	३	४
२	७	६

सर्वत्र यन्त्र की चाल पहले अंक से ९ तक है। परन्तु एक महापुरुष ने १५ के यंत्र की चाल जिस प्रकार बताई है वह यह है कि प्रथम १ फिर ५ फिर ९ फिर ८ फिर ३ फिर ४ फिर २ फिर ७ फिर ६ अंक धरे।

वाक्य सत्य करने का मन्त्र–बेल की कलम से पवित्र स्थान २००० लिखे।

वादी में ७ । ५ ।३ ।६ ।१ ।८ ।२ ।९

आवी में २ ।५ ।८ ।६ ।४ ।९ ।३ ।७

आत्शी में ४ ।५ ।६ ।२ ।८ ।३ ।१ ।७ ।९

और जिस मनोरथ को यंत्र लिखे उसका दशांश हो मादिक ब्राह्मण भोजन कराना भी आवश्यक है और इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये की यंत्र को सिद्ध किये बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा।

दिन विचार–रविवार को बैरी के बाउला करने को आक का दूध लावे उसमें मसान की राख मिलाय मुर्दे के कफन पर नाम संयुक्त यंत्र लिखे १०८ मंत्र जपे यंत्र पर दम करै बैरी की चौखट तले गाढ़े बैरी का नाम यंत्र के तले लिखे बैरी बाउला होवे।

चंद्रवार वश करने को दूव लावे केशर सेत चिरमिठी सेत गाय के दूध में घिस के भोजपत्र पर यन्त्र लिख गले या सिर में बाधे और यंत्र के नीचे जिसे वश करे उसका नाम लिख १०८ मंत्र जपै। नवाक्षर मंत्र के अन्त में अमुकस्य मम वश्यं कुरु-२ स्वाहा मंगलवार उच्चाटन कारण कागला के पर की कलम और कागला के लोहू से मुर्दा के कफन पर यंत्र लिख बैरी का नाम नीचे लिखे चौखट तले गाढ़े १०८ जाप में कुटुम्ब सहित उच्चाटन होवे बुधवा वश करने का गज केसर गोरोचन मिलाय कागज

पर यंत्र लिखे उसकी बत्ती बना मनुष्य की दो खोपरी मंगा एक में सरसों का तेल डालकर जलावे दूसरी में काजल पाडे १०८ मन्त्र जपै काजल आंख में लगावे तो नर-नारी वश्य होवें। बृहस्पति वार वशीकरन गोरोचन तमर हल्दी घृत में मिला नाम सहित यंत्र लिखे अपने आसन नीचे गाढ़ उस पर बैठ १०८ मंत्र जैसे जिसके नाम पर किया है वह बेचैन हो आ जाय।

शुक्रवार स्त्री काम वश हो वच कूट सहत में मिला के भोज पत्र पर नाम संयुक्त यंत्र लिख अपने गले या सिर में बांधे स्त्री काम वश हो शनिवार मारन के लिये चिता के काठ की कलम बनावे कफन पर यंत्र लिख बैरी का नाम नीचे लिखा यंत्र उलटा भरे नीचे से चाल हो तो ऊपर से भरे बैरी की चौखट तले तो बैरी यमधाम को सिधारे।

१५ के यंत्र की मुसलमानी विधि–९ कोठों के अलग-अलग मंत्र ९ -अजवो या इस्राफील बहक्क या अल्ला हो॥ १॥ अजवो या जिब्राइल बहक्क बुद्दूहाशा अजवो या किल काईल बहक्क या जामि ओ॥ ३॥ अज वोया दर दाईल

या बुद्दूह ६	या रज्जाके ७	या बुद्दूह २
या अल्लाह १	या हादियो ५	या लाहिरो ९
या हलीमो ८	या जमिरो ३	या दाइमो ४

बहक्क या दाइमो ॥४॥ अजवो या दौराईल बहक्क या हादियो ॥ ५ ॥ अजवो या रफताईल बहक्क या रज्जाको ॥ ६ ॥ अजवो या सरफाईल बहक्क या बुद्दूह ॥ ७ ॥ अजवो या तन्कफील बहक्क या हलीमो ॥ ८ ॥ अजवो या इस्माईल बहक्क या ताहीरो ॥ ९ ॥

विधि– उत्तम मास की पहली बृहस्पति को कूर्म चक्र पर आसन बिछाय वार दिशा के विचार पर चंद्रमा शुभवार सन्मुख जोगिनी को पीठ पीछे कर बैठे जल का पात्र दीपक रखे लोबान खेवे यंत्र लिखे प्रतिदिन १५ दिन ४० ताईं ९ कोठों के न्यारे-२ मंत्र हैं प्रथम पिछले यन्त्र पर पुष्प इत्र मिठाई कोठों पर रखे फिर एक बार बिस्मिल्लाह पढ़ एक-२ मंत्र को १०१ बार पढ़े मंत्र के आदि अंत में ग्यारह-२ दरूद पढ़े ४० दिन में कैसा ही मनोरथ हो सिद्ध हो ३ चिल्ली पीछे १५ दिन में कोई काम हो पूरा होवे।

७२ के यंत्र की विधि–यह यंत्र आबी है जल वट विधि युक्ति भर के आंव के पट्टे पर रोली बिछा

कर अनार की कलम से एक यंत्र लिख के चंदन अक्षत फूल मिठाई धूप दीप करके पूजन करे मन में कामेश्वरी देवी का ध्यान करे लिखते समय एक-२ कोठा पर यह मंत्र जपै।

श्री पार्श्वनाथाय नमः

और यंत्र में पहले ६ का अंक फिर १२ ।१८ ।२४ ।३० ।३६ ।४२ ।४८ का रखे पूजन कर ७२ बार मंत्र का

७	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

जाप करे। ॐ नमो काम देवाय महा प्रभाय ही कामेश्वरी स्वाहा जप कर यंत्र को मिटावे इस प्रकार २४ यंत्र लिख पूजन करे २४ वें यंत्र के आगे २१ माला मंत्र जपे ७२ दिन में सिद्ध हो आज के लिखे यंत्र को दूसरे दिन गेहूं के चून में थोड़ा शहद घृत बूरा मिला के गोली बांध नदी में बहावे जौ की रोटी बथुआ की अलौनी भाजी खाय पृथ्वी पर सोवे ब्रह्मचर्य सों रहै झूठ न बोले ७२ दिन में सवा लाख का जाप हो जाय जिसका दशांश हो मादिक कर ब्राह्मण भोजन करावे। फिर नित्य प्रति १ यंत्र लिख उसकी पीठ पर लिखे ७२ टके चलन बाजार दे।

उस आसन तले रख ७२ मंत्र लिया करे ७२ टके चलन बाजार मिले तो किसी से कहे नहीं कहने से बंद हो जायेंगे जब फिर आसन नीचे न आवेंगे तब किसी प्रकार से कुटुम्ब के खर्च लायक प्राप्ति होता रहेगा। और यंत्र को आसन तले से उठाकर पाग में रखे दूसरे दिन गोली बांध नदी में बहावे जो यंत्र किनारे पर आ जाय उसको एक आले में सफेद वस्त्र पर रख परदा डाल दे नित्य पुष्प चढ़ाकर धूप दिया करे।

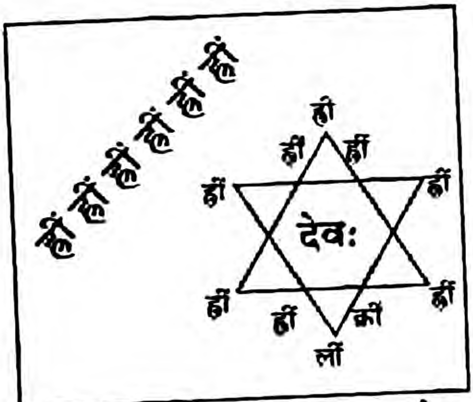
अन्य प्रकार—कागज पर नई स्याही से एक यंत्र सूर्योदय पहले लिखे उस मास की पहली बृहस्पति से आरम्भ करे और नाभि समान जल में खड़ा होकर पश्चिम मुख ४४-४४ बार अथवा ३३-३३ बार इस मंत्र को जपे एक बार पूरी बिस्मिल्लाह कहकर फिर यह मंत्र पढ़े अजिवो या जिब्राईल वहक्क या वासियों मंत्र के आदि अंत में ७१ बार दरूद पढ़े तो ७२ दिन में सिद्धि हो और नित्य यंत्र को तागा में पिरोकर निज स्थान के दरवाजे में टांक दिया करे दूसरे दिन चून में गोली बांध के गोली

बूरा में लपेट के नदी में बहावे ७२ दिन पीछे एक यंत्र लिखकर ७२ मंत्र जप लिया करे आरम्भ करने के १० दिन पीछे खर्च के माफिक कहीं से प्राप्ति होवेगी ७२ दिन पीछे दस-पांच ब्राह्मणों को भोजन करावे।

इति ७२ यंत्र विधि समाप्तम्।

लक्ष्मी प्राप्ति का यंत्र—इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगन्ध से लिख मंत्र जपे तो लक्ष्मी प्राप्ति होवे।

यंत्र यह है



मन्त्र—ओं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः प्रथम तीन लक्ष जपे सिद्ध होवे फिर दशांश होगा फिर ब्राह्मण भोजन करावे फिर नित्य प्रति यंत्र को धूप दे १०८ बार मंत्र जपे मंत्र पाग में राखे।

यंत्रः-

बं	बं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

मनवांछित फल पाने को इस यंत्र को रक्त चंदन से बेलपत्र पर लिख १०८ यंत्र शिव पर चढ़ावे ३० दिन श्रावण मास में और शिव व्रत के दिन तो धन संतान सर्व सुख प्राप्त होवे और नित्य ४४-४४ बार शिव मंत्र को जपे यंत्र विधि सों लिखे सर्व कार्य सिद्धि हों। इस यंत्र को कागज पर हल्दी से लिखे यंत्र के तले मनोरथ लिखे फलीता बनाय रविवार को दीपक इस प्रकार ७ रविवार करे तो सर्व दु:ख नाश होयं और हल्दी की माला से यह मंत्र ११ माला जपे।

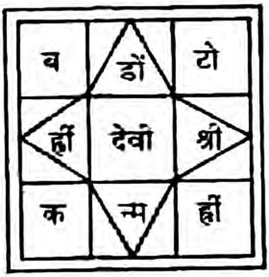
८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

मन्त्र–ओं ह्रीं हं सः

पूर्व यंत्र की दूसरी विधि–रविवार को प्रातः काल स्नान करके थाली में हल्दी से यंत्र को लिखे उस पर खड़ी बत्ती का चौमुखा दीपक घृत का रख

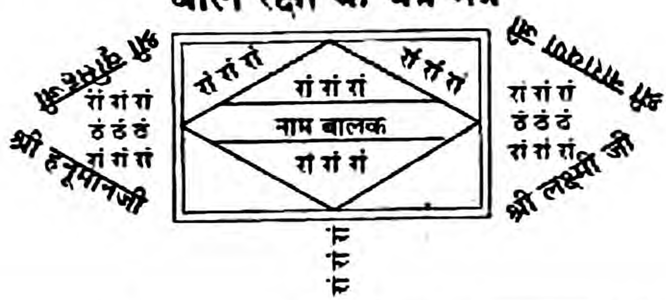
हाथ में ले सूर्य के सन्मुख रखे मंत्र का जाप करता जाय ज्यों-ज्यों सूर्य फिरे आप भी फिरता जाय सूर्य अस्त होने पर अर्घ देकर व्रत खोले स्त्री की दृष्टि न पड़ै इसी प्रकार ७ रविवार करे तो दुनिया में ऐसा कौन-सा काम है जो सिद्धि न हो सही ३।

अटूट भण्डार– बालाजी का यंत्र दिवाली की रात्रि को लिख कर धूप दीप नैवेद्य से विधि पूर्वक हनुमान जी का पूजन कर यंत्र आगे रख इस मंत्र को १२५ बार जपे।



मन्त्र–बौरी लछमीदेवी लछमी दे लिछि करणी मम भंडार पुरी क्रियं स्वाहा फिर यंत्र को द्रव्य मांझ अथवा अन्न मांझ रख ९ दिन पीछे खर्चे तो घटी न आवे।

बाल रक्षा के यंत्र मंत्र



मन्त्र—ॐ महाबीर हनुमंत बीर तेरे तरकस में सौ-२ तीर क्षण बाएं क्षण दाहिने क्षण-क्षण आगें होय अचल गुसाईं सेवता काया भंग न होय इन्द्रासन दी बांध के बारे घूमे मसान इस काया को छल छिद्र व्यापे तो हनुमंत तेरी आन।

विधि—मंगल को हनुमान का पूजन कर १०८ बार मंत्र जपे ७ मंगल में सिद्धि हो पीछे पीपल के पत्ते पर लिख गूगल के डोरा में बांध ३ गांठ दे प्रति गांठ दे प्रति गांठ ७ बार मंत्र जपे दाहिनी भुजा पर बांधे नजर जाय भूतादिक दोष जाते रहे।

दुकान की बिक्री—किसी ने बन्द कर दी हो तो खुल जाय और माल बहुत बिकने लगे शुक्ल पक्ष की पहली बृहस्पति को बार चक्र की रीति पर बैठ ७ यंत्र लिखे फिर यंत्र पर पुष्प रख लोबान खेवे उसके आगे यह मंत्र जपे १ बिस्मिल्लाह ११ दरूद १०१ यह मंत्र अथवा बिर्रिज्कुलफत्तूह दुकान अमुकस्य विसुतन अमुकस्यविसुतन अमुकस्य जारीगर्दी बहक्क या फत्ता हो या वासितो फिर ११ दरूद पढ़ रख छोड़े प्रति दिन एक यंत्र मीठे तेल के दीया में दुकान पर ७ दिन तक जलावे तो माल बिकने लगे और यंत्र के नीचे मंत्र लिखै।

यंत्रः—

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२४	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

यंत्र के नीचे ऊपर का मंत्र लिखे।

दुकान में माल की बिक्री हो—दो यंत्र शुभ घड़ी शुभ तिथि में लिखे एक को शहद में रख शकर बूरा में डाले फिर मीठे अनार के पेड़ में बांधे दूसरे को दुकान के दरवाजे में बाधे।

विधि—पहला अक्षर पहले घर में दूसरा दूसरे में इसी प्रकार १६ घरों में धरे।

यंत्र लिखने का

ब	अ	ह	व
व	ह	अ	ब
अ	व	व	ह
ह	व	व	अ

यंत्र चाल दिखाने का

८	११	१४	१
१३	१२	७	११
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

स्वप्न आवे तो इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिख गूगल खेवे तो फिर स्वप्न न आवे सत्य सत्य सत्य और तीन-२ बार इन पांच नामों का स्मरण

करके सोवे गणपति गणेश काटा कलेश बली पायक हनुमान, २ काली काली महा काली, ३ हे भैरव, ४ हे नृसिंह ५।

नं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	छं
नं	छं	जं	ठं

घोड़ा का यंत्र—इस यंत्र को घोड़े के गले में बांध कस्तूरी कपूर केशर से उत्तम मास के पहले रविवार को लिखे कागज पर गूगल खेवे तो दंगा नहीं करे स्वामी का शुभ चेतक रहे।

२६	३३	२	७
६	३	३०	२९
३२	२७	८	१
४	५	२८	३१

भैंस का यंत्र

३४	१८	३९

जो भैंस बच्चा को न लगावे और दूध न दे इसके सींग पर इस यंत्र को बांधे।

गौ का यंत्र—इस यंत्र को केशर गोरोचन कुमकुम से भोजपत्र पर लिखे गौ के गले में बांध गूगल खेवे तो गौ बहुत दूध दे।

२८	३५	१	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	२२

बैरी के घर में कलह हो—इस यंत्र को स्याही से कागज पर निकृष्ट मास की निकृष्ट घड़ी में शनिवार को लिख गूगल खेवे बैरी के दरवाजे पर गाढ़े जब तक उखाड़े नहीं उसके घर में कलह रहे यंत्र की रीति से यंत्र को भरे।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

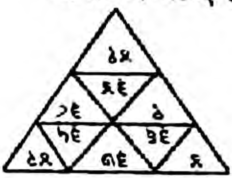
बैरी के जूता मारिवा का यंत्र—शनिवार को जलते मुर्दा जाति के तेली या ठाकुर की कमर तले से एक अंगार लेके मध अथवा तेल पानी का कुल्ला उस पर कर उठा लावे पीछे फिर कर न देखे। कोइला की गूगल धूनी देकर एक बतासा अग्नि पर रखे फूल चढ़ावे

१२२

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५	५८

भूत प्रसन्न हो फिर उस कोइला ओहरताल को मिला के पुराने लत्ताया कफन पर यंत्र लिखे उसके तले बैरी का नाम लिख यंत्र पर जूता मारे तो निश्चय बैरी माथा में लगे इस पुस्तक की आदि में यंत्र बनाने की विधि लिखी है उसके अनुसार बैरी के नाम का यंत्र बनावे और उस पर जूता मारे अति श्रेष्ट है।

बैरी बर्बाद होवे—वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की



खाल पर इस यंत्र को लिखे फिर बैरी और उसकी माता का नाम यंत्र के तले लिखकर गूगर धूनी दे और १०८ मंत्र पढ़े और बैरी के घर की चौखट तले अथवा घर के आंगन में अथवा मारग में गाढ़े तो बैरी को दुख की प्राप्ति हो।

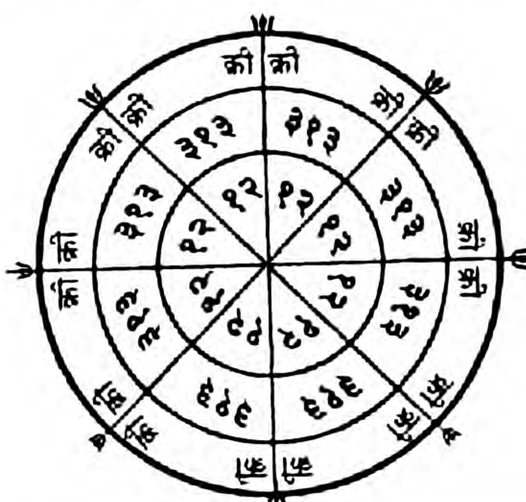
मन्त्र—ओं ह्रीं श्री त्रपुर भैंरू त्रपुर बीर मम शत्रू अमुकस्य पीड़ा कुरु २ स्वाहा।

बैरी का नाश करन का यंत्र—रवि दिन मसान का कोयला पूर्व युक्ति से लाया हुआ और हरिताल दोनों को जल में सान रोटी पर इस यंत्र को लिखे दो बतासा गूगर अग्नि पर रख यंत्र को धूनी दे और १०८ मंत्र यंत्र पर दम करे मसान व चौराहा में गाढ़े तो ३ मास में शत्रु का नाश होवे।

पुवक्तों यंत्र का मंत्र– ओं ही श्रीं क्ली महान वीराय अमुकस्य नाशय २ विध्वंसय २ स्वाहा।



गया हुआ पुरूष फिरै–जो मनुष्य रूठ के कहीं



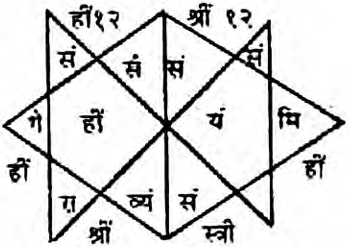
चला जाय तो इस यंत्र को भोज पत्र पर कुमकुम गोरोचन से लिख चर्खे से बांध उलटा फेरे तो वह पुरुष उसी समय जबलों घर पर न आ जाय नित्य चर्खे में उलट २१ चक्कर दिया करे।

सर्व बसीकरन यंत्र–यह यंत्र पत्थर पर लिख

७ग ४४ब ७००
१०० ११७० ४७६० ३० ४
५११ ७४-८३-१ : : ÷ ७

चुल्हे में गाढ़े ७ दिन राखे यंत्र के नीचे जिसे बश करे उसका और उसकी माता का नाम लिखे।

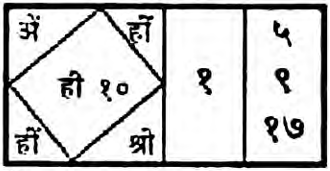
वसीकरन मंत्र–ओं क्लीं ह्रीं श्रीं सर्व जनस्य हृदयं मभवश्यं कुरु २ स्वाहा।



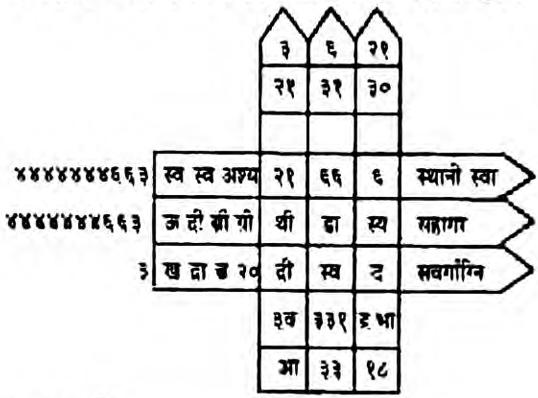
विधि–दिवाली की रात को अष्टगंध से लिख धूप दीप नैवेद्य चढ़ाकर १०८ मंत्र जप पाग में राखे।

वशीकरन यंत्र राजा प्रजा वश होवें

विधि—इस यंत्र को गेहूं की रोटी पर लिख कारे कूकर को खवावे तो सुसर वश हो कुंकरी को खवावे तो सास वश हो।



बसीकरन—इस चिंतामणि नाम यंत्र को चंदन सिंदूर से भोज पत्र पर लिख माथे पर राखे तो तीर न लगे और केशर कस्तूरी से लिखे तो सर्व कामना सिद्धि हों केशर कस्तूरी से वशं करन यंत्र को कपड़े पर लिख बाती बना जलावे ठसकी राख खिलावें वश्य हो।



३	६	२२
२१	३१	३
जं	२४	६

स्व स्वा आ स्व

आमुकी अमुका के वश्य हो।

वसीकरन—इस यंत्र को आसन तले गाढ़े राजा प्रजा वश्य हो।

४४	क्रॉं	४४
ह्रीं ह्रीं देवदत्त यो हिलायं		
४४	क्रीं	४८

नजर लगने का यंत्र—इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध से लिख जिसके गले में बांधे उसे नजर कभी न लगे।

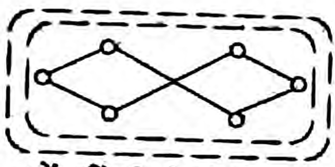
३५	१०	१८	७
१८	७	३५	१०
७	१०	१०	३५
७	३५	७	१८

जुआ जीतने का यंत्र—रविवार पुष्प नक्षत्र में लिख हस्त में पंवार की मूलला यंत्र में लपेट धूनी दे सवा पाव मिठाई भूखों को खिला जूवा खेले तो जीते सत्य ३।

२	२५१	२५१	२३१
३००।	२०॥	३१५	३६॥।
३११	९॥	२४॥	।११॥
७४	६४॥	५॥।	४॥॥

सत्य ३

धरन यंत्र—इस यंत्र को एक सांस में दिवाली की रात को भोज पर लिखे तो धरनन डिगे कमर में बांधे रहें सत्य ३।



ओं श्रीं पं बं फं यं फट स्वाहा

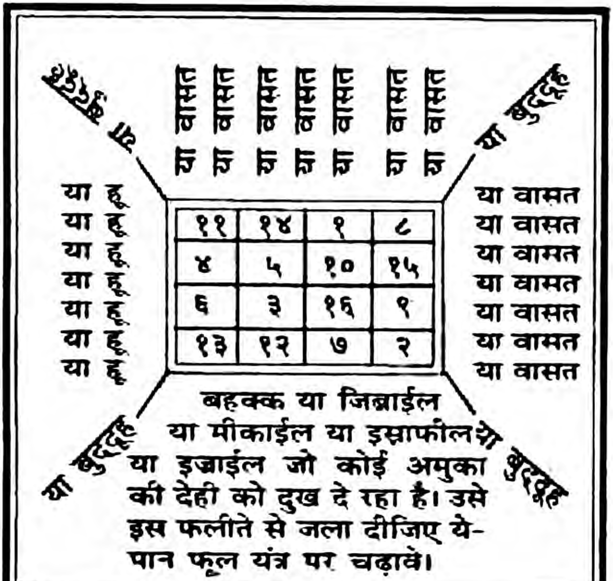
हाजिरात—बालक को स्नान कराय पवित्र वस्त्र पहराय सुंगीध लगय बैटावे एक रुपया सवा सेर

मेवा मिठाई और इत्र बादशाह की भेट को रख दीपक में चंवेली का तेल जलाये यंत्र के काले घर बालक दृषु रखे फिर इस अजीमत को पढ़ै विस्मिल्लाहिर्रहमानिरहीम अज वोया जिब्राईल या दरदाईल या रक्तमाईल या तन्क फील वहक्क या बुद्दूह हम्मन द्दम्मन लाइलाइ इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह या हेफ्ल या हैकलन या कोकल या कोकलन बहंक्क सुलमान नबी बिन दाऊद अलैहुस्सलाम।

हाजिरात का यंत्र—इस यंत्र को घुटे हुये कागज पर सब कोठे समान बना कर लिखे ९ के अंक से २४ तक लिख उस पर इत्र लगा के लिखे और एक सफेद चादर बिछाकर उस के बारहों कोने में लोहे की कील गाढ़ उस पर बालक के गले में फूल माला पहना कर बिठावे इत्र लगावे चावल और फूलों पर अजीमत पढ़ बालक पर मारता जाय जब बादशाह आवे तब मेवा मिठाई भेंट कर पूछना हो पूंछ ले।

१६	१९	२२	१०
२१	१०	१५	२०
११		१७	४
१८	१३	१२	२३

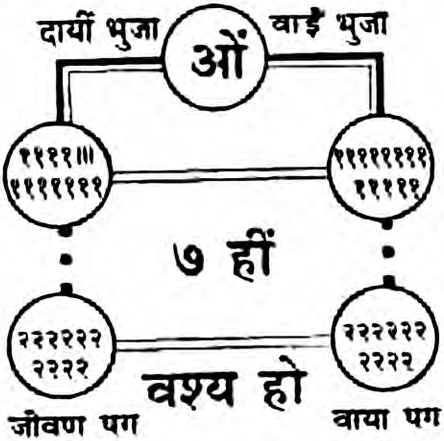
भूतादिक दोष निवारण यंत्र—यह यंत्र शाह अब्दुल कादर जालानी की प्रणाम कर लिखे यंत्र में रोगी का नाम लिख नये वस्त्र में लपेट बाती बना दीपक में चबेली का तेल भर रोशन करे पवित्र स्थान में रख जमीन को पोता माटी से पोते फूल मिठाई दीपक धरे जबरोगी लौ पर दृष्टि करे तो रोग जाता रहे चंमाहो जाय सत्य ३।



भूत बकरे—इस यंत्र को कागज पर लिख फलीता बनाकर सुंघावे तथा इस यंत्र में राई भर जलावे तो भूत जिन्न उतर जाये।

१२	११
३	३

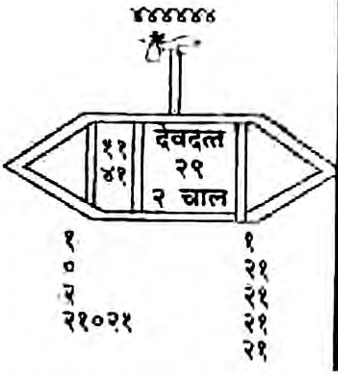
कामन करने को फलीता—इस फलीता को काले कपड़े में लपेट कर एक २ यंत्र में सुर्व रख

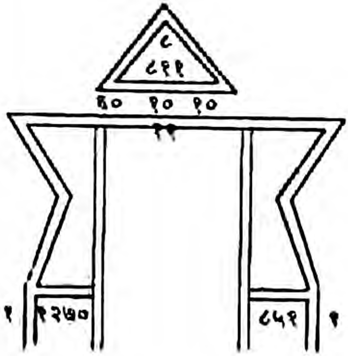


काले रेशमी डोरा पिरो के चूल्हे में गाढ़ दे जिसके नाम से करे वह नामर्द हो जावै॥

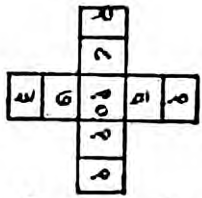
काला कलवा लगा हो तो गले में इस यंत्र को बांधे तो उतर जाय।

इस यंत्र की बाती कर दीपक में जलाने से प्रेत बश होय।





सूंड़ी की पीड़ा को यंत्र–रविवार को प्रातः काल लिख कमर में बाधे तो पीड़ा टरे।



ग	फ	व	र
७	१११	१०१	७१
११८	४	८२	१०५
८१	१०३	११२	११

रोगी की पीड़ा को यंत्र–यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख गले में बांधे बालकों को मिठाई बांटे।

सूंड़ी की पीड़ा को यंत्र–प्रातः काल इस यंत्र को लिखे १६१६ अंक चाल के देख के सब कोठों ५ का अंक भरे।

८ ५	५५ ५	११ ५	१ ५
२१ ३	६५ ४	७ ४	१३ ४
३ ५	१६ ५	८ ५	५ ५
१० ५	५ ५	४ ५	१५ ५

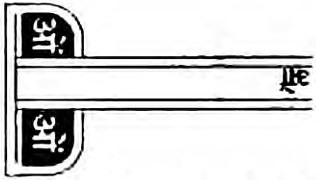
वसीकरन यंत्र–ओं नमो नृसिंहाय सर्व दुष्ट बिना गाय सर्वजन मोहनाय सर्व राज्य वश्यं कुरु २ स्वाहा १०० दिन जपैसिद्ध के ७ बार मंत्र से विभूति मस्तक पर लगा जाय।

हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी

यंत्र तिजारी का जैमने हाथ पर बांधे			यंत्र सीतला का गले में बांधे			यंत्र आधा शीशी मस्तक का बांधे पर			
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	१०	१७	२	७
						६	३	१४	१३
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	१६	११	८	१
७१	७१	७१	श्रीं	श्रीं	श्रीं	४	५	१२	१५

आकर्षण यंत्र–इन दोनों यंत्रों को वहेड़ा के पत्ते पर आमने सामने लिख विधि पूर्वक पूजन कर पृथ्वी में गाढ़े जिस किसी से मिला चाहे आप आय मिले।





इस यंत्र को शनिवार को नील से लिख खेत में गाढ़े तो खेत को कीड़ा न खाय।

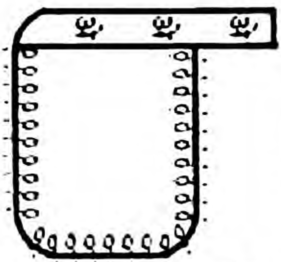
इस यंत्र को खेत में गाढ़े अन्न बहुत उपजे क्षेत्रफल की पूजा करे।

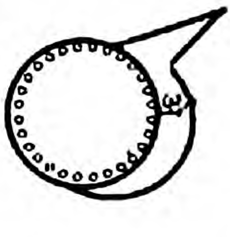
६	५	५
२१	४	१६
४	४	३

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
२६	८१	९	१
४	६	२२	२५

दो यन्त्र अष्ट सिद्धि के मन्त्र सहित

मंत्र– ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महा लक्ष्म्यै नमः।





विधि–दिवाली की रात्रि को तांबे की चौखूंटी कटोरी बनवा के उसमें रक्त चन्दन से यंत्र लिख

पूजन कर १ सहस्त्र मंत्र को जपे तो अष्ट सिद्धि प्राप्ति हो।

यंत्र

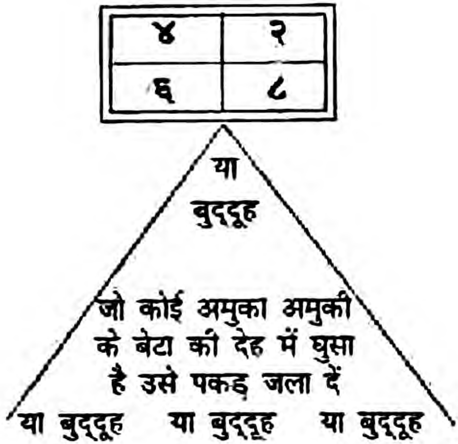


इस यंत्र को शुभ घड़ी में लिख बालक के गले में बांधे तो मसाण का खलल जाय।

पुरुष स्त्री के वश होवे—इस यंत्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिख स्त्री के बांये हाथ पर बांधे।

भूतादिक काढिवा का फलीता

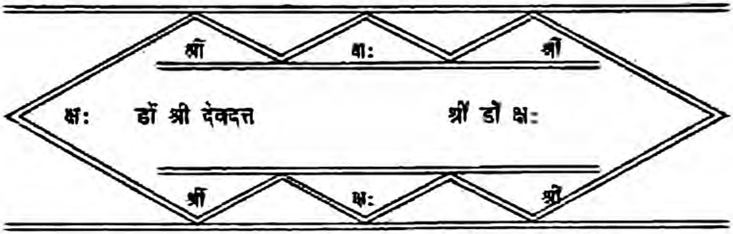
इस फलीता की नाक में धूनी दे तो समस्त रोग भूतादिक मिटें बहक्क या रफ्ताईल बहक्क या जिब्राईल या तनका फील हाजिर करो या दरदाईल बहक्क या बुद्दूह या बुद्दूह इस यंत्र को भोज पत्र पर



अष्ट गंध से लिख भुजा पर बांधें तो जहां जावे आदर सत्कार हो।



स्वामी का बशीकरन—इस यंत्र को भोज पत्र पर गोरोचन से लिख पूजन कर दो शिकोरों के मध्य में रख अग्नि में ऐसा जलावे कि यंत्र जलकर भस्म हो जाय जब शिकोरे ठंडे हो तब यंत्र की राख को पानी में घोल कर पी जाय तो स्वामी वश्य हो।



राजा का वशीकरण–इस यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन या श्रीखंड कुमकुम या दूध-दही अनामिका के लोहू से लिखे।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं देवदत्त मध्य नाम ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

बेहतरीन व आसान मोहिनी तिलक–पत्ता बेल का लाकर साये में लो सुखाय, कपला गाय के दूध में गोली बनवाय। जब चाहे गोली घिसो तिलक करो हरसाय, निश्चय कर ये जान लो जग वश में हो जाय।

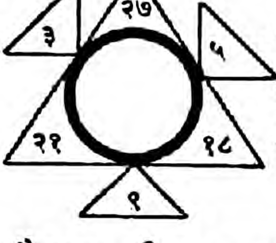
भूत प्रेत दूर होने का यंत्र–इस यंत्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखे तो जरा भी डर

८५	८६	१	१२
६	६०	६२	१३
४६	४	१८	११
५	६१	२८	५८

न लगे। इस यंत्र को चांदी की तश्तरी पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये हुए मरीज के सर पर दो मिनट तक रखकर तालाब में फेंक आवे तो भूत प्रेत जो कुछ भी हो फौरन भाग जावे।

राजदरबार में इज्जत पाने का यंत्र—इस यंत्र को चमेली की कलम से लिख कर अपने हाथ पर बांधे तो राजमान हो। यह यंत्र अगर गुलाब के रस से भोज पत्र पर लिख कर अपने हाथ पर बांधे तो राज दरबार में जाने से इज्जत मिले।

३६	५८	९	३८
५	४९	६२	६५
८७	५४	१	८
८	५	८३	८५



मच्छर भगाने का मन्त्र व यंत्र— जिस दिन मच्छर रात में दुख देवें बहुताय तेल लौंग की खाट पर छिड़कत ही भग जांये।

बकरी के दूध में गंधक और नौसादर पीसकर उसकी स्याही से काले कागज पर नौ मरतबा इस यंत्र को लिखकर अलग-२ उन नौ टुकड़ों को फाड़ लो, उपला की आंच सुलगाकर उसमें दो-२ मिनट बाद इन टुकडों को डालता जावे थोड़ी देर बाद भाग जायेंगे।

शीतला का यंत्र–(१) इस यंत्र को कागज पर लिखकर जिस बालक के शीतला निकले उसके गले में बांध देने से शीतला दूर हो जाती है।

९	४४	९	५१
७४	४	४	५२
३	२८	८७	११
९	५	३९	३५

(२) इस यंत्र को कागज पर चन्दन से लिख कर और गूगल धूप की धूप देकर शीतला जिसके निकली हो उसके गले में ताबीज बनाकर बांध दें।

नाक बहने का यंत्र–(१) इस यंत्र को सरसों के पत्ते पर लिखकर चबाने से नाक बहने लगती है।

७	४	५७	३२
५२	९	६२	५२
४५	५४	९	११
३५	८९	८३	८५

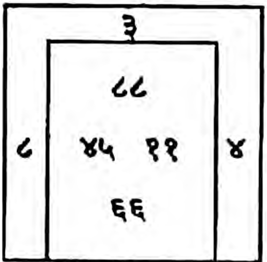
(२) इस यंत्र को कनेर के पत्ते पर स्याही से लिखे और शत्रु का नाम लेकर उसके सुई से छेदे तो उसकी नाक बहने लगे।

मदारी को पछाड़ने का मंत्र– ॐ नमो गदाधारी हनुमंत बीर स्वामी का तेज बैरी का शरीर और शत क्करुमा तू का लंका चलाया चलो बैरी न थरे में कर ही तेरे जीव की मारत में ना डरो ना डी तेर गुरु पुर से मारो तुझे टूक ही तीर से मेरा मारा ऐसा घूमे जैसे नारंगी सर्प की लहर परे तो वे हैरत

मारु बान फेर चले तो गुरु गोरख की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—उड़द के दानों पर सात बार मंत्र पढ़कर मारे तो मदारी बेहोश होकर गिरे।

मदारी को पछाड़ने का यंत्र—इस यंत्र को पीपल के सात पत्तों पर लिख कर बबूल कीकर के



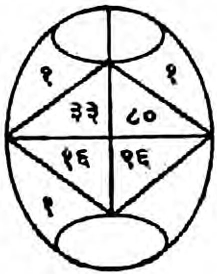
कांटों में सातों पत्तों को पिरोकर जहां खेल होता हो छोड़ दे तो मदारी फौरन चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ेगा पत्ते कांटों में से निकालने से फिर ठीक हो जायेगा।

व्योपार बढ़ाने का यंत्र—इस यंत्र को दीवाली को दिन महालक्ष्मी का पूजन कर लाल चंदन से दुकान या बैठने की जगह पर लिखे तो व्यापार में बढ़ोतरी हो।

१	७२	८	८
८	१	७	६२
७७	२६	८	१
७	५	७९	७४

इस यंत्र को शुभ घड़ी में असगंध से भोजपत्र पर लिखकर दुकान की तिजोरी या गल्ले में रख दे तो व्यापार जरूर बढ़े।

ढोल फूटने का यंत्र–



(१)इस यंत्र को दिवाली या चन्द्र ग्रहण की रात को खरगोश की खाल पर कोयले से लिखे और जिस जगह ढोल बजता हो उस जगह छोड़ आवे तो ढोल फूटे।

(२) सूखे हुए चमड़े पर तालाब की मिट्टी से लिख कर बजते हुए ढोल के सामने जाकर दिखावे तो ढोल फूल जावे।

दुश्मनी कराने का यंत्र–

५	३५	१	१४
८	७	५८	७५
६४	५८	२६	४
३	१	२२	७५

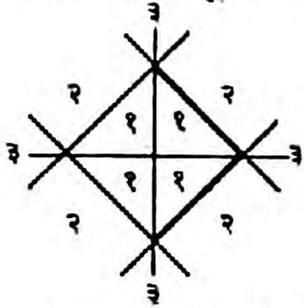
(१) इस यंत्र को कागज पर लिखकर जिन दो आदमियों के दरम्यान झगड़ा कराना हो उनके रहने की जगह में गाढ़ दे तो दोनों लड़ने लगेंगे।

(२) इस यंत्र को गधे की लीद से कागज पर लिखे जिसके घर झगड़ा कराना हो उसके यहां डाल आवे तो जरूर आपस में झगड़ा हो।

मसान का यंत्र–(१)इस यंत्र को कागज पर लिख कर गले में बांधे तो मसान न सतावे।

(२)इस यंत्र को श्मशान की मिट्टी से कागज पर लिखे और पीले कपड़े में रखकर ताबीज बनावे फिर जिस मरीज के बाजू में बांधे तो मसान ना रहे।

५६	५७	६	१
६	१	४५	५३
७६	३६	१	८
७	५	७५	५४



भूत-प्रेत नाशक यंत्र–इस यंत्र को जाफरान भोजपत्र पर लिखकर लौंग और कपूर के साथ रोगी के सामने धूनी दे तो भूत-प्रेत दूर हो जाय।

प्रेत नाशक यंत्र–(१) इस यंत्र को शनिवार के दिन कागज पर काली स्याही से लिखे और पूजन करके उसमें आग लगा दे तो मोहब्बत टूट जाय।

८५	६५	१	४५
६	२३	२६	१५
२५	८	८५	११
८	८३	८४	८५

(२) इस यंत्र को कोयले से लिखकर सिद्धि के मुताबिक सिद्ध करके जिसे तुम प्रेम करते हो उसे दिखाओ तो प्रेम का नाश हो।

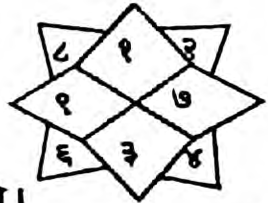
बलाय दूर करने का यंत्र– (१)इस यंत्र को भोजपत्र पर चंदन से लिखकर विधि पूर्वक पूजन करके घर में गाढ़ दे तो घर की सब बलाय दूर हो।

९५	६७	६	९
६	४	९५	५२
७६	२३	९	८
७	५	५६	५४

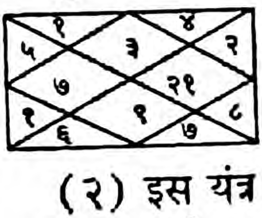
(१) इस यंत्र को कागज पर लाल चन्दन से लिख कर बाजू पर बांधे तो बलाय दूर हो।

प्रेम बढ़ाने का यंत्र–(१) इस यंत्र को कपूर से कागज पर लिखकर फिलेल जला दे तो प्रेम बढ़े।

(२) इस यंत्र को रेशमी रूमाल पर रोली से लिखकर जिससे तुम प्रेम करते हो उसके हाथों से उस रूमाल में आग लगवा दो तो वह प्रेम करने लगे।



दुश्मन उच्चाटन यंत्र– (१) इस यंत्र का तांबे के पात्र पर लोहे की कलम से लिखकर रखे तो शत्रु उच्चाटन हो।

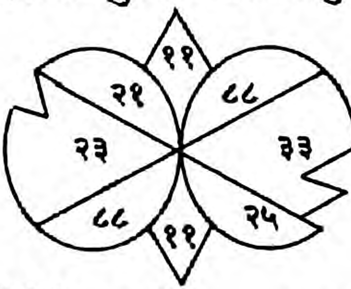


(२) इस यंत्र को रेशम पर लिखकर तांबे के पात्र का ताबीज बनवाकर शत्रु के बांधे तो उसको जरूर-जरूर उच्चाटन हो।

(३) यदि इस यंत्र को लाल चन्दन से लिखकर एक टूटे हुए मटके में आग जलाकर कागज को उस आग में जला दे तो ज्यों-ज्यों आग का धुआं निकलेगा त्यों-त्यों दुश्मन को उच्चाटन होता जायेगा।

बुरे ख्वाब न आने का यंत्र–(१) इस यंत्र को इतवार के दिन कागज पर रोली से लिखे और ताबीज बनाकर जो भी उसे अपने गले में बांधे तो रात में सोते वक्त उसे बुरे-२ ख्वाब न आवें।

(२) इस यंत्र को भोजपत्र पर लिख कर सोते समय सिरहाने रखे तो बुरे ख्वाब बिलकुल न आवें।

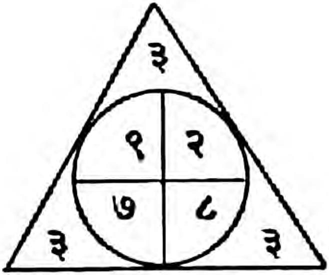


भूत दिखाई देने का यंत्र–(१) इस यंत्र को गिलोय के रस में भोजपत्र पर लिखे और मंगलवार को रात के समय धूप और रोली से पूजन करके सोते समय इसे सिरहाने रखे।



(२) इस यंत्र को श्मशान की राख से कागज पर लिखे और अपनी चारपाई के नीचे रके तो भूत दिखाई दें।

आधा शीशी का यंत्र-(१) इस यंत्र को इतवार के दिन कागज पर लिख कर माथे पर बांधे तो ठीक हो।



(२) सफेद चन्दन से कागज पर लिखकर गूगल बगैरह की धूप देकर बाजू पर बांधे।

सर्प विष नाशक यन्त्र-(१) इस यन्त्र को कागज पर चन्दन से लिखकर गंगाजल से धोकर जिसके सांप ने काटा हो उसको यह जल पिलाने से ठीक हो जाता है।

७७	५५	५	१
६	१	४५	५३
७६	३६	१	८
७	५	७४	५४

(२) इस यंत्र को लाल कपड़े पर लिखे और सिद्धि करके ताबीज बनाकर दाहिने हाथ में बांधने से जहर उतर जाता है।

सर्व सिद्धि यंत्र–(१) इस यंत्र को चीड़ की लकड़ी से लिखे तो चक्रवर्ती राजा भी वश में हो।

३१	३३	५२	४१
१४	३६	५३	११
४४	११	३२	७५
५४	४५	२२	४६

(२)इस यंत्र को भोजपत्र पर सफेद चन्दन से लिखे. सिद्धि प्रयोग के अनुसार अपने साथ जिस राजा के पास ले जावे वह जरूर वश में हो जावे।

शत्रु का मुँह सुजाने का यंत्र– (१) इस यंत्र को इतवार के दिन शत्रु का नाम तेल से कागज पर लिखकर जमीन में दबा दे तो दुश्मन के मुंह पर सूजन आ जावे।

१६	१५	३६	१६
२१	४१	३४	६३
७४	११	२१	६४
४४	५२	५६	४५

(२) लोहे की कलम से लिखकर जूता मारने से शत्रु का मुंह सूजे।

कुम्हार के बर्तन बिगड़ने का यंत्र–(१) इतवार के दिन इस यंत्र को कुम्हार के चाक पर लिखने से बर्तन बिगड़े।

८	५६	१	३५
२६	४२	३४	६२
७४	११	२१	१५
४४	४२	५६	७५

(२) इस यंत्र को नीले कागज पर रोली से लिखकर जिस-जिस कुम्हार के आंच के नीचे जमीन में गाढ़ देवे उसका एक भी बर्तन पकने न पावे।

औरत कष्ट निवारण यंत्र–(१) इस यंत्र को गधे की हड्डी पर लिखकर औरत की कमर में बांधे तो ठीक हो।

७६	५०	९	५४
६	४२	६२	१५
५७	७२	८५	११
८	३८	८४	५८

(२) इस यंत्र को गधे के चमड़े पर हरे रंग की स्याही से लिखे और उसको औरत के रहने की जगह पर ही रखे तो उसको कोई तकलीफ न रहे।

शत्रु भय नाशक यंत्र–(१) इस यंत्र को धतूरे के रस से लिख कर गले में बांधे तो भय न हो।

९	४४	९	५१
७४	४	४	५२
३	२८	२९	९१
९	५	३८	४५

(२) इस यंत्र को आक का दूध लाकर कागज पर लिखे और सिद्धि के मुताबिक हमराह उसे रखे तो कभी भी किसी शत्रु की तरफ से डर न रहे।

कुत्ता नचाने का यंत्र– (१) इस यंत्र को इतवार के दिन कुते के कान पर लिखे तो कुत्ता नाचने लगे।

७	४	५७	३२
५२	९	६२	५२
४५	५४	९	११
३५	८९	८३	८५

(२) इस यंत्र को श्मशान की राख लाकर किसी पक्षी की खाल पर लिखे और कुत्ते के गले में बांध दे तो वह नाचने लगेगा।

(३) इस यंत्र को शनिवार के दिन लिखकर कुत्ते की दुम में बांधे तो भी नाचने लगे।

सर्प नाशक यंत्र–(१) इस यंत्र को मालकंगनी से लिख कर घर में रखे तो सांप न आवे।

७५	७५	४	९
६	१	२५	३५
५७	६२	९	८
७	५	३७	५३

(२) इस यंत्र को कौवा की बीट पानी में घोलकर केले के पत्ते पर लिखे और गूगल की धूप देकर उस पत्ते का रस निकाले फिर उस पत्ते के रस को सांप के बिल पर छोड़ आवे तो सांप भाग जाय।

नजर मारण यंत्र–(१) इस यंत्र को तांबे के पत्तर पर लिखे और ताबीज बना बालक के गले में मंगलवार व इतवार को बांधे तो नजर न लगने पावे।

४६	९	८५	८५
८	९	४२	२५
७८	७२	९	५५
७	५	३९	८

(२) इस यंत्र को कोयले से कुम्हार के आंवे का ठीकर लेकर उस पर लिखे और बालक के खेलते समय वह घर से बाहर जाते समय साथ रखे तो उस बच्चे को कभी भी नजर न लगे।

सर्व सिद्धि यंत्र–(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर गीदड़ के नाखून से लिखकर गूगल वगैरह की धूप देकर बाजू पर बांधे तो जो भी काम करे सिद्ध हो।

६	४४	९	५९
४	४	२	५२
८७	२८	८७	९९
९	५	३९	४५

(२) इस मन्त्र को भेड़ के दूध के साथ कागज पर लिखे और अगर असगंध बगैरह की धूप देकर किसी पीपल के नीचे गाढ़े तो सब काम सिद्ध हो।

भय निवारण यन्त्र–(१) इस यन्त्र को लिखकर बालक के गले में इतवार के दिन बांधे तो बच्चा डरे नहीं और ख्वाब में रह-रह कर चौंकना भी बन्द हो जाय।

४३	१	८५	८५
८	९	४२	२५
७८	७२	९	५५
७	५	३९	८

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर तुलसी के पत्तों का रस निकाल कर उससे लिखे और जो बालक डरता हो उसे दिखाकर जंगल में दबा आवे तो उसका डर दूर हो।

शत्रु मुख भंजन यंत्र–(१) इस यन्त्र को लोहे की कलम से कागज पर लिखे और साथ ही उसमें

७१	४२	१	१०
८७	७	४५	७८
२९	४१	११	४२
५७	१३	४४	७५

दुश्मन का नाम भी लिख दे फिर उस पर जूता मारे तो शत्रु का मुंह भंजन हो।

(२) इस यन्त्र को कागज पर गधे की लीद से लिखे और बाजू पर बांधकर अपने शत्रु के सामने जावे तो उसका मुख भंजन हो।

आधा शीशी का मंत्र—ॐ नमो मे बसी बानवी उछल पेड़ पर जाय कूद-कूद शाखन पर बैठी फल खाय आधा तोड़े फोड़े आधा जबरन मोड़े, खोल धरे जो घूंघट अपना आधा शीशी जाय।

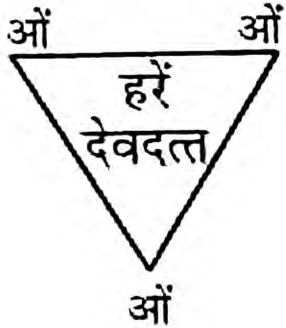
विधि—जमीन पर हाथ से पानी खींचे और सात आड़ी लकीरें काटता चले इस तरह कई मरतबा करे तो आहिस्ता-आहिस्ता आधा शीशी का दर्द ठीक हो जाय।

शत्रु नाशक मंत्र—ओ३म हरे क्लीं आयली भौग पुरवा भैरवी मातंगी त्रिलोक बसे मास्या स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का एक हजार जाप करे गोरोचन और मैन्सल का तिलक लगाकर शत्रु के पास जावे मन ही मन सात बार इस मन्त्र को पढ़कर हर बार एक उड़द के दाने पर फूंक दे फिर सातों उड़दों के

दानों को दुश्मन पर फेंकदे तो या तो वह दुश्मन तुम्हारे वश में हो जायेगा या फिर बीमार होकर १ चारपाई पर ही पड़ा रहेगा।

शत्रु नाशक यंत्र



विधि–इस यन्त्र को कौवा का पंख लेकर हरताल से लिखे और रात के समय पूजन करके श्मशान में गाढ़ आवे तो शत्रु की अचानक मृत्यु हो।

बिच्छु का जहर उतारना–ॐ नमो आदेश गुरु को समुद्र समुद्र है खाई इस मंत्र को सिद्ध करे फिर जिस को बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिला दे तो जहर उतर जाये काटा हुआ शांति पाये।

उच्चाटन का यंत्र



विधि—इस यन्त्र को कुत्ते के खून से मंगलवार को लिखे विधि पूर्वक पूजन करके गले में बांधे तो उच्चाटन हो।

उत्तम फल मन्त्र

विधि—इस यन्त्र को गोरोचन कुमकुम से भोजपत्र पर लिखे और शराब के सम्पुट में रखकर धूप बगैरह से खूब अच्छी तरह पूजन करे, दूसरे दिन निकाल कर अपनी चोटी में बांधे तो इसका फल मिलेगा।



मन्त्र बिच्छू उतारने का—ॐ नमो कामरू देश कामाक्षी देवी जहां बड़े इस्तेमाली जोगी ने पाली

कुत्ती दस काली दस काबरी दस पीली दस लाल रंग बिरंगा दस खड़ी दस ठिकावें भाल इनका विष हनुमंत हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—इस मन्त्र को ग्रहण की रात को एक हजार बार जपे तेल का दीपक जलावे मिठाई का भोग लगावे। इस तरह सिद्ध करके जिसके काटा हो उपलों की राख सात बार मन्त्र पढ़कर काटी हुई जगह के चारों तरफ लगा दे तो जहर धीरे-धीरे उतर जायेगा।

विदेश में शत्रु मारने का यंत्र

विधि—इस यंत्र को मोर के पंख से लिखकर शराब के बर्तन में रख उसका मुंह बंद कर दे और



श्मशान भूमि में गाड़ आवे ऐसा करने से जब उसके

ऊपर सूरज की किरणें या वर्षा पड़ेगी तब विदेश गये हुए शत्रु पर रोग सवार हो जायेगा।

वशीकरण मन्त्र–ॐ नमो किस पर कामनी अमुकी विशायमान हूं फट् स्वाहा।

विधि–तांबे की पुतली लेकर इसका पूजन करे और मौन रहकर हर रोज एक सो जाप २१ दिन तक करके पुतली के सामने कुछ फूल लेकर जिस आदमी पर डाले वो फौरन वश में हो।

अग्नि शांत यन्त्र

विधि–इस यन्त्र को भोजपत्र पर पीली स्याही से लिखकर जमीन में दबा दे और सात दिन तक पानी देता रहे तो अग्नि शांत हो।



मन्त्र हांड़ी बांधने का–खनाह की माटी चूने का पानी गधे चढ़ी भैंस हिलानी कांची हांड़ी कच्ची पाली ऊपर चढ़ी ऊपर चढ़ी पंजर की ताली तले भैरूं की कीलें ऊपर नरसिंह गाजे बांधी हांड़ी उबले तो गुरु गोरखनाथ लाज रखे।

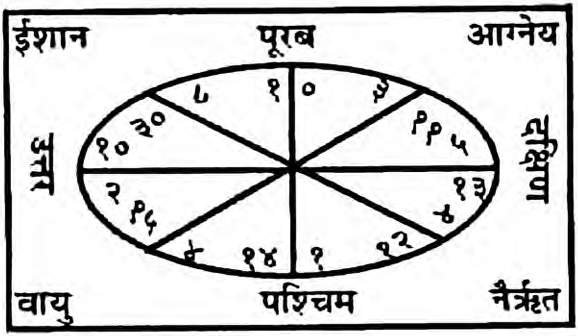
विधि–रास्ते की सात कंकरी लाकर हर एक कंकरी पर मंत्र पढ़कर सात बार हांड़ी पर मारे तो वो हांड़ी बंध जायेगी यानी गरम ना होगी चाहे जितनी आंच पर उसे रखा जावे।

मन्त्र दाढ़ के दर्द का–ॐ नमो देवताये विथा या खंडताये नमो नमः।

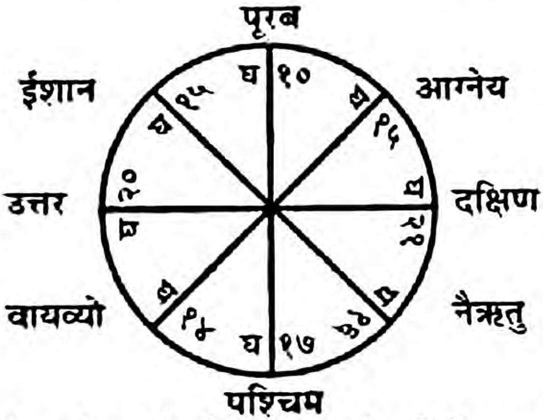
विधि–इस यन्त्र को एक बार किसी एक कांसी के कटोरे में भरे हुए जल पर फूंके और थोड़ा-सा कपूर डालकर रोगी को पिलादे तो दांत का दर्द फौरन अच्छा हो जायेगा।

चन्द्र भ्रमण विचार–मेष, सिंह, धन वगैरह का चन्द्रमा पूख वगैरह आठ दिशाओं में क्रमशः १७, १५, १२, १६, १४, २० घड़ी भ्रमण करता है। चन्द्र राशि में चक्कर के अनुसार दिशा जानकर काम करना चाहिये। शुभ कामों के लिये चन्द्रमा दाहिने और सामने का अच्छा होता है। किसी काम को करने से पहले इसका ध्यान रखे मेष, सिंह और धनु का चन्द्रमा पूरब में वृष, कन्या और मकर का चन्द्रमा दक्षिण में मीन, तुला और कुम्भ का चन्द्रमा

पश्चिम में कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर में वास करता है। इस बात का ध्यान रखे।



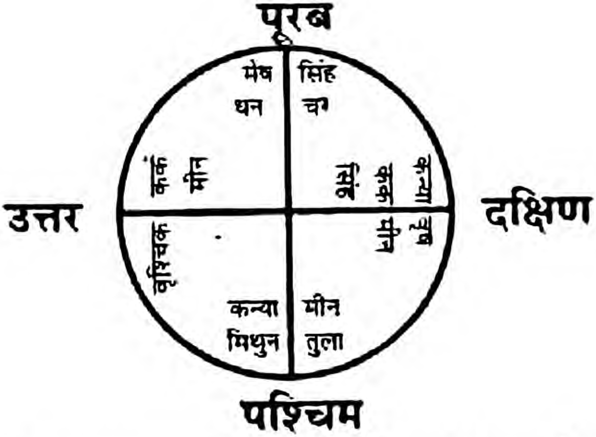
योगिनी दिशा चक्र–परवा नौमी पूरब वासा उत्तर दोत्यां बिदर्शमी नवाला तीस इकादशी आग्नेय



रही नैर्ऋय कोण में चौथे दुहाई पंचमी नेरस दक्खिन विराजे चौदस के दिन शिवजी गाजे पूनम साते वायु

रही आठ अमावस शहई योगिनी बहू काल दिखाय सन्मुख दाहिने नहीं दिखाय। बायें पीछे रक्षक होई। बस ज्योतिष के लक्षण ये ही।

आसन विचार–इन समस्त विचार के साथ आसनों का भी भेद रखना चाहिये जैसा कि शुरू में बताया गया है। इसके अनुसार कर्म चरम को देखकर कर्म शिखर पर आसन बिछाकर बैठे तो मंत्र सिद्ध होवे जिस जगह पर बैठे उसके नौ हिस्से करे फिर जगह के मिले हुए हरफों को देखे उसके भी नौ हिस्से करे फिर पहले अक्षर में मात्रा होवे तो, इसी में आसन बिठाकर बैठे। इसी तरह दिन और दिशाओं का भी विचार है। जिस दिन लिखने और मंत्र जपने बैठे, ठस दिन पूरब दिशा में करे दूसरे को अग्निकोण में दक्षिण इसी तरह उत्तर में सातों दिन करे इसका कोण खाली रहे अगर शुभ काम हो तो चन्द्रमा वगैरह को सामने रखे तो योगिनी दिशाशूल निकृष्ट दार को पीछे और बायें रखे तो कारज सिद्ध हो।



वशीकरण सुपारी मन्त्र—ओं नमो भगवते वासु देवाय त्रिलोक नाथ तिरपुला बारनाये असोकम यम विषमं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को साही योग में १०८ बार जपे और जिसको अपने वश में करना हो उसका नाम सुपारी पर पढ़कर फूंक दे जिसको ये सुपारी खिलादे वश में हो।

वशीकरण पान मन्त्र—हरे पान हरलाये पान चिकनी सुपारी श्वेत खर दाहि के कर में चूना ही ले हाथ रस लेवे पेट दे टीट रसले श्री नरसिंह वीर थारी शक्ति मेरी भगती फुरो मंत्र ईश्वर महादेव जी की वाचा।

विधि—एक देशी पान लगाकर सात बार यह मंत्र फूंके तो जिसे खिला दे वश में हो।

अन्य वशीकरण मन्त्र—ॐ श्वेत परन सुत पर्वत वासनी ऊपर ही हितम कार्य कुरु-कुरु ठ ठ स्वाहा।

विधि—मिट्टी समेत सफेद पर्मिटा के फल कोले आटा और कृष्ण पक्ष की चतुरदश या अष्टमी को जमीन में गाढ़ देवे और नीचे लिखा हुआ मंत्र पढ़कर सींचे।

ओं नमो हरें भगवती हरें श्वेतवासे अग्र स्वाहा:।

राजा वशीकरण मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु का जिला बांधू, शहर बांधू, अग्नि बार बन बांधू शो पत्र हर चुन्ड बांधू राजा इकरसा आसन छोड़ मुझे वैसन, देशी असली जो कूं चन्दन, ललाट, टीको, काढी बिसर्जन कमाऊं पीर गुरु की भक्ति मेरी फूत करो। मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—धूप, दीप, नेवैद्य देकर के पारवती का ध्यान करे शनिचर के दिन से शुरू करके इक्कीस रोज तक जाप करे मंत्र सिद्ध हो जायेगा बाद में कुमकुम, चन्दन, गौरोचन मिलाकर गाय के दूध में तिलक कराके जो सामने जावे तो देखते ही राजा वश में हो जाय।

अन्य राजा वशीकरण मन्त्र–ॐ धूं धूं बीन बीन चीन धां धां जन्नत दरवित भाजान कहता वो मातंगी ममान अमां अमां ओंक्ष ओंक्ष फट् फट् ठ ठ ओं फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि–सफेद रंग के रेशमी कपड़े पहनकर मोती माला से जाप करे श्वेत दुर्गा और कामनी के फूल की आग से आहुती दे तो राजा वश में हो जाय।

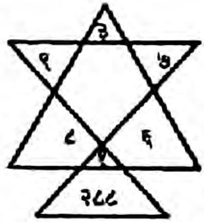
वैश्या वशीकरण मंत्र–ओं कनक काकुनी आठा बाठसोल राजापांचाल पाचांल ओं यम यम यम नवः स्वाहा।

विधि–बेल के पेड़ के नीचे काले मुर्ग के चरमासन पर बैठकर सफेद कांसनी के फूल और बेल के पत्ते लेकर मंत्र पढ़-पढ़ कर अग्नि से आहुति दे जिस वैश्या का ध्यान मन में करे फौरन वश में हो और बगैर पैसों के वही दासी बनी रहे वफादारी में जरा भी शक ना हो।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र– ओं नमो आदेश गुरू का राजा मोहूं पिरजा मोहूं, मोहूं वा ब्राह्मण बनिया हनुमंत रूप में जगत को मोहूं जो रामचन्द्र पर मनियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—इस मंत्र को पहिले २१ दिन तक एक हजार बार जपे और चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य से उसकी पूजा करता रहे भगवान रामचन्द्र का ध्यान जप कर चौराहे की धूल उठाकर उस पर २१ बार इस मंत्र को जप कर माथे पर बिन्दी लगा दे जो उसे देखेगा वह वश में हो जायेगा।

त्रिभुवन वशीकरण यंत्र—इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में जाफरान की स्याही बनाकर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखे और चन्द्र ग्रहण या दीवाली की रात को कांसी के बर्तन में थोड़ा-सा गुलाब का इत्र डालकर इस यंत्र को रात भर उसमें भीगा रहने दे दूसरे दिन से उसका तिलक माथे पर लगा दे।



त्रिलोक्या वशीकरण भूतनाथ यंत्र—ओं नमो भूत नपाया समस्त भूतानि साध्य हूं ओं नाम फट् फट् स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का एक लाख बार जाप करने से आकाश-पाताल के सब जीव वशीभूत होते हैं।

टिड्डी दूर करने का मंत्र—ओं आमीर गंगेल का तीर उलटा आया सीधा जाय अनेक।

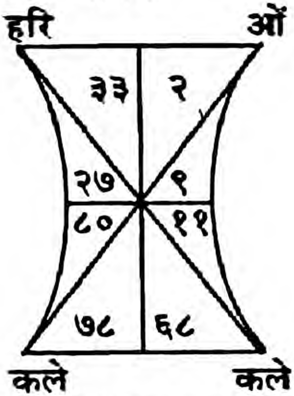
विधि–इसको कागज पर लिखकर जहां टिड्डी हो वहां पर आग लगा दे तो टिड्डी भाग जावे।

सिंह बांधने का मंत्र–ओं नमो हूकाल बकाल आखी खिल खिल खेलत बंधत हित जाय जाहूत जाहूत।

विधि–इसको २१ बार इमली फूल पर पढ़कर शेर के ऊपर फेंकदे तो सिंह बंधे।

डाकिनी का यंत्र–इस यंत्र को खैर की लकड़ी के कोयले से चमड़े पर लिखे तो मस्त डाकिनी लिखने के पास से भाग जावे।

(२) इस यंत्र को नीबू के रस से कोरे कागज पर लिखकर श्मशान की जगह में पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ आवे तो तमाम डाकिनी इस पर योग करने वाले के पास न आवें।



३८	६५	१	२१
५	६३	६२	१६
४५	५	८१	११
८	६९	६८	५८

गये हुए को बुलाने का यंत्र– इस यंत्र को रास्ते की धूल से कागज पर लिखे और फिर एक नीम के पेड़ पर चिपका कर उस पर कौड़े मारे। तो गया हुआ आदमी लौट आवे।

(२) इस यंत्र को गये हुए आदमी का नाम तालाब की मिट्टी लेकर बरगद के पत्ते पर लिखकर आने वाले की दिशा में गाड़ दे, तो वह फौरन चला आवे।

कान दर्द की फूंक का मंत्र–ओंम कनक पसार धानुवर धारम प्रवेश कर डार डार पात पात झार झार मार मार हंकार शब्द सांचा आदेश गुरू का फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि–सर्प की बांधी रज से २१ बार इस मंत्र को पढ़ कर झाड़दे रज कान से लगा दे तो सब तरह का रोग जावे।

कंठ कष्ट निवारण मंत्र– ओं नमोनार संहार आदेश गुरु का धाई कतराई का चलता करता बज्र वेदन भेदन ओं ओं ओं।

विधि–उत्तर दिशा में बैठकर कुआं के पास की घास को इस मंत्र को पढ़कर मरीज को देने से कंठ या गले की बाधा दूर रहती है। घास मरीज अपने गले छुआता रहे।

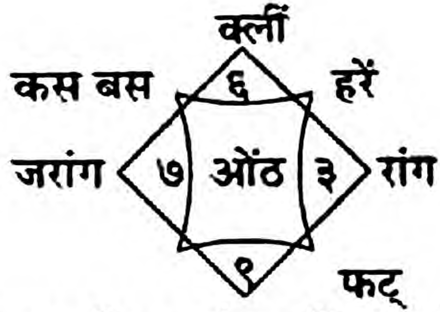


मोहिनी मंत्र–इस मंत्र को अष्टधातु की कलम से खरगोश या भेड़िये के लहू से भोज पत्र पर लिखे और चाँदी के ताबीज में बंद करके दाहिनी बाजू में बांधे तो वशीकरण हो।

भूख न लगने का मंत्र–ओं गुजा दर्दियां उन मुख सुख मास घल तो मी आहूंम आहूंम।

विधि–अगर चरगोई का फूल इस मंत्र को पढ़कर खा ले तो भूख न लगे।

माथे की पीड़ा हरने का यन्त्र–चांदनी रात में इस मन्त्र को बैठ कर मरीज के सामने एक लोहे की कील से जमीन पर खींचे और सात लोटा पानी और छोड़ दे तो दर्द दूर हो।



नकसीर छूटने का मंत्र–ओं मारवती लारती धौं दिशा धावती पार्वत करे खंड-खंड उड़के देवे दंड स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को पढ़ कर पानी में फूंक मारे और उस पानी को नाक से ऊपर खींचे तो नकसीर ठीक हो।

शूल होने का यन्त्र–इस यन्त्र को कनेर के पत्ते पर स्याही से लिखे और दुश्मन का नाम लेकर उसको कील से छेदे तो उसके शूल उठने लगे।

७	४५	१	८४
२	५	७७	१६
८७	६८	८	२
१	५	३१	७५

(२) ऊपर के यंत्र को सफेद कपड़े पर सेई का

कांटा ला कर नीली रोशनाई से लिख कर दुश्मन को दिखाकर जमीन में गाड़ दे, और उस जगह किसी को न जाने दे तो शूल उठे धूप छायरु का असर पड़ने के साथ ही दुश्मन के पेट में शूल उठना शुरू हो जायेगा।

मर्द को वश में करने का यन्त्र—इस यंत्र को बान के रस से लिख कर बाजू पर बांधे तो वह मर्द औरत के वश में होकर उसके हर हुकम का पालन करे।

(२) इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर औरत

१	६५	१	१२
७८	१	२	५२
१७	२८	८७	११
६	४	३१	४५

अपनी साड़ी से बांधे तो उसका मर्द (खाविन्द) उसके वश में हो जाय यह निश्चय सच बात है।

शत्रु वशीकरण यन्त्र—इस यंत्र को नगाड़े पर लिखकर नगाड़ा बजा दें तो शत्रु वश में हो।

२७	११	१	८८
४४	३४	४३	५६
२१	१७	७१	११
११	१८	८१	३३

(२) यह यंत्र कागज पर लहू से लिखकर शत्रु के सामने गाड़ दे और उसको सात रोज तक पानी देता रहे तो दुश्मन वश में हो।

नोट–अगर किसी कारण से शत्रु वश में नहीं हो तो फिर उस कागज को लाकर जला दे।

स्त्री वशीकरण मंत्र–इस मंत्र को स्त्री के रज यानी माहवारी के खून से या चन्दन से हथेली पर या कागज पर लिखकर औरत को दिखा दे तो वह अपने वश में हो।

३१	२७	८८	२७
११	५६	५८	३३
३३	१५	१३	११
३२	७२	६४	११

(२) इस यंत्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन से लिखे इत्र से तर कर दे फिर जिस औरत को वश में करना हो उसकी साड़ी में पिन के साथ लगा दे तो वश में हो।

वचन सिद्धि मंत्र–इस यंत्र को भोजपत्र पर कुलंजन के रस से लिखकर सोने के ताबीज में भरवाकर गले में बांधे तो वचनसिद्धि प्राप्त हो।

६८	३७	३	८
८	१	२७	२६
८७	२७	.१	८
७	५	७७	१४

(२) इस मंत्र को लाल रग के कपड़े पर दूध से लिखे और उसका ताबीज बनाकर बांधे तो शर्तियां ही बचन सिद्धि प्राप्त हो।

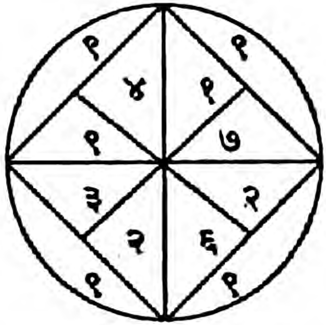
बुद्धि पैदा होने का यंत्र– (१) इस यंत्र को शुक्ल पक्ष की चतुरदशी की रात को अपनी जीभ पर लिखे तो बुद्धि बढ़े।

७	७४	१	५६
२२	११	११	३७
२७	१५	३३	४१

(२) इस यंत्र को गुलाब की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर एक पीले रंग के रेशमी कपड़े में रखकर ताबीज बना ले बसंत पंचमी या सरस्वती पूजा के विधिपूर्वक धूप, दीप से पूजन के बाद अपनी दाहिनी भुजा पर बांधे।

खाना ज्यादा खाने का मंत्र– इस मंत्र को भोजपत्र पर कीटी के खून से लिखकर चूल्हे के पीछे गाड़ दे तो खूब खाये।

(२) इस मंत्र को चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर भोजन करते समय अपनी थाली के नीचे रक्खे।



बिच्छू निवारण तंत्र–एक बिच्छू को मारकर धूनी देने से घर के सब बिच्छू भाग जायेंगे।

नकसीर मंत्र–(१) कागज में नौसादर रखकर सूंघने को देवे तो नकसीर बंद हो जायेगी।

(२) ऊंट के बालों की सूंघनी बनाने और धूप में बैठकर सूंघने से नकसीर बन्द हो जायेगी।

विवाह होने का तंत्र–अगर किसी का विवाह न होता हो तो मंगल के दिन चींटियों को आटा डाल दिया करे और उसी दिन उपवास रखे तो उसका जल्दी ही ब्याह होगा ऐसा विद्वानों का कहना है।

वशीकरण पान मन्त्र–हरे पान पर लाये पान चिकनी सुपारी श्वेतखर दाहिने कर चूना मोंही लोहापान हाथरस लेवे पेट टीटरस ले श्री नरसिंह वीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

अर्द्ध कपारी का यंत्र—इस यंत्र को बरोज इतवार स्याही से लिख कागज को सुअर के बैठने की जगह गाड़ दे और वहां की रज लावे तो आधा शीशी दूर हो।

(२) इस यंत्र को अच्छे नक्षत्र में सुरमा से कागज पर लिखे और फिर किसी पेड़ के नीचे गाड़ आवे और कुछ दिन बाद उसको उखाड़ लावें।

३८	८५	१	३२
९	७	२६	५२
४८	४९	८७	७६
८९	९८	३४	११

शत्रु मारण यन्त्र—इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाढ़े।

(२) इस यंत्र को पेड़ के नीचे की धूल लाकर कागज पर लिखे और उसके दाहिने स्थान पर गाड़ दे तो जरूर शत्रु की मृत्यु हो।

१३	९	१२	४८
१७	११०	८८	११
१३	५२	७८	३९
४८	१०२	८५	१७

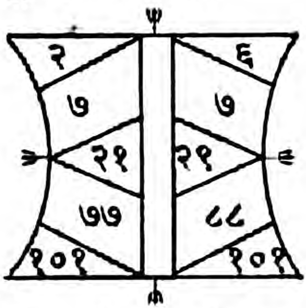
(३) अगर फिर भी जिन्दा रहे तो अमल व भावना की ही कमी समझो ऐसी हालत में शुद्ध मन से फिर करना शुरू कर दे।

राजमान यन्त्र—इस यंत्र को चमेली की कलम से लिखकर अपने बाजू पर बांधे तो राजमान हो।



(२) इस यंत्र को अगर गुलाब जल से भोजपत्र पर लिख कर अपनी भुजा पर बांधे तो राज दरबार में जाने से इज्जत मिले।

कान दर्द से छूटने का यन्त्र—इस यंत्र को अनार के रस से कागज पर लिख कर अगर कान में बांधे तो कान दर्द दूर हो जायेगा।



(२) इस यंत्र को तुलसीपत्र पर लिखे बाद में इसका रस निकाल ले और गरम करके कान में डाले तो कान का कष्ट दूर हो साथ ही कटेली झाड़ चम्मचनुमा पत्ता करके इसका अर्क भी कान में डालें।

चाक पर बर्तन चिपकाने का यंत्र—इस यंत्र को कुम्हार के चाक पर खैर की लकड़ी के कोयले से लिखे तो बर्तन चाक पर ही चिपक कर रह जाय छूटे नहीं।

(२) इस यंत्र को मौलश्री के रस में लाल कागज पर लिख कर कुम्हार के चाक के नीचे गाड़ आवे तो उसका एक भी बर्तन साबित न उतरे।

३	८	७
५	२११	९
४२	६४	३३

मोहिनी यन्त्र—इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर दूध से लिखकर बाजू पर बांधे तो वह औरत दासी बनकर रहे।

(२) इस यंत्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन से लिखे और इत्र में भिगोकर जिस औरत को वश में

४४	१७	८६	३
८३	१४	१८	१२
२४	८७	२६	२८
३३	५१	५८	११

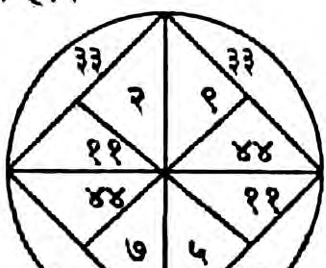
करना हो उसकी साड़ी में लगादे तो मनोरथ सिद्ध हो।

कुत्ता भौंकने का यंत्र—इस यंत्र को काली स्याही से शनिश्चर के दिन कुत्ते के कान पर लिखने से कुत्ता भौंकने लगेगा और जब हटा देंगे तो भौंकना बन्द हो जायेगा।

३७	७४	८	१
६	६	७१	७३
७६	६८	८	१
५	८	३१	७५

(२) इस यंत्र को पंजावे की मिट्टी लाकर उससे बेल के पत्ते पर लिखे और कुत्ते को भौंकाना हो तो उसे बेल का वह पत्ता खिला दे कुत्ता भौंकने लगेगा।

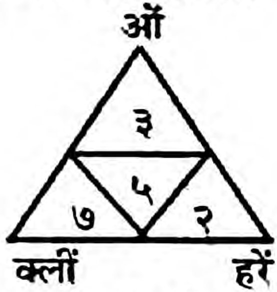
व्यापार बढ़ाने का यंत्र—बरोज दिवाली या ग्रहण की रात को अनार की कलम बनाकर बड़ी खूबसूरती से लाल चन्दन घोलकर अपनी दुकान पर लिखे तो व्यापार ज्यादा हो।



(२) इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर असगंध से लिखे और दुकान पर अपने गल्ले में रखकर रोज धूप जलाया करे तो व्यापार में खूब नफा हो।

लड़ाई-झगड़ा कराने का यंत्र—इस यंत्र को मंगल के दिन उल्लू के पंख से कुम्हार के आवे से निकले हुए ठीकरे पर लिखे और दुश्मन के घर में फेक दे तो जरूर लड़ाई हो।

(२) इस यंत्र को कपिला गाय के गोबर से



आक के पत्ते पर लिखे और शत्रु की छत पर डाल आवे तो झगड़ा हो।

जुए में जीतने का यंत्र—इस यंत्र को गोरोचन केसर और असगंध से भोजपत्र पर स्वाती नक्षत्र में लिखकर दीवाली को पूजा कर दाहिने बाजू से जुआ जरूर जीते।

८	६४	८	१६
४६	३४	६४	५४
६४	२१	१२	२१
४४	१५	६५	५६

(२) इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर मुकाबिल जुए बाजू के नीचे रखकर और कागज पर लिखकर अपने नीचे छोड़े तो जरूर-ब-जरूर जीत होगी।

विदेश में गये हुए को बुलाने का यन्त्र– इस यंत्र को रास्ते की धूल से कागज पर लिखे और उस लिखे हुए पर कौड़े की मार लगाये तो कुछ ही दिनों में गया हुआ आदमी लौट आये।

३८	६५	१	२१
११	६२	२६	१६
४२	८४	१४	४८
८२	१७	७५	२७

(२) इस यंत्र को नींबू के रस से कोरे कागज पर लिखकर श्मशान में पीपल के नीचे गाढ़ आवे तो विदेश गया हुआ आदमी फौरन वापस चला आवे।

डाकिनी दूर करने का यन्त्र–इस यन्त्र को आक (मदार) के दूध से कागज पर लिखकर रात में सोते समय सिरहाने एक जूते के नीचे दबाकर सो जाये तो डाकिनी दूर हो।

८०	६४	२१	१७
३६	१३	६४	५३
६६	१६	२१	११
३४	२५	६५	५६

(२) इस यंत्र को चिरमटी की जड़ पीस कर पानी में घोल अनार की कलम से कागज पर लिखे और मरीज के सिरहाने गूगल की धूनी में कागज को जला दे तो मरीज तन्दुरुस्त हो।

महामोहन मन्त्र—ओं भैरू घू घू ठंठ ओं हरें स्वाहा पड़वा के दिन चिपका पक्षी का पंख लाकर कस्तूरी में पीसकर मंत्र को पढ़कर फूंके फिर उसका माथे पर तिलक लगाकर जहां भी जाये देखे वह फौरन वश में हो जाय जो चाहे उससे अपना काम ले वह इंकार नहीं करे।

राजा वशीकरण यन्त्र—इस यन्त्र को अष्टगंध और तुलसी की कलम से सफेद पीपल के पत्ते पर लिखकर सोने के ताबीज में मढ़े और दाहिनी बाजू में बांधकर राजदरबार में जावे तो देखते ही राजा वशीभूत होकर इज्जत से पेश आवे।

१०	६०	६०	१०
९०	१२	१३	८०
२०	७०	७०	४०

(२) पुष्य नक्षत्र में इतवार के दिन सहदेयी को उखाड़ लावे और साये में सुखा ले फिर पान में

रखकर इस यंत्र के साथ छुआ कर जिस आदमी या औरत को खिलाये वह वश में हो।

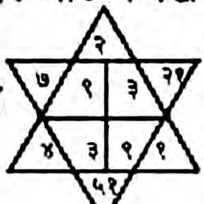
वशीकरण यन्त्र– इस यंत्र का नाम चिन्तामणी है। इसको चन्दन और सिन्दूर से भोजपत्र पर लिखकर माथे पर रखे तो डर नहीं लगे और केसर कस्तूरी से लिखे तो सब काम सिद्ध हो।

(२) इस यंत्र को केसर, कस्तूरी से किसी सफेद कपड़े पर लिखकर बत्ती बनावे और घी के दीपक

३	६	२१	७
२४	८	९	४२
२	१	७	८९

में रखकर उसे जला दे फिर उसकी राख जिसे खिला दे वह वश में हो।

राजा या हकीम वशीकरण यंत्र–इस यंत्र को २१ दिन तक कागज पर लिखकर और आटे में रखे फिर रोटी बनाकर काले कुत्ते को खिला दे और बाईसवें दिन की रोटी को जलाकर उसकी राख माथे पर लगा फिर जिसके सामने जावे वह जरूर उसके वश में हो जावे।



जगत वशीकरण मन्त्र— इस मन्त्र का यह गुण है कि आदमी इसको सिद्ध करके जिस जगह या जिस रास्ते से होकर निकल जावे उधर जो औरत मर्द इसको देखे तो उसके वश में हो जावे या जिस सभा में जाकर बैठे उसमें सभी आदमी उसकी तारीफ के पुल बांधते हुए न थकें यह मंत्र बड़ा शक्तिवान है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं।

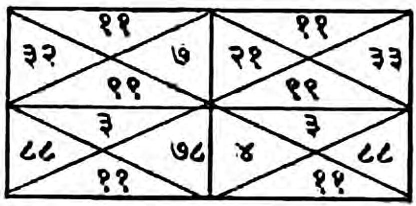
मन्त्र—ओं नमो भगवते रुद्राय नमः सर्व जगत विशेष कुरु कुरु फट्-२ स्वाहा। यह मंत्र महाबली महात्मा रावण का बनाया हुआ है। इकतालीस दिन विधि पूर्वक जाप करने से इसकी सिद्धि होती है।

विधि—स्नान करके बरगद के पेड़ की जड़ में अश्विनी नक्षत्र बरोज इतवार से सिद्धासन लगा कर बैठे और इस मंत्र का जाप करना शुरू करे सवा लाख बार बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ इस मंत्र को जपे तो सिद्धि को पढ़कर फूंक दे तो वह जरूर-२ वश में हो।

अन्य वशीकरण मन्त्र—ओं नमों भूवन भास्कराय जगदीशीम दरोया भवानी पश्चात मुखम पश्यन्ती तीतम विशेय स्वाहा।

विधि–चाक की मिट्टी आवे की राख इन दोनों चीजों को मिलाकर पहले चौका लगावे फिर स्नानादि से निबट कर सुबह सवेरे कद्धासिन लगाकर बैठे और विश्वास के साथ लगातार रात दिन तक जाप करे एक ही सांस में पूरे मंत्र को पढ़े। इस तरह पूरे ४२ दिन में यह मंत्र सिद्ध हो जावेगा।

मर्द वशीकरण यंत्र–जिस औरत का पति या खाविन्द उसके वश में न हो दूसरी औरत को चाहे या उसका कहना न माने उस औरत को चाहिए कि वह शनिचर की शाम से इस यंत्र को रोटी पर



लिखकर काले कुत्ते को खिलावे और ऐसा वह लगातार सात रोज तक करती रहे तो उसका पति जरूर वश में हो जायेगा।

वशीकरण तिलका–(१) बेल पत्र और मातंगल को बकरी के दूध में मिलाकर तिलक करने से आम आदमी वश में हो जाते हैं।

(२) भांग का बीज और घी, कुआर की जड़ माथे पर लगाने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

(३) हरताल असगंध और सिन्दूर को केले के रस में मिलाकर ललाट पर तिलक करे तो वशीकरण हो।

(४) अपामार्ग का बीज बकरी के दूध में मिलाकर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

(५) पान और तुलसी के पत्तों को कपिला गाय के दूध में मिलाकर मस्तक पर लगाये तो सब वश में हो।

(६) मंगल और असगंध को आंवले के रस में मिलाकर माथे पर 'तिलक करे तो खूब वशीकरण हो।

वशीकरण–कौवा किसका धन हरे कोयल किसको देय मीठे वचन सुना के जग अपना कर लेय। मगर भाइयो संसार बड़ा कठिन है या मूली नुस्खे से काम नहीं चलता इसीलिये तंत्र मंत्र के जरिये सब कामों की सिद्धि बतला दी गयी है। आदमी क्या पशु-पक्षी भूत-प्रेत सभी वश किये जा सकते हैं।

स्त्री वशीकरण तंत्र—कांगनी-तगर कूट चन्दन-नाग, केसर, काले धतूरे का पंचांग यानी फूल पत्ती बीज दहनी और जड़ इनराब दवाइयों को बराबर बराबर लेकर कूट पीस और कपड़छन करके एक गोली बनावे और साये में सुखा डाले फिर इस गोली को पान में रखकर जिस औरत को खिला दे चाहे कितनी ही संग दिल क्यों न हो पान खाते ही वश में हो जावे।

बालक की हिफाजत का यंत्र—(१) इस यंत्र को तांबे के पत्र पर खुदवाकर बच्चे के गले में बांधे तो बच्चे को नजर न लगे।

७२	५१	३३	४२	१०
७१	१८	८	२ १	११
२५	३७	४१	५२	११
२२	४५	२७	१	७१

(२) इस यंत्र को अनार की कलम से केसर की स्याही बनाकर भोजपत्र पर लिखे और धूप दिखाकर दावे के ताबीज में बच्चे के गले में डाल दे तो कभी भी बीमार न हो।

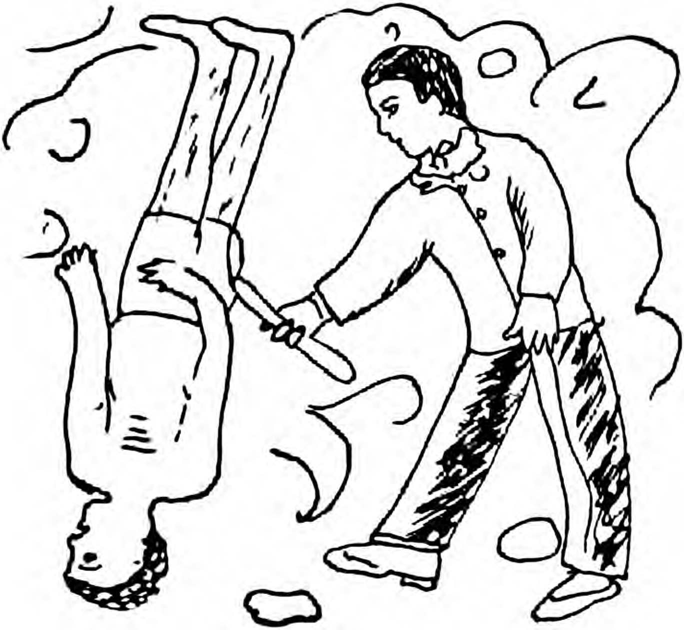
आधा शीशी का मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरु का काली चिड़ी चिगधिग करे धोली आवे दर्द हरे जनी हनुमाना हांक मारे मिथवाई आधा शीशी नाश करे गुरु की फुरो मन्त्र ईश्वर वाचा।

विधि–इक्कीस बार मंत्र पढ़कर झाड़े तो आधा शीशी दर्द दूर हो।

मुर्दे से बातचीत करना–इस खेल को करने का तरीका भी बहुत अजीब है। लोग इस खेल को देखकर बड़े ही दंग रह जाते हैं। यह खेल इस तरह है कि एक मुर्दा आदमी का जिस्म तमाम हाजरीन को दिखाया जाता है जिसमें कि बिलकुल जान नहीं होती सब लोग देखते ही कि बाकयी यह एक बेजान का मुजिस्मा इन्सान है मगर प्रोफेसर साहब इस मुजिस्मे के अन्दर अपने जादू के जोर से जान डाल देते हैं और वह बातचीत करने लगता है जिसको देखकर लोग हैरान रह जाते हैं और बिलकुल ठीक मानने लगते हैं कि बाकयी मुर्दा आदमी के अन्दर जान पैदा हो गयी है। इस खेल को इस तरह किया जाता है कि एक मुजिस्मा इन्सान का बनावटी मिट्टी या लकड़ी का बनवाया जाता है

और उसके अन्दर एक बिजली की मशीन फिट की जाती है और इसमें से एक तार लगातार बिजली के करेंट के साथ लगा दी जाती है और कुछ तारों से उस मुजिस्मा के अन्दर तमाम ऐजाओं के अन्दर वायरिंग कर दिया जाता है और फिर इस मुर्दा जिस्म को जिस वक्त के खेल करना होता है तमाम हाजरीन के सामने लाकर किसी चीज के सहारे खड़ा कर दिया जाता है मगर यह बात याद रखने के काबिल है कि इस मुर्दा जिस्म को बाहर से रंग रोगन के साथ ऐसा पेंट किया हुआ होता है कि दूसरा आदमी पहचान नहीं सकता बस इसको किसी के सहारे खड़ा करके उसके पीछे गुप्त रूप से एक और आदमी खड़ा कर दिया जाता है फिर प्रोफेसर साहब लोगों को अपने खेल की हकीकत समझाते हैं और कहते हैं कि यह मुर्दा अब मेरे जादू के जोर से बातचीत शुरू करेगा। आप लोग कोई सवाल करें यह उसका जवाब देगा। इतना कहकर प्रोफेसर साहब अपनी जादू की छड़ी को इसके मुंह पेट और पैर तक घुमाते हैं और एक दो दिन कहते हैं बस तीन कहते ही इसका दूसरा साथी बिजली का

बटन खोल देता है जिससे मुर्दे के अन्दर हरकत होनी शुरू हो जाती है। जिसे देखकर लोग हैरान होते हैं। बाद में प्रोफेसर साहब हाजरीन मौंजिमा को मुखातिब करके कहते हैं कि आप लोग कोई सवाल करें यह मुर्दा बराबर आपको उसका जवाब देगा बस उन लोगों में से कई मनुष्य ऐसे निकलेंगे जो कि उस मुर्दे से कई तरह के सवालात करते



जायेंगे और इस मुर्दे के पीछे जो दूसरा आदमी छुपकर गुप्त रूप से खड़ा हुआ है वो तमाम बातों का जवाब देता जायेगा। मगर लुत्फ की बात तो यह है कि मुर्दा आदमी के होंठ भी हिलते जायेंगे जिससे लोग ये ही समझेंगे कि शायद यह मुर्दा ही हमारी बातों का जवाब दे रहा है। इस तरह चाहे सैकड़ों आदमी सवाल करेंगे।

मुर्दे के पीछे खड़ा हुआ आदमी इसका जवाब देता रहेगा लोग इस काम को देखकर हैरान व दंग रह जाते हैं और आपको पूरा-पूरा जादूगर ही स्वीकार करेंगे। जिस समय खेल को खतम करना हो उस समय प्रोफेसर साहब को फिर कोई इशारा करके इस मुर्दे के सिर पर अपनी जादू की छड़ी घुमानी चाहिये और लोगों को यह बताना चाहिये कि अब हम इसका जादू दूर करते हैं यह फिर उसी तरह से मुर्दा हो जायेगा और बाद में यह किसी की बात का जवाब न दे सकेगा बस इतना कहने के बाद छड़ी उसके सर पर फेरकर खुद अलग हो जावे और इसके पीछे छुपा हुआ आदमी भी पीछे की तरफ से निकल जावे और बिजली के तारों को भी अलग

कर दें। फिर उस मुर्दे को उठाकर लोगों के सामने अन्दर ले जावे जब इसको उठा लोगे तो लोगों को यकीन हो जायेगा कि वास्तव में मुर्दा है जो कि खुद चल भी नहीं सकता और लोग और भी हैरत ज़ुदा हो जायेंगे।

मुर्दा रूह से बातचीत करना–अगर आपके पास आकर कोई यह कहे कि मैं अपने फलां रिश्तेदार के साथ जो कि मर चुका है, बातचीत करना चाहता हूँ या वह स्वयं मुर्दा रूह के साथ बातचीत करने का इच्छुक हो तो पहले उस मनुष्य से यह बात कहो कि तुम अपने जिस मरे हुए रिश्तेदार की रूह के साथ हम कलाम होना चाहते हो। इसका कोई कपड़ा जैसे कोट, कमीज या पगड़ी वगैरह अपने घर से ले आओ। बेहतर हो अगर सिर या गले का कोई कपड़ा मंगाया जाये कपड़ा मिल सके तो अच्छा ही है वरना फिर एक सादे कागज पर ही यह अमल करना शुरु करो अर्थात् शनिश्चर के रोज सुबह सवेरे उठकर नहा धोकर पाक साफ हो जाये और धुले हुए कपड़े पहन लें। फिर अपने ही मकान के ऐसे कोने में

जहाँ शोरगुल जरा भी न हो पूर्व की जानिब मुँह करके बैठे चिराग में खरगोश की चर्बी डाल कर रोशनी करो फिर हुद हुद के परों से हिरन और चीते के लहू से अगर चीते का लहू न मिले तो बाघ या भेड़िया के खून के साथ दोनों को मिलाकर उस मनुष्य के कपड़े पर निम्नांकित विधि से एक सो ग्यारह मरतबा लिखो और हवा में किसी दरख्त की साख में बांध दो। इस नक्स को हुद हुद के खून के साथ लिखे और फिर इस अमल को जारी करे जो अमल इसके मौवक्किल ने अपने अपने हाजिर होने का बताया हुआ है। इस अमल को करे और दिल में अपने तसव्वुर को मजबूत कर ले उसका मौवक्किल फौरन ही हाजिर होगा बस उसको। इज्जत के साथ बैठावे और उसे फल वगैरह खाने को दे और फिर उससे कहे कि फला आदमी फलां दिन और फलां वक्त में फौत हुआ है। तुम उसकी रूह का पता लगाओ कि वह इस समय कहां पर है उसके साथ फलां आदमी हम कलाम होना चाहता है। वह जिस जगह भी मिले तुम फौरन उसकी रूह को यहां लाकर हाजिर करो तब आपका यह

मौवक्किल कहेगा कि जब आपका हुकम तो मुझे काम करने में कोई उजर नहीं है मगर पहले मेरा सदका मिलना चाहिये बस वह सदका में जो चीज मांगे उसको देनी चाहिए और उसको खिला-पिला कर खाना करे और वो फौरन उठ बैठे मगर दिल के तसव्वुर को किसी समय न भूले बस कुछ ही देर बाद तुम्हारे सामने एक ऐसी तेज रोशनी नमूदार होगी जैसे हजार सूरज एक बारगी ही उस कमरे में आये हों फौरन ही होशियार होकर बैठ जाओ और उस आदमी को भी जो अपने रिश्तेदार की मुर्दा रूह के साथ गुफ्तगू करना चाहता है अपनी बगल में बैठा लो और चारों तरफ एक गहरी लकीर जमीन में खींच लो ताकि वो रूह किसी तरह का नुकसान न पहुंचा सके अब उस रोशनी के दरमियान तुम्हारा मुवक्किल तुम्हें अपने सामने खड़ा हुआ दिखाई देगा और वह तुम्हें बतायेगा कि जिस रूह के साथ तुम हम कलाम होना चाहते हो उसको वह ले आया है। जो बातें करनी हों वो कर लो इसके इतना कहते ही तुम उस आदमी को

बताकर कहो इतना कहते ही तुम उस आदमी को बताकर कहो कि जो कुछ बातें तुम इस रूह के साथ तुम करना चाहते हो वो बेधड़क कर सकते हो जब वो आदमी यह कहे कि मैं उसको अपने सामने देखना चाहता हूं तो ये बात तुम अपने मौवक्किल से कहकर पूरी करा सकते हो मगर रूह आमतौर पर अधिकांश गायब रहकर ही गुफ्तगू किया करती हैं मगर यह मौवक्किल की ताकत पर निर्भर है अगर वह काफी ताकतवर और खासतौर पर उस रूह से ज्यादा बलवान हुआ तो इसमें कोई शक नहीं कि वह उस रूह पर दबाव डालकर उसे जाहिर होने के लिये मजबूर कर देगा मगर साल-ब-साल के तजुरबों के बाद यह देखा गया है कि खलल मकलाम हो सकती है। मगर जाहिरा दिखाई नहीं देती अगर मौवक्किल के दबाव डालने पर जाहिर हो तो महज उसका सिर ही सिर दिखाई देता है पूरा जिस्म नजर नहीं आता बातचीत फौरन करने के बाद ही रूह और मौवक्किल को विदा कर देना चाहिये नक्स दर्ज है।

चौकी हनुमान बीर की—रंग हनुमान बारह वर्ष



का जवान लठ मुख में पान होकसा रावन आ ओसाया हनुमान।

विधि—महीने के पहले मंगल को व्रत रखे और लाल कपड़ा पहनकर मूंगे की माला से जाप करे और धूप, दीप हनुमान बजरंगबली की मूर्ति के आगे रखे पवित्र जगह पर बैठे और तेल हिन्दुवा का चढ़ाय गुड़, गेहूं, गुड़धानी सवा सेर की चढ़ाय यानि रोट पकाकर चढ़ाये और उसमें से एक बार आप भी खाये और इस मन्त्र का जाप ग्यारह सौ मरतबा चालीस दिन तक करे बीर हाजिर होगा और अपने नफ्स पर गालिब रहे और हर शनिश्चर व मंगलवार को व्रत रखें और पूजा करता रहे जो चाहोगे वही होगा।

सब ऐश व इशरत देने वाला मंत्र—राम जो मंत्र है वो सब सुख को देने वाला है जो अपना मंत्र

सिद्ध करना चाहे वो इसकी गोली मुस्क व जाफरन में लाल चन्दन को घिसकर मिला दे और शुरु में श्री और आखिर में जी लिखकर गंगा, जमुना में चढ़ावे तो सर्व सिद्ध परास्त हो लेकिन शुरु से आखिर तक मन में पूरा-पूरा भरोसा रखे। चालीसवें दिन अनार की कलम से लिखे और सवा लाख गोलियां बनाकर मछलियों को खिला दे जब खतम हो जाये तो हवन करे और गौड़ ब्राह्मणों को भोजन करा दे मनोकामना पूर्ण होगी।

उच्च कोटी का मन्त्र-तंत्र सिद्ध करने का मंत्र—ओं पर ब्रह्मा पर तहफे नहा जक व शाम्बी अस्तुत परे करायें पर हम हर हराय तो गना सर्प को नक दरस य नहता तंत्राय सदजंग कर स्वाहा।

विधि—घी का चिराग जलाकर धूप अगर चन्दन फल और फूल चढ़ावे एक सौ आठ बार जपे सिद्ध यानि नेक साहस से एक दिन सिद्ध होवे जिस पर जो मंत्र करे इस मंत्र से करे।

हिफाजत बदनी का मन्त्र—ओम पर ब्रह्म बाथने सर हरी पाह-२ कुरु कुरु स्वाहा इसको करने की तरकीब नीचे दर्ज की जाती है गौर से पढ़े। इस मंत्र

को एक सौ आठ बार पढ़कर अपने ऊपर फूंके तो कोई इसको ऐजा न पहुँच सके।

इन्द्रजाल का मन्त्र—ओम सनारा सनोर भौसराय इन्द्रजाल करत कान दर्शन सिद्धंग कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र से इन्द्रजाल की विद्या हासिल करे।

कीमिया का मंत्र—ओम नमो हर हराय नमो सांय सिद्धंग कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को हर रोज सुबह सबेरे उठकर एक सौ इक्कीस (१२१) दिन तक जाप करे तो सिद्ध होगा।

सर्व सिद्ध मंत्र—ॐ आदेश करो करलेमत बीर बसे जो जो मांगे सो-सो इन पांच लादो सर सिन्दूर डाट की मायी। अव्वल सिद्ध बरी लाये शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो ईश्वर वाचा।

विधि—ब्राह्मणों को खिलाये तो पांच लड्डू का भोग लगाये कुयें पर जाकर छोटे कलश सांज में एक लड्डू कुयें में डाले जब सोच पहर तब लड्डू को कुयें में डाला जाय अगर ये अमल माल खाने में कराय तो फिर मालखाने में किसी बात की कमी न रहे।

गड़ा हुआ धन नजर आने का मंत्र–ॐश्री परवंग क्लींग सर्प और खंड़ी परंती नमो वह सब कर सादांग। कौवे की जबान को गऊ के दूध में जोश देकर दही जमा ले और फिर इस काघी निकाल कर एक सौ आठ मरतबा उपरोक्त मंत्र को पढ़कर आंखों में लगाये या उसका काजल पारे फिर जो शख्स पैर की तरफ से पैदा हुआ हो उसकी पलकों (आंखों) में लगा दे तो उसे जमीन के अन्दर का गढ़ा हुआ धन दिखाई दे।

बारिश बन्द करने का मंत्र–ॐनमो भगवती रुद्राय जल असमली सहती ठं ठं ठं ठं स्वाहा। एक ईंट पर मंत्र पढ़कर उस पर मरघट से लाये हुए कोयले जलाये और ईंट ऊपर रखे तो बारिश फौरन बंद हो जाये।

गरीबी दूर होने का मंत्र– या कुबेर यागनीं या लक्षीं बानी।

विधि–अली अलसुबह कलाम करने से पेस्तर मुंह हाथ धोकर एक मरतबा बिस्मिलाह पढ़कर सौ मरतबा इस मंत्र को पढ़े शुरू होने से समाप्त तक धूप जलावे तो गरीबी दूर हो।

दर्द दंदान का मंत्र—हे दादा तुमको काता हमी संग जायें और हम तुम बने हमरे तुमरे कौन सी ऐसी हम कहायक तुम बैठे कहा दमरत के सिले संग ही जाव।

विधि—मुंह गये हुये बहुत पानी पर सात बार दम करके कुल्ला करे तो दर्द करता हुआ दांत फौरन ठीक हो जाय साथ ही दांत हिलता हुआ तो फौरन ठीक हो जाये।

दाढ़ के दर्द का मंत्र— ॐ नमो आदेश गुरु को तोला कि नूरो एक बार जहां बैठे बाल ग्वालगंगा, जमुना, सरस्वती जहां बैठे गोरखजती गौतम रख परवत से हुये का दाढ़ छतीस रोग मिटे ओह ओह परथी आड़ो राखो बाल भूवरापाही इनसत भक्त पास बाक्स इवेन्टार छपाकर श्री रामचन्द्र हनुमंत जली वीरपाल पानी भूरोक जाता पराये सेवा की संगत बुटी भक्त फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—पानी पर सात बार दम करके बड़ पर छीट मारे दर्द दूर हो जायेगा।

पेट का दर्द दूर करने का मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरू गोबिन्द में बपाये अंजन-अंजन जाया करे हनुमंत

गड़ा हुआ धन नजर आने का मंत्र–ॐश्री परवंग क्लींग सर्प और खंड़ी परंती नमो वह सब कर सादांग। कौवे की जबान को गऊ के दूध में जोश देकर दही जमा ले और फिर इस काघी निकाल कर एक सौ आठ मरतबा उपरोक्त मंत्र को पढ़कर आंखों में लगाये या उसका काजल पारे फिर जो शख्स पैर की तरफ से पैदा हुआ हो उसकी पलकों (आंखों) में लगा दे तो उसे जमीन के अन्दर का गढ़ा हुआ धन दिखाई दे।

बारिश बन्द करने का मंत्र–ॐनमो भगवती रुद्राय जल असमली सहती ठं ठं ठं ठं स्वाहा। एक ईंट पर मंत्र पढ़कर उस पर मरघट से लाये हुए कोयले जलाये और ईंट ऊपर रखे तो बारिश फौरन बंद हो जाये।

गरीबी दूर होने का मंत्र– या कुबेर यागनीं या लक्ष्मीं बानी।

विधि–अली अलसुबह कलाम करने से पेस्तर मुंह हाथ धोकर एक मरतबा बिस्मिलाह पढ़कर सौ मरतबा इस मंत्र को पढ़े शुरू होने से समाप्त तक धूप जलावे तो गरीबी दूर हो।

दर्द दंदान का मंत्र—हे दादा तुमको काता हमी संग जायें और हम तुम बने हमरे तुमरे कौन सी ऐसी हम कहायक तुम बैंठे कहा दमरत के सिले संग ही जाव।

विधि—मुंह गये हुये बहुत पानी पर सात बार दम करके कुल्ला करे तो दर्द करता हुआ दांत फौरन ठीक हो जाय साथ ही दांत हिलता हुआ तो फौरन ठीक हो जाये।

दाढ़ के दर्द का मंत्र— ॐ नमो आदेश गुरु को तोला कि नूरो एक बार जहां बैठे बाल ग्वालगंगा, जमुना, सरस्वती जहां बैठे गोरखजती गौतम रख परवत से हुये का दाढ़ छतीस रोग मिटे ओह ओह परथी आड़ो राखो बाल भूवरापाही इनसत भक्त पास बाक्स-ड्वेन्टार छपाकर श्री रामचन्द्र हनुमंत जली वीरपाल पानी भूरोक जाता पराये सेवा की संगत बुटी भक्त फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि—पानी पर सात बार दम करके बड़ पर छीट मारे दर्द दूर हो जायेगा।

पेट का दर्द दूर करने का मंत्र—ॐ नमो आदेश गुरू गोबिन्द में बपाये अंजन-अंजन जाया करे हनुमंत

शब्द मकड़ा माकड़ा तीनों भसम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि–दीवाली ग्रहण की रात को इस मंत्र को सिद्ध करके झाड़े तो पेट का दर्द दूर हो।

भूतों को वश करने का मंत्र–ॐ हरे बजरंग कली नमो।

विधि–यह मंत्र छः शब्द का है साधक को चाहिये कि उपरोक्त विधि से इस मंत्र का साधन करे और हर रोज पाव गरम दूध और खीर लेकर उसको देवे और दूध का हवन करे और दौराने मंत्र दूध और खीर का ही भोजन करे इस मंत्र का जाप चालीस हजार बार करे। देवी के खुश होने से भूत वश में हो जायेगा और उसके जरिये से अपनी मनोकामना पूरी कर सकता है अगर कुछ विघ्न होगा तो बजाये फायदे के नुकसान भी हो सकता है।

दौलत हासिल करने का यन्त्र–ॐ हरे बर हन पर बानबरे हरों हराहा।

विधि–इस मंत्र को भी ऊपर लिखे तरीके से एकांत में सिद्ध किया जा सकता है। इसे सिद्ध करने के लिये साधक को एक लाख पच्चीस हजार

बार जाप करना चाहिये और जितने दिन रुक साधन में रहे पाक साफ और मन को पवित्र रखे दूध और चावल का इस्तेमाल करे और जाप के समय किसी के साथ हम कलाम न हो। इस मंत्र का जाप या तो सूर्योदय से पूर्व या शाम सूर्यास्त के समय करे यक्षी खुश होकर मनकर वर देगी और आमिल की साधक को धन दौलत की कमी नहीं रहेगी। जो मनुष्य दृढ़ निश्चय के साथ इस मंत्र को सिद्ध करते हैं। उन्हें फिर किसी बात की कमी नहीं रहती है बाद सिद्धी के हवन करे गरीब ब्राह्मणों साधू संतों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान दक्षिणा दे तथा गऊ माता की सेवा में मन को लगावे उस पर न पिता न परमात्मा की दया से ऐसे मनुष्य के सब दु:खदर्द दूर होकर जिन्दगी ऐसे आराम के स्थान पर गुजारे या गरीबों पर दया करना दीन दुखियों की सहायता यही सर्व सिद्धि का मूल मंत्र है। इसी से जगदीश्वर खुश होकर अपनी प्रजा और भक्तों के दुख दूर करता है हरिओम् तत् सत्।

इलम के याफा—नीचे हम औरत मर्द के अलैहदा-२ लक्षण और गुण लिखते हैं। इन्हें देखकर

पाठकगण बहुत कुछ फायदा उठा सकते हैं। दुनिया चालाक व स्वार्थी है। हमारी जिन्दगी में कई बार ऐसे लोगों से साबका पड़ जाता है कि जो अगर हम अक्लमंदी से काम न लें तो उनसे हमें सख्त नुकसान उठाना पड़ जाये दुनिया में रहकर दुनिया वालों से व्यापार करना पड़ता है। इसलिये निम्नांकित मनोविज्ञान द्वारा वह बहुत फायदा उठा सकते हैं ध्यान पूर्वक पढ़ें।

केयाफा मुतालिल्क मर्द—अगर ध्यान पूर्वक देखा जाये तो कुदरत का कोई उसूल कोई भी कायदा ऐसा नजर नहीं आयेगा जिसमें उस खाजिक कोनोंमकां की कोई न कोई हिकमत न हो अगर इन्सानी अकल नार साकी रसाई इसकी पुरानी हकीकत तक न हो सके तो यह एक अलग बात है। कायनात में किसी चीज को ले लो और गौर से देखो कि वह चीज अपनी मौजूदा शक्ल व सूरत और बनावट में कैसी सुन्दर बनी हुई है। अगर इसके खिलाफ हुई तो जरूर-ब-जरूर इसमें कोई न कोई नुक्स दिखाई दे जाता है। जिस तरह एक

मनुष्य किसी चीज़ की शक्ल व सूरत और बनावट को देखकर उसके नफे नुकसान और उसकी हालत का अंदाज लगा सकता है। इसी तरह होशियार मनुष्य की शक्ल वह सूरत और ऐजा की बनावट को देखकर उसके सभी तौर तरीके और चाल-चलन का पता चल सकता है। इस मनोविज्ञान के चमत्कार केवल इतने ही नहीं जो हम नीचे लिखते हैं बल्कि प्रत्येक मनुष्य अपनी जाती तजुर्बे के मुताबिक भविष्य वाणी भी करते रहते हैं यहां हम मुख़्तसर बयान जेल में दर्ज करते हैं।

कदो कामत–अगर किसी इंसान का कद मामूली हालत में है अगर इससे बहुत लम्बा हो तो ऐसा मनुष्य पहले दर्जे का बेवकूफ होता है और अगर मध्यस्थ, मामूली हालत से बहुत लंबा होता है तो वह मनुष्य पहले दर्जे का फितनासाज और सादी हुआ करता है। मशल मशहूर है कि कल मिल अहमक वकल करील फितनासाज।

पेशानी–चौड़े मस्तक वाला साहब हौसला खुश किस्मत और अक्लमंद होता है तंग और छोटी पेशानी वाला बदकिस्मत होता है। जिस शख्स की

पेशानी पर बल पड़े हो वह गरीब, रोगी, बफितनासाज होता है।

नेत्र–जिस मनुष्य की आंखें अन्दर को घुसी होती हैं। वह मनुष्य धोखेबाजी और मक्कारी में निपुण होता है और अगर आंखें गोल हों तो वह मनुष्य साहसी निडर और बहादुर होता है। मगर दूसरों का हक गायब कर लेता है, दूसरों को धोखा देना इसके बायें हाथ का काम होता है और अगर आंखों की बनावट कुत्ते की आंखों के सदृश्य हों तो बदकिस्मत और बदबख्त होगा। बिल्ली के समान हों तो बेफैज अगर मानिन्द आखों के हों तो साहब शर्म व हया और आली मतर्बा हो पतली आंख वाला बदबख्त और हर एक से बुराई से पेश आता है अगर आंखों की बनावट घोड़े की आंखों जैसी हों तो ऐसा मनुष्य फारग अलवाली और ऐशो आराम में जिन्दगी व्यतीत करता है। और अगर किसी मनुष्य की आंख बादाम के समान हों तो वह मनुष्य शोहबत परस्त होगा अगर मानिन्द मोर के हों तो पहले दर्जे का बेईमान होगा अगर सांप जैसी बनावट हो तो साहब इकबाल और बेफैज और अगर कोई

आदमी अल्लाह गुफ्तगू में आंखों को इधर-उधर हरकत देवे तो यकीनन जान लो कि ऐसे मनुष्य के कौलों फेल का कोई ऐतवार नहीं।

सर–सर का मामूली हालत में वश होना अलामत धनवान व अकल मंदी और बुजुर्गी की है। ऐसे सिर वाला आदमी बड़ा भाग्यशाली और धनवान होता है मामूली हालत से सिर का छोटा होना निशानी बेवकूफी है औसत दर्जे में सर का होना उसकी हालत औसत दर्जे की होती है अगर सर के बाल नर्म बारीक और घुंघराले हों तो ऐसा मनुष्य इश्क पसंद होता है बाल का मोटा और खुरदरा व सख्त होना जफाकशी है दिमाग पर बालों का ज्यादा न .होना भाग्यावान व अकलमंदी है।

कमर–अगर किसी मनुष्य की कमर मानिन्द रीछ के हो तो ऐसा इन्सान दुनिया में अव्वल तो आराम हासिल नहीं कर सकता यदि हासिल करे भी तो बहुत कम अगर कमर मोटी हो तो सहाब पुत्र वाला हो और शोहबत परस्त हो और अगर कमर की बनावट शेर के मानिन्द हो तो उसकी

औलाद साहसी जवां मर्द और होशियार होती है और खुद भी साहब मरतबा और फैजमंद होता है अगर कमर की बनावट जरा चौड़ी हो तो वह स्वार्थी (मतलबी) होता है।

पीठ—सख्त और तख्ता की मानिन्द हो तो जान लो कि ऐसी पीठ वाला इन्सान बरबादी की सख्त मेहनत से बसरे औकात करे अगर पीठ चौड़ी हो तो इन्सान कमीना और रजील हो अगर पुस्त की हड्डियां तादाद में नौ हों तो वह इन्सान सौभाग्यशाली और खुश किस्मत होता है अगर हड्डियों की तादाद बारह या चौदह हो तो दुनिया में वह आरामी की जिन्दगी बसर करेगा पीठ झुकी हुई हो तो लाखों मुफलिस साबित हो।

रान—अगर किसी मनुष्य की रान मोटी हो तो उसकी उमर बड़ी होगी अगर बहुत पतली हो तो जान लो कि हमेशा रोगी रहेगा। अगर रान मोटी पुर गोल हो तो समझ लेना चाहिये कि बहुत मोहब्बत परस्त हो और अगर ऊपर नीचे से रान एकसी हो तो ऐसा आदमी बेहया और बेशर्म होता है अगर घोड़े की रान के समान हो तो सहावे हकूमत होगा

हमेशा सफर में रहेगा अगर चौड़ी और तंग रान हो तो बदयकन और औलाद कम होगी अगर रान की बनावट मसल कैवि के हो तो सहाबे मरतबा और ऐश पायेगा अगर रान की बनावट कुत्ते की रान जैसी हो तो हर काम में होशियार और चौकन्ना रहे अगर मानिन्द शेर के हो तो ऐसा मनुष्य फजूल खर्च और भोग विलासी हो।

जाँघ—अगर जाँघों पर बाल हों तो हमेशा सफर में रह जानों की लम्बाई में कम गैर मामूली हों तो गरीब व बुद्धिहीन और कम उमर का हो अगर गोश्त से पुर हो तो अपनी जिन्दगी में कम से कम एक दफा जरूर कैद हो।

पिंडली—अगर किसी मनुष्य की पिंडली लम्बी हो तो वह मनुष्य चुगलखोर हुआ करता है अगर पुर गोश्त हों तो अनदार सानी खिलफत अगर सदृश्य हिरन या घोड़े के हो तो सखार कोण और भाग्यशाली होगा।

पांव—अगर चलने में किसी मनुष्य के पांव का निशआन टेढ़ा पड़े तो जानो कि वह मनुष्य

पागल लापरवाह है अगर पांव की बनावट टेढ़ी हो तो वह मनुष्य चुगलखोर और कृतघ्न होगा नेकी का बदला हमेशा बदी से देगा अगर पांव की तली सुर्ख रंग की हो तो ऐसा मनुष्य नेक साहसी भाग्यशाली होता है अगर पांव चौड़ा हो तो हमेशा कंगाल रहेगा अगर मिकदार से छोटा हो तो वह मनुष्य भी हमेशा कंगाल और रोजगार की तलाश और अविश्वासी होगा। पैर अगर दरमियानी हो तो उसकी उमर औसत हालत में रहेगी और उस आदमी की माली हालत भी औसत दर्जे पर ही रहेगी अगर पांव पर गोश्त हो तो साहिबे इकबाल होगा।

नाखून—अगर किसी मनुष्य के नाखून चमकदार या जरदी माइल हों तो हमेशा धनवान् रहेगा अगर जरा से नीलगों हों तो साहिबे इकबाल और फैजरिसाल होगा अगर नाखूनों का स्याही माइल रंग हो तो समझ लो वह मनुष्य चोर बदमाश है अगर नाखून का रंग सबजी माइल हो तो जिनाकार होगा अगर नाखून खुरदरे और टेढ़े और वें ढंगे बने हों तो वह हमेशा तकलीफ में रहेगा। गरीबी

की उसे आम शिकायत रहेगी अगर नाखून का रंग आधा सफेद और आधा रंग सुर्ख हो तो ऐसा मनुष्य हमेशा आसूक हाल रहेगा।

बाल—अगर सारे शरीर पर बाल हों तो गरीबी और कम अक्ल हो अगर हर जड़ से सिर्फ एक ही बाल पैदा हुआ हो तो वह मनुष्य बादशाह होगा अगर हर जड़ से दो बाल उगे हों ऐसा आदमी अकलमंद और भाग्यशाली होगा। एक जड़ से अगर तीन-तीन बाल उगे हों तो ऐसा मनुष्य हमेशा सच बोलने का आदी होता है। और अगर हर जड़ में से चार-चार बाल पैदा हुए हों तो वह मनुष्य निर्धन बुद्धू और अशिक्षित साबित होगा।

बाजू—अगर बाजू मिकदार से छोटे हों तो गरीबी कमजोरी का सामना करता रहे अगर बाजू मिक-बार से ज्यादा लम्बे हो तो वह फिसादी लड़ाका होने पर भी हमेशा शिकश्त खाता रहे अगर बाजू जिस्म के मुताबिक ठीक हों तो खुश नसीब मिलन और मेहनती हो अगर हाथों की उंगलियां लम्बी हों और सीधी करने पर दरमियान में सुराख न रहे तो धनवान तथा दानी हो अगर उंगलियां

मुनासिब और दरमियान में सुराख न दे तो वह मनुष्य फिजूल खर्ची होगी अंगुलियां सीधी करने पर हथेली में गड्ढ पड़े तो धनवान होगा सुन्दर और सुरखी माइल गोल नाखून मोहब्बत और खुश अखलाकी है अगर बदनुमा बदरंग हों तो वह गरीब निर्धन हो।

तलवे–गोश्त से भरपूर मुलायम और सुन्दर तलवों वाला आदमी धनवान इज्जतदार औलाद वाला होता है सूखे हुए बिना खून या कम गोश्त के तलवों का आदमी निर्धन नादार बदकिस्मत होता है यह लक्षण विद्या अनुमान के अनुसार है आगे वह ईश्वर ही जाने।

दाढ़ी–अगर किसी मनुष्य की दाढ़ी सुन्दर और भरपूर हो तो ऐसा मनुष्य मिलनसार और नेक होता है। जिस मनुष्य की दाढ़ी कम और छोटी हो वह घमंडी होता है। अगर किसी मनुष्य की बहुत लम्बी दाढ़ी हो तो वह हिम्मती तथा साहसी होता है बिना दाढ़ी का मनुष्य जन्म से ही कमजोर कम हिम्मत वाला होता है। अब आगे औरत के बारे में पढ़िये।

स्त्री लक्षण

कद– लम्बे कद वाली औरत नेक व ईश्वर भक्त होती है मध्यम कद वाली स्त्री अपने स्वामी की प्यारी शील स्वभाव। छोटे कद वाली स्त्री चरित्रहीन और निर्लज्ज हुआ करती है। जो स्त्री बिना मतलब घर-घर फिरे और आंखें इधर-उधर हर समय करती रहे और बिना मतलब बातचीत करती रहे उस स्त्री पर किसी किस्म का विश्वास नहीं करना चाहिये जिस औरत की सोते समय आंख खुली रहे वह अपने पति की आज्ञाकारी नहीं होती जिस स्त्री के हंसते समय गालों में गड्ढा पड़े और आंखें फड़के वह स्त्री अपने पति की हत्यारी होगी ऐसी स्त्रियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

मुंह–छोटे मुंह वाली स्त्री से हमेशा रंज व गम और तकलीफ पहुंचती है। बहुत लम्बे मुंह वाली दुःख दर्द को दूर करती है। टेढ़े मुंह वाली बहुत जल्द असुहागिन हो जाती है जिस स्त्री की ठोड़ी पर बाल या मूंछें हों वह अकसर बदचलन हुआ करती है।

पेशानी–अगर पेशानी लम्बी और चौड़ी हो तो ससुर की मृत्यु जल्दी हो। अगर पेशानी ऊंची हो खुद असुहागिन हो जाये, अगर पेशानी पर सुर्ख रंग के खड़े बाल हों तो तंगदस्त और लाचार हो जाती है। अगर माथे पर निशान न हो तो नेक ख्याल मिलनसार और पति की आज्ञाकारी होती है।

नेत्र–अगर सफेदीनुमा सुर्ख हो तो दुनिया में सुख पाये अगर जर्द हों तो तकलीफ उठाये अगर सुर्ख हों तो चरित्रहीन और दगाबाज हो अगर स्याह हों और किसी कदर सुर्खी की झलक नजर आये तो ऐसी स्त्री पर जान तक निछावर कर देना उचित है बाज हाल तो मतवाली आंखें बदचलनी का निशान होती है मगर बदचलनी का आसार दूसरे भागों पर होता है जो स्त्री चलते समय इधर-उधर देखे और आंखों की हरकत करे वह पहले दर्जे की बदमाश होती है।

नाक–अगर नाक की नोक लम्बी होती है तो वह स्त्री झगड़ालू होती है अगर नाक में बाल हों तो बदकार होती है। अगर नाक की नोक नीचे की

तरफ झुकी हुई होगी तो वह अकलमंद अगर नाक तोते की तरह हो तो कुनबा वाली हो, अगर नोक छोटी हो तो कम माया निर्धन अगर चौड़ी हो तो बहुत जल्द बेवा हो जायेगी ऊंची और सुतवां हो तो खुश किस्मती अगर नाक चपटी हो तो पति की प्यारी होगी।

गाल–अगर मुस्कराते समय गालों में गड्ढा पड़े तो ऐसी औरत पति को प्यारी होती है और अगर दोनों गाल जरा उभरे हुए हों तो पति से बहुत प्यार करे और खुश मिजाज व काबिल हो अगर गालों का रंग सुर्ख हो तो हर किसी को प्यारी होती है मगर कुछ ऐसी औरतें खुदगर्ज भी होती हैं। अगर गालों पर उंगली लगाने से गल पड़े तो वह स्त्री चरित्रहीन होती है अगर किसी स्त्री के गालों पर बातचीत के समय गड्ढा पड़े तो वह बदकार होती है।

होंठ–जिस स्त्री के होंठ का रंग स्याह हो वह अभागन होती है जिसके होंठ गुलाबी और बारीक हों वह पति की प्यारी और खुशनशीब होती है अगर होंठ लम्बे हों तो वह हैरानी और परेशानी में

उमर व्यतीत करती है। अगर हद से ज्यादा छोटे हों तो भी निर्धनता इसका साथ नहीं छोड़ेगी अगर दोनों होठों के मिलने से मुंह छोटा बन जाये मगर इससे कम न हो तो पति की प्यारी होती है।

गर्दन–अगर गर्दन में तीन रेखायें हों तो खुशहाली होती अगर किसी औरत की गर्दन लम्बी मानिन्द बंगुले के होगी तो वह स्त्री खुदगर्ज और मक्कार होगी जिसकी गर्दन गुदाज हो वह बहुत जल्द असुहागिन हो जायेगी अगर गर्दन छोटी हो तो बेऔलाद रहेगी गर्दन मानिन्द सुराही के हो तो ऐसी स्त्री खुशनसीब नेक चलन और पति की प्यारी होती है।

बाजू–अगर स्त्री के बाजू लम्बे होंगे तो खुशहाली की निशानी है अगर किसी स्त्री के बाजू छोटे हों और टेढ़े-मेढ़े हों तो वह दुर्भागी और बांझ होगी लेकिन अगर बाजू छोटे और गोश्त से भरे हुए हों तो ऐसी स्त्री को पति नेक मिलेगा बाजू छोटे हों तो स्त्री आवारा होगी।

बाल–जिस स्त्री के सर के बाल घुंघराले नर्म और लम्बे होंगे वह अच्छे व्यवहार पति की प्यारी

और औलाद वाली होगी इसके खिलाफ बाल छोटे होने पर बदनसीब और बालों का रंग सुर्खी माइल हो तो वह स्त्री झगड़ालू होगी।

कमर—मोटी और छोटी कमर वाली हो तो अभागी मक्कार व दगाबाज होती है। अगर कमर पतली हो तो पति की हमेशा खिदमत गुजार और दिल लुभाने वाली होती है। जिस स्त्री की कमर शरीर के अन्दर के मुताबिक हो वह नेक और औलाद वाली होगी जिस स्त्री की कमर चलने में खमदार हो तो वह बहुत जल्द बेवा होगी अगर चलते समय किसी स्त्री की कमर में बल पड़ेंगे तो वह खुश मिजाज और खुशहाल रहेगी जिसकी कमर में हमेशा दर्द रहे वह कम उमर और उसके औलाद भी कम होगी अगर स्त्री की कमर लम्बी और गोश्त से भरपूर हो तो वह निर्धन और कई पति करे।

हाथ—नर्म व नाजुक हाथ खुश दिल और भाग्यशाली है अगर हाथों में पसीना आये तो नफसानी बदनसीब है छोटे हाथ वाली स्त्री हमेशा गुलामी में उमर गुजारती है अगर हथेली वा निस्वत उंगलियों के लम्बी हों तो अकलमंद और

हिम्मतवाली होगी और दांया हाथ बांये हाथ से बड़ा हो तो वह सुखी होती है अगर उंगलियां अन्दाज से छोटी हों तो वह बेवकूफ व अभागी होती है। अगर उंगली पड़े तो खुदगर्ज हसद करने वाली हो अगर उंगलियां लम्बी हों तो खुश कलाम अगर बांये हाथ का अंगूठा छोटा हो तो हर समय बदकारी की इच्छा करे।

सीना–अगर सीने पर नीले रंग की रगें हों तो धनवान और आराम हो अगर सीना ऊंचा हो और मोटा हो तो जल्दी बेवा होने की अलामत है अगर सीना खुर्शो माइल हो तो हर समय बदकारी में मगन रहे अगर सीना दराज हो तो रंज व मुसीबत की निशानी है अगर सीना ऊंचा हो तो वह धनवान होती है।

इति

विविध कार्यों के लिये विभिन्न भगवन्नामों का जाप-स्मरण

कामना-सिद्धि के लिये– कामः कामप्रदः कान्तः कामपालस्तथा हरिः आनन्दो माधवश्चैव कामसंसिद्धये जपेत्।

अभीष्ट कामना की सिद्धि के लिए 'काम', 'कामप्रद' 'कान्त', 'कामपाल', 'हरि', 'आनन्द' और 'माधव' इन नामों का जप करे।

शत्रु विजय के लिये–रामः परशुरामश्च नृसिंहो विष्णुदेव च। विक्रमश्चैव भादीनि जप्यान्यरिजिमीषुभिः।

शत्रुओं पर विजय पाने की इच्छा वाले लोगों को 'राम', 'परशुराम', 'नृसिंह', 'विष्णु' तथा 'विक्रम', इत्यादि भगवन्नामों का जप करना चाहिये।

विद्या प्राप्ति के लिये–विद्याभ्यस्यता नित्यं जप्तव्यः पुरुषोत्तमः

विद्याभ्यास करने वाले छात्र को प्रतिदिन 'पुरुषोत्तम' नाम का जप करना चाहिये।

बन्धन मुक्ति के लिये–दामोदरं वन्धगतो नित्यमेव जपेन्नरः

बन्धन में पड़ा हुआ मनुष्य नित्य ही 'दामोदर' नाम का जप करे।

नेत्र बाधा नाश के लिये—केशवं पुण्डरीकाक्षमनिशं हि तथा जपेत्। नेत्र वाधासु सर्वासु.........।

सम्पूर्ण नेत्र—बाधाओं में नित्य-निरन्तर 'केशव' एवं 'पुण्डरीकाक्ष' नाम का जप करे।

भय नाश के लिये—ऋषीकेशं भयेषु च।

भय के अवसरों पर उसके निवारण के लिये 'ऋषिकेश' का स्मरण करे।

औषध सेवन के लिये—अच्युतं चामृतं चैव जपे दौषधकर्मणि।

औषध सेवन के कार्य में 'अच्युत' और 'अमृत' नामों का जप करे।

युद्धस्थल में जाते समय—संग्रामभिमुखे गच्छन् संस्मरेदवराजितम्।

युद्ध की ओर जाते समय 'अपराजित' का स्मरण करे।

पूर्वादि दिशाओं में जाते समय—चक्रिणं गदिनं चैव शङ्गिणं खङ्गिनं तथा। क्षेमार्थी प्रवसन् नित्यं दिक्षु प्राच्यादिषु स्मेरत्।

पूर्व आदि दिशाओं में प्रवास करते (परदेश जाते या रहते) समय कल्याण चाहने वाला पुरुष प्रति दिन 'चक्री' ('चक्रपाणि') 'गदी'('गदाधर') 'शार्ङ्गी' (शार्ङ्गधर) तथा 'खड्गी' ('खड्गधर') इन नामों का स्मरण करे।

सारे व्यवहारों में– अजितं चाधिपं चैव सर्व सर्वेश्वरं तथा। संस्मरेत् पुरुषो भक्त्या व्यवहारेषु सर्वदा।

समस्त व्यवहारों में सदा मनुष्य भक्ति भाव से 'अजित' 'अधिपद' 'सर्व सर्वेश्वर'-इन नामों का स्मरण करे।

क्षुत-प्रस्खलनादि, ग्रहपीडादि और दैवी विपत्ति-निवारण के लिये– नारायणं सर्वकालं क्षुतप्रस्खलनादिषु। ग्रहनक्षत्रपीडासु देवबाधासु सर्वता।

छींक लेने, प्रस्खलन (लड़खड़ाने) आदि के समय, ग्रह पीड़ा तथा दैवी बाधाओं में सर्वतोभाव से हर समय 'नारायण' का स्मरण करे।

डाकू तथा शत्रुओं की पीड़ा के समय– अंधकारे तमस्तीवे नरसिंह मनुस्मरेत।

अत्यन्त घोर अन्धकार में डाकू तथा शत्रुओं की ओर से बाधा की सम्भावना होने पर मनुष्य बारम्बार 'नरसिंह' नाम का स्मरण करे।

अग्निदाह के समय—अग्निदाहे समुत्पन्ने संस्मरेत् जलशायिनम्।

घर या गांव में आग लग जाने पर 'जलाशयों' का स्मरण करे।

सर्प विष से रक्षा के लिये—गरुड़ध्वजानुस्मणाद् विषवीर्य व्यपोह्वति।

'गरुड़ध्वज' नाम के बारम्बार स्मरण से मनुष्य सर्पविष के प्रभाव को दूर कर देता है।

स्नान, देवाचन, हवन, प्रणाम तथा प्रदक्षिणा करते समय—कीर्तवेद् भगवन्नाम वासुदेवेति तत्पर॥

स्नान, देवपूजा, होम, प्रणाम तथा प्रदक्षिणा करते समय मनुष्य भगवत्परायण हो 'वासुदेव'-इस भगवन्नाम का कीर्तन करे।

वित्त-धन्यादि-स्थापना के समय—कुर्वीत तमना भूत्वा अनन्ताच्युद कीर्तनम्।

धन धान्यादि की स्थापना के समय मनुष्य भगवान् में मन लगाकर 'अनन्त' और 'अच्युत' इन नामों का कीर्तन करे।

दुःख स्वप्न-नाश के लिए—नारायणं शार्ङ्गधरं श्रीधरं पुरुषोत्तम् वामनं खड्गिनं चैव दुष्ट स्वप्ने सदा स्मरेत्।

बुरे सपने आने पर मनुष्य सदा 'नारायण', 'शार्ङ्गधर' 'श्रीधर', 'पुरुषोत्तम', 'वामन' और 'खड्गी' का स्मरण करे।

महार्णव में—महार्णवादौ येर्यङ्कशायिनं च नरः स्मरेत्।

महासागर आदि में गिर पड़ने पर मानव 'पर्यङ्कशायी' (शेषशायी) का स्मरण करे।

सर्व कर्म-समृद्धि के लिए—बलभद्रं समृद्धयर्थं सर्वकर्मणि संस्मरेत्।

समस्त कर्मों में उनकी सम्पन्नता के लिए मनुष्य 'बलभद्र' का स्मरण करे।

संतान के लिए—जगत्पतिमपत्यार्थं स्तुवन् भक्त्या न सीदति।

संतान की प्राप्ति के लिए भक्ति पूर्वक 'जगत्पति' (जगदीश या जगन्नाथ) की स्तुति करने वाला पुरुष कभी दुःखी नहीं होता।

सर्व प्रकार के अभ्युदय के लिए—श्रीशं सर्वाभ्युदयि के कर्मणयाशु प्रकीर्तयेत्।

सम्पूर्ण अभ्युदय-सम्बन्धी कर्मों में शीघ्रता पूर्वक श्रीश: (श्रीपति) का उच्च स्वर से कीर्तन करे।

अरिष्ट निवारण के लिए–अरिष्टेषु ह्यशेषेषु विशोकं च सदा जपेत।

सम्पूर्ण अरिष्टों के निवारण के लिए सदा 'विशोक' नाम का जप करे।

निर्जन स्थान में तथा आंधी-तूफान आदि उपद्रवों के समय–मरुत्प्रपाताग्निनल बन्धनादिषु मृत्युषु। स्वतन्त्रपरतन्त्रेषु वासुदेव जपेद बुध:।

स्वेच्छा या परेच्छा वश अथवा स्वाधीन या पराधीन अवस्था में किसी निर्जन स्थान में पहुंचने पर आंधी-तूफान (ओला-वर्षा), अग्नि (दावानल) जल (अगाध जल-राशि में नियज्जन) तथा बन्धन आदि के कारण मृत्यु या प्राण संकट की अवस्था प्राप्त हो तो बुद्धिमान् मनुष्य 'वासुदेव' नाम का जप करे (ऐसा करने से बाधाएं दूर हो जाती हैं।

कलियुग के दोष-नाश के लिए–तन्नास्ति कर्म जलो के वाग्जं मानसमेवच। यन्नक्षपयते तापं कलौ गोविन्द कीर्तनात्।

कलियुग में इस जगत के भीतर ऐसा कोई कर्मज (शारीरिक), वाचिक और मानसिक पाप नहीं है,

जिसे मनुष्य 'गोविन्द' नाम का कीर्तन करके नष्ट न कर दे।

शमायस्लं जलं बहेस्तमसो भास्करोदयः।
शान्त्यै कलेरघौधस्य नामसंकीर्तनं हरेः॥

जैसे आग बुझा देने के लिए जल और अंधकार को नष्ट कर देने के लिए सूर्योदय समर्थ है, उसी प्रकार कलियुग की पाप राशि का शमन करने के लिए 'श्रीहरि' का नाम कीर्तन समर्थ है।

पराकचान्द्रायणतत्तकृच्छैर्न देहशुद्धिर्भवतीतितादृक: कलौ सकृन्माधव कीर्तनेन गोविन्दनाम्ना भवतीह यादृक्।

कलियुग में एक बार 'माधव' या 'गोविन्द' नाम के कीर्तन से यहां जीव की जैसी शुद्धि होती है, वैसी इस जगत में पराक, चान्द्रायण तथा तप्तकृच्छ आदि बहुत से प्रायश्चितों द्वारा भी नहीं होती।

सकृदुच्चारयन्त्येतद् दुर्लभं चाकृतात्मनाम्।
कलौ युगे हरेर्नाम ते कृतार्था न संशयः॥

जो कलियुग में अपुण्यात्माओं के लिए दुर्लभ इस 'हरि' नाम का एक बार उच्चारण कर लेते हैं, वह कृतार्थ हो गये हैं, इसमें संशय नहीं।

किसी विपत्ति के समय कौन-सा नाम उच्चारण करें? विष्णु धर्मोत्तर में मार्कण्डेय-वज्र संवाद में कहा गया है।

जल-प्रतरण के समय—कूर्म वराहं मत्स्यं वाजल प्रतरणे स्मरेत्।

जल से पार होते समय भगवान् 'कूर्म' (कच्छप) 'वराह' अथवा 'मत्स्य' का स्मरण करे।

अग्निदाह के समय—भ्राजिष्णुमग्निजनने जपेन्नाम त्वखण्डितम्।

कहीं आग लग गयी हो तो उसकी शांति के लिए 'भ्राजिष्णु'—इस नाम का अखंड जप आरम्भ कर दे।

आपत्ति-विपत्ति, ज्वर, शिरोरोग तथा विष वीर्य में—दरुड़ध्वजानुस्मरणादापदो मुच्यते नर। ज्वरजुष्टशिरोरोगविषवीर्य शाम्यति॥

'गरुड़ध्वज' का नाम बारम्बार स्मरण करके मनुष्य आपत्ति से छूट जाता है, साथ ही वह ज्वर रोग, सिर दर्द तथा विष के प्रभाव को भी शांत कर देता है।

युद्ध के समय—बलभद्रं तु युद्धार्थी।

युद्धार्थी मनुष्य 'बलभद्र' का स्मरण करें।

कृषि, व्यापार और अभ्युदय के लिए–

........कृष्यारम्भेहलायुधम्।.........

उत्तारणं-वाणिज्यार्थी राममभ्युदये नृप।

नरेश्वर: खेती के आरम्भ में किसान 'हलायुध' का स्मरण करें। व्यापार की इच्छा वाला वैश्य उतारण को याद करे और अभ्युदय के लिए 'राम' का स्मरण करे।

मंगले–मंगल्यं मंगलं विष्णुं मङ्गल्येषु च कीर्तयेत्। मांगलिक कर्मों में मंगलकारी एवं मंगलमय 'श्री विष्णु' का कीर्तन करे।

सोकर उठते समय–...... उत्तिष्ठन् कीर्तेयेंद् विष्णुम्.........।

सोकर उठते समय 'विष्णु' का कीर्तन करे।

निद्रा काल में–ॐ प्रस्थगन् माधवं नर:।.......

सोते समय मानव 'माधव' का स्मरण करे।

भोजन के समय–भोजनं चैव गोविन्दं सर्वत्र मधुसूदनम्॥

भोजन काल में 'गोविन्द' का और सर्वत्र सदा 'मधुसूदन' का चिन्तन करें।

विविध सोलह कार्यों में विविध सोलह नाम

औषधे चिन्तये विष्णुं भोजने च जनार्दनम्।
शयनेपद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम्॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च विधिक्रमश।
नारायणं तवुत्मागे श्रीधरं श्रीयसंग मे॥
दुःस्वप्ने स्वर गोविन्दं संकटे मधुसूदनम्।
कानने नारसिंह च पाव के जलशायिनम्॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम्।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम्॥
मोहशैतानि नामानि प्रातरुत्थाययः पठेत्।
सर्वपाप विनिर्युक्तो विष्णुलोके महीयते॥

औषध—सेवन के समय 'विष्णु' का भोजन में 'जनार्दन' का शयन में 'पद्मनाभ' का विवाह में 'प्रजापति' का, युद्ध में 'चक्रधर' का, प्रवास में 'त्रिविक्रम' का, शरीर त्याग के समय 'नारायण' का प्रिय मिलन में 'श्रीधर' का दुःस्वप्न-दोष नाश के लिए 'गोविन्द' का, संकट में 'मधुसूदन' का, जंगल में नृसिंह का अग्नि लगने पर 'जल-शायी' भगवान् का, जल में 'वाराह' का पर्वत पर 'रघुनंदन' का, गमन में 'वामन' का और सभी कार्यों में 'माधव'

का स्मरण करना चाहिए। जो प्रातःकाल उठकर इन नामों का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक (वैकुण्ठ) में पूजित होता है।

भगनद्वाराधन—देवाराधन

पारमार्थिक और लौकिक कुछ सरल अनुष्ठान—प्राकृतिक जगत् अनित्फ अपूर्ण और विनाशी है; अतएव दुःखालय है। प्राकृतिक वस्तुओं और स्थितियों में सुख की खोज करना वास्तव में मूर्खता ही है। यहां जो कुछ भी मनुष्य प्राप्त करता है, वह स्थायी नहीं होता, अधूरा होता है और उसका वियोग अवश्यम्भावी है। यहां वास्तविक सुख उसी को मिलता है, जो सारे जगत् में भगवान् देखता है, वही नित्य पूर्ण परमानन्द स्वरूप भगवान् को देखता हुआ नित्य आनन्दमय बना रहता है। भगवान् ने कहा—

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि सच मे न प्रणश्यति॥

(*गीता ६।३०*)

'जो सर्वत्र मुझको देखता है और सबको मुझ में देखता है मैं उससे कभी अलग नहीं होता और वह मुझ से कभी अलग नहीं होता।'

फिर यहां जो कुछ भी हानि-लाभ, दुःख-सुख आदि भोग रूप में प्राप्त होते हैं, वह सब प्रारब्ध के ही फल हैं कर्म तीन प्रकार के होते हैं-क्रियामाण संचित और प्रारब्ध। इस समय हम जो कुछ भी कर्मफल के हेतु से कर रहे हैं, उन्हें 'क्रियमाण' कहते हैं। फल हैतुक कर्म सम्पन्न होते ही कर्म संचय के भंडार में चला जाता है। यह वर्तमान के और पूर्व के किये हुए कर्मों को, जिनका फल अभी नहीं भोगा जा चुका है, संग्रह ही, 'संचित कहलाता है, और इस संचित में से एकजन्म के लिए कुछ अंश लेकर कर्म जगत् का नियन्त्रण करने वाली प्रभु शक्ति एक जन्म के लिए जो कुछ फल का निर्माण कर देती है, उसका नाम 'प्रारब्ध' है। इस प्रारब्ध के अनुसार योनि, आयु और फल आदि पहले से ही निश्चित हो जाते हैं। अतएव जब जो कुछ भी प्रारब्धवश फल रूप में प्राप्त होना है, स्वेच्छा, परेच्छा और अनिच्छा। किसी फल भोग के लिए कोई कर्म हमारी अपनी इच्छा से बन जाय, यह स्वेच्छाकृत फल भोग है। जैसे आग में हाथ डालने की इच्छा होने पर हाथ डालना और उसका जल जाना। किसी प्रारब्ध का फल, परेच्छा दूसरे

की इच्छा से होता है। इसका रूप है—किसी दूसरे के मन में हमारा अच्छा-बुरा करने की इच्छा हो जाना और तदनुसार उस कर्म के सम्पन्न होने पर हमें फल प्राप्त होना। जैसे हमारे घर में आग लगने वाली हो, पर द्वेषवश दूसरा कोई इच्छा करके आग लगा दे। इसी प्रकार कुल फल 'अनिच्छा' से उत्पन्न होते हैं—जैसे हम रास्ते में चल रहे हैं। अकस्मात् किसी पेड़ की डाल टूट कर हम पर गिर जाय और हमें चोट लग जाय। फल भोग में प्रारब्धवश परतन्त्र होते हुए भी इन 'स्वेच्छा' और 'परेच्छा' कृत फल भोगों में हम या दूसरे अपनी भली-बुरी इच्छा के अनुसार क्रियमाण कर्म करके अपने लिये अच्छे संचित का निर्माण करते हैं, जो भविष्य में हमारे लिये सुख-दुःख का कारण बन सकता है, क्योंकि संचित और प्रारब्धवश अच्छी-बुरी इच्छाओं के उदय होने पर भी मनुष्य को भगवान् ने अच्छे-बुरे की पहचान के लिए विवेक, आदर्श शुभ कर्म करने के लिए विधि-निषेधात्मक शास्त्रवाणी और कर्म करने का अधिकार दिया है, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' गीता का प्रसिद्ध वचन है। यदि हम शास्त्र की अवहेलना करके मनमाना अनाचार दुराचार करते

हैं, तो उसका फल दुःख और सदाचार सद्व्यवहार करते हैं तो उसका फल सुख भविष्य में होगा ही। प्रारब्ध का फल अवश्यमेव भोगना ही होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। पर जो मनुष्य भगवान् के शरणागत होकर अपने को सर्वतोभावेन भगवान् को समर्पित कर चुकते हैं अथवा जिन्हें तत्वज्ञान स्वरूप आत्मसाक्षात्कार हो जाता है, उनके शरीर में प्रारब्धानुसार फल का उदय होने पर भी उन्हें दुःख-सुख नहीं होता और सकाम भावना होने से नवीन कर्म फल प्रदान करने वाली कर्म संचित में वैसे ही नहीं जमा होते, जैसे भुने हुए बीज खेत में डालने पर उससे अंकुर नहीं निकलते पूर्व के सारे संचित-कर्म भगवान् की सहज 'कृपा' अथवा 'ज्ञानाग्नि' से सर्वथा भस्म हो जाते हैं। इस प्रकार वह कर्म बन्धन से मुक्त हो जाता है। तथापि शरीर से प्रारब्ध फल का भोग तो होता ही है यह कर्म सिद्धान्त है।

परन्तु कुछ ऐसे 'प्रबल कर्म' भी होते हैं-जैसे सकाम भगवदाराधन या देवारा धन, किसी कारण-वश या वरदान-जो तत्काल 'प्रारब्ध' बन कर फलदानोन्मुख प्रारब्ध के फल को रोक कर बीज में अपना फल भुगता देते हैं। जैसे किसी के प्रारब्ध में

पुत्र-प्राप्ति का संयोग नहीं है, अमुक समय पर मृत्यु का योग है; पर वे विधिपूर्वक 'पुत्रेष्टि-यज्ञ' का अनुष्ठान करने पर नवीन प्रारब्ध-निर्माण के द्वारा पुत्र प्राप्त कर सकते हैं, ऐसे बहुत से उदाहरण प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं, और 'मृत्युंजय' आदि अनुष्ठान करने पर अल्पायु मनुष्य 'दीर्घ जीवन' का सविधि लाभ कर सकते हैं। मार्कण्डेय जी का भगवान् शंकर की उपासना के फलस्वरूप अमरत्व प्राप्त करना भी प्रसिद्ध है। इसीलिए हमारे शास्त्रों में 'सकाम उपासना' का विस्तृत उल्लेख है यद्यपि सकाम उपासना बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि उसके द्वारा प्राप्त होने वाला फल अनित्य, अपूर्ण और दु:ख प्रद ही होता है, तथापि सात्विक सकाम उपासना के स्वरूपानुसार न्यूनाधिक रूप में अन्त:करण की शुद्धि होती है, जिसका फल अन्त में निष्कामता की प्राप्ति होता है और भगवान् को प्राप्त करने वाली होती ही है। भगवान् ने स्वयं अपने अर्थार्थी और 'आर्त' भक्तों को भी 'उदार बतलाते हुए अन्त में अपनी प्राप्ति होने की घोषणा की है।' 'उदारा: सर्व एवैते' और 'मद्भक्तायान्ति भामपि।' अतएव सकाम देवराधन और

भमकदाराधन बुद्धिमानी न होते हुए भी लोक में समृद्धि सुख और अन्त में क्रमानुसार भगवत्प्राप्ति में हेतु होने के कारण अकर्तव्य नहीं है। पाप तो है ही नहीं। अवश्य ही 'तामस देवताओं' और 'तामस तत्त्वों' की उपासना कभी नहीं करनी चाहिए और न ऐंसी कोई उपासना-आराधना करनी चाहिए जिसमें दूसरे के अहित की कामना हो। 'तामस उपासना' और 'पर-अहित की कामना' से की गयी उपासना दोनों ही अन्त:करण की अशुद्धि में हेतु और बार-बार आसुरी योनि दु:ख और अधोगति की प्राप्ति में ही कारण होती हैं। यह भी सत्य है कि भगवान् अपनी मंगलमयी सर्वज्ञता और इच्छा से हमारे लिये जो कुछ भी फल विधान करते हैं चाहे वह हमारी सीमित और अदूर-दृष्टि के कारण हमें अशुभ या दु:खप्रद ही जान पड़ें। वास्तव में वह परम शुभ और परम मंगलकारी ही होता है। इसलिए भगवान् पर और उनकी मंगलमयता पर विश्वास करने वाले भक्त यही चाहते हैं कि उनकी 'मंगलमयी इच्छा' ही सदा सर्वत्र अपना काम करती रहे। हमारी कोई भी इच्छा उस मंगलमयी इच्छा में कभी बाधक हो ही नहीं। तथापि जो लोग भोग कामना और भोग-

वासना को छोड़ नहीं सकते और कामना एवं आसक्ति से अभिभूत होकर 'अन्याय और असत् मार्ग' का अवलम्बन करके भोग-सुख की आशा रखते हैं, उनके लिये तो भगवदाराधन और देवाराधन अवश्य ही सेवन करने योग्य हैं। इसमें लाभ ही लाभ है। यदि श्रद्धा और विधि पूरी हो तो 'नवीन प्रारब्ध' का निर्माण होकर मनोरथ की पूर्ति हो जाती है। कदाचित् प्रति बन्धक रूप प्रारब्ध अत्यन्त प्रबल होने के कारण मनोरथ-पूर्ति न भी हो तो पुण्य कर्म का अनुष्ठान तो बनता ही है। इसके विपरीत सांसारिक साधन चाहे जितने भी किये जायं, उनके द्वारा प्रारब्ध का फल बदल नहीं सकता अत:एव वे वैध होने पर भी व्यर्थ होते हैं और आजकल तो विवेक भ्रष्ट होकर सारा जगत् ही भोग-सुख की आशा आकांक्षा में उन्मत्त हो रहा है, वह किसी भी पाप से बचना नहीं चाहता। 'अर्थ' और 'अधिकार' की अदम्य लालसा से उन्मत्त होकर वह अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, पापाचार, व्यभिचार और अत्याचार, असदाचार आदि के द्वारा सफलता प्राप्त करने की भ्रान्त चेष्टा कर रहा है; इसका फल तो निश्चय ही सब प्रकार से 'अध:पात' और 'दु:ख'

ही होगा। आज का मनुष्य दूसरे जीवों के दुःख-सुख को भूल गया है, वह केवल अपने ही सुख की लालसा में उन्मत्त है। इसलिए जगत् में नये-नये 'भोगवाद' उत्पन्न होकर नये-नये द्वेष कलह की आवांच्छनीय सृष्टि कर रहे हैं। और इसीलिये मनुष्य नये-नये पापों का आयोजन करने में प्रगति मान रहे हैं। भारतवर्ष भी इस पाप की आंधी में फंस रहा है। इसी से आज देश में अनेक प्रकार के वाद, दल बन्दियां, परम्पर एक-दूसरे को मिटाने और दुःख पहुंचाने की चेष्टा, जीव हिंसा के नये नये कारखाने और वैज्ञानिक हत्यालय आदि निर्माण के प्रयत्न बढ़ते जा रहे हैं। खाद्य-पदार्थों के लिये भी मांसाहारी जगत की देखादेखी मांस निर्मित पदार्थों का प्रसार-प्रचार किया जा रहा है। सत्य, ईमानदारी, चारित्रिक पवित्रता आदि तो आज मानो कहने की वस्तु बनते जा रहे हैं। यही दम्भ, दर्प, अभिमान बेहद बढ़ते चले जा रहे हैं। यही स्थिति चलती रही तो पता नहीं हमारा पवन कहां जाकर रुकेगा। इस अवस्था में भोग-सुख के साधन के रूप में ही यदि हम अन्याय असत् मार्ग का सर्वथा परित्याग करके भगवदाराधन और देवाराधन में प्रवृत्त हों तो पवन

से बचने की और जीवन में सफलता प्राप्त करने की निश्चित आशा की जा सकती है। इन भावों का प्रचार होना चाहिये 'कल्याण' के इस भगवन्नाम-महिमा और प्रार्थना-अंक के प्रकाशन का यह भी एक उद्देश्य है। यहीं नीचे कुछ थोड़े-से अनुष्ठानों के प्रयोग लिखे जा रहे हैं। जिनके करने पर 'पार मार्थिक' और 'भौतिक' लाभ हो सकता है। इनमें कई तो बहुत से लोगों के द्वारा अनुभूत है। आशा हैं, 'कल्याण 'के पाठक इनसे यथोचित लाभ उठायेंगे।

भगवत्प्रेम की प्राप्ति के लिये

गोप्यः स्फुरुपुरट कुण्डल कुन्तलत्विड्
गण्डश्रिया सुधित हासनिरीक्षणेन।
भावं दधत्य ऋषभग्यजगुः कृतानि
पुण्यानि तःकररुहस्पर्शप्रमोदाः॥
ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्ग-
धृष्टस्त्रजः स कुचकुङ्कु मरञ्जितायाः।
गन्धर्वपालिभिरनुद्रत आविशद वाः
श्रान्तो गजीभिरिभपण्डिवभिन्नसेतः॥

सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः
प्रेम्णेक्षितः प्रहसती भिरितस्ततोऽङ्ग।
वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो
रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः॥
ततश्च कृष्णोपवने जलस्थल-
प्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे।
चचार भृङ्ग प्रमदागणावृतो
यथा मदच्युद् द्विरदः करेणुभिः॥

श्रीमद्भागवत (१० ।३३ ।२२ ।२५)

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदंच विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽबृशृणुयादथर्णयेद्या।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः॥

(श्रीमद्भागवत १० ।३३ ।४०)

उपर्युक्त श्रीमद्भागवत (१० ।३३ ।२२ ।३५) चारों श्लोकों को श्रीमद्भागवत के ही उपर्युक्त (१० ।३३ ।४०) श्लोक के द्वारा सम्पुटित करके कम से-कम २१ पाठ प्रति दिन करे। पाठ करने से पूर्व भगवान् श्री राधा माधव का चित्रपट सामने रखकर उसका षोडशोपचार से पूजन करे और पाठ के समय घृत दीपक रक्खे। स्नान करने के बाद शुद्ध आसन पर शुद्ध कपड़े पहन कर पाठ करे। इस

प्रकार ३३ दिन पाठ करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब तक भगवतप्रेम का प्रादुर्भाव न हो जाय, तब तक पाठ करता ही रहे। प्रेम प्राप्त करने का तीब्र वेदना पूर्ण उत्कण्ठा के साथ ही भगवान श्री राधा माधव शीघ्र ही अपना प्रेम अवश्य-२ प्रदान करेंगे ही ऐसा दृढ़ विश्वास करके पाठ करता रहे।

भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा तथा दिव्य प्रेम की प्राप्ति के लिये–निम्नलिखित स्तोत्र माहेश्वर तन्त्र के ४६ वें पटल से दिया जा रहा है। इन स्तोत्रों की विशेषता क्या है–इस विषय में पार्वती जी प्रश्न करती हैं कि शिवजी बिना जप के बिना सेवा के श्रीकृष्ण प्रसन्न हों, ऐसा कोई उपाय हो तो वह मुझे बताइये इसके उत्तर में श्री शिवजी कहते हैं- हे पार्वती जी! बिना जप, बिना सेवा एवं बिना पूजा के भी केवल जिस स्तोत्र मात्र से ही श्रीकृष्ण-कृपा प्राप्त हो सकती है वह स्तोत्र मैं तुम्हारे लिये कहता हूँ।

यथा– पार्वती उवाच

भगवतञ्श्रोतुभिच्छगाम यथा कृष्णः प्रसीदति।
बिना जपं बिना सेवां बिना पूजामपि प्रभोः ॥१॥
यथा कृष्णः प्रसन्नः स्यात्तमुपायं वदाधुना।
अन्यथा देवदेवेशः पुरुषार्थो न सिद्धयति ॥२॥

शिव उवाच

साधु पार्वति ते प्रश्नः सावधानतया शृणु।
बिना जपं बिना सेवां बिना पूजामपि प्रिये ॥३ ॥
यथा कृष्णाः प्रसन्नः स्यात्तमुपायं वदामिते।
जप सेवादिकं वापि बिना स्तोत्रं न सिद्धयति ॥४ ॥
कीर्तिप्रियो हि भगवान् परमात्मा पुरुषोत्तमः।
जपस्तन्मयतासिद्धयै सेवा स्वाचाररूपिणी ॥५ ॥
स्तुतिः प्रसादनकरी तस्मात् स्तोत्रं वदामिवे।

अथ ध्यानम्

सुधाम्भोनिधिमध्यस्थे रत्नाद्विपे मनोहरे ॥६ ॥
नवखण्डात्मक तत्र नवरत्नविभूषिते।
तन्मीये चिन्तयेद् रम्यं मणिगेहमनुनद्मम् ॥७ ॥
परितो वनमालाभिर्ललिताभिर्विराजिते।
तत्र संचिन्तयेच्चारू कुट्टिमं सुमनोहरम॥८ ॥
चतुःषष्ट्या मणिस्तम्भैश्चतुर्दिक्षु विराजतिम्।
तत्रसिंहासने ध्यायेत् कृष्णं कमललोचनम् ॥९ ॥
भनर्घ्यरत्नजटितभुकुटोज्वल कुण्डलम्।
सुस्मितं सुमुखम्भोजं सखीवृदं निषेवितम ॥१० ॥
स्वामिन्याश्लष्टवामाङ्गं परमानन्दविग्रहम्।
एवं ध्यात्वा ततः स्तोत्रं पतेद्भवि जितेन्द्रियः ॥११ ॥

'सुधासागर के मध्य भाग में मनोहर रत्नद्वीप शोभा पाता है। उसके नौ खंड हैं वह दीप नूतन रत्नों से विभूषित है। उस रत्नदीप के बीच में परम उत्तम रमणीय मणिमय भवन का चिन्तन करे। वह भवन सब ओर से ललित वन मालाओं द्वारा विभूषित एवं सुशोभित हो रहा है। उस भवन के भीतर परम मनोहर अतिरमणीय मणिजटित पक्का आंगन है—ऐसा ध्यान करे। वह आंगन चारों दिशाओं में (सोलह-सोलह के क्रम से) चौंसठ मणि निर्मित खंभों द्वारा विराजमान है। उस आंगन पर एक सुन्दर सिंहासन है, जिसके ऊपर कमलनयन भगवान् श्री कृष्ण विराजमान हैं। उनके स्वरूप का इस, प्रकार चिन्तन करे—वे मस्तक पर अमूल्य रत्नजटित मुकुट और कानों में उज्ज्वल कुण्डल धारण किये मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। उनकी यह मुस्कान बड़ी मनोरम है। उसके कारण मुखारविन्द का सौन्दर्य और भी खिल उठा है। झुण्ड की झुण्ड सखियां उनकी सेवा में लगी हैं। स्वामिनी श्री राधा उनके वामाङ्ग से सटी बैठी हैं। श्री हरि का श्री विग्रह परमानन्दमय है।' इस प्रकार ध्यान करके इन्द्रियों को पूर्णत: वश में रखते हुए स्तोत्र का पाठ करे।

अथ स्तोत्रम्

कृष्णं कमलपत्राक्षं सच्चिदानन्दविग्रहम्।
सखीयूथान्तरचरं प्रणमामि परात्परम् ॥१२॥
शृङ्गरसरूपाय परिपूर्णसुखात्मने।
राजीवारुगनेत्राय कोटिकंदर्परूपिणे ॥१३॥
वेदाद्यगम्यरूपाय वेदवेद्यस्वरूपिणे।
अवाङ्मनसविक्ष्यनिजलीलाप्रवर्तिने ॥१४॥
नमः शुद्धाय पूर्णाय निरस्तगुणवृत्तये।
अखण्डाय निरंशाय निरावरण रूपिणे ॥१५॥
संयोग विप्रलम्भाख्यभेदभावमहाब्धये।
सदंशविश्वरूपाय चिदंशाशररूपिणे ॥१६॥
आनन्दांशस्वरूपाय सच्चिदानन्दरूपिणे।
मर्यादातीतरूपाय निराधाराय साक्षिणे ॥१७॥
मायाप्रपञ्चदूराय नीलांचलविहारिणे।
माणिक्यपुव्य रागाद्रिलीलाखेलप्रवर्तिने ॥१८॥
चिदन्तर्यामिरूपाय ब्रह्मानन्दस्वरूपिणे।
प्रमाणपथदूराय प्रमाणाग्राह्यरूपिणे ॥१९॥
माया कालुष्यहीनाम नमः कृष्णाय शम्भवे।
क्षरायाक्षररूपाय क्षराक्षर विलक्षिते ॥२०॥
तुरीयातीतरूपाय नमः पुरुषरूपिणे।
महाकामस्वरूपाय कामलत्यार्थवेदिने ॥२१॥

दश लीलाविहाराय सप्ततीर्थविहारिणे।
विहाररसपूर्णाय नमस्तुभ्यं कृपानिधे ॥२२॥
विरहानल संतप्तभक्तचित्तोदयाय च।
आविष्कृतनिजानन्द विफलीकृतमुक्तये ॥२३॥
द्वैताद्वैतमहामोहतमः पटलपाटिने।
जगदुत्पत्तिविलयसाक्षिणेऽविकृताय च ॥२४॥
ईश्वराय निरीशाय निरस्ताखिलकर्मणे।
संसारध्वान्तसूर्याय रुतनाप्राणहारिणे ॥२५॥
रासलीलाविलासोर्मिपूरिताक्षर चेतसे।
स्वामिनीनयनाम्भोजभावभेदैकवेदिने ॥२६॥
केवलानन्दरूपाय नमः कृष्णाय वेधसे।
स्वामिनीकृपयाऽऽनन्द कन्दलाय तवात्मने ॥२७॥
संसाराारण्यवीथीषु परिभ्रान्तामनेकवा।
पाहिमां कृपया नाथ त्वद्वियोगाधिदुःखिताम् ॥२८॥
त्वमेव मात्रपित्रादिबन्धुवर्गादयश्च ये।
विद्या वित्तं कुलं शीलं त्वत्तो में नास्तिकिंचन ॥२९॥
यथा वारूमयी योषिच्चेष्टते शिल्पशिक्षया।
अस्वतन्त्रा त्वया नाथः तथाहं विचरामिभोः ॥३०॥
सर्वसाधनहीनां मां धर्माचारपराङ्मुखाम्।
पतितां भवपाथोधौ परित्रातुं त्वमर्हसि ॥३१॥

माया भ्रमणयन्त्रस्थामूर्ध्वाधो भयविह्वलाम्।
अदृष्टनिजसंकेता पाहि नाथ दयानिधे ॥३२॥
अनर्थेऽर्यदृशं मूढां विश्वास्तां भयदस्थले।
जगृतव्येशयानां मामुद्धरस्व दयापर ॥३३॥
अतीतानागतभवसतान विवशान्तराम्।
विमेमि विमुखाभूय त्वत्तः कमललोचन ॥३४॥
मायालवणपाथोधिपयः पानरतां हि माम्।
त्वत्सांनिध्यसुधासिन्धुसामुप्यंनयमाचिरम् ॥३५॥
वाद्वियोगार्तिमासाद्य-यज्जीवामीतिलज्जय।
दर्शयिष्ये कथं नाथः मुखमेतद्विडम्बनम् ॥३६॥
प्राणनाथवियोगेऽपिकरोमि प्राणधारणाम्।
अनौचिती महेत्यषा किं नलज्जयतेहियाम् ॥३७॥
किं करोमि क गच्छामि कस्याग्र प्रावदाम्यहम्।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते वत्तयोड्व्धो यथोर्मयः ॥३८॥
अहंदुःखाकुला दीना दुःखहान भवत्परः।
विज्ञान प्राणनाथेदं यथैच्छसि तथा कुरू ॥३९॥
ततश्च प्रणमेत् कृष्णं भूयोभूयः कृताञ्जलिः।
इत्येतद् मुह्यमाख्यातं न वक्तव्यंगिरीन्द्रजे ॥४०॥
एवं यः स्तौति देवेशि त्रिकालं वि जितेन्द्रियः।
आविर्भवति तच्चित्ते प्रेमरूपीस्वप्रभुः ॥४१॥

संस्कृत से अनभिज्ञ पाठकगण किसी संस्कृत के विद्वान से स्तोत्र का अर्थ समझकर दिन में तीन बार प्रात: सायं एवं मध्यान्ह में पाठ करेंगे तो अनन्त गुना लाभ मिल सकेगा। यह पाठ प्रतिदिन बिना लांव चलना चाहिये। रोग आदि के समय अशक्ति होने पर किन्हीं सदाचारी ब्राह्मण द्वारा कराया जा सकता है। तीव्र उत्कण्ठा के साथ-साथ ब्रह्मचर्य का पालन और इन्द्रिय-संयम आवश्यक है। इससे भगवान् श्रीकृष्ण की कुछ तथा उनके दिव्य प्रेम की प्राप्ति होती है।

भगवान श्रीराम के दर्शन के लिये—एक एकांत कमरे को सब सामान हटाकर खाली करके धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिये। सूर्योदय से पूर्व ही स्नान करके उस कमरे में किसी ब्राह्मण द्वारा कलश-स्थापना कराके गणेश जी का पूजन कर लेना चाहिये और शुद्ध घी का अखण्ड दीपक जला लेना चाहिये।

सूर्योदय के समय से ही 'राम'—इस नाम को स्पष्ट रूप से बोलना प्रारम्भ कर देना चाहिये और दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात् पूरे चौबीस घंटे 'राम-राम' बोलते रहना है। इसके लिये केवल इतने नियम हैं-१. एक क्षण को भी राम-राम का बोलना बन्द न हो। २. उस कमरे से बाहर न जाया जाय। ३. उस

कमरे में दूसरा कोई इस बीच में न आये। द्वार भीतर से बन्द रहे। ४. अखण्ड दीपक बुझने न पाये।

एक दिन पहले ऐसा भोजन करना चाहिये कि अनुष्ठान के दिन शौच-लघुशङ्का अधिक तंग न करें। अनुष्ठान वाले कमरे में जल रखना चाहिये आवश्यक होने पर बोलते हुए जप चलता रहे और लघुशङ्का से निवृत्त हुआ जा सकता है कमरे में ही नाली पर। उस कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे, खड़ा हो, टहले चाहे जैसे रहे; किन्तु नामोच्चारण बंद न हो इतना ध्यान रक्खे।

दूसरे दिन प्रात:काल कलशादि का विसर्जन कर दिया जाता है।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा।
समुझत मनदुख भयउ अपारा॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ।
जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराउ॥
अहह धन्य लछिमन बड़भागी।
राम पदार बिंद अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा।
ताते नाथ संग नहिं लीन्हा॥

जौं करनी समुझै प्रभु मोरी।
नहिं निस्तार कलप सत कोरी॥
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ।
दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ॥
मोरे जियं भरोस दृढ़ सोई।
मिलहहिं राम सगुन सुभ होई॥
बीते अवधि रहहिं जौं प्राना।
अधम कवन जग मोहि समाना॥

उपर्युक्त चौपाइयों का आर्त भाव से भगवान् श्रीराम के शीघ्र दर्शन की अत्यन्त उत्कृट उत्कण्ठा को लेकर जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, कम-से-कम इक्कीस बार जप करे और साथ ही, 'ॐ रां रामाय नमः' मन्त्र की ११ माला का जप करे।

-सु०सिं०

भगवान् श्री कृष्ण के दर्शन के लिये

(१)

कच्चित्तुलसि कल्याणिगोविन्दचरण प्रिये।
सह त्वालि कुलैर्बिभ्रद्दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः॥

(श्रीमद्भागवत १०।३०।७)

इस मन्त्र को विल्व काष्ठा की छोटी पीठिका (चौकी) बनवाकर तुलसी काष्ठ के चन्दन से और

तुलसी काष्ठ की ही कलम से लिखकर रोज षोडशोपचार से पूजन करे और कम-से-कम ३२००० जप संख्या पूरी करे। ब्रह्मचर्य का अखण्ड पालन करे और सत्य का आचरण करे।

(२)

ब्रजवनौ कसां व्यक्तिरङ्ग ते

वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।

त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां

स्वजनहृद्रु जां यन्निषूदनम्॥

(श्रीमद्भागवत १०।३१।१८)

इस मन्त्र की एक माला का जप करके (ॐ) गोपीजन वल्लभाय नमः, मन्त्र की ११ माला का प्रति दिन जाप करे। ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

(१)

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमान मुखाम्बुजः।

पीताम्बरधरास्त्रग्वी साक्षान्मन्मथ मन्मथ॥

(श्रीमद्भागवत १०।३२।२)

इस मन्त्र की एक माला का जप करके 'ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा' इस मंत्र की कम-से-कम ११ मालाओं का जाप प्रतिदिन शुद्ध होकर करे। ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

भगवान् के बाल रूप में दर्शन के लिये

(१)

यत्पादपांसुर्वहुजन्मकृच्छ्रतो

धृवात्मभिर्योगिभिरप्यलभ्य:।

स एव यद्दृग्विषय: स्वयं स्थित:

किं वरायते दिष्टमतो व्रजौकसाम्॥

(श्रीभद्भागवत १०।१२।१२)

इस मन्त्र का १०८ जप करे और भागवत के दशम स्कन्ध के पूर्वार्ध का पारायण प्रतिदिन तीन अध्याय के हिसाब से १६ दिनों में पूर्ण करे। सोलहवें दिन चार अध्याय का पाठ करे। पाठ के पूर्व और अन्त में उपर्युक्त मन्त्र का सम्पुट दे।

श्री बाल कृष्ण के ध्यान से सर्वविपत्तियों का नाश तथा भगवान् के दर्शन्।

(२)

बालं नवीनशत मन्त्रविशाल नेत्र

विम्बा धरंसजल में घरूचिंमनोज्ञमम्।

मन्दस्मितं मधुर सुन्दर मन्दयानं

श्रीनन्दनन्दन महंमनसा नमामि॥१॥

मञ्जीरन् पूररणन्नवरत्नकाञ्ची
श्रीहार के सरिनखावलियन्त्र संधम्।
दृष्ट्यार्निहारिषिविन्दुविराजमानं
वन्दे कलिन्दतनुजातटवाल केलिम्॥२॥

पूर्णेन्दुसुन्दर मुखोपरि कुञ्चिताग्राः
केशानवीनधननीलनिभाः स्फुरन्त।
राजन्त आनतशिरः कुमुदस्य यस्य
नन्दात्मजायसबलाय नमोनमस्ते॥३॥

श्रीनन्दनन्दनस्तोत्रं प्रातरूत्थाययः पठेत्।
तन्नेत्रगोचरं याति सानन्दोनन्दनन्दनः॥

श्रीनन्दनन्दन के नेत्र नवीन कमल के समान विशाल हैं, पके हुए बिम्बफल के समान लाल-लाल ओंठ हैं, जल से भरे हुए मेघ की-सी अङ्ग कान्ति है। मन्द-मन्द मुसकुराते हुए वे अत्यन्त मनोहर जान पड़ते हैं; उनकी धीमी चाल भी अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर है। उन बाल गोपाल को मैं मन से प्रमाण करता हूँ। उनके चरणों में पायजेब और नुपुर सुशोभित हैं। नवीन रत्ननिर्मित करधनी खन-खन शब्द कर रही है। वक्षःस्थल पर सुनहरी

रेखा के रूप में लक्ष्मी जी, मुक्ताहार बघनखों की पंक्ति तथा यन्त्रों का समूह शोभा दे रहा है। ललाट पर दृष्टिदोष जनित पीड़ा का निवारण करने वाले जल का डिठौना विशेष सुन्दर लग रहा है। कलिन्दतनया श्री यमुना जी के तट पर ग्वालों के साथ चित्तक्रीड़ा करते हुए श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूं। नीचे की ओर झुका हुआ जिनका शिरोभाग प्रफुल्ल कुमुद की-सी शोभा धारण करता हैं, पूर्णिमा के चन्द्रमा की भांति सुशोभित परम सुन्दर श्रीमुख पर नवीन मेघ के समान नीले रंग की घुंघराली अलकें लहरा रही हैं। बलदाऊ भैया के सहित उन नन्द के लाड़ले! आप को मेरा बार-बार प्रमाण।

प्रातःकाल उठकर जो इस नन्दनन्दन स्तोत्र का पाठ करता है, आनन्दमूर्ति श्री नन्दनन्दन उसके नेत्रों के आगे नाचने लगते हैं।

बालकों (और बड़ों को भी) को प्रातःकाल शय्या से उठते ही हाथ मुंह धोकर श्री श्यामसुन्दर नन्द के उपर्युक्त बाल रूप का नित्य नियम पूर्वक प्रेम सहित ध्यान करना चाहिये। इससे सारी विपत्तियों का विनाश होकर भगवान् श्री बाल कृष्ण के दर्शन प्राप्त होते हैं।

श्री राधा जी का आश्रय पाने के लिये

कृपयति यदि राधा बाधिताशेषबाधा
किमपरमवशिष्टं पुष्टिमर्यादयोर्मे।
यदि वदति च किंचित् स्मेरहा सोदित श्री
द्विजवरमणिपङ्क्त्या मुक्ति शुक्त्यातदाकिम॥
श्यामसुन्दर शिखण्डशेखर स्मेरहास्य मुरली मनोहर।
राधिकारसिक मां कृपानिधे स्वप्रियाचरणकिंकरी कुरु॥
प्राणनाथ वृषभानुनन्दिनी श्री मुखाब्जरसलोल षट्पद।
राधिका पदतले कृतस्थितिं त्वां भजामि रसिकेन्द्रशेखर॥
संविधाय दशनेतृणं विभो प्रार्थये व्रजमहेन्द्रनन्दन।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया॥
राधा रासेश्वरी रम्या परमा परमात्मिका।
रासोद्भवा कृष्ण कान्ता कृष्णवक्ष:स्थलस्थिता॥
कृष्ण प्राणाधिका देवी महाविष्णु प्रसूरपि।
सर्वदा विस्णुमाया च सत्य सत्या सनातनी॥
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुण परा।
वृन्दावने च विजया यमुनातटवासिनी॥
गोपाङ्ग नानां प्रथमा गोपिका गोपमातृका।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी॥

वृषभानुसुता कान्ता शान्तिदानपरायणा।
कामा कलावती कन्या तीर्थ पूता सनातनी॥
शुभानि सप्तत्रिंशच्च वेदोक्तानि शतानिच।
सार भूतानि पुण्यानि सर्वनामसु नारद॥

उपर्युक्त स्तोत्र के परम श्रद्धा तथा दृढ़ विश्वास के साथ प्रतिदिन श्री राधिका जी के चित्रपट का पञ्चोपचार से पूजन करके तीन पाठ करने चाहिये।

सर्वव्याधिनाशपूर्वक दीर्घायु की प्राप्ति के लिये महामृत्युंजय का विधान

भगवान श्री शंकर के 'रुद्राध्याय' तथा 'मृत्युंजय' महामन्त्र से भारत के कोने-कोने में अभिषेक किया जाता है। श्रावण में तो इसकी बहार देखने योग्य होती है। हम आज यहां उसी 'मृत्युंजय' महामन्त्र की अर्थ-गम्भीरता पर कुछ विचार करते हैं। यह विचार निश्चय ही परम पुण्य प्रद है।

ॐ हौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमामृतात्। स्वः भुवः ॐ। सः जूं हौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मन्त्र है।

ॐ कार का प्रतीक शिवलिङ्ग है, उसी के ऊपर अविच्छिन्न-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत् अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वास पूर्वक मृत्युंजय महा मन्त्र का जप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त-तीनों 'हौं' और 'जूँ' से अपने समक्ष उपस्थित करते हुए त्रिलोकी में जप करने वाला व्यक्ति श्री त्र्यम्बकेश्वर के प्रति अपने आप का समर्पण कर रहा है। त्र्यम्बकेश्वर की कृपारूपी सुगन्ध फैल रही है और उपासक के रोम-रोम में ऐसी स्फूर्ति होने लगती है कि उसका आध्यात्मिक प्रभाव छिप नहीं सकता। इन्द्रायण (तूँबे) की बेल सूख जाने पर फल बंधन से मुक्त होकर आस-पास की अनन्तता में छिप जाता है, उसी प्रकार जप करके उपासक अपनी मोक्ष की अवस्था को प्रत्यक्ष कर सकता है।

'एकोऽहं बहु स्याम्'—परब्रह्म की यह इच्छा होती है, और महाप्राण की अलौकिक गति प्रस्तुत होती है। उसका सूचन महाप्राण अक्षर 'ह' से

होता है। प्रकृति विकृत होने लगे। पञ्च तन्मात्रा उद्भूत हो शब्द गुण आकाश सृष्टि को झेलने के लिए तत्पर हो जाय, उस दृश्य का आभास 'ओं' की ध्वनि करा रही है। जू=जन्म, ऊ=उद्भव= विकास, विस्तार =शून्य, प्रलय। इस प्रकार 'जूं' सृष्टि की तीनों अवस्थाओं का दिग्दर्शन करा रहा है। सः=पुरुषः=विराट्—यही तो प्रलय के समय अवशिष्ट रहता है। 'पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्, के साथ 'यदापूर्वमकल्पयत्' इन वाक्यों का स्मरण ऐसे समय क्यों नहीं होगा? ऐसी सृष्टि 'भूर्भुवः स्वः' की त्रिलोकी है। उस त्रिलोकी का निवासी उपासक त्र्यम्बकेश्वर के सामने जप यज्ञ कर रहा है और फलस्वरूप वह सहज ही अपुनरा-वृत्तिवाली मुक्ति प्राप्त करता है। ऊपर कहा गया है कि शिवलिङ्ग ॐ कार का प्रतीक है, वह कैसे है—यह जानने के लिये ॐ",,, ॐ के इन तीनों भागों पर विचार करें। उपासक पूर्वाभिमुख बैठता है। जल झेलने वाला भाग 'उ' उत्तर दिशा की ओर जल को बहा कर ले जाता है। '˜' यह भाग आधार है, जो जल हरि को ऊँचे उठाये रहता है। '˜' यह

भाग लिङ्ग के रूप में ऊपर को विराजमान रहता है। किसी भी शिव मन्दिर में जाकर पूर्वाभिमुख रह कर इस दृश्य का साक्षात्कार किया जा सकता है।

(२) महामृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय: भगवान मृत्युंजय के जप-ध्यान से मार्कण्डेयजी, श्वेत राजा आदि के काल भय निवारण की कथा शिव पुराण, स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, पदम् पुराण-उत्तर खण्ड-माघमाहात्म्य आदि में आती है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी मृत्युंजय-योग मिलते हैं। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इन मन्त्र योगों को 'मृत्युंजय' कहा जाता है-

मृत्युर्विमिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय: स्मृत्त:

(रसे- सारसंग्रह, अ. २ ज्वि १)

मन्त्र शास्त्र में वेदोक्त 'त्र्यम्बकं यजामहे' (ऋक् ७।९५।१२, यजु: ३।६०।, अथर्व. १४।१। १७, तैत्ति. स. १।८।६।२, निरुक्त १४।३५) इत्यादि को ही मृत्युंजय नाम प्राप्त है। यों पुराणों में, विविध निबन्ध ग्रन्थों में तथा मृत्युंजय-तन्त्र, मृत्युंजय कल्प, मृत्युंजय पञ्चाङ्ग आदि में इस मन्त्र का भाष्य, विधान, पटल पद्धति, स्तोत्र आदि सब कुछ मिलते हैं। शिवपुराण, सती खण्ड ३८।२१।४२ में इसका

विस्तृत भाष्य है। वहां इसको शुक्राचार्य की 'मृत संजीवनी-विद्या, कहा गया है तथा स्वयं शुक्राचार्य ने ही इसका दधीचि को उपदेश किया है। विष्णु धर्मोत्तर आदि में इसके हवनादि के भेद से अनेक अर्थ-कामसाधक आदि दूसरे भी काम्य प्रयोग बतलाये गये हैं। यथा-

कन्या नाम गृहीत्वा च कन्या नाम करः स्मृतः।
त्र्यम्बकं यजा महेति होमः सर्वार्थसाधकः॥
धत्तूर पुष्पं सघृतं तथा हुत्वा चतुष्पथे।
शून्ये शिवालये वापि शिवात्कामान वाप्नुयात्॥
हुत्वा व गुग्गुल राम स्वयं पश्यति शंकरम्।

(विष्णु धर्म ०२।१२५।२३-२५)

ऋग्विधान आदि में भी ऐसा ही बतलाया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खण्ड के ५९ वें अध्याय में कहा गया है कि भगवान् श्री कृष्ण ने अङ्गिरा की पत्नी को मृत्युंजय ज्ञान दिया था। यहां संक्षेप में उसके जप की विधि दी जा रही है। यद्यपि तन्त्रसार शारदा तिलक आदि एवं मंत्र महार्णव आदि में एक साथ ही त्र्यक्षर, पञ्चाक्षर आदि कई मृत्युंजय मन्त्र बतलाये गये हैं, तथापि यहां सर्वाधिक प्रचलित

'त्र्यम्बक' मन्त्र के ही विनियोग, ध्यान आदि लिखे जा रहे हैं। इससे रोग, भय-दुःख दारिद्रय आदि का नाश तथा सभी कामनाओं की सिद्धि होती है।

साधक को चाहिये कि किसी पवित्र स्थान में स्नान, आचमन, प्राणायाम, गणेश स्मरण पूजन वन्दन के बाद तिथि वारादि का कीर्तन करते हुए इस प्रकार संकल्प करे—

अमुकोऽहं अमुकवासरादौ स्वस्य (यजमानस्य वा) निखिलारिष्टनिवृत्त्ये महामृत्युंजय मन्त्र जपमहं करिष्ये। तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार न्यासादि करना चाहिये।

ॐ अस्य श्रीमहा मृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णि गनुष्टु भश्छदांसिः सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्री बीजं महामृत्युंजय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

यों कह-कहकर हाथ का जल छोड़ दे।

पुनः वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषिभ्यो नमः, मूर्ध्नि। पडिक्त गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, वक्त्रे। सदा शिवमहामृत्युंजय रुद्र देवता यै नमः

हृदि। ह्रीं शक्ले नमः, लिङ्गे। श्रींबीजाय नमः पादयोः॥

उपर्युक्त मन्त्रों से सिर, मुख, हृदय, लिङ्ग तथा चरण का स्पर्श करे।

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से पहले अंगूठे आदि का स्पर्श करते हुए करन्यास करके फिर उन्हीं मन्त्रों से हृदयादि को स्पर्श करते हुए हृदयादिन्यास करना चाहिए।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा।

ऐं हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवतेरुद्राय अष्टमूर्तये माम्जी वय।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा।

ॐ हौं ॐजूं सः भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात्। ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रौं।

ॐ हौं ॐ जूं सःभूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीप ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मन्त्राय। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नि त्राय उज्ज्वलज्वाल

मांरक्षआधोराय। इस मंत्र के जप में ध्यान परमावश्यक है। शिव पुराण में यह ध्यान इस प्रकार बतलाया गया है—**हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ युगला दुद्धृत्य तोयं शिरा सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतंस्वाङ्के सकुम्भौ करौ। अक्षस्त्रङ् मृगस्त ममबुजगतं मूर्द्धस्थ चन्द्रस्त्रावत्-पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्।** (सतीख, ३८।२४)

ध्यान का स्वरूप यह है कि भगवान् मृत्युंजय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों कर-कमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उडेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है। शेष दो हाथ में वे रुद्राक्ष तथा मृग धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और ठनके शिरःस्थ चंद्र से निरंतर अमृत वृष्टि के कारण उनका शरीर भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है उनके वामाङ्ग-भाग में गिरिराज नन्दिनी भगवती उमा विराजमान हैं। इस प्रकार ध्यान करके रुद्राक्ष माला से मन्त्र का जप करना चाहिये। मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

करन्यास	हृदयादिन्यास
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी से अंगूठों को छुए)	हृदयाय नमः (पांचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करे)
तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों तर्जनी अंगुलियों को अंगूठों से मिलाये)	(शिरसि स्वाहा) (सिर का स्पर्श करे)
मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट् (शिखा छुए)
अनामिकाभ्या नमः।	कवचाय हुम्। (दाहिने हाथ से बाएं कंधे तथा बाएं हाथ से दाहिना कंधा छुए।)
कनिष्ठकाभ्यां नमः।	नेत्र त्रयाय वौषट्।
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

'ॐ हौं। जूं सः' ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमि व बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं हौं ॐ। यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। इसका प्राय: सवा लाख जप सर्वार्थ साधक माना गया है। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये।

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृह्याणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरारोगैः पीडित कर्म बन्धनै॥

जप के अन्त में दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन आदि कराना-करना चाहिये।

सर्वव्याधि विघ्ननाश के लिये लघु मृत्युंजय जप

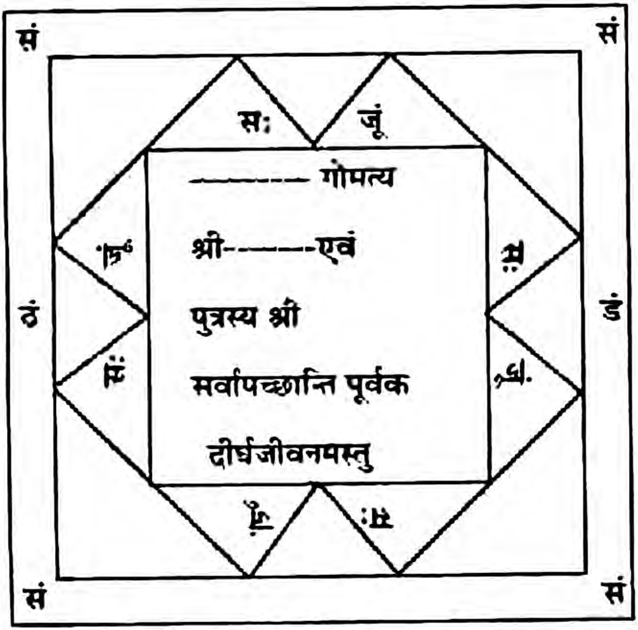
ॐजूं सः (नाम जिसके लिये किया जाय) पालय पालय सः जूंॐ।

इस मन्त्र का ११ लाख जप तथा एक लाख दस हजार दशांश का जप करने से सब प्रकार के रोगों का नाश होता है इतना न हो तो कम-से-कम सवा लाख जप और साढ़े बारह हजार दशांश जप अवश्य करना चाहियें। इसके आगे लिखा यंत्र भी हाथ में बांध देना चाहिये।

इसे भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर गुगुल की धूप देकर पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बायें हाथ में बांध देना चाहिये। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी का नाम यथा स्थान) लिख देना चाहिये।

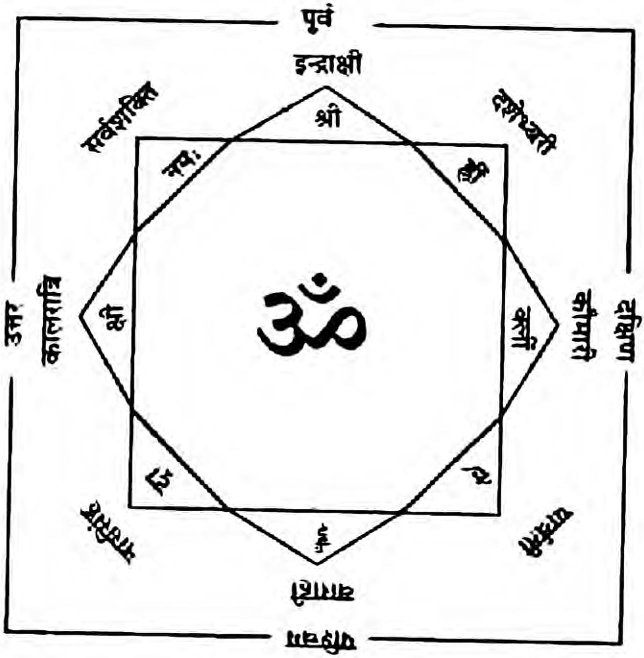
इन्द्राक्षी-यन्त्र को विभूति में लिखकर निम्नलिखित प्रकार से जप करें—

श्रीमहा मृत्युंजय-कवच यन्त्रम्



ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रमहामन्त्रस्य शची पुरन्दर ऋषिः। अनुष्टुपछन्दः। इन्द्राक्षी दुर्गा देवता। लक्ष्मीर्बीजम्। भुवनेश्वरी शक्तिः भवानीति कीलकम्, मम इन्द्राक्षी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः। ॐ इन्द्राक्षीत्युङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मीरीति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ महेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अम्बुजाक्षीत्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ कौमारीति करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

इन्द्राणी-यन्त्र



ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः। ॐ महा-लक्ष्मीरीति शिर से स्वाहा। ॐ माहेश्वरीति शिखायै वषट्। ॐ अम्बुजाक्षीति कवचाय हुम्। ॐ कात्यायनीति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कौमारीत्य स्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवस्वरोमिति दिगबन्धः।

सर्व कार्य सिद्धि के लिये

(१)

ॐ नमो भगवते सर्वरक्षकाय ह्रीं ॐ मां रक्ष-रक्ष सब सौभाग्य भाजनं मां कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का हरिद्रा अथवा तुलसी की माला पर प्रतिदिन १०८ बार जप करना चाहिये और जप के अनन्तर रामचरित मानस के उत्तर काण्ड के निम्नलिखित ग्याहवें दोहे के बाद वाली चौपाई अर्थात् 'प्रभुबिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिव्य सिंघासन मांगा।' से लेकर उत्तर काण्ड के चौदहवें दोहे अर्थात् 'वरनि उमापति रामगुन हरषि गए कैलास। तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब विधि सुखप्रद वास॥' तक पाठ करना चाहिये।

रक्षा-रेखा–मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर जल या शुद्ध कोयल से रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मण जी ने सीती जी की कुटी के आस-पास जो रक्षा रेखा खींचीं थी, उसी लक्ष्य पर निम्नलिखित रक्षा मंत्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुतियों द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिये। रक्षा-रेखा का मन्त्र एक बार सिद्ध कर लेने

पर वह जीवन भर के लिये सिद्ध हो जाता है दुबारा सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

[रक्षा-रेखा-मन्त्र]

मामभिरक्षय रघुकुलनायक
धृतवर चाप रुचिर कर सायक॥

विविध-कामना-सिद्धि के मन्त्र

(१) विपत्ति-नाश के लिये

राजिव नयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक॥

(२) संकट नाश के लिए

जौं प्रभु दीन दयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥

(३) कठिन क्लेश नाश के लिये

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महा मोह निसि दलन दिनेसू॥

(४) विघ्न-विनाश के लिये

सकल विघ्न व्यापहिं नहीं तेही। राम सुकृपां बिलोकहिं जेही॥

(५) खेद-नाश के लिये

जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥

(६) महामारी, हैज़ा और मरीका प्रभाव न पड़े, इसके लिये

जाय रघुबंस वनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानु॥

(७) विविध रोगों तथा उपद्रवों की शान्ति के लिये

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥

(८) मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिये

हनुमान अंगद रन गाजे। हांक सुनत रजनीचर भाजे॥

(९) विष-नाश के लिये

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। काल कूट फलु दीन्ह अमी को॥

(१०) अकाल मृत्यु-निवारण के लिये

नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निच पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहिं बाट॥

(११) भूत को भगाने के लिये

प्रवनउं कुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदयं आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

(१२) नजर झाड़ने के लिये

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी। निरखहिं छवि जननीं तृन तोरी॥

(१३) खोई हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिये

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

(१४) जीविका-प्राप्ति के लिये

विश्व भरन पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस कोई॥

(१५) दरिद्रता दूर करने के लिये

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद धन दारिद दवारि के॥

(१६) लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख-संपत्ति बिनहिं बोलाएं। धरमसील पहिं जाहि सुभाएं॥

(१७) पुत्र-प्राप्ति के लिये

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित्र कर गान॥

(१८) सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपत्ति नाना बिधि पावहिं॥

(१९) ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिये

साधक नाम जपहिं लय लाएं। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएं॥

(२०) सर्व-सुख प्राप्ति के लिये

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिं भगति गति संपति नई॥

(२१) मनोरथ-सिद्धि के लिये

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

(२२) कुशल-क्षेम के लिये

भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनक सुता रघुबीर बिवाहू॥

(२३) मुकदमा जीतने के लिये

पनव तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक विज्ञान निधाना॥

(२४) शत्रु के सामने जाना हो, उस समय के लिये

कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा॥

(२५) शत्रु को मित्र बनाने के लिये

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

(२६) शत्रुता-नाश के लिये

बयरु नकर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥

(२७) शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिये

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥

(२८) विवाह के लिये

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु, ब्याह साज संवारिकै।
मांडवी श्रुत की रति, उरमिला कुंअरि हंकारिकै॥

(२९) यात्रा की सफलता के लिये

प्रविसि नगर कीजै सब काजा। हृदयं राखि कोसलपुर राजा॥

(३०) परीक्षा में पास होने के लिये

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहि कृपा अघाती॥

(३१) आकर्षण के लिये

जेहि के जेहिं पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइन कछु संदेहू॥

(३२) स्नान से पुण्य लाभ के लिये

सुनि समुझहिं जन मुदित मन, मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु, साधु समाज प्रयाग॥

(३३) निन्दा की निवृत्ति के लिये

राम कृपा अबरेव सुधारी। बिबुध धारि भइ सुनद गोहारी॥

(३४) विद्या-प्राप्ति के लिये

गुरु गृह गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई॥

(३५) उत्सव होने के लिये

सिय रघुबीर विवाहु जे, सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुं सदा उछाहु, मंगलायतन राम जसु॥

(३६) यज्ञोपवीत धारण करके उसे सुरक्षित रखने के लिये

जुगुति वेधि पुनि पोहि, अहिं राम चरित बरताय।
पहिरहिं सज्जन विमल, उर सोभा अति अनुराग॥

(३७) प्रेम बढ़ाने के लिये।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥

(३८) कातर की रक्षा के लिये

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। यहि अवसर सहाय सोइ होऊ॥

(३९) भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिये

राम चरन दृढ़ प्रीति कर, बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न जानइ नाग॥

(४०) विचार शुद्ध करने के लिये

ताके जुग पद कमल मनवाऊं। जासु कृपां निरमल मति पावऊं॥

(४१) संशय-निवृत्ति के लिये

राम कथा सुन्दर कर तारी। संशय बिहग उड़ा बनिहारी॥

(४२) ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिये

अनुचित बहुत कहेउं अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता॥

(४३) विरक्ति के लिये

भरत चरित करी नेमु, तुलसी जे सादर सुनहिं।
सीयाराम पद प्रेमु, अवसि होय भवरस विरति॥

(४४) ज्ञान-प्राप्ति के लिये

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा॥

(४५) भक्ति की प्राप्ति के लिये

भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु, देहु दया करिराम॥

(४६) श्री हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिये

सुमिरि पवन सुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥

(४७) मोक्ष-प्राप्ति के लिए

सत्य संध छांडे सर लच्छा। काल सर्प जनु चले सपच्छा॥

(४८) श्री सीतारामजी के दर्शन के लिये

नील सरोरूह नील मनि, नीर रूप धर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि, कोटि-कोटि सत काम॥

(४९) श्री जानकी जी के दर्शन के लिये

जनक सुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥

(५०) श्रीरामचन्द्र जी को वश में करने के लिये

केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा सील निधान।
देखि भानु कुल भूषनहिं बिसरा सखिन्ह अपान॥

(५१) सहज स्वरूप-दर्शन के लिये

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना। विश्वास प्रगटे भगवाना॥

बालक के ज्वर -नाश के लिये

गूगल, बच, कूट, मैनसिल, शिलाजीत, हल्दी, आमी हल्दी, नीम के पत्ते और शहद-(सब चीजें असली होनी चाहिए) सबको बराबर मात्रा में कूट कर असली घृत में मिलाकर धूप बना ले और ज्वर होने पर-'दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं व्यापा॥' का १०८ बार जप करके अग्नि

में डाल कर रोगी के समीप धूप दे तो ज्वर का वेग, विशेष रूप से बालकों के ज्वर का जोर तुरंत ही नष्ट हो जाता है और बालक नीरोग होता है।

१. सब अनिष्टों के नाश के लिये

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णाया कुण्ड मेधसे।
सर्व व्याधि विनाशाय प्रभो माम मृतं कृधि॥

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जगते ही बिना किसी से कुछ बोले तीन बार जप करने से अनिष्ट का नाश होता है। इसका अनुष्ठान ५१००० मन्त्र का जप तथा ५१०० दशांश हवन से सम्पन्न हो जाता है।

२. विपत्ति-नाश के लिये

राजिवनयन धरे धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक॥
रामाय रामभद्राय बेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

ब्राह्म मुहूर्त्त में उठकर स्नान करके प्रतिदिन उपर्युक्त अर्धाली सहित मन्त्र की सात माला दाने की से जप करना चाहिये और प्रत्येक माला की समाप्ति पर धूप-गुग्गुल की अग्नि में आहुति देनी चाहिये। सातों माला पूरी होने पर इस भस्म को यत्न से उठाकर रख लेना चाहिये और प्रति दिन कार्य में लगते समय उसे ललाट पर लगा लेना

चहिये यह जप तथा भस्म-धारण प्रति दिन करते रहने से विपत्तियों का नाश और कार्य में सफलता की प्राप्ति होती है।

३. सब प्रकार की विपत्तियों के नाश के लिये और सुख-सौभाग्य की प्राप्ति के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्री नमो भगवते हनुमते मम कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल आसाध्यं साधय मां रक्ष रक्ष सर्व दुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहा।

मंगलवार से प्रारम्भ करके इस मन्त्र का प्रति दिन १०८ बार जप करता रहे और कम से कम सात मङ्गलवार तक तो अवश्य करे। इससे इसके फलस्वरुप घर का पारस्परिक विग्रह मिटता है, दुष्टों का निवारण होता है बड़ा कठिन कार्य भी आसानी से सफल हो जाता है।

४. विपत्ति नाश सुख लाभ

पुनि मन बचन करम रघुनायक। चरण कमल बंदौं सब लायक॥
राजिव नयन धरे धनु सायक। भगत विपति भंजन सुखदायक॥

ॐ नमो भगवते सर्वेश्वराय श्रियः पतयं नमः॥

उपर्युक्त चौपाई सहित इस मंत्र का प्रति दिन १०८ बार कम से कम जप करे। इससे विपत्ति नाश

सुख लाभ और स्त्रियों के द्वारा जपे जाने पर उनका सौभाग्य अचल होता है।

५. विपत्ति-नाश के लिये

हे कृष्ण द्वारिका वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
आपद्भिः परिभूतां मां त्रायस्वाशु जनार्दन॥

इस मंत्र का कम-से-कम १०८ बार स्वयं जप करे। कुछ दिन जपने के बाद स्वप्न में आदेश होना सम्भव है। अनुष्ठान के लिये ५१००० जप और दशांश के लिये ५१०० जप या आहुतियां आवश्यक हैं।

६. संकट दूर होने के लिये

हा कृष्ण द्वारिका वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
आपद्भि परिभूतां मां त्रायस्वाशु जनार्दन॥
हा कृष्ण द्वारिका वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
कौरवैः परिभूतां मां किं न त्रायसि केशव॥

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों का ३२ हजार जप करने से बड़े-बड़े संकट दूर हो जाते हैं।

७. अकस्मात् आई विपत्ति के निवारण के लिये

हनूमन् सर्वधर्मज्ञ सर्व कार्य विधायक।
अकस्मादागतोत्पातं नाशायाशुनमोऽस्तुते॥

अथवा

हनूमन्न ञ्जनीसूनो वायुपुत्र महाबल।
अकस्मादागतोत्पतं नाशयाशु नमोऽस्तुते॥

प्रतिदिन तीन हजार के हिसाब से ११ दिनों में ३३ हजार जाप हो, फिर ३३०० दशांश हवन या जप करके ३३ ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाय इससे अकस्मात् आयी हुई विपत्ति सहज ही टल जाती है।

१. विघ्ननाशपूर्वक सर्वार्थ-सिद्धि के लिये

ॐ गं गणपतये नमः

श्री गणेश जी का पूजन करके या उन्हें नमस्कार करके उपर्युक्त मंत्र का प्रति दिन भोजन से पूर्व शुद्ध होकर पांच हजार जप करें। यों २५० दिनों तक करने का विधान है, कम-से-कम २५ दिन तो करना ही चाहिये। अनुष्ठान के समय ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

२. सर्व कार्य की सिद्धि के लिये

ॐ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामित्वां धर्मसम्मूढ़चेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चतं ब्रूहितन्मे शिष्यस्तेऽहंशेधिमां त्वां प्रपन्नम्॥

प्रतिदिन विधिवत् भगवान् श्री कृष्ण का या भगवान् श्री विष्णु का पूजन करके उपर्युक्त मन्त्र

का १२ दिन में २५००० जप करने से स्वप्न के द्वारा कार्य सिद्धि का ज्ञान होता है।

३. अनिष्टनाश पूर्वक सर्वार्थ सिद्धि के लिये

ॐ रां श्रीं ऐं नमो भगवते वासुदेवाय ममानिष्टं नाशय नाशय मां सर्वसुख भाजनं सम्पादय सम्पादय हूं हूं श्रीं ऐं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रति दिन १०८ बार जप करना चाहिये।

४. अभीष्ट की सिद्धि के लिये

नमः सर्वनिवासाय सर्वशक्ति युताय ते।
ममाभीष्टं कुरुष्वाशु शरणागत वत्सल॥

इस मन्त्र का २१००० बार जप करना या कराना चाहिये तथा दशांश के लिये २१०० जप अथवा हवन करना चाहिये।

५. सब प्रकार की मनोकामना की पूर्ति के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते राधा प्रियाय राधा रमणाय गोपीजनवल्लभाय ममाभीष्टं पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को कदम्ब काष्ठ की छोटी पीठिका (चौकी) पर अष्टगन्ध अथवा कपूर और केशर से

अनार की कलम से लिखकर षोडशोपचार से पूजन करे। परन्तु प्रति दिन का जप १८०० से कम नहीं होना चाहिये। कुल जपसंख्या सवा लाख है। फिर साढ़े बारह हजार दशांश होम के लिये जप करना चाहिये।

६. रामो विरामो विरजो मार्गो नेयोनयेऽनयः।

रक्षां कुरु श्रियंदेहि त्राहि मां शरणागतम्॥

उपर्युक्त मन्त्र के द्वारा प्रति श्लोक को आद्यान्त में सम्पुटित करके 'विष्णु सहस्र नाम' के २१ पाठ प्रतिदिन किसी भी मनोऽभिलाषा की पूर्ति के लिये किया जाय। पाठ करने से पूर्व भगवान् विष्णु के चित्रपट का पञ्चोपचार से पूजन कर लिया करे।

१. दरिद्रता के नाश तथा धनसम्पत्ति की प्राप्ति के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्व सम्पदं देहि देहि ममा लक्ष्मीं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय १०८ घृत की आहुति देकर मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर प्रतिदिन १०८ मन्त्र का जाप करते रहना चाहिये।

२. विपत्ति नाश, सर्व कार्य-सिद्धि और धन प्राप्ति के लिये

ॐ ह्रीं श्रीं ठंठंठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्र से सात विल्वपत्र [त्रिदल] शिव लिङ्ग पर चढ़ाने चाहिये। लिङ्ग पार्थिव हो या शिवालय में प्रतिष्ठित हो विल्वपत्र चढ़ाने के बाद इसी मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये। जप घर पर कर सकते हैं या मन्दिर में जाकर। उपयुक्त स्थान न हो तो मन्दिर में ही करना चाहिये। जब तक कार्य सिद्धि न हो, प्रतिदिन जप करना चाहिये।

३. धन-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये।

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।
तां देवीं प्रेपयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः॥

कमल का फूल, श्वेत दूर्वा, गुगल, गो-घृत इन सब चीजों को मिलाकर लगातार २१ दिनों तक प्रति दिन १०८ बार मन्त्र जप करके हवन करे।

४. ॐ श्रींश्रियै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से श्री वाल्मीकिय रामायण, सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक के अन्त में श्लोक पढ़कर घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिये। तदनन्तर सर्ग समाप्त होने पर।

ॐ राम भद्र महेष्वासर रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्त कास्माकं रक्षां देहि श्रियंचते॥
श्रींश्रियै नमः मह्यं श्रियंदेहि-देहि दापय दापय स्वाहा।

इस मन्त्र से सर्ग के जितने श्लोक हों, उतनी घी की आहुति देनी चाहिये। इस अनुष्ठान का आरम्भ दीपमालिका की रात्रि को दीपक जला देने के पश्चात करना चाहिये।

आठ दिनों तक प्रतिदिन सात सर्गों का और नवें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिनों में पाठ पूरा करना चाहिये। अथवा प्रतिदिन सात, तीन या एक सर्ग का (सुविधानुसार) पाठ करके अड़सठ दिनों में सात, तीन या एक पाठ पूरे करने चाहिये। इस प्रयोग से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

५. ॐ तारा त्रिपुरायै नमः ऋद्धिं-वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र की ११ (१०८ दाने की) माला का जाप प्रतिदिन रात्रि को दस बजे के बाद करना

चाहिये। जप करते समय दीपक जलते रहना चाहिये और अपने सुविधानुसार किसी भी चीज का पूरा तीन पाव (साठ तोले) भोग लगाकर जप पूरे होने के बाद सब को बांट देना चाहिये।

सर्पभय से मुक्ति के लिये

नवनागस्तोत्रम्

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं चकम्बलम्।
शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥१॥
एतानि नव नामानि नागा नांच महात्मनाम्।
सायं काले पठेनित्यं प्रातःकाले विशेषतः॥
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥२॥

इसके नित्य पाठ से सर्प काटने का भय नहीं रहता।

ऋण-मोचन के लिये

कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर-इन सब का चूर्ण लाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गो-घृत के द्वारा ४४ दिनों तक प्रति दिन सात बार हवन करे। मन्त्र की जप-संख्या कम-से-कम १०,००० है, जो ४४ दिनों में पूरी होनी चाहिये। ४३ दिनों

तक प्रति दिन २२८ मन्त्रों का जाप हो और ४४ वें दिन १९६ मन्त्रों का। तदनन्तर १००० मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना आवश्यक है मन्त्र यह है-

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममा लक्ष्मी नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।

दुःस्वप्न-दोष निवारण मन्त्र

(१)

**ॐअच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं चैव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम्॥
शुचिः पूर्व मुखः प्राज्ञो दशकृत्वश्चयो जपेत्।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नःशुभवान्भवेत्॥**

अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य जनार्दन, हंस और नारायण।

इन आठ नामों का शुद्ध हो पूर्व मुख बैठकर दस बार जप करने से दुःस्वप्न शुभकारक हो जाता है।

(२)

**ॐनमः शिवं दुर्गों गणपतिं कार्तिकेयं दिनेश्वरम्।
धर्मं गङ्गाच तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्॥**

नामा न्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा चयो जपेत्।
वाच्छितं च लभेत् सोऽपिदुःस्वप्न शुभवान्भवेत्॥

शिव, दुर्गा, गणपति, कार्तिकेय, सूर्य, धर्म, गङ्गा, तुलसी, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती।

जल से स्नान करके इन ग्यारह नामों का उच्चारण करके नमस्कार करने से दुस्सह स्वप्न शुभकारक होता है और वाञ्छित फल देता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गति नाशिन्यै महामायायैं स्वाहा। कल्प वृक्षेति लोकानां मन्त्रा सप्तदशाक्षरः।
शुचिश्च दशधाजपूत्वा दुःस्वप्नः सुखवान् भवेत्।
उपर्युक्त मन्त्र का पवित्र होकर दस बार जप करने से दुःस्वप्न सुख देने वाला हो जाता है।

गजेन्द्र-स्तुति पाठ से भी दुःस्वप्न दोष का नाश होता है। गजेन्द्र-स्तवन इसी में अलग छपा है।

भूत-प्रेत बाधा एवं गाय की पशु रोग से निवृत्ति के लिये

स्थाने हृषी केश तब प्रकीर्त्या जगत हृष्यत्य नुरज्यतेच॥
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वेनमस्यन्तिच सिद्ध संधाः।
(श्रीमद्भागवद् गीता ११।३६)

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये ३००० जप करे इसके बाद जब कभी आवश्यकता हो, किसी में भूत प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र या बर्तन में गङ्गाजल या कुएं का जल लेकर सात बार मन्त्र बोलकर उसमें दाहिनें हाथ की तर्जनी अंगुली फिरा दे फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिंला दे बांकी उसके सारे अङ्गों पर और सारे स्थान पर छिड़क दे। जब तक रोगी की प्रेत बाधा का नाश न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार इस प्रयोग को करते रहें।

इसी प्रकार अभिमन्त्रित जल को सानी के साथ मिलाकर या किसी प्रकार भी गाय को पिला देने पर उसकी 'पशु-रोग' से रक्षा हो जाती है।

श्रेष्ठ वर-प्राप्ति के लिये कन्या के द्वारा

हे गौरि! शंकरार्धाङ्गि! यथात्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभान्॥

श्री पार्वती देवी का पूजन करके श्रद्धा विश्वास पूर्वक इस मन्त्र का प्रति दिन पांच माला जप करे। नहीं हो सके तो एक माला अवश्य करे।

श्री पार्वती जी का पूजन करके श्रीरामचरित मानस के बालकाण्ड के २३४ दोहे बाद 'जय जय

गिरिवर राजकिसोरी।' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।' २३६ दोहे तक प्रतिदिन श्रद्धा विश्वास से पाठ करे।

जय जय गिरिवर राज किसोरी।
जय महेश मुख चंद चकोरी॥
जय गज बदन षडानन माता।
जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना।
अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव बिभव पराभवकारिनी।
बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥

पति देवती सुतीय महुं मातु प्रथम तवरेख।
महिमा अमितन सकहिं कहि सहस सारदासेष॥

सेवत तोहि सुलभ फलचारी।
बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे।
सुर नर-मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथ जानहु नीकें।
बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेउ प्रगट न कारन तेही।
अस कहि चरन कहे वैदेही॥

विनय प्रेम बस भई भवानी।
खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियं प्रसादु सिर धरेऊ।
बोली गौरि हरषु हियं भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा।
सो बरु मिलिहि जाहिं मनुराजा॥

मनुजाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
ऐहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियं हरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाई कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

(श्रीरामचरितमानस-बालकाण्ड दोहा २३५-३६)

भगवत्कृपा से पुत्र की प्राप्ति के लिये

(१) रविवार के दिन 'सर्पाक्षी' को जड़, डाली तथा पत्तों समेत उखाड़ लायें। फिर एक वर्ण वाली गौ के दूध के साथ उसे कुमारी के द्वारा पिसवाकर एक ही वर्ण वाली गौ के दूध के साथ मिलाकर

रजो दर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से छठे दिन तक तीन दिन पीये। दवा की मात्रा एक तोला प्रतिदिन मिश्री मिलाकर दूध भात का भोजन करे। अधिक परिश्रम न करे। दवा पीने से पूर्व से नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला (१०८ दाने) श्रद्धा विश्वास पूर्वक अवश्य जप कर ले।

ॐ नमो भगवते वासु देवाय।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।

देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गता॥

तदनन्तर प्रतिदिन दवा पीने के पूर्व उपर्युक्त 'देवकी सुत गोविन्द........' मंत्र की एक माला का जप करले। साथ ही नीचे लिखे(७२) यन्त्र का भी प्रयोग करें।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बायीं भुजा, कमर या कण्ठ में तांबे के ताबीज में डालकर धूप देकर धारण कर ले।

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

(२) हरिवंश पुराण के श्रवण से भी पुत्र प्राप्ति होती है।

सुख पूर्वक-प्रसव होने के लिये

प्रसव होने में अधिक देर होती हो और गर्भवती स्त्री-प्रसव वेदना से छटपटा रही हो तो वट के पत्ते पर नीचे लिखा सुख प्रसव-मन्त्र तथा बत्तीसा यन्त्र लिखकर उसके मस्तक पर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है।

अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी।
तस्याः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

मिल सके तो, जिसके फूल न आये हों, ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ सिर के सामने बालों से बांध देनी चाहिये। इससे बिना कष्ट के सहज प्रसव हो जाता है; परन्तु सन्तान प्रसव होने के साथ ही उसी क्षण तुरंत उन बालों समेत उसे कैंची से काट देना चाहिये।

मृतवत्सानिवारण मन्त्र

क्रूं क्रूं क्रूं दूं दूं दूं दुर्गे दुर्गे महादुर्गे नाशय नाशय हन हन पच पच मथ मथ बन्ध बन्ध हिस्रान् महाषष्ठीरूपेण इमं बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविनं कुरु कुरु हां श्रीं क्रूं दूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र को नीचे लिखे चौवन के यन्त्र सहित भोजपत्र पर लिखकर तांबे के ताबीज में रखकर गुगल की धूप देकर गर्भ के पांचवे महीने में गर्भिणी की कमर में धारण करा दे। बालक के जन्म लेने पर कमर से खोल कर बालक के गले में धारण करा दे। इससे मृतवत्सा (जिसके बच्चे मर जाते हैं) का वह बच्चा नहीं मरेगा।

१५	२०	१९
२२	१८	१४
१७	१६	२१

चेचक रोग के निवारण के लिये शीतला की प्रार्थना का मन्त्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रूं श्रैं श्रः ॐ खरस्थां दिगम्बरां बिकटनयनां तोयस्थितां भजामि स्वाहा स्वाङ्गस्थां प्रचण्डरूपां नमाम्यात्म विभूतये।

इस मन्त्र को ग्यारह बार श्रद्धा पूर्वक उच्चारण करते हुए जिसको शीतला निकली हो उसको चिमटे या मोर पंख से झाड़ दे और इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल उसे पिला दे तथा उसके बदन पर उसके छीटे दे दे। जब तक शीतला शान्त न हो जाय तब तक प्रतिदिन सुबह शाम दो बार यों करते रहें।

प्रेत बाधा नाश के लिये

मङ्गलवार के दिन यन्त्र लिखकर रोगी के बांध दें। फिर ॐभूर्भुवः स्वःतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। इस गायत्री मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके उक्त जल रोगी को पिलादे तथा उसके सारे अङ्गों पर छिड़क दे। यन्त्र बंधा रहे और गायत्री प्रयोग प्रति दिन दो बार किया जाय।

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	०८	१
४	५	२६	२९

प्रवास में सुविधा प्राप्ति के लिये

आप किसी यात्रा में हैं और किसी अपरिचित स्थान में आपको रुकना है। स्वाभाविक है कि आप चाहेंगे कि वहां ठहरने की तथा भोजन आदि की सुव्यवस्था आपको सरलता से प्राप्त हो जाय इसके लिये निम्न मन्त्र उज्जीवित कर रक्खें। होली अथवा दीपावली की रात्रि में तथा चन्द्र-सूर्य ग्रहण के समय का १०८ बार जप करने से वह उज्जीवित हो जायेगा। इन अवसरों पर आपको प्रत्येक बार इतना जप करते रहना चाहिये अन्यथा मन्त्र आपके लिये प्रसुप्त हो जायेगा।

मंत्र

गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषुच।
अशनं वसनं चैव ताम्बूलं तत्र कल्पय॥

प्रयोगः-जहां आपको ठहरना है, उस स्थान की सीमा में पहुँच कर इस मन्त्र को सात बार पढ़े मन्त्र पढ़ते समय सफेद दूर्वा के तीन छोटे टुकड़े हाथ में रक्खें। मन्त्र को सात बार पढ़कर दूर्वा के टुकड़ों को शिखा या बालों में उलझा दें। ठहरने के स्थान पर सब व्यवस्था मिलने तक इन टुकड़ों को केशों में उलझा रहने दें। आपको यदि लगता है कि ठीक समय पर सफेद दूर्वा नहीं मिलेगी तो उसे साथ ले जा सकते हैं। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक (एक दिन-रात) उखाड़ी दूर्वा काम देती है।

सर्प भय से रक्षा

सर्प घर में या सामने है तो मन्त्र का जप करने से वह आप पर आक्रमण नहीं करेगा। यदि कहीं अंधेरे में, बन में या ऐसे स्थान में जाना है तो पुष्य नक्षत्र में गिलोय (गुडूची) लाकर उसके छोटे टुकड़ों की माला बनाकर सौ बार मन्त्र का जाप करके वह माला गले में पहिन कर जाने से सर्प का भय नहीं रहेगा।

मन्त्र-मुनिराजं आस्तीकं नमः।

अग्निशामक प्रयोग

कहीं आग लगी हो तो मन्त्र को पढ़ते हुए सात अञ्जलि जल अग्नि में डाल देने से अग्नि देव शीघ्र शान्त हो जाते हैं। इस मन्त्र को होली दीपावली तथा ग्रहणों में १०८ बार जप करके उज्जीवित रखना चाहिये।

मन्त्र-ॐ नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः।

इस मन्त्र को पढ़कर रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ दाहिनी भुजा में बांध लेने से अचानक अग्नि से जलने का भय नहीं रहता।

किसी वस्तु पर या अङ्ग पर घी कुआर का गूदा भली प्रकार लगाकर सुखा दिया जाय तो उस वस्तु या अङ्ग को अग्नि जला नहीं पाता। यदि किसी वस्त्र को तीन बार घी कुआर के रस में भिगोकर सुखाया जाय तो वह वस्त्र सर्प या अग्नि रक्षित हो जाता है।

ताप, तिजारी, मथबा, आधा शीशी के नाश के लिये

मोर-पंख से झाड़ें।

ॐकामर देश कमक्षा देवी, तहां वैसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक रोलै, एक

पक्षीले। एक ताप तिजारी इकतरा मथवा आधा शीशी टौरै। उतरै तौ उतारौ, चढ़ै तौ मारौ। ना उतरै तो गगुं रुड़ मोर हंकारौ। सवद साचा पिंड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा।

बिच्छू जहर उतारने के लिये

बन्धन देकर नीम या आम की डाली अथवा मोर पंख से झाड़ें।

ॐ काला बिच्छू कंकड़वाला। सोने का, रूपे का प्याला। मैं क्या जानूं, बिच्छू, तेरी जात। जन्म्या चौदस मावस की रात। चढ़ी को उतारो, उतरती को मारो। सहब मंकड़ी फुकारो फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

किसी भी कष्ट से छूटने के लिये।

१०८ बार उच्चारण करें।

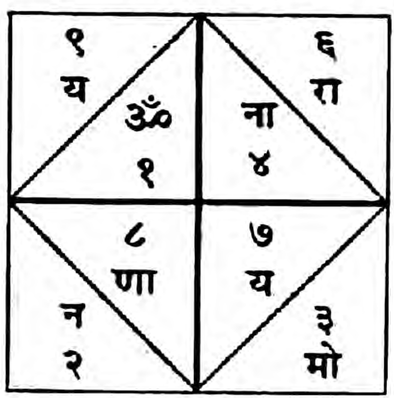
ॐ रां रां रां रां रां रां रां रां कष्टं स्वाहा। ऐसे हजारों साबर मंत्र हैं। इनसे काम होते भी देखे गये हैं। सम्भव है कि विश्वास की प्रधानता भी इनकी सफलता में एक प्रधान कारण हो।

कुछ उपयोगी यंत्र

मंत्रों की भांति ही यंत्र भी बड़े प्रभावशाली होते हैं। कुछ यंत्रों के साथ मंत्र भी होते हैं और केवल

अङ्गात्मक यंत्र होते हैं। विभिन्न कार्यों की सिद्धि और रोग निवृत्ति आदि के लिये काम में लाये जाते हैं। प्रत्येक यंत्र साधारण तथा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिख कर तांबे के तावीज में भर कर गुग्गुल का धूप देकर स्त्रियों के बायें हाथ या गले में एवं पुरुषों के दाहिने हाथ या गले में बांधा जाता है। मंत्रात्मक यंत्र को तो चंद्रग्रहण और सूर्य ग्रहण के समय मंत्र का कम-से कम १०८ बार जप करके पूजन कर लेना चाहिये। केवल यंत्र हो तो उसका पूजन कर लेना चाहिये। विश्वास पूर्वक इनका सेवन करने से लाभ होता है। यहां ऐसे ही कुछ यंत्र दिये जाते हैं।

भगवान विष्णु की प्रसन्नता तथा उनके दर्शन के लिये



इस बीसा यंत्र में 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र संख्या क्रम से लिखा है। इसको चन्दन की पीठिका (चौकी) पर सफेद चन्दन से तुलकी डंडी से लिखकर या तांबे के पत्तरपर खुदवा कर प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये तथा भगवान् विष्णु की पूजा करके इस मंत्र का कम-से-कम १०८ बार जप करना चाहिये। साथ ही प्रत्येक श्लोक के आदि-अन्त में इसी मंत्र का सम्पुट लगा कर 'विष्णु सहस्र नाम' का पाठ करना चाहिये।

(२००) एकतरा ज्वरनाश के लिये

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

(३००) तिजारी ज्वरनाश के लिये

१४२	१४१	२	७
६	३	१४६	१४५
१४८	१४३	८	१
४	५	१४४	१४७

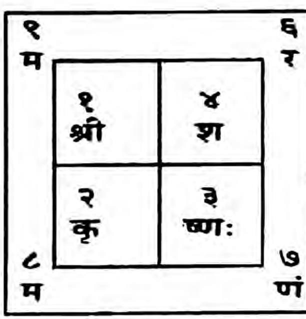
(१८) ज्वरनाश के लिये

१	८	२	७
६	३	५	४
७	२	८	१
४	५	३	६

भगवान् श्रीकृष्ण की शरणागति और उनका आश्रय प्राप्त करने के लिये

विश्वास पूर्वक आगे लिखे बीसा यंत्र का पञ्चोपचार से पूजन करके प्रतिदिन 'श्रीकृष्णः शरणं मम' इस मन्त्र की (१०८ तुलसी के दानों की) ५ माला श्रद्धा भक्ति पूर्वक जप करे।

यह बीसा यंत्र तांबे के पत्तर पर खुदवाकर श्री गङ्गाजी या श्री यमुना के जल से धोकर धूप देकर पूजा में रक्खे।



सर्प, चोर, निशाचर, शत्रु, ग्रह, भूत-पिशाच के भय से बचने तथा विषम ज्वर और विपत्ति-नाश के लिये

इस चौंतीसा यंत्र को सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण या दीपावली की रात्रि को ३४ बार लिखकर सिद्ध करले। सफेद कागज या भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगंध-(सफेद चन्दन, लाल चन्दन, केसर, कुंकुम, कपूर, कस्तूरी, अगर, तगर) के द्वारा लिखे। इससे यंत्र सिद्ध हो जायेगा शीघ्र सिद्ध करना हो तो शनिवार के दिन १०८ बार उपर्युक्त प्रकार से लिखे और धोबी घाट पर बैठकर एक-एक बार लिखकर यंत्र धोबी घाट से भरे कुंड के जल में डालता जाय। फिर उन १०८ यंत्रों को इकट्ठा करके बहते जल में बहादे।

तदनन्तर पुनः भोजपत्र पर उपर्युक्त प्रकार से लिखकर धूप देकर गले में बांध दे।

९	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

गर्भधारण के लिए

[५०]

१७	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१९	२२

पुत्र प्राप्ति के लिए

[७२]

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

बच्चों के डब्बारोग-निवारण के लिए

पीपल के पत्ते या भोजपत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। फिर धूप देकर एक यन्त्र जल से धोकर वह जल बच्चे की माता को पिला दें; दूसरा बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

और चौथा तीसरे दिन माता के दूध के साथ पिला दें। सवा रुपये का चूरमा या मीठा चावल बनाकर पहले थोड़े से किसी साधु को देकर बंटवा दें, खुद भी खा लें।

राम	राम	राम	राम
राम	राम	राम	राम
राम	राम	राम	राम
राम	राम	राम	राम

इस चौंतीसा यन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से तथा अनार की कलम से लिखकर धूप देकर एक छोटे कपड़े में बांधकर बच्चे के गले में लटका दें और पक्षियों को दाना डलवा दें।

बच्चों के सूखा रोग निवारण के लिए

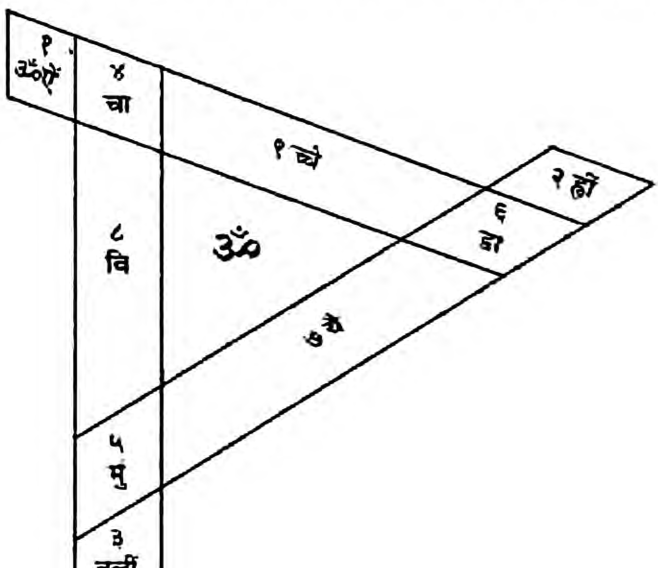
पीपल के पत्ते या भोजपत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। फिर धूप देकर एक यन्त्र जल से धोकर वह जल बच्चे की माता को पिला दें; दूसरा बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन और चौथा तीसरे दिन माता के दूध के साथ

८	८	८	
३३४	३३४	३३४	
३३४	३३४	३३४	
३३४	३३४	३३४	
७	७	७	

पिला दें। सवा रुपये का चूरमा या मीठा चावल बनवाकर पहले थोड़े से किसी साधू को देकर बंटवा दे, खुद भी खा लें।

भगवती की कृपा प्राप्त करने के लिये

भगवती की शरणागति, भक्ति की प्राप्ति तथा सब विपत्तियों के नाश तथा कार्य में सफलता एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति के लिये विश्वास पूर्वक नीचे लिखे बीसा यंत्र का प्रतिदिन पञ्चोपचार से पूजन करके कम-से-कम नवार्ण मंत्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं



चामुण्डायै विच्चे) की एक माला (१०८ रुद्राक्ष के दानों की) जप और 'सप्तशती,' चतुर्थ अध्याय तथा 'सिद्ध कुञ्जिका' स्तोत्र का पाठ करे। यंत्र तांबे के पत्तर पर खुदवाकर गङ्गाजल से धोकर धूप देकर पूजा में रखे। इस मंत्र में संख्या क्रम से 'नवार्ण मंत्र' लिखा है!

रक्त-पित रोग नाश के लिए

[११२]

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४९	८	१
४	५	५०	५३

मिर्गी नाश के लिये

[१००००]

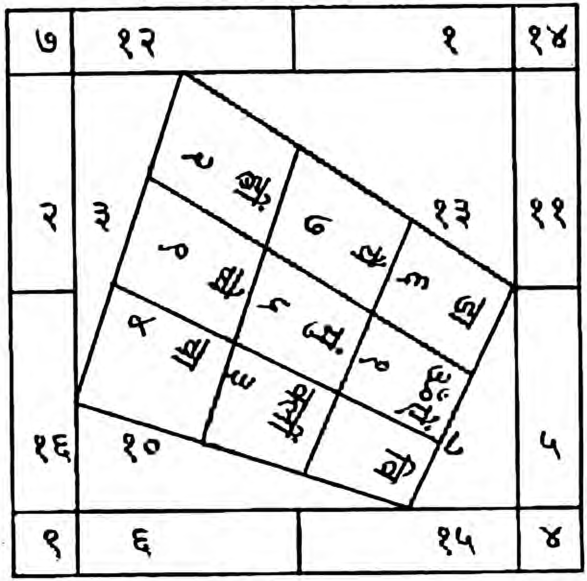
४११२	४१११	२	७
६	३	४११६	४११५
४११८	४११३	८	१
४	५	४११४	४११७

वायुशूल-नाश के लिये

[८०]

३२	३१	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

देवी की प्रसन्नता और किसी भी रोग के नाश के लिये



इसमें ३४ और १५ का यंत्र है। १५ के यंत्र में भगवती का नवार्ण मंत्र है। ऐसे यंत्र बना कर उसमें इस मंत्र को १०८ बार लिखने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर लिखकर रोगी को देना चाहिये तथा तांबे के ताबीज में डालकर गुग्गुल की धूप देकर पुरुष के दाहिनी और स्त्री के बायीं भुजा में बांध देना चाहिये।

कर भला, हो भला। अन्त भले का भला॥

उन परोपकारी हाथों में, जो सदा दूसरे का दुःख दूर करने के लिए व्यस्त रहते हैं, यह अद्भुत पुस्तक सादर समर्पित है।

सावधान

कुएं ठण्डा जल पीने के लिए बनाए जाते हैं यदि कोई मंदमति कुएं में डूबकर आत्म-हत्या करले तो इसमें कुआं बनवाने वाले का क्या दोष?

यह पुस्तक लोक कल्याण के लिए प्रकाशित की गई है। यदि कोई दुष्ट बुद्धि इसमें वर्णित उपायों का प्रयोग किसी का अनिष्ट करने के लिए करे तो इसमें हमारा दोष?

आवश्यक बातें

सर्व प्रथम तैंतीस करोड़ देवी देवताओं को हृदय से नमस्कार करके मैं उस परम प्रभु परमात्मा का स्मरण करता हूं जिसके पुण्य आशीर्वाद से मैं साक्षात् पशुपति श्री शिव शंकर के कण्ठ से निकले इस इंद्रजाल को सम्पूर्ण कर सका। उस परमपिता परमात्मा को कोटि कोटि बार मैं नमस्कार करता हूं जिसने इस समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की, जड़ में चेतना भरी और चेतन मनुष्य को मूढ़ बना डाला। जो कि सर्व शक्तिमान मन्दिरों में राम, मस्जिदों में अल्लाह, गिरजाघरों में यीशु और श्रद्धालुओं के हृदय में आत्म विश्वास बनकर विराजमान हैं। उसको मैं नमस्कार करता हूं।

जो, प्रभु समस्त संसार में व्याप्त है, अन्तर्यामी है, जिसको दिकता देवी बनकर समस्त चराचर में शक्ति रूप में विद्यमान हैं, या देवी सर्वभूतिषु शक्ति रूपेण संस्थिा और जो आदि शक्ति बीज रूप में वर्तमान रहकर प्राणी से संभव-असंभव कराती है, बड़ी शक्ति इस इन्द्रजाल की अधिष्ठात्री शक्ति है, उसे मैं नमस्कार करता हूँ।

(१) ईश्वर पर भरोसा रखो-इन्द्रजाल के आदि रचयिता भगवान शिव माने जाते हैं। जो व्यक्ति ईश्वर पर पूरा विश्वास और भरोसा रखकर, पूरी ईमानदारी और एकाग्रता से इसके यन्त्र तन्त्रों को साधता है, उसकी प्रत्येक इच्छा पूरी होती है। विधि के अनुसार अपने मन वचन और कर्म को पूरी श्रद्धा और भक्ति के सांचे में ढालकर जो मनुष्य सिद्ध करता है, वह भले ही किसी मत-मतान्तर का हो, जो चाहे सो कर सकता है। वह पानी में आग लगा सकता है, हवा में उड़ सकता है, अनजानों को पलक झपकते वश में कर सकता है, अपने शत्रुओं को देखते-देखते पछाड़ सकता है, उसके लिये संसार में कोई काम असम्भव नहीं, हां उसमें पूरी श्रद्धा होना चाहिये और सिद्धि के लिये पूरे गुण। श्रद्धा में तर्क वाद-विवाद की कोई गुंजायश नहीं होती। श्रद्धा एकदम अंधी होती है और परमपिता परमात्मा की हर अंधी श्रद्धा ही साधक का वह गुण है जो इस इन्द्रजाल को सुलभ कर सकता है।

एक बार किसी देश में सूखा पड़ा। अनेकों ऋषि मुनि वहां यज्ञ द्वारा वर्षा कराने गए, किन्तु छाता

लेकर कोई नहीं गया। यज्ञ में एक व्यक्ति छाता लेकर आया तो ऋषियों ने उसकी हंसी उड़ाई, वह व्यक्ति बोला-अरे तुम जिससे वर्षा मांग रहे हो, उसमें तुमको इतना भी विश्वास नहीं है कि वह वर्षा देगा और तुम सब लोग भीग जाओगे।

(२) श्रद्धा रखना जरूरी है-तो इन्द्रजाल के साधक में उस व्यक्ति जितनी श्रद्धा होनी आवश्यक है। जिसे इस पुस्तक की नेक नियति पर और अपने कर्म के फल पर श्रद्धा नहीं, या जिसकी श्रद्धा में संदेह की गुंजाइश है, उसके लिये यह पुस्तक व्यर्थ है। वह शिव के आशीर्वाद का भागी नहीं बन सकता ऐसे श्रद्धालुओं को यह पुस्तक नहीं मंगानी चाहिये। सन्देह श्रद्धा का शत्रु है। आज के नए युग के सन्देह शील मनुष्य न अपना कल्याण करते हैं व दूसरे के मंत्र तंत्रों को वे खिलौना और मजाक समझते हैं। ईश्वर के अस्तित्व पर भी उनको विश्वास नहीं होता। वे इस बात को क्या जाने कि हमारे प्राचीन यन्त्र और तंत्र शास्त्री इस विधि को कहां से कहां ले गये थे। उस समय आत्म विश्वास और श्रद्धा सहज ही प्राप्त हो जाती थी किन्तु आज उसके दर्शन भी

दुर्लभ हैं। प्रभु की कारीगरी में विश्वास न रखने वाले, उस ईश्वर, अल्ला, गौड और आत्मिक शक्ति को बकवास समझने वाले, तर्कहीन अविवेकी मनुष्य इस पुस्तक को मंगाने का कष्ट न करें।

(३) साधक कैसा हो:-जिस श्रद्धालु को भगवान पर पूरा भरोसा होगा जिसने कभी झूठ न बोला होगा, जिसकी आत्मा शुद्ध स्वर्ण जैसी होगी, जिसके विचार निर्मल होंगे। जिसने ब्रह्मचर्य व्रत का पूरी तरह पालन किया होगा, जो इस कलिकाल में भी ईमानदारी और सच्चरित्रता से जीवन यापन करता होगा, उसका प्रत्येक काम सिद्ध होगा, यह इन्द्रजाल उसके लिये रक्षा कवच का काम करेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

(४) दान करना जरूरी है:-इन्द्रजाल से लाभ उठाने के बाद दान, पुण्य आवश्यक है, इस पुस्तक का आधार पौराणिक साहित्य है। अतः दान कुपात्र को नहीं सुपात्र को देखकर करना परमावश्यक है। गौ-ब्राह्मण को अन्न, वस्त्र, साधु, सन्तों को भोजन, चिड़ियों को दाना और बन्दरों को केले, चने और रोटी तथा अन्य जानवरों को अनाज तथा चींटियों को चारा आदि दान करने से अनेकों सिद्धियाँ स्वयं

प्राप्त हो जाती है। साधक को यदि वह हिन्दू है तो प्रतिदिन देव दर्शन के लिये मन्दिर में जाना चाहिये और यदि वह मुसलमान है तो उसे प्रत्येक दिन मस्जिद में जाना चाहिये। विचार शुद्धि के लिये सन्ध्या वंदन भी आवश्यक है।

(५) शंका न करें:-इन्द्रजाल में शंका करने से परिणाम उल्टा और भयंकर भी हो सकता है। अत: शंका न करें अन्यथा लेखक पर परिणाम की जिम्मेदारी नहीं होगी। वही वाली कहावत कि कुआं तो बनाए कोई और कोई स्त्री गृह क्लेश के कारण या किसी अन्य कारण से कुएं में डूब मरे तो कुआं बनाने वाले का क्या दोष है? अत: यह बात याद रखें कि यहां शंका की कोई गुंजाइश नहीं है। यह एक वार्निंग है। शंका करोगे तो दु:ख उठाओगे। न इधर के रहोगे न उधर के और लेखक को मुफ्त में कोसोगे। सिद्ध करने से पहले अपने दिल को टटोल कर देख लो कि वहां श्रद्धा कितनी है। अधूरी श्रद्धा सब किए कराए पर पानी फेर सकती है।

मेरे तान्त्रिक जीवन में भी कई अवसर ऐसे आए हैं जब अचानक मेरी श्रद्धा डगमगा गई है और मुझे

उसके अनेकों बुरे परिणाम भुगतने पड़े हैं और तो और यह पुस्तक भी मेरी प्रेरणा पर और मेरी जिम्मेवारी पर छापी गयी है, अन्यथा प्रकाशक महोदय तो इस झंझट में हाथ भी डालना नहीं चाहते थे।

लोक कल्याण करें:-यह पुस्तक पवित्र पुस्तक है। किसी को भी इसका दुरुपयोग करने का साहस नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से भी भीषण परिणाम निकल सकता है। इन्द्रजाल प्रभु की माया का चमत्कार है। उसका दिव्य शक्तियों का एक छोटा सा अंश है इसका पूरा सम्मान किया जाना चाहिये जहां शब्द मारण आया है वहां अभिप्राय मारने से नहीं प्रत्युत हानि पहुँचाने से है और जहां खून निकालने का प्रसंग है, वहां नली से रक्त को टैस्टिंग करने जैसा खून निकालने से है। ऐसे शब्द चलताऊ भाषा ही में ज्यूं के त्यूं लिख दिये गये हैं। इनका भावार्थ समझना चाहिए। इसके लिये साधक में प्रखर बुद्धि का होना आवश्यक है।

इसी प्रकार पुस्तक में जहां शूद्र शब्द आया है वहां इसका तात्पर्य केवल उन व्यक्तियों से है जो दुराचारी तथा अनिष्ट करने वाले हैं। साधक को

ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क से हमेशा बचना चाहिये।

शुद्ध विचार रखिए:-प्रत्येक सिद्धि पूरे मनोयोग से हृदय में भगवान शंकर का ध्यान रखकर करनी चाहिये। यदि मन शुद्ध है, विचार शुद्ध है और चित्त एकाग्र है तो देवी देवता सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करेंगे। सफलताएं आपके कदम चूमेंगी किन्तु यदि किसी कारणवश आप असफल रहें तो कर्म दोष है। आप का समय अनुकूल नहीं है अथवा आपके पूर्व जन्म का फल आपकी साधना में आड़े हाथों आ रहा है। यह भी सम्भव है कि मंत्रों के बीज आपके शक्ति चक्र के विपरीत पड़ रहे हों अथवा आपके नक्षत्र उस घड़ी में आपको कोई सिद्धि न देना चाहते हों।

होनहार भावी प्रबल:—कर्म रेखा बड़ी प्रबल है। बड़े-बड़े मानचित्रों और तान्त्रिकाचार्यों को होनी के आगे घुटने टेकने पड़े हैं अनेक साधनाओं में कर्म की रेखा आड़े हाथों आती है। परिणाम शून्य हो जाते हैं सुफल कुफलो में बदल जाते हैं आशा निराशा के घनघोर बादलों में छिप जाती है और सिद्धि एकदम दूर नजर आने लगती है। देव के कार्यों में हाथ डालना किसके लिए सम्भव है?

कोई भी मान्त्रिक अथवा तान्त्रिक, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो गया हो, आज तक कर्म की रेखा को नहीं मिटा सका है, होनी को नहीं टाल सका है। होनी होकर ही रहती है। होनी और भाग के आगे उच्चाटन और मारण-यन्त्र बेकार हो जाते हैं। वशीकरण तन्त्रों का प्रभाव उलटा पड़ने लगता है। स्तम्भन योग बे-असर हो जाते हैं। योगिनी और डाकिनी साधक पर आक्रमण कर डालने का साहस पा जाते हैं। तभी कहा गया है कि साधक सभी प्रकार से पवित्र होकर साधना करे, किसी का अहित न करें। बदले की भावना से कोई सिद्धि न करे। पूजा पाठ करे।

मन्दिर मस्जिद जाए, दान-पुण्य करे ताकि उसके नवग्रह शान्त हों। उसकी कुप्तराशियों को शान्ति मिले मातेश्वरी, इस सृष्टि का पालन करने वाली जगदम्बा, सब विधि उसका कल्याण करें महा इन्द्र जाल प्रणेता आदि विश्वनाथ बाबा उसको संरक्षण प्रदान करें और ब्रह्माण्ड के रचयिता परम पिता परमात्मा उसको सफलता दें, ऐसी मेरी अभिलाषा है। करना मनुष्य के हाथ की बात है। फल वहीं से आता है जहां के

संकेत पर ठूंठ के पत्ते फूट आते हैं, रेगिस्तान में पानी का स्रोता फूट पड़ता है और बिना चाहे, बिना मांगे आठों सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।

परमात्मा सर्व शक्ति मान है:—मनुष्य एक साधन है। वह केवल कल्पना कर सकता है। मान्त्रिक और तान्त्रिक अपनी साधनाओं के फलाफल पर विचार करके, उनसे निष्कर्ष निकाल कर कुछ घोषणा कर सकते हैं, किन्तु उसे सफल अथवा असफल कर देना परमपिता के ही हाथों में है होनी बनी ही होने के लिये है। बीज को धरती में बोते समय हर किसान यही आशा करता है कि बीज फूटेगा और धरती में गिर कर हर एक बीज फूटता है, ऐसी किसान की भी मान्यता है। किन्तु बीज सचमुच फूटेगा ऐसा कोई कह नहीं सकता। उसका फूटना सत्य होते हुए भी उसके भाग्य पर निर्भर है और भाग्य को न कोई मेट सकता है और न कोई मेट सकेगा।

भगवान राम के राजतिलक की भविष्यवाणी और मुहूर्त महान मंत्र ज्ञाता और विद्वान महर्षि गुरु वशिष्ठ जी ने निकाला था, किन्तु तब भी राम को राजतिलक जैसे मांगलिक समारोह न देखकर पिता की मृत्यु और

वन गमन जैसे दारुण दृश्य देखने और झेलने पड़े यह सब विधि का विधान है। होनी बलवान का प्रमाण है।

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहें मुनि नाथ।
हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ॥

मेरा काम था-इस ग्रन्थ को अपने प्रिय साधकों के सामने रखना ताकि उनको सारी मान्त्रिक तान्त्रिक साधनाएं एक स्थान पर एकत्रित मिल जाएं। परम पिता परमात्मा की महान अनुकम्पा से मैं इस काम में सफल हुआ। जादू पिता की महान कृपा ही से मुझे इस ग्रंथ को प्रकाशित करने के लिए इतने बड़े प्रकाशक का सहयोग मिला है, जो मेरी जिम्मेदारी पर इस ग्रंथ को प्रकाशित करने पर सहर्ष तैयार हो गया है। यह सब उस दयामय की कृपा दृष्टि का संकेत है।

उसी के पावन चरणों का ध्यान धर कर मैं इस परीक्षा में सफल हुआ। उसी का तन मन धन से स्मरण करने पर, पूरी श्रद्धा भक्ति से इन्द्रजाल पर क्रिया करने से सभी साधक मनोवांछित फल की प्राप्ति करेंगे,ऐसी मेरी आशा है।

दूसरों के लिए कुआं मत खोदो:–इसकी सिद्धियां अधिक कठिन हैं। हां, कठिन है साधक

को उन सिद्धियों के लिए स्वयं को तैयार करना। प्रत्येक सिद्धि की सफलता या असफलता पूर्णतः साधक पर निर्भर है। जिस आटे के साथ-साथ पत्थर का एक छोटा-सा टुकड़ा पिस जाने पर उस से बनी रोटियां मुंह में नहीं चलतीं, उसी प्रकार साधक के तन मन पर छोटा-सा भी कलंक आ जाने पर सिद्धि दूर हो जाती है। यह पुस्तक लोक कल्याण के दृष्टिकोण को लेकर लिखी गयी है, किन्तु यदि साधक इसका उपयोग किसी का अनिष्ट करने, या किसी को गलत राह पर डालने के लिए करे और स्वयं उसी का अनिष्ट हो जाए तो इसमें भला किसका क्या दोष। जो दूसरों के लिये कुआं खोदता है, वह उसमें स्वयं गिरता है। प्रतिशोध की भावनाओं से इस पुस्तक का लाभ उठाना एकदम वर्जित है।

जिस प्रकार साधु सन्तों के सुवचन और आशीर्वाद दूसरों के लिए फलदायक होते हैं। बड़ों की अच्छी नजर अपने लिए नहीं, अपने छोटे के लिए कल्याणकारी सिद्ध होती है, उसी प्रकार इस इन्द्रजाल की सिद्धियां और मंत्र भी दूसरों के कल्याण के लिए अपना पूरा-पूरा प्रभाव दिखाने की क्षमता रखते हैं।

अपना ही भला मत सोचो:—केवल अपना ही भला चाहने वाला साधक इस अमूल्य ग्रंथ से पूरा लाभ नहीं उठा सकता। इससे लाभ उठाने के लिए उसे लोक कल्याण और जन-सेवा का व्रत लेना पड़ेगा। उसे अपने इन्द्र देव के सामने यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी कि वह हस्तलिखित व इन्द्रजाल के साधनों से सशक्त बनकर किसी का अनिष्ट नहीं करेगा ऐसी ही प्रतिज्ञा प्रत्येक तान्त्रिक और मान्त्रिक अपने शिष्यों से कराता है। इस प्रतिज्ञा और ऐसी जन कल्याणकारी भावनाओं के बिना किसी को भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। डाक्टर अपनी दवा स्वयं नहीं कर सकता। वकील अपना मुकद्दमा स्वयं नहीं लड़ सकता। इसीलिए इन्द्रजाल का साधक सारी सिद्धियां अपने ही लिये नहीं कर सकता। यदि ऐसा होता तो आज संसार पर किसी मान्त्रिक का राज्य होता। कोई तान्त्रिक सारे संसार को गुड्डे-गुड़ियों की भांति नचाता। किन्तु ऐसा नहीं होता मन्त्र और तन्त्र दूसरों के कल्याण के लिए होते हैं।

सिद्धि की नुमायश न करें:—जो साधक इन्द्रजाल की सिद्धियों की नुमायश या प्रदर्शन का

साधन बनाना चाहें, वे भी सावधान रहें। सिद्धि प्रदर्शन नहीं चाहती। कभी-कभी उनका दर्शकों पर इतना बुरा प्रभाव पड़ता है कि लेने के देने पड़ जाते हैं। यही कारण है कि तान्त्रिक और मान्त्रिक संसार के लोगों की दृष्टि से दूर एकान्त में बैठ कर साधना करते हैं और वहीं से अपने प्रियजनों का कल्याण करते रहते हैं।

सच्चा साधकः—सच्चे साधक को किसी भी वस्तु का मोह नहीं होता। वह जो मिल जाए उसी में सन्तोष और सुख का अनुभव करता है। उसे सांसारिक मोह माया और विषय मांग नहीं सकते। वह कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालना करता है। कठोर संयम से रहता है तभी तो सारी शक्तियां उसके आधीन रहती हैं। वह जो चाहे सो कर सकता है, किन्तु इतना शक्तिवान होते हुए भी वह जन कल्याण के विपरीत कुछ नहीं कर सकता।

वह मरे हुए को भी जीवन दान दे सकता है सूनी कोख को हरी भरी बना सकता है, मौत के मुंह में जा रहे रोगी को निरोगी कर सकता है। अकाल पीड़ित क्षेत्रों में वर्षा करा सकता है, शत्रुओं के

हृदय बदल सकता है, किन्तु किसी का अनहित नहीं कर सकता, दूसरे लोगों में फूट डलवा कर लड़ाई करा देने से उसकी सारी साधना मिट्टी में मिल सकती है।

देवता या राक्षसः—अंत में इस इन्द्रजाल के वे साधक जो तन-मन की शुद्धि के साथ इसका उपयोग लोक कल्याण के कार्यों में करेंगे देवता योनि को प्राप्त करेंगे ऐसे देवता साधकों की साधना दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करेगी, किन्तु जो साधक इस इन्द्रजाल का उपयोग अपनी दूषित प्रवृत्तियों को सफल करने में करेंगे। उनको पुराणों में राक्षस के नाम से पुकारा गया है। वे ऐसा करके अपना यह लोक भी बिगाड़ेंगे और परलोक भी।

जड़ में चेतनः—हिन्दू-शास्त्रों में जहां मूर्ति पूजा का विधान है, वहां वट और पीपल जैसे वृक्षों की भी पूजा फलदायिनी मानी गयी है। जनक नन्दिनी सीता को कलेश की कारागर में अशोक वृक्ष ने शरण दी थी और वानर राज बालि का वध भी भगवान राम ने वृक्ष की ओट लेकर किया था।

भगवान बुद्ध को अक्षय वट की छाया में तत्वज्ञान प्राप्त हुआ था और महिंषि वेदव्यास ने भी महाभारत जैसे बेजोड़ महाकाव्य की रचना वट वृक्ष के नीचे सम्पन्न की थी। आर्यों के बड़े-बड़े दिग्गज महर्षि सदा से वृक्षों की छाया में बैठकर साधना करते आये हैं। उस परमपिता परमात्मा ने इन पुनीत वृक्षों में वह जीवनदायिनी और फलप्रदायिनी शक्ति भर दी है जिसे पुराणों में 'या देवी सर्वभूतेषु सिद्धि रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः' कह कर पुकारा गया है। इस इंद्रजाल के साधक को वृक्षों में आरोहित इस देवी शक्ति को सदा नमस्कार करना चाहिये। साधना के मध्य वृक्षों को काटना कटवाना छांटना, छटवाना या वृक्ष स्थान अपवित्र करना, वृक्षों पर थूकना आदि पूर्ण रूपेण वर्जित समझ जाना चाहिये। जिस कुशा के आसन पर बैठ कर साधारण साधु संत योगीश्वर और मुनीश्वर बने, जिस कुशासन पर बाल्मीकि, वेदव्यास और वशिष्ठ को अनेकों सिद्धियां मिलीं। जिस कुशासन के बल पर दुर्वासा के शाप-वचन पलक झपकते ही साकार हो उठते थे, वह कुशासन स्वयं वृक्ष

प्रदत्त है। इस प्रकार जड़ पदार्थों में चेतन जगाने वाले, उनमें सिद्धि दायिनि अमोघ शक्ति भरने वाले समस्त बह्माण्ड के स्वामी उस परमपिता परमात्मा की सभी वंदना करते हैं।

प्रगति की दौड़:–एक समय था जब हमारा देश भारत सारे संसार को गुरु मंत्र देता था। विदेशों से भी लोग भारत में ही विद्याध्ययन करने आते थे उस समय न मशीनें थीं और न एटमी हथियार, फिर भी वे सारे काम जो आज मशीनों से ही सम्भव है, केवल इच्छा मात्र से सम्पन्न हो जाया करते थे। आज क्या हुआ? साइंस के इस युग में मनुष्य की वह शक्ति कहां गयी? महाभारत काल में माता गांधारी ने तमाम उम्र आंखों पर पट्टी बांधे रखी, फिर भी उन्होंने जीवन पर्यन्त अन्धे धृतराष्ट्र की समुचित सेवा की। आज की कोई मशीन मृत-शरीर में प्राण नहीं फूक सकती,किन्तु आज से हजारों वर्ष पूर्व एक साधारण-सी नारी सावित्री ने अपने पति सत्यवान को मृत्यु के चंगुल से छुड़ा लिया। गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या जो श्रापवश पत्थर हो चुकी थी रामचन्द्रजी ने उसे पुनः नारी बना दिया

था। आखिर कैसे? लोग कहते हैं कि समय आगे आगे दौड़ रहा है इस दौड़ में पीछे रहने वाला 'पिछड़ा' बन जायेगा। इस दौड़ में सभी मनुष्य अपने अतीत को भूले जा रहे हैं अपने आदर्शों, कर्मकाण्डों को सन्देह की दृष्टि से देख रहे हैं। क्या यह सचमुच प्रगति है? क्या हम सचमुच आगे जा रहे हैं? यदि आगे जा रहे हैं तो मशीनों से वह सब कुछ सम्भव क्यों नहीं हैं। जो कल बिना मशीनों के सम्भव था। आज मनुष्य ने भगवान को भुला दिया। उसकी शक्ति को सन्देह भरी दृष्टि से देखना आरम्भ कर दिया है। वह भूल गया कि उस परम ब्रह्म की लीला अपरम्पार है। इस नास्तिकवाद ने मनुष्य के हृदय में अश्रद्धा, सन्देह और स्वार्थ को जन्म दिया है। आध्यात्मिक दृष्टि से आज का मनुष्य बहुत पिछड़ गया है। न उसके दिल में लगन रही है और न श्रद्धा। भगवद् भजन को वह ढकोसला समझने लगा है और पूजा पाठ को दिखावा। इसी "आर्यावर्त भरत खण्ड," वाले भारत में जहां उस समय में जनता को ताले लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी तथा जहां पहले दूध की नदियां बहती थीं उसी

ईश्वर में अविश्वास के कारण आपसी फूट के कारण पतन की ओर जा रहे हैं।

आपा बुरा है:–इस प्रकार असार संसार में मिथ्यावाद की पूजा हो रही है। जो हमारे वेद पुराणों में त्याज्य है, वही आजकल ग्राह्य है। आपा बुरा है-इसे कोई नहीं देखता। दुष्कर्म किए जा रहे हैं और सत्कर्म दुष्कर्म बन रहे हैं। इन्द्रजाल के साधक को इस दिशा में सोचना समझना चाहिए। बुरी प्रवृत्तियां उल्टा प्रभाव डालकर साधक से समस्त सिद्धियां छीन सकती हैं। दुष्कर्म में प्रवृत्ति बुरा आपा अपना ही अहित करता है। कुएं ठण्डा जल पीने के लिए बनाए जाते हैं। यदि कोई मन्द गति उसमें डूबकर आत्महत्या करले तो इसमें कुआं बनवाने वाले का क्या दोष। इन्द्रजाल की समस्त साधना भगवान के अर्पण है। उसी की कृपा से सारे काम सिद्ध होते हैं। जिसके संकेत के बिना वृक्ष का एक पत्ता तक नहीं हिल सकता, जिसके आदेश बिना राजा, राजा नहीं रह सकता। जिसकी कृपा से रंक राजा बन कर सुख भोगता है, इन्द्रजाल की समस्त सिद्धियां उसी की कृपा दृष्टि का प्रसाद है।

यदि वह खुश है उसकी इच्छा है तो साधक को एक के बाद एक सिद्धियां प्राप्त होती चली जाती हैं अन्यथा नहीं।

छल कपट से दूर रहें:—इन्द्रजाल की यह खोजपूर्ण अभूत पूर्व पुस्तक लोक कल्याण के लिए लिखी गयी है। यदि कोई दुष्ट बुद्धि इसमें वर्णित उपायों का प्रयोग किसी का अनिष्ट करने के लिए करे और उसे सफलता न मिले तो इसमें हमारा क्या दोष?

कर भला हो भला। अन्त भले का भला॥

उन परोपकारी जीवों और मनुष्यों को जो सदा दूसरों के हित में मरते हैं, जिनके हृदय में दया है, त्याग की भावना है, श्रद्धा है और उस परमपिता परमात्मा को सच्चे दिल से पुकारने की क्षमता है, उन्हीं के लिये यह पुस्तक है। लोक कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हृदय ही इन्द्रजाल का सच्चा साधक बन सकता है।

सब का भला करो भगवान्। सब पर दया करो भगवान॥
सब पर कृपा करो भगवान। सबका सब विधि हो कल्याण॥

कर्महीन नर पावत नाहीं—हमारे पूज्यनीय ग्रंथों में यह तथ्य स्पष्ट रूप से वर्णित है कि इस असार

संसार में पुरुषार्थ और भाग्य दोनों में भाग्य प्रबल है। एक मजदूर जो सारे दिन घोर परिश्रम करता है, दो जून रोटी को भी तरसता है, मिट्टी के कच्चे घरों में रहता है और भाग्यवान गंवार भी बिना हाथ पैर चलाए कुबेर पति कहलाता है।

सकल पदारथ हैं जग मांहीं। कर्म हीन नर पावत नाहीं॥

इस संसार में सभी कुछ है। किन्तु कर्म और फल के अनुसार जो वस्तु जिसके भाग्य में होती है। उसे वही मिलती है। दुर्लभ पदार्थों और अप्राप्य वस्तुओं को पाने के लिये अनेकों साहसी मनुष्य प्रयत्न करते हैं किन्तु लक्ष्य तक पहुंच पाने वाला विरला ही भाग्यवान होता है। विज्ञान की अनेक खोजों का इतिहास पूर्णतया: उसी भाग्यवाद पर आश्रित है। एक वैज्ञानिक खोजता कुछ है और उसे प्राप्त कुछ हो जाता है। अत: सच्चा साधक भाग्यवाद पर श्रद्धा रखता है। गीता के अनुसार वह कर्म करता है। किन्तु इसे करने से यही फल मिलेगा वह ऐसा सोचकर नहीं चलता। कर्म करना साधक का कर्तव्य है, फल देना भगवान के हाथ में है और जो आरम्भ ही से कर्महीन हो, जिसके भाग्य ही में

अमुक फल प्राप्ति न लिखी हो उसे कोई क्यों कर वह फल दे सकेगा। ऐसे में तो यही सोचकर चुप हो बैठना पड़ेगा कि फल भाग्य ही में न था। भाग्य के आगे किसी का वश नहीं।

आवेहयातः–हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ने कहा:–

बात की बात में विश्वास बदल जाता है।
रात ही रात में इतिहास बदल जाता है॥
तू मुसीबतों से न घबरा अरे इन्सान।
धरा की क्या कहें, आकाश बदल जाता है॥

इन पंक्तियों में समय के बदलते चक्र का कितना यथार्थ वर्णन है। आबेहयात तक भी पहुंचा कर समय अमर बनाने के इच्छुक साधक को भटका देता है। कुएं के समीप रहकर भी अनेक मनुष्य उसके शीतल जल से वंचित रहते हैं। गंगा के तट पर बसे अनेकों हतभागी अपने पापों का बोझा ढोते-ढोते मर जाते हैं। इसे समय बड़ा बलवान कहें या और कुछ।

इन्द्रजाल का यह ग्रन्थ आबेहयात है, संकट मोचिनी गंगा है, शीतल जल का कुआं है। इसका

रसास्वादन तो वही कर सकता है जो सभी दृष्टि से पाने का अधिकारी है। कुत्ता बार-बार दूध से नहलाए जाने पर भी कुत्ता रहता है जिसका अन्तरतम इंद्रजाल का आबेहयात पी सकने का अधिकारी न बन सका। उसका भला इस ग्रन्थ से क्या भला होगा। वह खुद इसके क्रिया तन्त्रों से स्वयं का विनाश करेगा। व्यर्थ जमा पूंजी खायेगा। जो ग्रन्थ के होते हुए भी स्वयं को उस सांचे में न ढाल सका जो सच्चे साधक का होना चाहिये, वह उस मूर्ख के समान है जो आबेहयात के पास होते हुए भी नाली के दूषित जल से अपनी प्यास बुझाता रहा था।

ढेरों पुस्तकें–इन्द्रजाल एक मृगतृष्णा है। प्रत्येक मनुष्य इसे और इसकी क्रियाओं का साध्य समझकर इसकी ओर भागता है। सुपात्र इससे लाभ उठा लेते हैं और कुपात्र अपना भविष्य अंधकारमय बना लेते हैं। जन साधारण की इसी रुची से लाभ उठाने की सोचकर अनेक छोटे-मोटे प्रकाशकों ने अनाप शनाप मंत्रों और तंत्रों से युक्त अनेक प्रकार के इन्द्रजाल बाजार में फेंक दिये हैं उनसे जहां साधकों का अहित होता है, वहां इस अपूर्व ग्रन्थ पर से लोगों

की श्रद्धा मिटती जा रही है। इस इन्द्रजाल का प्रकाशन इस दिशा में एक दैवी कदम ही है। जिस प्रकार सूर्य के आने पर समस्त अंधेरा दूर होकर चारों ओर शुभ प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार इस इन्द्रजाल के प्रकाशन से इस विद्या के बदनाम करने वाले उन सभी छोटे-मोटे ग्रन्थों की निराधारिता का पता लग जायेगा जो साधकों को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं।

ग्रन्थ का प्रकाशनः—अगर इस ग्रन्थ से आपको कोई लाभ न पहुंचा तो मैं अपनी मेहनत बेकार समझूंगा। ईमानदारी दुनिया में सबसे बड़ी चीज है अतः इसका प्रयोग ईमानदारी से करें यह ग्रंथ इसी भाव को लेकर प्रकाशित किया जा रहा है। ताकि भारत में ''राम राज्य'' पुनः स्थापित किया जा सके फिर भी अगर आपको यह ग्रन्थ पसन्द न आए तो ८ दिन के अन्दर वापिस कर दें।

जब समय आता है तभी काम होता है— यह जरूरी नहीं कि इस ग्रन्थ से आपकी मनोकामना पूर्ण हो ही जाय क्योंकि सभी काम अपने समय के अनुसार ही होते हैं। जब समय आपके अनुकूल

होगा तभी आपका काम होगा। पुरानी कहावत जो प्रसिद्ध है, के अनुसार:–

समय करे नर क्या करे, समय बड़ बलवान।
भीलन् लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बाण॥

भगवान-आसरे:–फारसी का ऐक शेर है:–

सर नवीश्ते:-गर-बदस्ते खुद नवीश्त।
खुश नवीस अस्तो ना स्वाहदबद नवीश्त॥
गर खद सर बरना गरदद सर नवीश्त।
इंसुखन बायद-या-आवे जर नवीश्त॥

मेरी भाग्य रेखा मस्तक में है भगवान तू अपने हाथ से लिख। चूंकि तुम सुन्दर लिखने वाले हो और तुम्हारे हाथ खराब लिखा ही न जायेगा।

सर रहे या न रहे, किन्तु सरका लिखा मिटता नहीं है।

यह प्रवचन सोने के पानी से लिखने योग्य है। उपर्युक्त शेर शत प्रतिशत ठीक है। भाग्य बड़ा प्रबल है। उसकी रेखायें पूर्ण रूप से उस जग नियंत्ता के अधिकार में है। अत: सभी कृपाणार्पण की भावना से किया गया है। साधन सभी उत्तमोत्तम फलों का देने वाला होता है-निर्णय करके साधना करनी चाहिये।

साधक की भलाई के लिये

(१) ईश्वर सभी प्राणियों के मन की बात जानता है अतः साधक को सर्वप्रथम उसी परम ब्रह्मपरमेश्वर का ध्यान कर लेना चाहिये।

(२) बहुत से अज्ञानी पुरुष ईश्वर के प्रताप को नहीं जान पाते और अविश्वास के वश उसका अनादर करते हैं। यह अपनी ही हानि के लिये है। अतः साधक को चाहिये कि वह भगवान् की महिमा पर दृढ़ विश्वास करके उनसे प्रेम करे।

(३) भगवान को सबका आदि अविनाशी जानकर सब प्रकार उस पर विश्वास करके अनन्य भाव से निरन्तर उसका भजन व कीर्तन करते हुए अपनी साधना को आरम्भ करना चाहिए।

(४) जो साधक भगवान की उपासना अपनी किसी भी स्वार्थ सिद्धि को ध्यान में न रखकर करता है ईश्वर भी उसी प्रकार उसकी साधना को ध्यान में देखकर पूरा कराने की कोशिश करता है।

(५) "भगवान जो कुछ करता है अच्छा ही करता है" जिस साधक के दिल में ऐसा विचार

होता है अर्थात् जो साधक हर एक परिस्थिति में भगवान् की इच्छा मानकर सदा प्रसन्न रहता उसको सिद्धि भी अत्यन्त शीघ्र मिल जाती है ऐसा शास्त्रों का मत है।

(६) साधक को चाहिए कि अपना मन भगवान के अर्पण करदे अर्थात् जो भी काम करे वह भगवान के ही मन को बात को समझकर करे। इसका तात्पर्य यह है कि अपने मन की बात को पूरी करने के लिये इच्छा का सर्वथा त्याग कर दे और ईश्वर प्रेरणा के अनुसार हर एक क्रिया उसी की मर्जी के अनुसार करे।

(७) साधक को भगवान का ही एक मात्र भक्त हो जाना चाहिये। इस भाव को हृदय में रखकर जब साधक का भगवान से अनन्य प्रेम हो जाता है तो संसार से उसको कोई बास्ता नहीं रह जाता।

(८) केवल भगवान की पूजा और उसकी इच्छा दोनों को ही साधक को हर समय ध्यान में रखना चाहिये। अर्थात् यह वात हर समय याद रहनी चाहिये कि जो काम मैं कर रहा हूँ क्या वह काम भगवान को भी पसन्द है या नहीं।

(९) ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये साधक को जैसा उचित समय पर बन पड़े, खान-पान, यज्ञ, तप, दान कथा आदि प्रेम और श्रद्धा से मुक्त होकर अवश्य करनी चाहिए। ऐसा विचार कर लेना चाहिये कि जो भी मैं कर रहा हूँ सब भगवान ही के लिये कर रहा हूँ।

(१०) भगवान सभी प्राणियों में समान रूप से व्याप्त है उनका न किसी से पक्ष है और न ही उनका किसी से द्वेष है। जो भी उसके गुणों का गान करता हुआ अपने को उसका बना देता है। भगवान उसी साधक को अपने हृदय में स्थान देते हैं।

(११) जो साधक भगवान का नाम जपता हुआ किसी विशेष परेशानी के वश अपने लक्ष्य की पूर्ति में कोशिश करता है तो वह निश्चय ही परेशानी से छुटकारा प्राप्त कर लेता है अत: हर समय भगवान का स्मरण करते हुए ही साधक को कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये।

(१२) जो साधक हर समय भगवान से ही चित्त लगाये रहते हैं। जिनके हर शब्द के साथ भगवान के ही गुणों की चर्चा रहती है जो बातचीत

व व्यवहार में उसके सिवाय किसी को बड़ा कह नहीं पाते और जिन्होंने अपना जीवन उसी के अर्पण कर दिया है साथ ही हर समय उसी में रमे रहते हैं उनको भगवान वह बुद्धि योग प्रदान करता है जिससे शीघ्र अपने लक्ष्य को प्राप्त होते हैं।

(१३) साधक को चाहिये कि वह समस्त इच्छा शक्तियों का त्याग करके एकमात्र भगवान का ही दास हो जाय। ऐसा करने पर भगवान उसके समस्त पापों को धोकर उसके ही अनूकूल फल देते हैं।

(१४) केवल भगवान में ही विश्वास करने वाला साधक श्रेष्ठ कर्मों को करते हुये जो कि भगवान के द्वारा ही कराये जाते हैं। परम गति को प्राप्त होता है जिसका कभी नाश नहीं होता।

(१५) जो साधक भगवान का ही प्रत्येक काम समझकर उसी की इच्छा के अनुकूल करता है और एक मात्र उसी का भक्त है और सब प्रकार की आशक्तियों से रहित है। समस्त प्राणियों में जो वैर भाव से रहित हो चुका है वह व्यक्ति निःसंदेह भगवान को ही प्राप्त होता है।

(१६) यद्यपि भगवान की मांया बड़ी विचित्र है उसकी माया का पार किसी ने नहीं पाया बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी इस माया से नहीं बच पाये। स्वयं नारद मुनि भी इस माया के चक्कर में फंस गये थे, किन्तु भगवान भी अपने सच्चे साधक को इस माया से बचाने के लिये कोई न कोई युक्ति निकाल लेता है।

(१७) यदि कोई दुराचारी व्यक्ति भी अपनी साधना को भगवान के अर्पण करके उसी का अनन्य भक्त हो जाता है तब भी उसका निश्चय सचमुच श्रेष्ठ समझना चाहिये क्योंकि कल दुराचारी से धर्मात्मा बनने की कोशिश कर रहा है और यदि वह अपने निश्चय पर अटल रहा तो निश्चय ही एक दिन धर्मात्मा बन जायेगा। ऐसे साधक साधु पुरुषों की श्रेणी में आते हैं।

(१८) भगवान के भक्त का कभी पतन नहीं होता और नहीं उसको निराशा का सामना करना पड़ता है। ऐसा दृढ़ विश्वास करके साध को अडिग रूप से भगवान के ही आश्रित हो जाना चाहिये।

(१९) चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष, चाहे वैश्या हो चाहे शूद्र कोई भी श्रेणी का मनुष्य क्यों न हो यदि वह चांडाल प्रकृति का है और निश्चय के अनुसार अपने कर्मों में भी चांडालपन प्रयोग करता है यदि वह भी अपने कर्मों को भगवान के अर्पण कर दे। तब वह भी निश्चय अपनी प्रकृति को बदल सकता है।

(२०) यह मनुष्य का शरीर अनित्य असुरक्षित और सुख रहित है। अतः इसकी कामना के लिये कोई भी बुरी भावना साधक को प्रयोग में प्रयोगात्मक रूप में नहीं अपनानी चाहिये। क्यों पता नहीं कब यह शरीर आत्मा से अलग हो जाय। अतः इस पर कोई भरोसा नहीं करना चाहिए।

(२१) साधक को हर एक जीव में भगवान का ही रूप समझकर उसके पति श्रद्धा और प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिये। कभी भी ठससे द्वेष के साथ या अकड़ और बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिये। इसका तात्पर्य है कि उसको अपना आचरण हर किसी के लिये सख्त विनम्र और निष्कपट बना लेना चाहिये।

(२२) कभी भी अपनी स्वार्थपूर्ति के उद्देश्य से भगवान से प्रेम नहीं करना चाहिए। ऐसा नहीं हो कि अपने कार्य की प्राप्ति के बाद उसकी याद ही भूल जाओ। साधक को सच्ची शान्ति और साधना के लिये हर समय भगवान से सच्चा सम्बंध रखना चाहिये।

(२३) जो साधक अपने मन में यह दृढ़ संकल्प कर लेता है कि मुझे तो उसी भगवान से लगन रखनी है जो अनादि है अनन्त है, अखण्ड है और जिसका कोई भी भेद नहीं, वह साधक मनुष्यों में श्रेष्ठ और कर्मबन्धनों से मुक्त हो जाता है।

(२४) भगवान का दिव्य तेज तथा ऐश्वर्य इतना विलक्षण है कि उसके सामने सभी सहज नतमस्तक हो जाते हैं उसके सामने महान से महान ज्ञानी, विज्ञानी, ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध, धर्मशील, तपस्यारत, ऋषि, महर्षि, वीर, पराक्रमी, शान्तिप्रद और विकट योद्धा सभी झुक जाते हैं अतः किसी भी साधक को उससे अहंकार करके अपनी बुद्धि का प्रयोग गलत रूप में नहीं करना चाहिये।

(२५) भगवान में चित्त लगा देने वाला साधक भगवान की कृपा से सब कठिनाइयों एवं परेशानियों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है किन्तु अगर अहंकार के वशीभूत होकर वह भगवान की इच्छा के विपरीत कार्य करता है तो उसका पतन हो जाता है।

(२६) सब प्राणियों के हृदय में भगवान हर समय व्याप्त रहता है। शरीर रूपी यंत्र में सभी प्राणियों को वह इच्छानुकूल घुमाता रहता है। उसकी इच्छा शक्ति के अनुरूप ही यह शरीर काम करता है अतः साधक को सर्व भाव से उसकी शरणागत हो जाना चाहिये।

(२७)जिस परमब्रह्म परमेश्वर से सब जीवात्माओं की उत्पति हुई है; चर-अचर में जिसका साम्राज्य है और जो समस्त संसार में समान रूप से समाया हुआ है उसी भगवान की कर्त्तव्य कर्मों से साधक को हर समय पूजा करते रहना चाहिये।

(२८) साधक को चाहिये कि सुख में सुखी न हो और दुःख में दुःखी न हो। अर्थात् अपने अनुकूल व्यक्ति-वस्तु कार्य सिद्धि या परिस्थिति हो जाने पर कोई खुशी का प्रदर्शन न करे और ना ही अपने प्रतिकूल परिस्थिति या फल प्राप्त होने पर दुखी हो।

(२९) साधक शास्त्राज्ञ के अनुसार यज्ञ, जप, तप, दान दक्षिणा साधना आदि प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भगवान का नाम याद अवश्य करले।

(३०) साधक को यह भी चाहिए कि वह अपनी समस्त इन्द्रियों पर काबू रखे। इन्द्रियों के द्वारा विषयों का सेवन न करने से ऊपर से तो इसका सम्बन्ध टूट जाता है किन्तु कुछ समय बाद फिर इच्छा शक्ति जागृत हो जाती है किन्तु भगवान में रमजाने पर साधक की उस आशक्ति का नाश सदा के लिये हो जाता है।

सावधान ३१:– इन्द्रियां अपने क्लों द्वारा साधक का ध्यान विषयों की ओर ले जाती हैं। अतः भगवान की ओर ध्यान लगाने वाले साधकों को पहले आपनी इन्द्रियों पर आधिपत्य जमाना चाहिये।

(३२) साधक को अपने किए और करने वाले सभी कार्य उस भगवान के ही अर्पण कर देने चाहिये। आशा और ममता का त्याग करके ही उन आवश्यक कार्यों का आचरण करे किन्तु भगवान को उस समय भी न भूले।

(३३) साधक को चाहिये कि जो साधना वह आसानी से कर सकता है और जो उसके अनुकूल है एवं जिसमें साधक को सुगमता है उसी को व्यवहार में ले।

(३४) साधक को चाहिए कि वह अपनी बुद्धि को स्थिर रखे विचलित न होने दे। निन्दा को और स्तुति को समान रूप से देखे और भगवान का स्मरण चिन्तन करने का अपना स्वभाव बना ले। अपने रहने का स्थान भी वह अपना न समझे क्योंकि सदा उसी जगह नहीं रहना।

(३५) जो साधक शरीर और आत्मा का भेद अपने विवेक रूपी नेत्रों से देख लेते हैं। वे परमात्मा को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं और प्रकृति से छुड़ाने वाले परमात्मा को भी जान लेते हैं।

(३६) साधक के हृदय में भगवान को प्राप्त करने की अभिलाषा हर समय मौजूद रहनी चाहिये। उसकी पूर्ति के लिए वह आचरण व कर्म करना चाहिये जो एक सच्चे भक्त के लिये भगवान ने बताया है उन गुणों को अपने जीवन में क्रियान्वित करना चाहिये।

(३७) साधक को यह भी भलीभांति पता होना चाहिये कि इस शरीर में जीव के साथ-साथ साक्षी के रूप में देखने वाला उपद्रष्टा इसको सम्मति देने वाला एवं भरण पोषण करने वाला परमेश्वर भी है जो परमात्मा के नाम से पुकारा जाता है। वह सर्वथा विलक्षण है।

(३८) साधक को चाहिये कि वह ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक और गौ, हाथी, घोड़े आदि सभी जानवर और पक्षी आदि में समान भाव व्याप्त परमात्मा का रहस्य भली भांति जानकर ही इनसे व्यवहार करे। किसी का भी आचार-विचार मान कर उसके प्रति प्रियता में कमी न करे।

(३९) जो भगवान अनादि परब्रह्म इन्द्रियजीत होने पर भी सब इन्द्रियों का काम करने में समर्थ है। जिसके लिये बड़ी से बड़ी बात का भी कोई मूल्य नहीं वह आशक्ति के रहित और सब का भरण पोषण करने वाला है, गुणातीत होते हुए भी सभी गुणों का भोक्ता है उसी ईश्वर के आश्रित साधक को रहना चाहिये।

(४०) साधक को समझना चाहिये कि परमात्मा उससे दूर से भी दूर और निकट से भी निकट है। सब दीपों का उजाला, अज्ञान से सर्वथा अतीत और सबके हृदय में व्याप्त है। अचल रहकर भी सब जगह विचरण करता है ऐसे सर्वगुण सम्पन्न भगवान के गुणों को समझना चाहिये।

(४१) साधक को समझना चाहिये कि समस्त शरीरों में जीवात्मा के साथ उसका परम सुदृढ़ परमेश्वर भी रहता है। जो शरीर और जीवात्मा दोनों को जानने वाला है। उसी के अधीन हो जाना चाहिये।

(४२) साधक को दृढ़ निश्चय वाला बनना चाहिये अर्थात् एक मात्र भगवान पर उसकी प्राप्ति के साधनों पर विकल रहित दृढ़ विश्वास होना चाहिये, अन्य किसी पर भी नहीं।

(४३) साधक मन और बुद्धि को अपने से हटाकर भगवान के अर्पण कर दे। इनको अपना न माने। सदा असंग होकर किसी प्रकार की कोई कामना और जिज्ञासा न रखे।

(४४) सर्वत्र समान भाव से परिपूर्ण परमात्मा का दर्शन करने वाला साधन सम्पन्न मनुष्य सब प्राणियों में परमात्मा की और सब प्राणियों को परमात्मा में समान देखता है। इस कारण उसके राग द्वेष नष्ट हो जाते हैं।

(४५) साधक को स्वाभाविक समता युक्त करुण भाव से सम्पन्न होना चाहिये। किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखना चाहिये।

(४६) साधक को मिट्टी, कंकड, पत्थर, सोना सब वस्तुओं को समान दृष्टि से देखना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि उसको किसी लोभ आदि में नहीं फंसना चाहिये, तभी वह हानि एवं लाभ में बराबर रह सकता है।

(४७) सुख, दु:ख, रोग, बीमारी और जन्म मरण आदि को साधक को केवल शरीर के विकार समझना चाहिये कि इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।

(४८) कर्म के फल की इच्छा करने वाला साधक शांति प्राप्त नहीं कर सकता। अत: शान्ति प्राप्त करने के लिये बिना किसी फल की आशा के ही कार्य करना चाहिये।

(४९) जो साधक न तो किसी कामना के वशीभूत कार्य करता है और न ही किसी से द्वेष करता है। उसका कार्य सन्यासियों जैसा है, वह संसार से लग होता है और फिर संसार में आकर मोक्ष को प्राप्त होता है।

(५०) साधक को प्रत्येक कार्य की इच्छा शक्ति का त्याग करके और कार्य के पूरा होने या अपूर्ण रहने, दोनों दशाओं को एक-सा मानकर ही करना चाहिये।

आज की अधिकाधिक, रोग, शोक, द्रोह-द्वेष वैर, हिंसा आदि सभी कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिये भगवान का नाम ही मोहषधि है। इसी का सेवन करने पर कल्याण होना निश्चित है।

(५१) साधक को पारिवारिक झंझटों से अर्थात् पुत्र, धन, स्त्री, घर-बार आदि से अलग रहना चाहिये। अलग होने का अर्थ यह नहीं कि बिल्कुल घर बार छोड़ दे, बल्कि यह है कि घर में ही रहते हुए साधना के लिये उनसे कोई सम्पर्क रखना।

(५२) कर्म फल की इच्छा से किया हुआ कार्य पूर्ण रहता है और कर्म का फल न चाहते हुए जो

काम किया जाता है वह उसी तरह पाप से लिप्त नहीं होता जैसे कमल पानी से।

(५३) समता में जिन साधकों का मन स्थिर हो गया है वही सच्चे साधक हैं। उनका जीवन भी उज्जवल है, और उन्होंने संसार पर विजय प्राप्त करने का साधन तय्यार किया हुआ है। वे ही लोग ब्रह्म में स्थित हैं।

(५४) साधक की दृष्टि में वे गुण जरूरी हैं, जिनसे कि जलचर, थलचर, नभचर अर्थात् संसार के समस्त जीवों के अन्दर उसी परमपिता-परमेश्वर की दी हुई आत्मा (जीव) समान रूप से दिखाई दे।

(५५) चल और अचल सभी उत्पन्न प्राणी शरीर और आत्मा के संयोग से ही उत्पन्न होते हैं। ऐसे सभी प्राणियों में समान भाव रखना साधक का परम कर्तव्य है।

(५६) निष्ठकामी व्यक्ति कर्मों के अच्छे या बुरे फल का त्याग न करके सबको समान समझकर इन बन्धनों से सदा के लिये छूट जाता है और परमपद को प्राप्त करता है।

(५७) साधक को शरीर से सर्वथा अलग रहते हुऐ अहंकार का त्याग न कर देना चाहिये। अर्थात् शरीर को अपना रूप कभी नहीं मानना चाहिये।

(५८) साधक को इन्द्रियों के शब्द, स्पर्श, रंग रूप, अच्छा बुरा, गंध और रस आदि की तरफ से बिल्कुल वैराग्य ले लेना चाहिये।

(५९) अपनी भक्ति के द्वारा ही साधक भगवान से और उसमें तत्वों से इच्छा की पूर्ति कर सकता है। किन्तु कर्म करते समय इच्छा का ध्यान रखना चाहिये। इसके बाद वह स्वयं भगवान में लिप्त हो जाता है।

साधक को मालूम होना चाहिये

कामना वाला मनुष्य निरन्तर अभाव की आग में जलता रहता है, उसकी कामना कभी पूरी नहीं होती। यह विचार उसकी अज्ञानता और अहंकार से उत्पन्न होता है इसकी पूर्ति के लिये वह प्रयत्न करता रहता है। सफलता न मिलने पर क्रोध उत्पन्न होता है, और इस क्रोध के वश में वह अपने को और दूसरों को ऐसी हानि पहुँचाने की कोशिश

करता है जिसका कि क्रोध शांत होने पर उसे स्वयं दु:ख होता है। ध्यान रहे कि क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है। अपनी कामना की पूर्ति होने पर ऐसे व्यक्ति को लोभ पैदा हो जाता है। लोभ के वश में भी वह ऐसे-ऐसे पाप करना चाहता है जो कि उसे वास्तव में नहीं करने चाहिये। अतः इस कामना से जितना बचा जाय अच्छा है, क्योंकि पूर्ति व आपूर्ति दोनों ही हानिकारक हैं। ऐसा करने वाला साधक राक्षस वृत्ति से बच जाता है, और अपना जीवन भी सुखपूर्वक बना लेता है। त्याग-जीवन की सबसे उच्च पहेली है, अगर इसको बना लिया गया तो समझो जीवन पर विजय प्राप्त कर ली, जो सुख व शांति त्याग में वह भोग विलास में नहीं मिल सकती। भोग विलास तो मनुष्य को राक्षस बना कर पतन की ओर ले जाता है और उसको भांति-भांति के दु:ख व दरिद्रता प्राप्त होते हैं। यद्यपि शांति सुख से उनको मनमानी धन-दौलत, जायदाद, पद, अधिकार, यश और प्रतिष्ठा तो नहीं प्राप्त हो सकते किन्तु इससे अशांति शारीरिक व मानसिक पीड़ा बिल्कुल ही समाप्त हो जाती है। यदि तुम्हारे पास धन दौलत

कमाने का कोई साधन है या किसी ऐसे ऊंचे पद पर हो जहां इस चीज की कोई कमी नहीं। यह भी हो सकता है कि बड़ा आदमी होने के नाते नागरिक प्रतिष्ठा और मान में कोई कमी न रखते हो, किन्तु यदि तुम्हारे पास त्याग और विश्वास की कमी है और दिल में प्रेम नहीं है तो यह सब कुछ बेकार है। तुम सदा कामना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के फन्द में ही फंसे रहोगे। इससे छुटकारा प्राप्त करने का अन्य कोई साधन नहीं है। भविष्य में भी तुम कभी सुखी नहीं रह सकते और दिन रात कामना की आग में जलते रहोगे।

ईश्वर की कृपा के प्रकाश में उसकी छत्र छाया में वही व्यक्ति रह सकता है। जो इनमें विश्वास करता हो जो निडर हो, कर्तव्य परायण हो व अपने निश्चित कर्मों को उसी की आज्ञा के अनुसार करता चला आ रहा हो, पाप के बंधन से वह आदमी सदा बचा रहता है। सबको एक जैसा समझे। इस भावना के वशीभूत जिस व्यक्ति का हद होता है वह अपनी शक्ति और धन का उपयोग कभी नहीं करता।

प्राचीन तंत्र शास्त्रों के प्रयोग–पाठकों की जानकारी के लिये प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित प्रयोगों का यहां वर्णन किया जा रहा है। जिन लोगों को प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न प्रकार के तांत्रिक साधनों के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करनी हो उन्हें देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित प्राचीन यंत्र मंत्र तंत्र शास्त्र अर्थात् 'महा इन्द्रजाल' नामक ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये। यह ग्रन्थ १६ खण्डों में है और प्रत्येक खण्ड का मूल्य ७/५० रु० है। पूरा ग्रंथ मंगाने पर सिर्फ १०१ रु की वी० पी० की जायगी। अर्थात १९१ रु रियायत तथा डाक खर्च माफ।

प्राचीन तन्त्र ग्रंथ में वर्णित प्रयोग इस प्रकार हैं।

षट्कर्मों का वर्णन–तांत्रिक साधनों के लिये ६ प्रकार के कर्म माने गये हैं।

१. शान्तिकरण– शान्तिकरण के प्रयोगों द्वारा कृत्या तथा ग्रह आदि के दोषों को शान्त किया जाता है।

२. वशीकरण–वशीकरण के प्रयोगों द्वारा स्त्री-पुरुष तथा अन्य प्राणियों को अपने वश में किया जाता है।

३. स्तम्भन–स्तम्भन के प्रयोगों द्वारा विभिन्न जीवों की प्रवृत्ति को अवरुद्ध किया जाता है।

४. विद्वेषण–विद्वेषण के प्रयोगों द्वारा मित्र भावापन्न प्रणियों की पारस्परिक प्रीति को नष्ट करके उनमें द्वेष-भाव उत्पन्न करा दिया जाता है।

५. उच्चाटन–उच्चाटन के प्रयोगों द्वारा किसी मनुष्य आदि को अपने गांव, नगर, देश आदि से दूर कर दिया जाता है।

६. मारण–मारण के प्रयोगों द्वारा जीवों का प्राण नाश किया जाता है।

इन ६ कर्मों के ९ भेद तथा अनेक उपभेद होते हैं। परन्तु तन्त्र शास्त्र की सभी क्रियाएं इन ७ कर्मों के ही अन्तर्भूत होती हैं अतः इन कर्मों के लिये इनके देवता, काल, आदि की जानकारी प्राप्त करके किसी भी साधना में प्रवृत्त होना चाहिये।

षट् कर्मों के देवता–षट् कर्मों के देवता नीचे लिखे अनुसार कहे गये हैं:–

१. शान्ति कर्म की अधिष्ठात्री देवी –रति
२. वशीकरण की अधिष्ठात्री देवी –वाणी
३. स्तम्भन की अधिष्ठात्री देवी –रमा

४. विद्वेषण की अधिष्ठात्री देवी —ज्येष्ठा
५. उच्चाटन की अधिष्ठात्री देवी —दुर्गा
६. मारण की अधिष्ठात्री देवी —भद्रकाली

षट्कर्मों की दिशाएं

कौन-से कर्म में कौन-सी दिशा प्रशस्त है। इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये:—

१. शान्ति कर्म में	—	ईशान कोण
२. वशीकरण में	—	उत्तर दिशा
३. स्तम्भन में	—	पूर्व दिशा
४. विद्वेषण में	—	नैर्ऋत्य कोण
५. उच्चाटन में	—	वायव्य कोण
६. मारण में	—	अग्निकोण

षट्कर्मों के लिये काल निर्णय

कौन-सा कर्म किस काल (समय) में करना चाहिये। इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये।

१—वशीकरण दिन के पूर्व भाग में।
२—विद्वेषण तथा उच्चाटन दिन के मध्य भाग में।
३—शांति और पुष्टि कर्म दिन के अंतिम भाग में।
४—मारण कर्म सन्ध्या काल में।

षट् कर्मों के लिये आसन

कौन-सा कर्म किस आसन पर बैठ कर करना उचित है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये–

१. **वशीकरण के लिए**–मेंढा या भेड़ के चमड़े का आसन।

२. **आकर्षण के लिए**–व्याघ्र चर्म अर्थात् बाघ के चमड़े का आसन।

३. **उच्चाटन के लिए**–ऊंट के चमड़े का आसन।

४. **विद्वेषण के लिए**–घोड़े के चमड़े का आसन।

५. **मारण के लिए**–भैंसे के चमड़े का आसन।

६. **मोक्ष साधन कर्म के लिए**–हाथी के चमड़े का आसन।

लाल रंग के कम्बल के आसन पर बैठकर सब कर्मों का साधन किया जा सकता है।

माला, जप, मुद्रा, ध्यान आदि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये हमारे यहां से प्रकाशित–'तान्त्रिक साधन विधि' एवं 'मन्त्र सिद्धि' नामक पुस्तकों को मंगाकर पढ़ना चाहिये। तान्त्रिक साधनों की पूर्व एवं पूर्ण जानकारी प्राप्त किये बिना

कोई साधन सफल नहीं होता। यह स्मरण रखना चाहिये।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र–आगे लिखा मन्त्र सब लोगों को वश में करने वाला माना जाता है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए १००८ की संख्या में जप करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है:–

'ॐ सर्वलोक वशंकराय कुरु कुरु स्वाहा'– मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, इस मन्त्र के द्वारा निम्नलिखित प्रयोगों की वस्तुओं को अभिमंत्रित करना चाहिये। प्रयोग में आने वाली सभी वस्तुओं को एकत्र करके उन पर उक्त सिद्ध मन्त्र को १०८ बार जप कर फूंक मारने से अभिमंत्रण का कार्य पूरा हो जाता है, अभिमन्त्रित वस्तुओं का यथाविधि प्रयोग करना चाहिये। इस मंत्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं।

ब्रह्म दण्डी का प्रयोग–ब्रह्म दण्डी, बच और कूठ-इन तीनों वस्तुओं को समभाग लेकर, कूट पीस, कर चूर्ण कर लें। फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित करें। तत्पश्चात अभिमन्त्रित चूर्ण को पान में रख कर, वह पान उस

व्यक्ति को खिलादे जिसे वश में करना हो। इस अभिमन्त्रित चूर्ण युक्त पान को खाने वाला व्यक्ति पान खिलाने वाले के वशीभूत हो जाता है।

वट मूल का प्रयोग—बरगद की जड़ को पानी में घिसकर उक्त मंत्र १०८ बार अभिमंत्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। फिर जिस साध्य व्यक्ति के पास जाकर पहुँचे वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

अपामार्ग का प्रयोग—अपामार्ग अर्थात् ओंगा, जिसे चिरमिटा या आधाझारा भी कहते हैं, का चूर्ण बनाकर उस चूर्ण को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर खिला दें, तो पान खाने वाला व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सहदेई का प्रयोग—सहदेई नामक बूटी को छाया में सुखाकर चूर्ण कर लें। फिर उस चूर्ण को पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके साध्य व्यक्ति को पान में रखकर खिला दें तो वह वशीभूत हो जायेगा।

कुंकुम का प्रयोग—कुंकुम, नागरमोथा, कूठ, हरताल व मैनसिल, इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर अनामिका उंगली के रक्त में पीसकर लेप

बना लें, फिर उस लेप को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुँचें तो वह साधक को देखते ही वशीभूत हो जाता है।

गोरोचन का प्रयोग—गोरोचन, पद्म-पत्र, त्रिपंगु और लाल चन्दन इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर इकट्ठा पीस लें। फिर उस लेप को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचें, वह साधक को देखते ही वशीभूत हो।

श्वेतगुंजा का प्रयोग—श्वेतगुंजा अर्थात् सफेद घुंघची को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में घिस लें फिर उस लेप को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुँचें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

श्वेत दूर्वा का प्रयोग—श्वेत दूर्वा अर्थात् सफेद रंग वाली दूब को गाय के दूध मे घिस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उसका

मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुँचें, तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

श्वेत अर्क पुष्प का प्रयोग—सफेद आक के फूलों को छाया में सूखा कर कपिला गाय के दूध में पीसकर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जा खड़े हों, तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

अपामार्ग बीज का प्रयोग—अपामार्ग अर्थात् ओंगा के बीजों को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

पान एवं तुलसी का प्रयोग—पान तथा तुलसी के पत्तों को कपिला गाय के दूध में पीसकर, उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जा पहुँचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण दूसरा–नीचे लिखा मन्त्र भोजन किये बिना ५०० की संख्या में जप करने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:-

"ॐ मों ड्रो"

जिस व्यक्ति को वश में करने की इच्छा से इस मन्त्र का जप किया जाता है, वह चाहे राजा हो अथवा सामान्य व्यक्ति, पुत्र हो अथवा मित्र, भाई हो या और कोई, वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण तीसरा मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र १००० की संख्या में जप करने से सिद्ध होता है। मंत्र यह है–

"ॐ चामुण्डे जय जय वश्यं करि जय जय सर्व सत्वान्नम स्वाहा।"

मंत्र को सिद्ध कर लेने के बाद आवश्यकता के समय रविवार अथवा मंगलवार के दिन इस मंत्र द्वारा गुलाब के फूल को १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को वह फूल दे दिया जायेगा। वह साधक के वशीभूत हो जायगा।

सर्वजन वशीकरण चौथा मन्त्र–'ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्व मुखरंजनि सर्वेषां महामाये

मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिव्हे सर्वलोके वश्य करि स्वाहा:।'

यह मन्त्र दस हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं।

पहला प्रयोग—चन्द्र ग्रहण के समय विष्णु कांता की जड़ लाकर उसे उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उसका अंजन आंखों में लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा। वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

दूसरा प्रयोग—मैनसिल, गोरोचन तथा ताम्बूल को पीसकर उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुँचा जाय, वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

तीसरा प्रयोग—शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन सफेद घुंघची को जड़ सहित उखाड़कर घर ले आए। फिर उसे कूट पीस कर चूर्ण बना ले। तत्पश्चात् उस चूर्ण को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे अभिमन्त्रित चूर्ण जिस साध्य व्यक्ति

को पान में रखकर खिला दिया जायेगा। वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

सर्वजन वशीकरण पांचवां मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है:-'**ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा:**'

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जल, पुष्प, वस्त्र अथवा किसी उत्तम फल को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके वह वस्तु जिस व्यक्ति के हाथ में दी जायेगी, वह वशीभूत हो जायेगा।

सर्वजन वशीकरण छठा मन्त्र–आगे लिखा मन्त्र १००००० एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इसे 'भूतनाथ मन्त्र' कहा जाता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र को १०८ बार जप कर साध्य व्यक्ति के साथ-साथ भूतनाथ का स्मरण करने से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

'**ॐ नमः सर्वार्थ साधनी स्वाहा।**'

सर्वजन वशीकरण सातवां मन्त्र–नीचे लिखा मंत्र तिराहे पर बैठ र एक लाख की संख्या में जप

करने से सिद्ध होता है, मंत्र इस प्रकार है 'ॐ ह्रीं ह्रीं कालि कालि स्वाहाः।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब आवश्यकता के समय जिस स्त्री या पुरुष को वश में करना हो, उसके पास जाकर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर उस पर फूंक मारने से वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण आठवाँ मन्त्र–'ॐचिरि चिरि चाण्डाली महाचाण्डाली अमुके मे वश मानय स्वाहा।' यह मन्त्र सात दिन और सात रात्रि तक निरन्तर जपते रहने से सिद्ध होता है। मन्त्र में जिस जगह 'अमुक' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।

मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम सहित एक ताल पत्र पर लिखे, फिर उस मन्त्र लिखे ताल पत्र को दूध मिले हुए पानी में पकावे। इस उपाय से जिस व्यक्ति का नाम ताल पत्र पर लिखा होगा, वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

प्रयोग के सम्बन्ध में दो अर्थ विधियां इस प्रकार बताई गयी हैं।

पहली विधि–इस मन्त्र को साध्य व्यक्ति के नाम सहित बेल के काटे द्वारा तालपत्र पर लिखकर उस तालपत्र को दूध में पकावे। फिर ३ दिन तक उस तालपत्र को कीचड़ में रखे, तीन दिन बाद तालपत्र को कीचड़ में से निकाल कर दुर्गोत्सव मण्डप के द्वार में गाड़ दे। इस प्रयोग के करने से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

दूसरी विधि–बेल के कांटे द्वारा तालपत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिखे। फिर भद्रकाली की पूजा करके जिस व्यक्ति को वश में करना हो उसके घर में उस तालपत्र को गाड़ दे तो साध्य व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

तीसरी विधि–'रं सर्वलोक वश मानय स्वाहा' इस मन्त्र से जप तथा पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा पूजन करने पर साध्यव्यक्ति को वश में किया जा सकता है।

सर्वजन वशीकरण नवां मन्त्र–नीचे लिखा यह मन्त्र भी सब लोगों को वशीभूत करने वाला है। यह १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

मंत्र इस प्रकार है 'ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।' आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके जिस साध्य व्यक्ति के शरीर पर फूंक मारी जायगी, वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

सर्वजन वशीकरण दसवाँ मन्त्र—आगे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र का जप करते समय कामदेव का निम्नलिखित रूप में ध्यान रखना चाहिये।

कामदेव का शरीर स्वर्ण निर्मित जैसा है और वह अपने धनुष को कानों तक खींचे हुए युवती सुन्दरी के हृदय पर अपनी निश्चल दृष्टि को आरोपित किये हुए है। मन्त्र यह है:-

'ॐ मद मद मादय मादय ह्रीं वशय अमुकं स्वाहा।' इस मन्त्र में जहाँ अमुकं लिखा है वहां अमुकं के स्थान पर जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उस के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

दस हजार की संख्या में इस मन्त्र को जपने तथा पूर्वोक्त विधि से कामदेव का ध्यान करते हुए दस

हजार की संख्या में लाल रंग के पुष्प चढ़ाने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र की साधन सम्बन्धी सभी क्रियाएं बायें हाथ से करनी चाहिए। इस मन्त्र का नाम 'मदनमन्त्र' है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके साध्य व्यक्ति के शरीर पर फूंक मारने से वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण ग्यारहवाँ मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जप कर दस हजार की संख्या में सिरस वृक्ष की समाधि से हवन करने पर सिद्ध होता है। मन्त्र को जपते समय चामुण्डा देवी के निम्न लिखित स्वरूप का ध्यान करना चाहिये।

'चामुण्डा देवी करोड़ दांतों वाली, सुन्दर मुखवाली, अन्धकार में स्थित, अपने दायें हाथों में पाश तथा मुण्ड को धारण किये हुए हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वह भयदायक बाघम्बर से आवृत्त तथा शव के ऊपर बैठी हुई हैं।

चामुण्डा देवी का विधि पूर्वक पूजन करने के बाद मन्त्र का जप करना चाहिये मन्त्र इस प्रकार

है–"**ॐ चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुकं स्वाहा।**"

इस मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, उस स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसके शरीर पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारदे तो वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण बारहवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र भी सर्वजन वशीकरण के प्रयोग में आता है। मन्त्र यह है:- '**ॐ नमो भगवती सूचि चाण्डालिनी नमः स्वाहा।**'

इस मन्त्र की साधन विधि यह है।

जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसकी एक मोम की मूर्ति तैयार करे मूर्ति कृतांजलि, युक्तपाद तथा अङ्ग प्रत्यङ्ग सहित होनी चाहिये। फिर उस मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा के बाद उस मूर्ति को सामने रख कर उक्त मन्त्र का दस हजार की संख्या में जप करे। मूर्ति को तैयार करते समय भी उक्त मन्त्र का निरंतर जप करते जाना चाहिये। जब निश्चित संख्या

में जप पूरा हो जाय, तब उस पुतली को अंगारों की अग्नि में तपाना चाहिये। पुतली को अग्नि में तपाते समय भी मन्त्र का जप तथा साध्य व्यक्ति का ध्यान करते जाना आवश्यक है।

इस क्रिया के करने से साध्य व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण तेरहवाँ मन्त्र—निम्नलिखित मन्त्र २०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है।

'ॐ यें परक्षो भयं भगवती गम्भीर रेछ स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब अपामार्ग आधाझारा की जड़ तथा गोरोचन को पानी में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुँचा ज़ाय, वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

सर्वजन वशीकरण चौदहवाँ मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र ३०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।

'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय-मोहय मिलि ठः ठः स्वाहा।' जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब

नीचे लिखे अनुसार किसी भी प्रयोग को करने से कार्य सिद्ध होती है।

पहला प्रयोग—बेलपत्र तथा नीबू को बकरी के दूध में घोंट कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचने से वह व्यक्ति देखते ही वशीभूत हो जाता है।

दूसरा प्रयोग—अंग के बीज तथा ग्वारपाठे की जड़ को एक साथ घोंट-पीसकर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचने से वह व्यक्ति देखते ही वशीभूत हो जाता है।

तीसरा प्रयोग—गोरोचन, मछली का पिता, बंशलोचन, केशर, चन्दन तथा काकजंघा इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर किसी क्वारी कन्या के हाथ से बावड़ी जल में पिसवाएं, फिर उस लेप को मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत होता है।

सर्वजन वशीकरण पन्द्रहवां मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १००८ बार जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।

'ॐ नमो नमो कदसंवारिनि सर्वलोक वश्य करि स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब नीचे लिखी विधियों में से किसी भी एक के अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।

पहली विधि—शनिवार के दिन व्रत करके उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठकर, उसी स्थिति में इन्द्रायण को जड़ मूल सहित उखाड़े। फिर उसके पंचांग में सोंठ, काली मिर्च तथा पीपल मिलाकर बकरी के मूत्र में पीसकर झरबेरी के समान गोलियां बनाएं और उन गोलियों को छाया में सुखा लें जब प्रयोग करना हो, उस समय पत्थर की शिला पर पानी के संयोग से चन्दन को घिस कर उसी शिला पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे, फिर उक्त गोली को भी उसी शिला पर घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात उसका अपने

मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचे, तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

दूसरी विधि–पूर्वोक्त गोली को गोरोचन तथा पानी में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जाकर खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

तीसरी विधि–पूर्वोक्त गोली को देवदास तथा सफेद चन्दन के साथ पानी में घिस कर पानी को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर वह पानी जिस साध्य व्यक्ति को पिलाया जायेगा, तो वह पीते ही वशीभूत हो जायेगा।

सर्वजन वशीकरण सोलहवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। प्रयोग के समय इस मन्त्र को १०८ बार और जप लेना चाहिये। मन्त्र इस प्रकार है- '**ॐ नमो नारायणाय सर्वलोकान् मम वश कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं-

पहला प्रयोग–रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी, बच तथा कूट के समभाग चूर्ण को पान में रख कर उस

पान को सिद्ध मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा। वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

दूसरा प्रयोग—पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके अपने दायें हाथ में बांध लें फिर जिस साध्य व्यक्ति के सामने जाकर खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

तीसरा प्रयोग—बरगद के वृक्ष की जड़ को पानी में घिसकर उसमें भस्म मिलाएं, फिर उसे उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुँचा जायेगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

चौथा प्रयोग—आंवले के रस में मैनसिल तथा असगंध को मिलाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचने से वह शीघ्र ही वशीभूत हो जाता है।

पांचवां प्रयोग—पान तथा तुलसीपत्र को कपिला गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार

अभिमन्त्रित करे, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

छठा प्रयोग—अपामार्ग अर्थात् ओंगा के बीजों को बकरी के दूध में घिस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुँचा जाय वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

सातवाँ प्रयोग—हरताल, असगन्ध तथा सिन्दूर को केले के रस में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचे वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

आठवाँ प्रयोग—ग्वारपाठे की जड़ तथा भांग के बीजों को पीसकर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहँचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

नवाँ प्रयोग—बेलपत्र तथा बिजौरा नीबू को बकरी के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार

अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

दसवाँ प्रयोग–सफेद दूब को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने समस्त शरीर पर लेप करके जिस साध्य व्यक्ति के सामने खड़ा हो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

ग्यारहवाँ प्रयोग–श्वेत आक को छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने सम्पूर्ण शरीर पर लेप करके जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचे वह देखते ही वशीभूत होगा।

बारहवाँ प्रयोग–सफेद घुंघची को छाया में सुखा कर कपिला गाय के दूध में घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगा कर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जायेगा, वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

तेरहवाँ प्रयोग–गोरोचन, कमलपत्र, त्रिपंगु तथा लाल चन्दन। इन चारों को घिसकर उक्त मन्त्र से

१०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर इसका मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचा जाय तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

चौदहवाँ प्रयोग—केशर, सोंठ, कूट, हरताल तथा मैनसिल, इन सब का चूर्ण कर, उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाएं, फिर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर मस्तक पर उसका तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जा कर खड़ा हो तो वह देखते ही वश में हो जायेगा।

पन्द्रहवाँ प्रयोग—सरसों और देवदास को पीस कर गोली बना लें। फिर उस गोली को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मुँह में रखकर जिस व्यक्ति से वार्तालाप किया जायेगा। वह देखते ही वशीभूत होगा।

सोलहवाँ प्रयोग—औदुम्बर की जड़ को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर पान में रखे, फिर वह पान जिस साध्य व्यक्ति को खिला दिया जायगा वह साधक के वशीभूत होगा।

सत्रहवां प्रयोग—औदुम्बर की जड़ को महीन पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे,

फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचा जायेगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

अठारहवाँ प्रयोग—गोरोचन तथा सहदेई को छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें, फिर उस चूर्ण को पान में रख कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर वह अभिमन्त्रित पान जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा। वह खाते ही वशीभूत होगा।

उन्नीसवाँ प्रयोग—अपामार्ग की जड़ को गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य के सामने जाकर खड़ा होगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

बीसवाँ प्रयोग—पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ लाकर उसे उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसे अपने दाईं भुजा में बांध कर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचा जायेगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

राजा वशीकरण पहला मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र एक हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र के प्रभाव से राजा वशीभूत हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा:'

उक्त मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आया है वहां जिस राजा को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब निम्नलिखित क्रिया करनी चाहिये।

मन्त्र जप के पश्चात् एकान्त में भोजन करके कुंकुम केशर, गोरोचन, चन्दन और कपूर इन सब को गाय के दूध में मिलाकर पीस लें। फिर इस मिश्रण को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे—

'अच्छिष्टेछष्टा चाण्डाली सतीवाक फुरो पंजय स्वाहा।'

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करने पर औषधियां सिद्ध हो जाती हैं। फिर उक्त मिश्रण की गोली बनाएं तत्पश्चात् जिस राजा को वश में करना हो उसका नाम लेकर उस गोली का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर राजा के सामने पहुंचे, तो राजा उसे

देखते ही वशीभूत हो जाता है। इस प्रयोग को 'अच्छिष्ट चाण्डाली प्रयोग कहा जाता है।'

राजा वशीकरण दूसरा मन्त्र–निम्नलिखित मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र यह है–'**ॐ क्लीं सह अमुकं में वशं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है। उस स्थान पर जिस राजा को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

केशर, चन्दन, कपूर तथा गोरोचन इन सबको गाय के दूध में घिस लें, फिर उस घिसे हुए मिश्रण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर अपने मस्तक पर उसका तिलक लगाकर साध्य राजा के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत होगा।

राजा वशीकरण तीसरा मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १००८ बार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है।

'ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीयतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां जिस राजा को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर इसे निम्नलिखित विधियों से प्रयोग में लाना चाहिये।

पहली विधि–कुंकुम, चन्दन, कपूर और तुलसी दल, इन चारों वस्तुओं को समभाग लेकर गाय के दूध में घिस लें, फिर उन्हें मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाकर साध्य राजा के सामने जाकर खड़े हों तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

दूसरी विधि–हरताल, असगन्ध, कपूर और मैनसिल, इन सबको बकरी के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य राजा के सामने जा उपस्थित हों तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

विशेष–वर्तमान युग में राजाओं के न रहने पर इन मन्त्रों का प्रयोग मन्त्रियों तथा उच्च अधिकारियों आदि राज्य कर्मचारियों को वश में करने के लिये किया जा सकता है।

पति वशीकरण पहला मन्त्र—आगे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र यह है—'ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखी विधियों के अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये।

पहली विधि—कौंडिन्य पक्षी की बीट, मांस, घृत और शरीर के मल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, इसका लेप अपने गुप्तांग में लगाकर जो स्त्री अपने पति या किसी पुरुष के साथ सहवास करेगी, वह उस स्त्री के वशीभूत हो जायेगा।

दूसरी विधि—गोरोचन को मछली के पित्ते में मिलाकर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे, फिर स्त्री उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य पुरुष के सामने जाकर खड़ी हो वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाता है।

तीसरी विधि—पूर्वोक्त विधि से अपने मस्तक पर तिलक लगाकर स्त्री यदि किसी साध्य व्यक्ति अथवा पति की ओर अपने बायें हाथ की उंगली को उठाकर संकेत करे तो वह उसके वशीभूत हो जाता है।

पति वशीकरण दूसरा मन्त्र—आगे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:— '**ॐ नमो महायक्षिण्ये पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये।

पहला प्रयोग—गोरोचन, अपने शरीर का मैल तथा केले का रस इन तीनों वस्तुओं को एकत्र कर पीस लें। फिर उसे मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर स्त्री जिस साध्य पुरुष या पति के सामने जाकर खड़ी हो तो वह देखते ही वशीभूत हो।

दूसरा प्रयोग—गोरोचन, अपनी योनि में से निकला हुआ मासिक धर्म का रक्त तथा केले का रस, इन तीनों वस्तुओं को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने वाली स्त्री साध्य पुरुष या पति के सामने पहुँच कर उसे देखने मात्र से ही वश में कर लेती है।

तीसरा प्रयोग—अनार का पञ्चांग (फल, फूल, जड़, शाखा, पत्ते) तथा सफेद सरसों इनको एक

साथ पीसकर पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर इस लेप को अपने गुप्ताङ्ग पर लगाकर साध्य पुरुष या पति के साथ सहवास करने वाली स्त्री उसे अपने वश में कर लेती है।

स्त्री वशीकरण पहला मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र स्त्रियों को वशीभूत करने वाला कहा गया है। यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है—'**ॐ ह्रीं सः अमुकीं मे वश मानय मानय स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहाँ अमुकी शब्द आया है। वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये।

पहला प्रयोग—शहद के साथ खस व चन्दन पीसकर उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस स्त्री के कंठ में हाथ डाले, वह तुरन्त ही वशीभूत हो।

दूसरा प्रयोग—नील कमल, भौंरे के दोनों पंख, तगर की जड़ तथा सफेद कार्कजंघा को समभाग लेकर चूर्ण करे, फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र से ७

बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जाती है।

तीसरा प्रयोग–चिता की राख, बच, कूट, कुंकुम और गोरोचन-इनको समभाग लेकर चूर्ण कर ले फिर उस चूर्ण को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जाय वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण दूसरा मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:–'**ॐ नमः कामाख्या देवि अमुकीं मे वशं करी स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकीं शब्द का प्रयोग हुआ है। वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये।

पहला प्रयोग–नीली गाय का दांत तथा मनुष्य का दांत इन दोनों को लेकर तेल के साथ इकट्ठा पीस लें फिर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगावे और साध्य

स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो तो वह देखते ही वशीभूत हो जाती है।

दूसरा प्रयोग–ब्रह्म दण्डी तथा चिता की भस्म को एकत्र करके उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर ले, फिर उसे जिस साध्य स्त्री के शरीर पर डाल दिया जायेगा वह वश में हो जायेगी।

तीसरा प्रयोग–रविवार के दिन काले धतूरे के पंचाङ्ग (फूल, पत्ते, जड़ और शाखा) को लाकर पीस लें फिर उसके साथ कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार तिलक लगाकर घर से निकले तो जिस स्त्री की दृष्टि सबसे पहले पड़ेगी। वह देखते ही वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण तीसरा मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है–**'ॐ रं घुर्घुराकृष्ट कर्म कर्त्ता अमुकं करो वश्यं'**

इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकं शब्द आया है, वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब जिस समय भ्रमर और भ्रमरी को एकत्र देखे, उस समय उन्हें

पकड़ कर अलग-अलग करके चिता की लकड़ी में जला दे। फिर उस भस्म को लेकर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित भस्म को साध्य स्त्री के मस्तक पर डाल दे तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण चौथा मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है— '**ॐ नमः छिप्र कामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकीं शब्द आया है। वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नागकेशर, कमल, पुष्प, तगर, केशर, जटा, मांसी और बच, इन सबको समभाग लेकर सिद्ध मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उन अभिमन्त्रित वस्तुओं की धूप अपने शारीरिक अङ्गों में दे तथा साध्य स्त्री का स्मरण करे तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण पांचवां मन्त्र—नीचे लिखे मन्त्र को जिस साध्यस्त्री का नाम लेकर एक मास तक निरन्तर जपा जाय वह वशीभूत हो जाती है।

मन्त्र यह है:–'**अमुली महामुली छठ छ सर्व संक्षेत्रजंनोपद्रवेभ्यः स्वाहाः।**'

स्त्री वशीकरण छठा मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १००८ की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:–'**ॐ नमो भगवती मङ्गलेश्वरी सर्वमुख राजिनी सर्वधरं मातङ्गी कुमारी के लघु-लघु वशं कुरु कुरु स्वाहा।**'

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसके प्रयोग करने चाहिये।

पहला प्रयोग–गोरोचन तथा सहदेई को पानी के साथ पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य स्त्री के पास जाय तो वह वश में हो जाती है।

दूसरा प्रयोग–क्वारी कन्या के हाथ से काते गये सूत में सहदेई की जड़ को बांधकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उस सूत में बंधी हुई जड़ को जिस साध्य स्त्री की कमर में बांध दिया जावेगा वह वशीभूत होगी।

तीसरा प्रयोग–कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी के दिन व्रत रखकर सहदेई को उखाड़ लाए, फिर

उसका चूर्ण बना कर उस चूर्ण को उक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करे तत्पश्चात् वह चूर्ण जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जावे वह वशीभूत हो जायेगी।

चौथा प्रयोग–सहदेई की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने मुँह में रख लें फिर जिस साध्य स्त्री से वार्तालाप करे वह वश में हो जाती है।

पांचवां प्रयोग–पूर्वोक्त (तीसरे प्रयोग की) विधि से सहदेई को लाकर उसका चूर्ण बनाएं, फिर उस चूर्ण को मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य स्त्री के मस्तक पर डाला जायेगा। वह वशीभूत होगी।

इस मन्त्र के सभी प्रयोग सहदेई द्वारा ही होते हैं।

स्त्री वशीकरण सातवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:–'**ॐ नमः कामाक्षी देवी अमुकीं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकीं' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब निम्नलिखित में से किसी एक विधि से इसका प्रयोग करना चाहिये।

पहली विधि–शनिवार के दिन गोरोचन तथा पद्मपत्र को पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य स्त्री के सामने जाकर खड़ा हुआ जाय वह देखते ही वशीभूत हो जाती है।

दूसरी विधि–गुरुवार के दिन सिन्दूर व कदली कन्द को पीस कर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो तो वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण आठवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:–'**ॐ मूलि मूलि महा मूलि रक्ष रक्ष सर्वासां क्षेत्र परेभ्यः परेभ्यः स्वाहा।**'

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर नागकेशर, चिरौंजी, तगर, कमल केशर, बच तथा जटामांसी-इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करे फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने ही

शारीरिक अङ्गों को धूप देकर जिस साध्य स्त्री के समीप पहुंचा जायेगा वह देखते ही वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण नवां मन्त्र—यह मन्त्र १ लाख जपने पर सिद्ध होता है।

'ॐ नमः भवाय नमः शर्वाणयै च अमुकीं में वशमानय स्वाहा।'

इस मन्त्र में जहां 'अमुकीं आया है वहां पर साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

जीभ का मल, दांत का मल, नाक का मल तथा कान का मल, इन सबको मद्य में मिला कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को पान करा दिया जाय वह वशीभूत हो जायेगी। मल की मात्रा अत्यन्त न्यून होनी चाहिये।

स्त्री वशीकरण दसवाँ मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र २१ दिन तक निरन्तर जपते रहने से सिद्ध होता है। मंत्र यह है:—'**ॐ नमो नमः शिवानी रूप त्रिशूले खड्गहस्ते सिंहारूढ़े अमुकीं मे वश मा गच्छ कुरु कुरु स्वाहा।'**

उक्त मन्त्र में जहां अमुकी शब्द प्रयोग हुआ है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर जिस स्त्री का नाम लेकर धूप दी जावेगी। वह शीघ्र ही साधक के वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण ग्यारहवां मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है:–'**ॐ कुम्भनी स्वाहा।**'

सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा किसी फूल को १०८ बार अभिमन्त्रित करे फिर वह अभिमन्त्रित पुष्प जिस स्त्री को सुंघाया जायेगा वह साधक के वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण बारहवां मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मंत्र इस प्रकार है:-'**ॐ कामिनी रंजनी स्वाहा।**' सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र को लाख की स्याही द्वारा जिस स्त्री के हाथ पर लिख दिया जायेगा। वह लिखने वाले व्यक्ति (साधक) के वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण तेरहवाँ मन्त्र–आगे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता

है। मन्त्र यह है:-'**ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चाण्डालिनी अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहाँ अमुकीं शब्द आया है वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करें।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर रविवार के दिन जिस स्त्री का नाम लेकर दूध तथा शर्करा से होम किया जाय वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण चौदहवाँ मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है–'**ॐ भगवती भगभाग दायिनी अमुकीं मम वश्यां कुरु कुरु स्वाहा।**' इस मन्त्र में जहां 'अमुकीं' शब्द आया है वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर गुरुवार के दिन इस मंत्र द्वारा नमक को १०८ बार अभिमन्त्रित करके वह नमक किसी खाने पीने की वस्तु के माध्यम से जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जायगा वह वशीभूत हो जायेगी।

वशीकरण के मन्त्रों का वर्णन करने के बाद अब हम मोहन मन्त्रों का वर्णन करते हैं।

सर्वजन मोहन पहला मन्त्र—नीचे लिखा मंत्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है:—'**ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व जगन्मोहनं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र की प्रयोग विधियां निम्नलिखित हैं:-

पहली विधि:-कड़वी तुंबी के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती डालकर जलायें तथा उस बत्ती से काजल पारें। उस काजल को पूर्वोक्त सिद्ध मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके आंखों में लगाने से देखने वाले सभी व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।

दूसरी विधि—गूलर के फूल की बत्ती बना कर रात्रि के समय मक्खन में डालकर जलायें और काजल पारें। उस काजल को पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके आंखों में लगाने से देखने वाले सब व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।

तीसरी विधि—सिन्दूर, केशर तथा गोरोचन को आंवले के रस में घोंट कर उक्त मन्त्र से १०८ बार

अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन मोहन दूसरा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:— '**ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।**'

पहला प्रयोग—अपामार्ग (ओंगा या चिरमिटा) झंगरा, लाजवन्ती और सहदेई इन सब को घोंटकर अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग मोहित होते हैं।

दूसरा प्रयोग—सिन्दूर तथा सफेद बच को पान के रस में घोंटकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।

तीसरा प्रयोग—पान की जड़ को पानी में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।

चौथा प्रयोग—सिन्दूर, केशर तथा गोरोचन को आंवले के रस में पीसकर उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित

कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन मोहन तीसरा मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते कामदेवाय यम यस्य दृश्यो भवाभि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।'

सिद्ध होने पर प्रयोग नीचे लिखे अनुसार करें :-

पहला प्रयोग—राई, सिरस तथा शंखाहुली को सफेद रंग वाली गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे अपने शरीर पर मर्दन करके उष्ण जल से स्नान करे। तत्पश्चात् अपने मस्तक पर केशर का तिलक लगाकर राज दरबार में अथवा सभा में कहीं भी जाय वहां उसे देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

दूसरा प्रयोग—अनार के पंचाङ्ग को सफेद घुंघची के साथ पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जहां भी जाय वहां देखने वाले सब लोग मोहित हों।

तीसरा प्रयोग–भांगे के पत्तों को सफेद घुंघची के साथ पीसकर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लेप करने से देखने वाले मोहित होते हैं।

चौथा प्रयोग–सफेद आक की जड़ को सफेद चंदन के साथ घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित हों।

पांचवाँ प्रयोग–बेल पत्र को छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध में पीस कर गोली बना लें फिर उस गोली को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित होते हैं।

छठा प्रयोग–सफेद घुंघची के रस में ब्रह्मदण्डी को जड़ सहित पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक करे तो देखने वाले मोहित हों।

वेश्या वशीकरण मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:–**'ॐ द्राविणी स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा।'**

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब अपामार्ग ओंगा की लकड़ी लाकर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे फिर उस लकड़ी को वेश्या के घर में डाल दे तो वेश्या वशीभूत हो जाती है।

शत्रु मोहन मंत्र—नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र यह है:—'**ॐ नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टि स्ताम्भय स्ताम्भय अंगानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुं।**'

इस मन्त्र में जहाँ अमुकस्य शब्द आया है वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिये इस मन्त्र की प्रयोग विधि अग्रलिखित है:-अपामार्ग (ओंगा या आधाझारा) का रस निकालकर उसे इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके उस रस का शस्त्र पर लेप करे। तत्पश्चात् उस शस्त्र को लेकर युद्ध भूमि में जाय तो शत्रु उसे देखते ही मोहित हो जायेंगे।

मोहन मन्त्रों के बाद अब आकर्षण मन्त्रों का वर्णन किया जाता है।

सर्वजन आकर्षण मन्त्र—निम्नलिखित मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र यह है:—'**ॐ नमो आदिरुपाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहां 'अमुकं' शब्द आया है, उस स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लें।

इस मन्त्र की प्रयोग विधियां निम्नलिखित हैं:—

पहली विधि—रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण करे फिर उस चूर्ण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस काम पीड़िता स्त्री के मस्तक पर डालें। वह प्रयोग करने वाले के पीछे-पीछे चली आती है।

दूसरी विधि—मनुष्य के कपाल (नरमुण्ड) पर उक्त मन्त्र को गोरोचन तथा कुंकुम के साथ लिखकर उसे तीनों संध्या काल में खैर की अग्नि में तपाएं। तपाते समय साध्य स्त्री के नाम एवं रूप का स्मरण तथा ध्यान करते रहना चाहिये। कहा गया है कि इस प्रयोग के करने से उर्वशी जैसी स्त्री भी आकर्षित होकर साधक के पास आ जाती है।

तीसरी विधि—अनामिका उंगली के रक्त से उक्त मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखे तथा जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो, उसका नाम बीच में लिखे। फिर उस भोजपत्र को शहद में डाल दे तो साध्य व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के समीप चला आता है।

चौथी विधि—काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर पीस ले, फिर उसके द्वारा कनेर की जड़ कलम से उक्त मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखे। तत्पश्चात् उस मन्त्र लिखित भोजपत्र को खैर के अंगारों पर तपाए तो इस क्रिया से काफी दूर रहने वाला व्यक्ति भी आकर्षित होकर साध्य व्यक्ति के समीप चला आता है।

स्त्री आकर्षण पहला मन्त्र—नीचे लिखे मन्त्र को २१ दिन तक तीनों संध्या काल में एक-एक हजार की संख्या में जपना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र में जहाँ 'अमुकाय' शब्द आया है। वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये। मन्त्र यह है:—**'ॐ चामुण्डे तहततु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।'**

पहली विधि–काले सर्प के फन को काट कर चूर्ण करे, फिर उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे आग में डाले तथा उसकी धूप को अपने अङ्ग पर मले। इस विधि से मंत्रोच्चारण के समय जिस स्त्री का नाम लिया जाता है। वह आकर्षित होकर साधक के समीप चली आती है।

दूसरी विधि–अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष के बांदा को लाकर बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाये। जो स्त्री उसे पहले देखेगी वही वश में हो जायेगी।

तीसरी विधि–उत्तर दिशा की ओर मुँह करके लाल चन्दन अथवा लाख के लाल वस्त्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिख कर पूजन करे तत्पश्चात् उसे पृथ्वी में गाड़ कर २१ दिन तक चावल के धोवन के पानी से सींचता रहे। इस प्रयोग के करने से मानवता वैरिणी स्त्री भी साधक के समीप आ जाती है।

स्त्री आकर्षण तीसरा मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी कहा गया है-मन्त्र यह है:–'**ॐ ह्रीं ह्रूं अमुकीं आकर्षय।**'

इस मंत्र की प्रयोग विधि इस प्रकार है। जिस स्त्री को आकर्षित करना हो तो उस के पांव की धूलि को संध्या के समय उठा कर उक्त मन्त्र का चार लाख की संख्या में जप करे। मन्त्र में जहाँ 'अमुकीं' आया है वहां साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करे।

इस क्रिया से साध्य स्त्री आकर्षित होकर साधक के समीप चली आती है।

विद्वेषणः—मित्रभावापन्न दो व्यक्तियों में परस्पर झगड़ा करा देने को विद्वेषण कहते हैं। मन्त्र व प्रयोग यह हैं।

विद्वेषण का पहला मन्त्र—नीचे लिखा मन्त्र १ लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र इस प्रकार है—'**ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य अमुकेन सह' शब्द आया है, वहां जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो तो 'रामस्य श्यामेन सह' इस प्रकार से उच्चारण करना चाहिये। इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं।

पहला प्रयोग—मोर की बीट तथा सर्प के दांत, इन दोनों को घिसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर उन दोनों व्यक्तियों के पास जाकर खड़ा हो जाय, जिनमें विद्वेषण करना हो तो उस तिलकधारी को देखते ही वे दोनों व्यक्ति परस्पर की मित्रता को त्याग कर एक दूसरे से द्वेष करने लगेंगे।

दूसरा प्रयोग—सेही के दो कांटो को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिन दो व्यक्तियों के घरों के दरवाजों पर गाड़ दिया जायेगा। उनमें परस्पर शत्रुता हो जायेगी।

तीसरा प्रयोग—कुत्ते के बाल तथा बिल्ली के नख को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस सभा में धूप दी जायेगी, वहाँ पर उपस्थित सब लोग आपस में द्वेष करने लगेंगे।

चौथा प्रयोग—घोड़े तथा भैंसे के बाल को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे, फिर उनकी जिस सभा में धूप दे वहां बैठे लोगों में परस्पर विद्वेष हो जायेगा तथा थोड़ी ही देर में हुल्लड़ मचकर सभा भंग हो जायेगी।

विद्वेषण का दूसरा मन्त्र–नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। मंत्र यह है–'**ॐ नमो नारायाणाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।**'

इस मन्त्र में जहां अमुकस्यामुकेन सह शब्द आया है वहाँ पूर्व मंत्र की ही भांति जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेष कराना हो उन दोनों के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जब मंत्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखी विधियों के अनुसार उसका प्रयोग करना चाहिये।

प्रयोग करते समय मंत्र का १०८ बार जप करें।

पहला प्रयोग–जिन दो व्यक्तियों में जीवन भर के लिये विद्वेष कराना हो तो उन दोनों के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर उसकी २ अलग-अलग पुतलियां बनाए, तत्पश्चात् उन दोनों पुतलियो को १०८-१०८ बार मंत्र पढ़ कर अलग-अलग अभिमन्त्रित करे। फिर उन्हें श्मशान में ले जाकर गाड़ दे फिर उन दोनों व्यक्तियों के बीच जीवन भर विद्वेष बना रहेगा।

दूसरा प्रयोग—भैंस और घोड़े के बाल लाकर दोनों को उक्त मंत्र द्वारा अभिमन्त्रित कर उन्हें जिस सभा में लेकर जायेगा वहां के लोगों में परस्पर विद्वेष उत्पन्न हो जायेगा।

तीसरा प्रयोग—जड़ सहित ब्रह्मदण्डी व काक-जंघा को सात दिन तक चमेली के फूलों के रस में भिगोए। फिर उन्हें उसमें से निकाल कर सात दिन तक बिल्ली के मूत्र में भिगोए फिर उन्हें उसमें से निकाल कर पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर के समीप जाकर उसकी धूप दे तब धूप की सुगंधि को जो भी व्यक्ति सूंघेगा उसमें परस्पर विद्वेष बना रहेगा।

चौथा प्रयोग—बिल्ली तथा चूहे की विष्ठा और शत्रु के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर सबको एकत्र करे, फिर उससे एक पुतली बनाकर उसके ऊपर एक नीला कपड़ा उढ़ाए, तत्पश्चात् उस पुतली को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ दे तो शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार के सभी लोगों में परस्पर विद्वेष हो जायेगा।

पांचवां प्रयोग—हाथी के दांत तथा सिंह के दांत को मक्खन के साथ इकट्ठा पीसकर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उस लेप का जिन दो मनुष्यों के मस्तक पर तिलक लगा दिया जायेगा। उन दोनों में परस्पर विद्वेष हो जायेगा।

उच्चाटन—किसी व्यक्ति के मन को किसी स्थान से उचाट देने को 'उच्चाटन' कहा जाता है। जिस व्यक्ति के लिये उच्चाटन सम्बन्धी प्रयोग किये जाते हैं, वह व्यक्ति उस स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर चला जाता है।

उच्चाटन का मंत्र—'ॐ नमो भगवते रुद्राय द्रंष्ट्राकरालाय अमुकं पुत्र बांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्र मुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।' इस मंत्र में जहां अमुक शब्द आया है। वहां जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

यह मंत्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। जब मंत्र सिद्ध हो जाय तब नीचे लिखे अनुसार इसे प्रयोग में लाना चाहिये। किसी भी

प्रयोग को करने से पहले मंत्र को १०८ बार जप लेना आवश्यक है।

पहला प्रयोग–कौए तथा उल्लू के पंखों का १०८ बार हवन करने तथा उक्त मंत्र का पाठ करने से साधक व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

दूसरा प्रयोग–मंगलवार के दिन उल्लू के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जायेगा। उसका उच्चाटन होगा।

तीसरा प्रयोग–रविवार के दिन कौए के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जायेगा। उसका उच्चाटन होगा।

चौथा प्रयोग–मनुष्य की हड्डी के ४ अंगुल प्रमाण टुकड़े को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उसे जिस व्यक्ति के घर के दरवाजे पर गाड़ दिया जायेगा उसका उच्चाटन होगा।

पांचवां प्रयोग–गूलर की लकड़ी की चार अंगुल प्रमाण कील को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के सोने के स्थान पर खोद कर गाड़ दिया जायेगा उच्चाटन होगा।

छठा प्रयोग—कौआ तथा उल्लू के पंख को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जाये उसका उच्चाटन होगा।

सातवां प्रयोग—भरणी नक्षत्र में श्मशान की तीन अंगुल प्रमाण की लकड़ी लाकर उसे उक्त मंत्र से ७६ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जाये उसका उच्चाटन होगा।

आठवां प्रयोग—मनुष्य की हड्डी की ४ अंगुल प्रमाण से उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ देने तथा उस स्थान पर पेशाब कर देने से उच्चाटन हो।

नवां प्रयोग—कलिहारी की जड़ को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दिया जायेगा उसका उच्चाटन होगा।

दसवां प्रयोग—सफेद सरसों, शिवजी पर चढ़ाई हुई माला तथा जल-इन तीनों वस्तुओं को उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ने से उसका उच्चाटन होता है।

भूत नाशन मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है, मंत्र यह है:– 'ॐममे काली कपाली दहि स्वाहा।'

मंत्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय सरसों के तेल को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर भूतग्रस्त रोगी के शरीर पर उस तेल की मालिश करने से भूत चिल्लाता हुआ निकल कर भाग जाता है।

विजय प्रदाता मंत्र–नीचे लिखा मन्त्र दस हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है:–

मंत्र इस प्रकार है–**ॐनमे कनक पिंगे रौद्रक्रपातरुदास्त्र धरनी तिस्ठ सरासर सत्वान मोहये भगवती सिद्धिधुजो इति मीठ महापाये स्वाहा।'**

सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय इस मंत्र का नीचे लिखे अनुसार प्रयोग करना चाहिये:–

इसकी विधि–कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को नील वृक्ष की जड़ को श्मशान से लाए हुए सूत में कसकर उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके मुँह अथवा मस्तक पर धारण करके न्यायालय में पहुंचे तो मुकद्दमे में सफलता प्राप्त होगी।